की मुहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं

मुहम्मद से वफा

मुहम्मद सबके लिए

लेखक

सैयद हामिद मोहसिन

कह दो

(ऐ पैगम्बर)

यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो.

तो मेरा अनुसरण करो.

अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा।

(कुरआन. 3:31)

सलाम सेन्टः

65. I मेन. एस.आर.के. गार्डन

जयनगर ईस्ट. बंग्लौर- 56004

+91 99451 77477 - +91 99451 88488

www.followme.ind.in

- www.quranforall.in

© सैयद हामिद मोहसिन

सलाम सेन्टर. बंग्लौ

प्रथम संस्करण 2012

आई.एस.बी.एन. : 81-7435-698-3

हिन्दी अनवाद : अब्दल्लाह दानिश. मो0 +91 9997658449

ई.मेल adanish47@gmail.com

सप्रेम भेंट. निशल्क वितरण हेत

भारत में प्रकाशित एवं मद्रित

प्रकाशकः एस. साजिद अर्ल

आदम पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यटर

1542. पटौदी हाउस. दरियागंज

नई दिल्ली- 110002. भारत

विषय सची

	आभार	
	आमख	
1.	काबा (अल्लाह का घर)	1-8
2.	पैगम्बरी की निशानियें	9-21
❋	वह्य का प्रथम अवतरण	21-24
3.	दिव्य सन्देश	25-29
4.	दमन और उत्पीडन	31-42
5.	क्रान्ति मानसिक और सामाजिक	43-48
6.	निर्वासन	49-54
7.	प्रेरणा और साहस	55-60
8.	प्रतिबन्ध	61-74
9.	प्रवास	75-81
10.	मदीना	82-95
❋	जिहाद प्रतिरोध	96-102
❋	वहत्तर जेहाद	103-103
11.	प्रथम युद्ध. बद्र	105-116
❋	हार्दिक न्याय-प्रियता	117-119
12.	सज्जनता. स्नेह. प्यार	121-132

13.	पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0)	133-170
	''सभी रचनाओं के लिए दया''	
14.	उहद	171-179
❋	विनम्रता	180-188
15.	खाई, कूटनीति और एक चाल	189-202
❋	मुसलमानों की दानशीलता	203-204
❋	अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता	205-206
❋	मानवता की सेवा	207-212
16.	हुदैबिया	213-230
	शान्ति ने युद्ध जीत लिया	
❋	इस्लाम स्वीकार करने वालों का सैलाब	231-232
❋	महान शिक्षा	233-233
❋	अरब सीमा के पार अन्य शासकों तक	234-235
❋	पैगम्बर (सल्ल0) के युग में भारतीयों पर प्रभाव	236-236
17.	पैगम्बर (सल्ल0) गैर मुस्लिमों के साथ	237-237
❋	मक्का के गैर मुस्लिमों के साथ सम्बन्ध	238-245
❋	मदीना के गैर मुस्लिमों के साथ सम्बन्ध	246-250
❋	शिष्टता और सहनशीलता	251-251
❋	धर्म में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं	252-253
❋	अन्य धर्मों के प्रति सहनशीलता	254-255
18.	खैबर	257-260

❋	दयालुता का संकेत	261-263
❋	मनोरंजन और विश्राम	264-265
19.	उमरा छोटा हज	267-276
20.	'शानदार विजय'	277-285
❋	इस्लाम के नेतृत्व के लिए दिलों का सुधा	286-288
❋	''ऐ अल्लाह मैं निर्दोष हूँ''	289-290
21.	हुनैन	291-296
❋	आदर्श समाज सुधारव	287-303
❋	मानव एकता	304-307
22.	पैगम्बर (सल्ल0) का मदीना प्रेम	309-314
❋	विभिन्न प्रतिनिधिमण्डल	315-316
❋	मानावधिकार	317-320
❋	युवकों का उत्साहवर्धन	321-322
❋	युद्ध की नैतिकता	323-323
23.	पैगम्बर (सल्ल0) की युद्ध धारणा	325-334
24.	विवाह	335-344
❋	इस्लाम में विधवाओं तलाकशुद	345-347
❋	महिलाओं की रजामन्दी	348-349
25.	पैगम्बर (सल्ल0) के अनेक विवाह	351-369
❋	महिलाओं की स्थिति	370-373
	शालीनता और हिजाब (पर्दा)	

❋	हिजाब	374-374
	बुद्धिमानी और सुविज्ञता का शिखर	
26.	मदीना- एक आदर्श शहर	375-395
❋	सभी के लिए न्याय	396-398
❋	शासक और साधारणजन	399-400
	इस्लामी कानून के समक्ष समान है	
❋	बेटे की मृत्यु का शोक	401-402
❋	सूर्य ग्रहण	403-403
27.	अन्तिम हज	405-409
29.	स्वर्ग में. सर्वशक्तिमान के साथ	411-418
29.	अल्लाह के पैगम्बर	419-427
	एक उत्तम आदर्श	
❋	पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के	428-430
	सम्बन्ध में महान लोगों के विचार	
❋	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	431-432

पैगम्बर (सल्ल0) और आपके साथियों के नाम पढने के शिष्टाचार

पैगम्बर मुहम्मद का नाम आने पर ''सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' (उनके ऊपर अल्लाह की सलामती और कृपा हो) कहना

जब भी पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के नाम का उल्लेख हो तो मुसलमानों के लिए अनिवार्य है कि आप पर दुरुद भेजें। इसीलिए जब पुस्तकों में आप (सल्ल0) का नाम आता है तो यह दुआ ''सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' (उनके ऊपर अल्लाह की सलामती और कृपा हो) लिखी जाती है। चूँकि प्रस्तुत पुस्तक मुसलमानों और गैर मुस्लिमों समेत पाठकों के व्यापक समूह को सम्बोधित है अतः हम दुरुद (जैसा कि साधारण मुसलमान कहते हैं) के स्थान पर (सल्ल0) लिखना पर्याप्त समझते हैं ताकि जब इसे पढें तो अपने दिल में दरुद पढ लें

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के लिए जो दुआएँ पढी जाती हैं उनसे इस इस्लामी विश्वास को बल मिलता है कि मुहम्मद (सल्ल0) पुज्य नहीं हैं बल्कि एक मनुष्य यद्यपि आप मानवता के नायक हैं और सम्पुर्ण मानवता के लिए पैगम्बर हैं- और आपको भी अल्लाह की दया और कृपा की आवश्यकता है। यह अति महत्वपुर्ण दुआ है ? मुसलमानों के मन में पैगम्बर (सल्ल0) की प्रतिष्ठा का स्मरण कराती है और उन्हें चेतावनी देती है कि वह पैगम्बर को किसी भी तरह पुज्य का स्थान प्रदान करने या अल्लाह के समकक्ष ठहराने से बचें। यह मौलिक रूप से ''एकत्ववाद'' के इस्लामी मौलिक विश्वास की रक्षा करती है।

अन्य पैग़म्बरों और फरिश्तों को अलैहिस्सलामम (अलै0) (आप पर कृपा हो) कहना।

अरबी कथन "अलैहिस्सलाम का अर्थ है "उनके ऊपर सलामती हो। यह एक सम्मानजनक वाक्यांश है जिसे पैगम्बरों का नाम सुनने या पढने के बाद बोला जाता है। इस पुस्तक में इसके स्थान पर संक्षेप में हम (अलै0) लिखेंगे क्योंकि मुसलमान जब पैगम्बरों का नाम पढते या सुनते हैं तो दिल में यह दुआ पढ लेते हैं। उदाहरण के लिए पैगम्बर इब्राहीम (अलै0)। यह करआन के इस आदेश के पालन में भी पढा जाता है कि "मसलमा पैग़म्बरों की प्रतिष्ठा में अन्तर नहीं करते"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथियों (सहाबा) के लिए रज़िय अल्लाहु तआला अन्ह (रजि0) अर्थात उनसे अल्लाह प्रसन्न हआ कहना।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथियों के नाम का उल्लेख होने पर दुआ पढना मुसलमानों से अपेक्षित हैं इसीलिए किताबों में जहाँ भी यह नाम आता है इसके बाद रजिय अल्लाहु तआला अन्हु लिखा जाता हैं इस पुस्तक में रजिय अल्लाहु तआला अन्हु के स्थान पर (रजि0) लिखने को पर्याप्त समझा जा रहा है क्योंकि मस्लिम पाठक जानते हैं कि सहाबा का नाम आने पर दिल में यह दआ पढना है। उदाहरण के लिए इमाम हसैन (रजि0)।

आभार

मेरे लिए यह अपार हर्ष का विषय है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मुझे अपने प्यारे पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) की जीवनी संकलित करने का अवसर प्रदान किया।

इस पुस्तक का उद्देश्य मुसलमानों और गैर मुस्लिमों पर आधारित व्यापक पाठकों को सम्बोधित करना है। इससे बढकर यह एक ऐसा प्रयास है कि आपके जीवन के उन पहलुओं को देश के नागरिकों के समक्ष लाया जाये जो सम-सामयिक संसार के समाज के लिए विकास और मुक्ति को सुनिश्चित कर सकें। इस पुस्तक के पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि जिन लोगों को यह पुस्तक मिले वह इसे पैगम्बर (सल्ल0) का जीव इतिहास समझ कर न पढें बल्कि उस व्यक्तित्व से मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयास करें जो इतिहास को एक उल्लेखनीय मोड देने के लिए जिम्मेदार है।

यह पारम्परिक अर्थों में पवित्र पैगम्बर की एक नयी जीवनी लिखने का प्रयास नहीं है। यह पुस्तक पैगम्बर (सल्ल0) की एक और जीवनी लिखने के शौक का परिणाम भी नहीं है और न ही यह पवित्र पैगम्बर के जीवन और मिशन के सम्बन्ध में मेरी समझ के उदगार लोगों तक पहुँचाना है। जब हम 'कुरआन सबके लिए' अभियान चला रहे थे तो मेरे अन्दर एक चिन्गारी पैदा हुई। इस चिन्गारी ने मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति के लिए सबसे सामान्य भाषा में पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन को प्रकाश में लाने के मिशन में लीन कर दिया।

कुछ वर्षों पहले सन् 2008 में मैंने 'कुरआन सबके लिए' परियोजना तैयार की। इसको व्यवहार में लाने की चिन्ता ने कुछ समय तक मुझे बैचेन रखा। मेरी पत्नी शबाना और बेटी सफिया थीं जिन्होंने इस परियोजना को आगे बढाने के लिए मेरा उत्साहवर्द्धन

किया। फिर मैंने पीछे मुडकर नहीं देखा। इन दोनों ने हर कदम पर मेरा साथ दिया और हर मोड पर मुझे साहस प्रदान किया ताकि इस परियोजना को सफल बनाया जा सके. अल्लाह से दुआ है कि उन्हें इस उत्साहवर्द्धन पर उपयुक्त पुरस्कार दे। यह कहने कं आवश्यकता नहीं कि इस परियोजना का उद्देश्य सच्चाई से उन पर्दों को हटाना है जो मानवता की आँखों पर पडे हुए हैं।

इससे अधिक रोमांचकारी कार्य और कोई नहीं हो सकता कि देशवासियों के समक्ष दिव्य संदेश को पहुँचाया जाये। भारत में विभिन्न युगों में श्रेष्ठ स्तर की साम्प्रदायिक सदभाव और मैत्री रही है। यह भारतीय समाज की सर्वाधिक मुल्यवान पुँजी है। इसमें से कुछ सदभाव उन बैठकों में उत्पन्न हुआ जो पवित्र कुरआन के सन्देश को पेशेवर लोगों जैसे सम्मानित न्यायाधीशों. अधिवक्ताओं. पुलिस अधिकारियों. शोधकर्त्ताओं. बुद्धिजीवियों और छात्रों तक पहुँचाने के लिए आयोजित की गयी थीं। जिस तरह से इन पाठकों ने मेरा और मेरे प्रयासों का व्यक्तिगत रूप से सम्मान किया यह उस महान श्रद्धा का संकेत है जो हमारे देश के लोग दिव्य और पवित्र चीजों के सम्बन्ध में रखते हैं। यह मेरी भावनात्मक आशा है कि अल्लाह मुझे इसी प्रकार कयामत के दिन सम्मानित करे और शाश्वत सफलता के द्वार पर मुझे पहुँचाये।

इसके लिए मुझे उलमा की ओर से प्रोत्साहन मिला विशेष रूप से दिवंगत मौलाना रियाजुल रहमान रशादी. सिटी जामा मस्जिद बंग्लौर के इमाम. हम सर्वशक्तिमान अल्लाह से उनपर कृपा की दुआ करते हैं।

मौलिक रूप से किताब की पाण्डुलिपि की जाँच विशेषज्ञों जैसे डा0 बी0 शेख अली. पुर्व उप-कुलपति मंग्लौर और गोवा विश्वविद्यालय. और डा0 मुहम्मद रफअत प्रोफेसर जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय से करायी गयी। उनके परामर्श इस रचना को उत्कृष्ट बनाने में बहुमुल्य सिद्ध हुए। अन्ततः इसके सम्पादन का महत्वपुर्ण दायि श्रीमती निगार अताउल्लाह. पत्रकार के ऊपर पडा जिन्होंने अपनी विशेष योग्यता का प्रयोग करते हुए इसका सम्पादन किया। मैं उनका हार्दिक रूप से आभार व्यक्त करता हुँ। इस रचना को पुर्णता तक पहुँचाने में मैं उन लोगों के योगदानों को स्वीकार करता हुँ और अल्लाह से उन पर कपा के लिए दआ करता हुँ। आमीन!

मैं मुहम्मद नोमान खान का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने इस किताब की कम्पोजिंग में निष्ठा का प्रदर्शन किया। इन्हें श्रीमती सादिया और श्रीमती प्रभा का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त रहा। मैं उन दोनों को भी उनकी निष्ठा. वफादारी और विनम्रता के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं श्री सैयद तनवीर अहमद का ऋणी हूँ जिन्होंने निरन्तर अपना सहयोग प्रदान किया और साथ दिया। मैं पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की जीवनी पर आध ारित इस ग्रन्थ के संकलन में जिन उलमा बुद्धिजीवियों और लेखकों की रचनाओं से लाभ उठाया है. उनका मैं हार्दिक आभारी हूँ। इस पुस्तक में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गयी है। इस संकलन के पीछे किसी आर्थिक लाभ की नीयत अथवा आशा नहीं रखी गयी है। इसका उद्देश्य मात्र यह है कि संसार के लोगों को पवित्र पैगम्बर के जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जाये और उन्हें मक्ति मार्ग प्राप्त करने में उनकी सहायता की जाये।

मैं अपने परिवार के सदस्यों भाईयों और बहनों का भी आभारी हूँ। मैं अपनी माँ के लिए अपना गहरा आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनका निरन्तर प्रोत्साहन परियोजना के लिए मेरे साथ रहा। यह उनका प्रशिक्षण ही था जिसने हमारे पिता की 1970 में शहादत के बाद हमें यहाँ तक पहुँचाया और हमें इस महत्वपूर्ण मिशन से जोडा। यह उनका ज्वलन्त उत्साह था कि हम इस्लाम के सन्देश को एक-एक व्यक्ति और पूरी मानवता तक पहुँचाने में व्यस्त रहें। उनकी खुशी हमारे लिए सर्वाधिक मूल्यवान पूँजी है जिसे मैं इस नाशवान संसार में प्राप्त करना चाहूँगा। यह उनका शौक ही था जिसने पैगम्बर (सल्ल0) की इस पवित्र जीवनी के संकलन का वर्णन सुनने के लिए उनको उत्साहित करता रहा। अन्त में मैं अल्लाह का आभारी हूँ जिसने अपने इस विनम्र बन्दे को इस मिशन को परा करने के लिए ऊर्जा और गहरी समझ प्रदान की।

महम्मद से वफा......

आमख

इस्लामी एकत्ववाद (यह विश्वास कि उपास्य मात्र एक है) पैगम्बरों के तारतम्य के पवित्र इतिहास का सदैव आधार रहा है। प्रारम्भ से ही एक मात्र अल्लाह मानवता के लिए अपने सन्देश के साथ पैगम्बर और सन्देष्टा भेजता रहा है जो अल्लाह के अस्तित्व. उस आदेशों. उसके प्रेम और आशा का संस्मरण कराते रहे हैं। इस्लामी परम्परा अल्लाह के पहले पैगम्बर हजरत आदम (अलै0) से लेकर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) तक सभी पैगम्बरों को स्वीकार करती है। इन पैगम्बरों में प्रसिद्ध पैगम्बर इब्राहीम (अलै0). नूह (अलै0). मूसा (अलै0). ईसा (अलै0)) भी थे और वह पैगम्बर भी जिनको कम लोग जानते हैं। प्रारम्भ से अन्त तक मात्र अल्लाह पर विश्वास सदैव आसमानी सन्देश का आधार रहा है। इस्लामी विश्वास तौहीद (उपास्य का एकत्व का) और मानवता की नियति से सम्बन्धित करआन की आयत का यही अर्थ है।

''हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की ओर हमें लौटकर जाना है''।

(कुरआन. 2:156)

अल्लाह की ओर से इन पैगम्बरों का आगमन. आकाश और धरती तथा अल्लाह और मनष्य के बीच स्पष्ट सम्पर्क सूत्र की अभिव्यक्ति है

यह पुस्तक ''मुहम्मद सबके पैगम्बर''. पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) जीवन और आपकी शिक्षाओं के उन पहलुओं को संकलित करने का एक विनम्र प्रयास है कि आपने किस प्रकार अरबवासियों के जीवन को पूर्ण रूप से परिवर्तित किया और अरब प्रायद्वीप में शान्ति स्थापित किया और आर्थिक रूप से उसे सम्पन्न बनाया।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) को अन्तिम पैगम्बर और करआन को अल्लाह द

अन्तिम सन्देश के रूप में चुनकर. अल्लाह ने आपको अपने तथा मनुष्य के बीच शाश्वत सम्पर्क सूत्र के रूप में स्थापित कर दिया और प्रकाश और मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप में स्थापित कर दिया

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कुरआन के माध्यम से मुहम्मद (सल्ल0) को 'इस्लाम' प्रदान किया है. लेकिन वह मुहम्मद (सल्ल0) ही हैं जिनके माध्यम से इस्लाम फैला और कुरआन जीवन्त है। अतः मुहम्मद (सल्ल0) और कुरआन को अलग नहीं किया ज सकता: उनका अस्तित्व एक साथ है और इन दोनों का सम्पर्क सत्र अल्लाह है। जैसा कि कुरआन में मुहम्मद (सल्ल0) से घोषणा करायी गई है:

''कोई उसका साझी नहीं। और मुझे इसी का आदेश मिला है और मैं सबसे पहले आज्ञाकारी हूँ। कहो. क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पालनहार तलाश करूँ जबकि वहीं हर चीज का पालनहार है और जो व्यक्ति भी कोई कमाई करता है वह उसी पर रहता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठायेगा। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारी वापसी है। अतः वह तुम्हें बता देगा वह चीज जिसमे तुम मतभेद करते थे''। (कुरआन. 6: 163-162

हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने अन्तिम अवतरित पुस्तक. कुरआन को प्राप्त किया. और इसे लोगों को पहुँचाया. जो बार-बार अल्लाह के पैगम्बर की. एक पैगम्बर. एक सन्देश वाहक. एक आदर्श और पथ प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित स्थिति पर बल देती है। आपने अपने पालनहार और शिक्षक (अर्न्रब) से जो सन्देश प्राप्त किया उसकी रोशनी में संसार को पूर्ण रूप से बदल दिया। हालाँकि आपको अल्लाह ने चुना था और आपको ज्ञान प्रदान किया था लेकिन जो बात आपको मानवता का आदर्श बनाती है वह यह है कि आपको अपने लोगों ने स्वीकार किया। जिस प्रकार आपको अती मुसलमानों के जीवन और उनकी चेतना में विशेष स्थान प्राप्त रहा उसी प्रकार उनके जीवन और चेतना में आज भी वही विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त है।

मुसलमान मुहम्मद (सल्ल0) को अल्लाह और जनता के बीच मध्यस्थ नर्ह समझते। प्रत्येक व्यक्ति से यह आह्वान किया गया है कि वह स्वयं अल्लाह को सम्बोधि ात करे. और हालाँकि आपने कभी कभी अपनी कौम की ओर से अल्लाह से दआ की. परन्त

आप प्रत्येक मुस्लिम आस्थावान का यह कर्त्तव्य बताते कि वह एक मालिक अल्लाह से स्वयं सम्बन्ध स्थापित करके वार्त्तालाप करे। आप साधारण रूप से मालिक के अस्तित्व का स्मरण कराते हैंः अल्लाह के ज्ञान में लोगों को दीक्षित करते हैं और आध्यात्म का प्रारम्भिक मार्ग दिखाते हैं जिसके माध्यम से आप अपने साथियों और मुस्लिम समुदाय को शिक्षा देते हैं कि मुसलमान जो प्यार और सम्मान उनके लिए रखते है उससे आगे बढें. और इस प्यार और सम्मान को पराजित करके यह प्यार और सम्मान अल्लाह की उपासना के लिए निछावर कर दें जो न किसी को जन्म देता है और न किसी ने उसको जन्म दिया है।

जो लोग आपके जीवन काल में पैगम्बरी के सम्बन्ध में चमत्कार और ठोस प्रमाण चाहते थे। उनको उत्तर देने के लिए आपको कुरआन मजीद में आदेश दिया गयाः

''कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ। मुझ पर वह्य (अल्लाह सन्देश) आती है तुम्हारा उपास्य मात्र एक ही उपास्य है''। (कुरआन. 18:110)

''तुम्हारे लिए अल्लाह के पैगम्बर (सन्देष्टा) में उत्तम आदर्श था. उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो ओर अधिक से अधिक अल्लाह का स्मरण करे''। (कुरआन. 33:21)

ये आयतें मुस्लिम आस्थावानों को सदैव के लिए. यह भी सूचना देती हैं कि चूँकि मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह द्वारा चुने हुए सन्देष्टा हैं अतः आपकी प्रतिष्ठा असाध ाारण है।

पैगम्बर की जीवन की गाथा का वर्णन करते हुए हमारा ध्यान मुख्य रूप से उन परिस्थितियों. प्रवृत्तियों. अथवा वह शब्द जो कुछ वह हमें शिक्षा दे सकते हैं और जो कुछ मार्गदर्शन कर सकते हैं. की ओर केन्द्रित हो जाता है। जब पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में आपकी पत्नी हजरत आयशा (रजि0) से पूछा गया तो आपने उत्तर दिया. ''आपका चरित्र (नैतिक व्यवहार) कुरआन था''।

अतः प्रारम्भिक विचार यह था कि पैगम्बर के जीवन की गहराइयों में डुबकी लगायें और उसमें से उन आध्यात्मिक शिक्षाओं को चुन लें जो युग और स्थान के परिवर्तन से प्रभावित नहीं होतीं।

तथापि. पैगम्बर का जीवन जिन घटनाओं से परिपूर्ण था. उनसे एक अन्य प्रकार की शिक्षा ली जा सकती है। सातवीं शताब्दी में. विशेष सामाजिक. राजनैतिक औ सांस्कृतिक वातावरण के केन्द्र में. अल्लाह के पैगम्बर ने अपनी आस्था के अनुसार और अपने नैतिक मूल्यों के प्रकाश में. मानवता और घटनाक्रम के सम्बन्ध में कारवाई की. प्रतिक्रिया व्यक्त की और अपने आपको प्रस्तुत किया। इस विशेष ऐतिहासिक अं भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में आपके कथनों (हदीसों) का अध्ययन हमें इस योग्य बनाता है कि हम इस आस्था से मनुष्यों. बन्धुत्व. प्रेम. विपत्तियों. सामाजिक जीवन. न्याय कानून. और युद्ध से सम्बन्धित अनेक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाल सकें। अतः हमने यह प्रयास किया है कि हम मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन से अपने युग के सन्दर्भ में यह मालूम करें वि आपके जीवन की शिक्षाएँ हमसे क्या कहती हैं और आपकी शिक्षाओं की प्रासंगिकता हमारे यग में क्या है

अतः मुस्लिम और गैर मुस्लिम पाठकों का आह्वान किया जाता है कि वह पैगम्बर के जीवन आदर्श का गहन अध्ययन करें और इसमें जिन तथ्यों का वर्णन किया गया हैं उनसे प्रेरणा लेकर आप (सल्ल0) के आदर्श का अनुकरण करें। कुछ वि: घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने का चुनाव वास्तव में इस उद्देश्य से किया गया है कि उन घटनाओं को चुन लिया जाये जो हमारे जीवन और हमारे काल (युग) को सम्बोधित कर रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक जिन अध्यायों पर आधारित है उनके प्रत्येक भाग में (जिन्हें जानबूझ कर छोटा रखा गया है) पाठकों को महसूस होगा कि वह निरन्तर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन. कुरआन और आध्यातिमक. दार्शनिक. सामाजिक. न्या। राजनैतिक. अथवा सांस्कृतिक प्रकृति के बीच गतिमान हैं और विभिन्न ऐतिहासि परिस्थितियों से आज की परिस्थितियों के लिए समानान्तर खींचे जा सकते हैं।

हमारा उद्देश्य स्वयं पैगम्बर (सल्ल0) के सम्बन्ध में और अधिक अवगत होना है: इसमें डुबकी लगाना. इसका शौक पैदा करना. सहानुभूति प्रकट करना और मौलिक रूप से प्यार करना है। चाहे कोई विश्वास करे अथवा न करे. यह सम्भव नहीं कि कोई पैगम्बर (सल्ल0) की सत्य की खोज और अस्तित्व में अपने आप को डबाये और उस नब्ज

और उस प्रेरणा को पुनः प्राप्त न करे जो उनके मिशन को सार्थक बनाती हो। वास्तव में यही इस रचना के पीछे मेरी मूल महत्वाकांक्षा हैः ताकि पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन को ऐसा आईना बनाया जा सके जिससे पाठक इस युग में जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं उनमें वह अपने हृदय और मन की खोज कर सकें और एक समझ प्राप्त कर सकें और अधिक व्यापक नैतिक और सामाजिक समस्याओं का अर्थ पा सकें।

इस पुस्तक का उद्देश्य अधिकाधिक मुस्लिम और गैर मुस्लिम पाठकों त पहुँचना है। घटनाओं के तारतम्य के साथ अपने हृदय पर पडने वाले प्रभावों और उन घटनाओं पर गहन चिन्तन को बीच-बीच में प्रस्तुत किया गया है. जिनका समझना सरल है। इस्लाम की आध्यात्मिक और सार्वभौमिक शिक्षाओं को पाठक तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। पैगम्बर (सल्ल0) का ऐतिहासिक अनुभव उन शाश्वत सिद्धान्तों व आत्मसात करने की स्पष्टतः एक वरीयता प्राप्त विधि है जिसे सम्पूर्ण संसार में 1. बिलियन मुसलमान अपनाये हुए हैं। इस प्रकार यह पुस्तक इस्लाम का एक जीवन परिचय है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथी आपसे प्यार करते थे और अपने बीच उनके अस्तित्व से वह आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको शिक्षा दी थी कि वह उस प्रेम को लगातार गहराई प्रदान करते रहेंः ''तुममें से कोई भी उस समय तक पूर्ण रूप से इस्लाम पर विश्वास करने वाला नहीं हो सकता जब तक मैं उसके पिता. उसके बेटे और सम्पूर्ण मानवता से अधिक प्यारा न बन जाऊँ (हदीस)''। उन्हें अपने आध यात्म और प्रेम की तलाश को. पैगम्बर के प्रेम को और आपस में एक दूसरे से प्रेम करने को और फिर अल्लाह से प्रेम को जारी रखना था. जबकि पैगम्बर (सल्ल0) ने स्वयं इनको याद दिलाया था कि इस प्रकार की मैत्री और एकता उनके स्वयं अपनी मानव क्षमता से परे हैः

> *''यदि तुम पृथ्वी में जो कुछ है वह सब खर्च कर डालते. तब भी तुम उनके दिलों में सहमति उत्पन्न न कर सकते। परन्तु अल्लाह ने उनमें सहमति उत्पन्न कर दिया''।* (कुरआन. 8:63)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक उदाहरण थे. एक आदर्श थे जो उनके बीच रहते थे और उन सबको अपना प्यार प्रदान करते. निर्धनों को भी. बढ़ों को भी। वह महिलाओं के प्रति उदारतातापूर्ण सम्मान प्रकट करते और बच्चों के प्रति स्नेह रखते थे। वह ऐसे नाना थे जो अपने नातियों को मस्जिद में नमाज पढते हुए भी अपने कन्धे पर ढोते थे। इस प्रकार अपने दैनिक उदाहरण से आपने यह सन्देश दिया कि कोई व्यक्ति उदारता और मानवता के प्रति स्नेह के बिना अल्लाह को न तो याद कर सकता है और न उससे निकट हो सकता है

पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों और मस्लिम समदाय को अल्लाह से प्रेम करना सिखाया. और कुरआन कहता हैः

''कहो (ऐ पैगम्बर): यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा''। (कुरआन. 3:31)

मुसलमान पैगम्बर (सल्ल0) के उदाहरण का अनुसरण करने का हर संभ प्रयास करते हैं। इसके पीछे पैगम्बर के लिए उनका प्रेम है और पैगम्बर के प्रति यह प्रेम उनके अल्लाह के प्रति प्रेम के रूप में प्रकट होता है। यह प्रेम ऐसा था कि जब आपके सम्मानित साथी उमर (रजि0) ने पैगम्बर (सल्ल0) की मृत्यु के सम्बन्ध में सुनाः तो उन्होंने कहा कि जो कोई यह दावा करने का प्रयास करेगा कि पैगम्बर (सल्ल0) मर चुके हैं तो मैं उसकी हत्या कर दूँगाः उन्हें मात्र आसमान में उठाया गया है और निश्चित रूप से वह वापस आ जायेंगे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के एक अन्य साथी अबू बक्र (रजि0) ने उमर (रजि0) को शान्त होने के लिए कहा और यह घोषणा कीः ''ऐ लोगों! जो लोग मुहम्मद (सल्ल0) की उपासना करते थे. उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि अब मुहम्मद (सल्ल0) मर चुके हैं। रहे वह लोग जो अल्लाह की उपासना करते थे तो उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि अल्लाह जीवित है और वह मरता नहीं''। फिर आपने निम्नलिखित आयत व तिलावत कीः

''मुहम्मद मात्र एक रसूल (सन्देष्टा) हैं उनसे पहले भी रसूल (सन्देष्टा) गुजर चके हैं। फिर क्या यदि वह मर जायें या कत्ल कर दिये जायें तो तम उल्टे पॉव

फिर जाओगे। और जो व्यक्ति फिर जाये. वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाडेगा और अल्लाह आभार व्यक्त करने वालों को बदला देगा''। (कुरआन. 3:144)

ये शब्द पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन के मानवीय पक्ष का बलपूर्व स्मरण कराते हैं। परन्तु मुसलमान पैगम्बर (सल्ल0) के प्रति सदियों से जो सम्मान और असीम प्रेम प्रकट करते हैं वह इससे कम नहीं होता

यह प्रेम उनके हृदय और मन में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के शाश्वत रूप से स्मरण में अभिव्यक्ति प्राप्त करता है और अपने दैनिक जीवन में उनके आदर्श के पालन करने की मानवीय और नैतिक आवश्यकता को निरन्तर अपने हृदय में उनके लिए दवाएँ प्रस्तत करने और प्रेम प्रकट करके प्रकट करता ३

''अल्लाह और उसके फरिश्ते सन्देष्टा पर दयालुता (रहमत) भेजते हैं। ईमानवालों. तम भी उस पर दरुद (दयालता) और सलाम भेजो''।

(कुरआन. 33:56)

यह पुस्तक प्रेम और ज्ञान के साथ इस आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का जीवन आध्यात्मिकता के लिए एक निमन्त्रण हैं और हमें शिक्षा देता हैः अपनी घटनाओं. परीक्षाओं. कठिनाईयों और हमारी तलाश के दौरान- कि आज के वर्तमान प्रश्नों का सच्चा उत्तर बुद्धि के बजाए हृदय अधिक देता है। अधिक गहराई में और अधिक विनम्रता सेः जो व्यक्ति प्रेम नहीं कर सकता वह समझ भी नहीं सकता।

मुहम्मद (सल्ल0) ऐसे शिक्षक हैं जिनकी शिक्षाओं का अध्ययन किया जाता है. और ऐसे मार्गदर्शक हैं कि पथिक रास्ते में जिनका आज्ञापालन करता है. एक ऐसे आदर्श हैं जिसको कोई व्यक्ति अपनाना चाहता है. और सबसे बढकर आपके कथन. आपकी खामोशी और आपके व्यवहार चिन्तन करने और आज्ञापालन करने का निमन्त्रण देते हैं।

हमने तथ्यों को अत्यधिक शोध और अध्ययन के बाद प्रस्तुत किया हैः अल्लाह से दआ है कि वह मेरी विनम्र रचना को स्वीकार करे और यदि इसमें कोई त्रटि रह गयी हो तो मझे क्षमा करे।

महम्मद से वफा......

1

काबा
(अल्लाह का घर)

इस्लामी मान्यता के अनुसार अल्लाह के घर काबा को पैगम्बर इब्राहीम और उनके बेटे इस्माईल (अलै0) ने शुद्ध एकत्ववाद के नाम पर मात्र एक अल्लाह की उपासना के लिए बनाया था जो कि आसमानों और धरती का सृष्टा है और सम्पूर्ण मानवता और सभी पैगम्बरों का स्वामी है। सदियाँ व्यतीत होने के साथ मक्का एक तीर्थस्थल बन गया लेकिन इसके साथ-साथ यह एक बाजार तथा एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हो गया था. जिसमें विस्तृत रूप से सांस्कृतिक और धार्मिक सम्मिश्रण विकसित हुआ। कुछ समय पश्चात एक अल्लाह की उपासना के साथ-साथ बद्दु रीति-रिवाजों और स्थानीय मूर्तियों तथा बहुरूपीय बहुदेववाद का जन्म हुआ। इस्लामी इतिहास से ज्ञात होता है कि जब कुरआन का अवतरण प्रारम्भ हुआ उस समय तीन सौ साठ मूर्तियों व चित्रों को अल्लाह के घर काबा में रखा गया था और उनकी उपासना की जा रही थी।

मात्र ईमानवालों का एक छोटा सा समूह एक अल्लाह की उपासना से जुडा रहा. और सामान्य मूर्तिपूजा के धर्म में सम्मिलित होने से इन्कार करता रहा। ऐसे लोगों को हुनफा (एक अल्लाह की उपासना में एकाग्रचित) कहा जाता था और उनको इब्राहीमी एकेश्वरवादी मान्यता के ध्वजावाहक के रूप में पहिचाना जाता था। कुरआन मजीद ने पैगम्बर इब्राहीम (अलै0) और उनकी उपासना पद्धति को विशुद्ध (हनीफ) बताया।

''और उससे बेहतर किसका दीन (धर्म) है जो अपना चेहरा अल्लाह की ओर झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम (अलै0) के दीन (धर्म) पर जो एक तरफ का (एकाग्रचित) था। और अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था।'' (करआन. 4:125)

जन्म

अल्लाह के पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) का जन्म 20 अप्रैल 570 ई0 को सोमवार के दिन मक्का के एक संभ्रान्त परिवार बनु हाशिम (हाशमी वंश) में हुआ. जिसे मक्का में और मक्का के आस-पास के कबीलों में अत्यधिक सम्मान प्राप्त था। इस संभ्रान्त वंश के साथ-साथ विशेष रूप से मुहम्मद (सल्ल0) से एक कष्टप्रद और असहनीय व्यक्तिगत इतिहास भी जुडा हुआ है। उनके पिता अब्दुल्लाह का देहान्त उस समय हुआ जब उनकी माँ आमिना (रजि0) दो महीने की गर्भवती थीं। अपने देहान्त के समय उनके पिता मक्का के उत्तर में स्थित यसरिब नगर की यात्रा पर थे। मुहम्मद (सल्ल0) को मक्का में दो प्रकार की परस्थितियों से सामना था: एक मानसिक तनाव यह था कि जब उनका जन्म हुआ तो उनके पिता का देहान्त हो चुका था जिसके कारण उनके जीवन में स्थिरता नहीं थी और दसरी ओर वह एक संभ्रान्त वंश से सम्बन्ध रखते थे।

'मुहम्मद' नाम जिसका अर्थ प्रशंसित अथवा प्रशंसा योग्य है और यह नाम उस समय अरब प्रायद्वीप में प्रचलित नहीं था। यह नाम उनकी माँ के मन में उसी समय आ गया था जब मुहम्मद (सल्ल0) अभी गर्भ में थे। कहा जाता है कि यही स्वप्न उनको ''जननायक'' के जन्म के समय भी दिखाया गया था. इस स्वप्न के अनुसार जब आप (सल्ल0) का जन्म हुआ तो वह ये शब्द कहती थीं. ''शैतान के धोखे से सुरक्षा के लिए मैं इन्हें एक मात्र अल्लाह के शरण में देती हूँ। अपने पति की मृत्यु के शोक और बच्चे के जन्म के स्वागत की प्रसन्नता के बीच आमिना (रजि0) बार-बार कहती थीं कि इस गर्भ के साथ आश्चर्यजनक निशानियाँ बारम्बार घटित होती रहीं और इसके पश्चात असाध

ारण रूप से बच्चे का जन्म पीडाहीन रहा।

मरुस्थल

अनाथ हजरत मुहम्मद (सल्ल0) चार वर्षों तक दाई हलीमा (रजि0) की देख-रेख में अरब मरुस्थल के बनु साद (साद की सन्तान) बददु कबीले के साथ रहे। उन्होंने बददु लोगों के साथ बददु जीवन व्यतीत किया. जो कि अत्यन्त निर्जन और कठोर प्राकृतिक वातावरण था. जिसके चारो ओर जहाँ तक दिखाई देता क्षितिज ही नजर आता. जिससे मन में मनुष्य की दुर्बलता का अनुभव होता और मनन-चिन्तन की अभिलाषा और एकान्तवास की इच्छा जागृत होती। यद्यपि वह नहीं जानते थे कि वह उस पहली परीक्षा से गुजर रहे हैं जिसे उनके लिए उनके अल्लाह ने निर्धारित किया है. और अल्लाह ने उन्हें अपना पैगम्बर चना है और वही उस समय उनका शिक्षक. उनका पालनहार और उनका स्वामी था।

कुरआन मजीद में एक अनाथ के रूप में उनकी विशेष दशा को याद दिलाया गया है और मरुस्थल के जीवन में उन्हें जिन आध्यात्मिक शिक्षाओं को प्राप्त करने का अवसर दिया गया था उसे याद दिलाया गया है:

''क्या ऐसा नहीं कि उसने तुझे अनाथ पाया तो ठिकाना दिया। और तुम्हे मार्ग से अपरिचित पाया तो मार्ग दिखाया। और तुम्हें निर्धन पाया तो समृद्ध कर दिया। अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना. और जो माँगता हो उसे न झिडकना. और जो तम्हारे पालनहार की अनकम्पा है उसे बयान करते रहो।''

(कुरआन 93:6-11)

कुरआन की इन आयतों में अनेक शिक्षाएँ हैं: भविष्य के पैगम्बर के लिए अनाथ और निर्धन होना वास्तव में पैगम्बरी की प्रारम्भिक दीक्षा थी. इसके कम से कम दो कारण हैं। पहली शिक्षा वास्तव में वह दुर्बलता और विनम्रता थी जिसे उन्हें अपने प्रारम्भिक बचपन से ही प्राकृतिक रूप से अनुभव करना था। इस दयनीय दशा में उस समय और वद्धि हो गयी जब आपकी माँ का देहान्त छः वर्ष की आय में ही हो गया। इस दशा ने

उन्हें पूर्णतः अल्लाह पर निर्भर छोड दिया। लेकिन उन्हें जनता के सर्वाधिक निर्धन लोगों से निकट भी कर दिया। कुरआन उन्हे याद दिलाता है कि उस दशा को उन्हें जीवनपर्यन्त कभी नहीं भूलना चाहिए और विशेष रूप से इस पैगम्बरी के अभियान में तो और भी नहीं भूलना चाहिए। आपको अनाथ और निर्धन कर दिया गया था इसीलिए आपको याद दिलाया गया और आपको आदेश दिया गया कि दुर्बल और कमजोर और निर्धनों को कभी न भूलें। पैगम्बरी के अनुभव के लिए आदर्श प्रकृति को देखते हुए इन आयतों से जो दूसरी आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त होती है वह प्रत्येक मनुष्य के लिए उपयुक्त है: किसी को अपने अतीत. अपनी परीक्षा की घडियों. अपने वातावरण और मूल को कभी नहीं भूलना चाहिए और अपने अनुभवों को अपने लिए और दूसरों के लिए सकारात्मक शिक्षा में परिवर्तित कर लेना चाहिए। अल्लाह उनको याद दिलाता है कि मुहम्मद (सल्ल0) का अतीत एक ऐसी पाठशाला है जिससे उन्हें लाभप्रद व्यवहारिक और ठोस ज्ञान उन लोगों की भलाई के लिए प्राप्त करना चाहिए जिनके साथ जीवन की कठिनाईयों और निर्धनता का उन्होंने अनभव किया था। क्योंकि वह स्वयं अपने अनभव से किसी भी व्यक्ति से बेहतर जानते हैं कि वह लोग क्या महसस करते हैं और क्या सहन करते है

प्रकति के माध्यम से शिक्षा

आप (सल्ल0) को मरुस्थल का जीवन इसलिए प्रदान किया गया था कि सृष्टि के सम्बन्ध ा में और कायनात (ब्रह्माण्ड) के तत्वों के सम्बन्ध में मनुष्य के दृष्टिकोण को निर्मित किया जा सके। जब मुहम्मद (सल्ल0) मरुस्थल में आये तो वह बदद्‌ जीवन शैली से उनकी समृद्ध मौखिक परम्परा और बोलने वालों (अरब) के रूप में उनकी ख्याति. से बोल-चाल की भाषा में अपनी कुशलता विकसित की. क्योंकि भविष्य में अन्तिम पैगम्बर को अपने शब्दों. अपनी धाराप्रवाह भाषा और अपने छोटे शब्द समूह के माध्यम से इस्लाम की सार्वजनिक शिक्षाओं को गम्भीरतापूर्वक प्रस्तुत करने की योग्यता उत्पन करना था।

महम्मद (सल्ल0) ने अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में प्रकति के साथ अपने

विशेष सम्बन्ध को विकसित किया। प्रकृति के साथ सम्बन्ध उनके मिशन के सा निरन्तर जुडा रहा। कायनात (ब्रह्माण्ड) ऐसी निशानियों से परिपूर्ण है जो सृष्टा अस्तित्व का अनुस्मरण कराती हैं और प्रत्येक वस्तु की तुलना में मरुस्थल. मनुष्य की बुद्धि को निरीक्षण. चिन्तन और अर्थ के परिचय के लिए अधिक खोल देती हैं। इस प्रकार कुरआन की अनेक आयतें सृष्टि की पुस्तक और उसकी शिक्षाओं का उल्लेख करती हैं। प्रत्यक्ष रूप से जीवनहीन मरुस्थल बारम्बार सचेत चेतना के लिए पनर्जीवन की ओर लौटने के चत्मकार की वास्तविकता को सिद्ध करता है।

करआन कहता है :

> *''निस्सन्देह आकाशों और पृथ्वी की संरचना में और रात और दिन के आने-जाने में और उन नौकाओं में जो मनुष्यों के काम आने वाली चीजें लेकर समुद्र में चलती हैं। और उस पानी में. जिसको अल्लाह ने आकाश से उतारा। फिर उससे मृत भूमि को जीवन प्रदान किया। और उसने भूमि में प्रत्येक प्रकार के जानवर फैला दिये। और हवाओं की गति और बादलों में जो आकाश और पृथ्वी के मध्य आदेश के आज्ञाकारी है. उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं''* (कुरआन. 2:164)
>
> *''और उसकी निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पडी हुई है: फिर ज्यों ही हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फफक उठी और फूल गयी। निश्चय ही उसने उसे जीवित किया. वही मुर्दों को जीवित करने वाला है. निस्सन्देह उसे हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है।''* (कुरआन. 41:39

मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों ने निश्चित रूप से आप दृष्टिकोण को दिशा प्रदान की और कायनात की निशानियों को समझने के लिए आपको तैयार किया।

अनेक वर्षो के बाद जब पैगम्बर (सल्ल0) मदीना में थे और विवादों और युद्धों का सामना कर रहे थे तो एक रात एक प्रकाशना (श्रति) के अवतरण ने अर्थ के एक और क्षितिज की ओर उनका ध्यान आकष्ट किया:

''आकाशों और पृथ्वी की रचना में और रात-दिन के एक के बाद एक आने में बद्धि वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं।'' (कुरआन 3:190)

एक रिवायत में कहा गया है कि जब यह आयत उन पर अवतरित हुई तं मुहम्मद (सल्ल0) पूरी रात रोते रहे। भोर के समय अजान देने वाले हजरत बिलाल नमाज के लिए अजान देने आये तो उन्होंने उन आँसुओं के बारे में पूछा. मुहम्मद (सल्ल0) ने उनको अपने दख और चिन्ता का अर्थ बताया और कहाः ''उस व्यक्ति के लिए विनाश है जो इस आयत को सने और इस पर चिन्तन न करे।''

अनाथ और उसका शिक्षक

मक्का में वापस आकर मुहम्मद (सल्ल0) दो वर्षों तक अपनी माता आमिना (रजि0) के साथ रहे। जब वह छः वर्ष के थे तो माता आमिना ने चाहा की वह मदीना में स्थित अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपने बेटे को परिचित करा दें। वह लोग वहाँ गये. लेकिन लौटते समय हजरत आमिना (रजि0) बीमार पड गयीं और अबवा नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गयी। उनको वहीं दफन किया गया। अब बिना माता और पिता के मुहम्मद (सल्ल0) पैगम्बर के रूप में अपने चुनाव. दुखों. कष्टों और मृत्यु से घिर गये। जिस बरकः नामक व्यक्ति ने उनके साथ मदीना की यात्रा की थी और जो आमिना का नौकर था. बच्चे को मक्का वापस लाया। उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब तुरन्त उन्हें अपने पालन-पोषण में ले लिया। वह निरन्तर अपने पोते को अत्यधिक प्रेम और विशेष सम्मान देते रहे। परन्तु दो वर्षों बाद उनका भी देहान्त हो गया।

मुहम्मद (सल्ल0) की कहानी एक कठिनाईयों की कहानी है जैसा कि करआन की इस आयत में इस बात पर बल देने के लिए इसे बार-बार कहा गया है

''अतः निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है। निस्सन्देह कठिनाई के साथ आसानी है।'' (करआन 94:5-6

आठ वर्ष की अल्पायु में मुहम्मद (सल्ल0) ने पिता की मृत्यु. नि¿ अकेलापन. अपनी माँ की मृत्यु और इसके बाद दादा की मृत्यु का अनुभव किया। इस मार्ग के साथ-साथ वह एक नियति की निशानियों का सामना जनता और परिस्थितियों के माध्यम से निरन्तर करते रहे. और इन परिस्थितियों ने साथ-साथ रहकर उनके विकास और शिक्षा में सहायता प्रदान की। अपनी मृत्यु शैया पर हजरत अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे और मुहम्मद (सल्ल0) के चाचा अबू तालिब से कहा कि इनकी देखभाल करें। हजरत अबू तालिब ने पिता के रूप में पालन-पोषण का मिशन उसी तरह पूरा किया जिस तरह एक पिता अपने बच्चे का पालन-पोषण करता है। कालान्तर में पैगम्बर निरन्तर या¿ करते रहते थे कि उनके चाचा और चाची फातिमा (रजि0) ने किस तरह उनको प्यार और संरक्षण प्रदान किया। *''निस्सन्देह कठिनाई के साथ आसानी है।''*

अपने जीवन की कठिनाईयों के साथ निश्चित रूप से पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के संरक्षण में रहे. वही अल्लाह उनका पालनकर्त्ता और उनका शिक्षक था ऐतिहासिक मान्यताओं से पता चलता है कि मक्का में मुहम्मद (सल्ल0) को मूर्ति-पूजा और त्यौहारों. भोजों या ऐसे विवाह जिनमे लोग शराब पीकर धुत रहते थे और जहाँ आत्मनियन्त्रण समाप्त हो जाता था. ऐसी तमाम परिस्थितियों में मुहम्मद (सल्ल0) को निरन्तर संरक्षण प्राप्त रहा। एक सायं आपने सुना कि मक्का में एक विवाह समारोह आयोजित होगा और आप उसमें सम्मिलित होना चाहते थे। उन्होंने बताया कि रास्ते में वह अचानक थकावट महसूस करने लगे. वह आराम करने के लिए लेट गये और नींद में चले गये। दूसरी सुबह सूरज की गर्मी ने आपको गहरी नींद से जगाया। प्रत्यक्ष रूप से यह एक मामूली घटना है. परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि पैगम्बर के शिक्षक ने अपने होने वाले पैगम्बर को आत्मनियन्त्रण की कमी और शराब में मदमस्त होने की लालसा से किस प्रकार बचाये रखा। अल्लाह सदैव उनके साथ रहा. वास्तविक रूप से उन्हे नींद की दशा में ला दिया और इस प्रकार उनको स्वयं अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति से बचाया और अल्लाह द्वारा संरक्षित हृदय में पाप करने अथवा ऐसी नैतिक कमियों से बचाया जो आकर्षण के परिणामस्वरुप उत्पन्न होती हैं. क्योंकि इन कमियों का होना उनकी आयु के बच्चे के लिए पूर्णतः प्राकृतिक था।

अगले वर्षों में मुहम्मद (सल्ल0) अपनी जीविका के लिए एक चरवाहा बन गये और आप मक्का के आस-पास अपने पशुओं को चराया करते थे। आपने अपने उस अनुभव को अपने साथियों को बताया कि किस तरह यह व्यवसाय सभी पैगम्बरों की प्रकृति से जुडा रहा हैः कोई ऐसा पैगम्बर नहीं जो चरवाहा न रहा हो. लोगों ने आपसे पछा कि ऐ अल्लाह के पैगम्बर. क्या आप भी चरवाहा थे? आपने उत्तर दियाः ''हाँ मैं भी''।

मुहम्मद (सल्ल0) ने एक चरवाहे के रूप में अकेलेपन. धैर्य. चिन्तन और सतर्क रहने का अनुभव प्राप्त किया। ऐसी योग्यताएँ सभी पैगम्बरों के लिए अपनी कौम में अपने मिशन को जारी रखने के लिए अनिवार्य थीं।

जैसा कि हमने देखा है मुहम्मद (सल्ल0) के साथ बचपन से ही निशानियाँ और परीक्षाएँ उनको शिक्षित करती रहीं और उन्हें उस मिशन के लिए तैयार करती रहीं। करआन कहता हैः

''क्या ऐसा नहीं कि हमने तुम्हारे सीना तुम्हारा लिए खोल दिया. और तुमपर से तुम्हारा बोझ उतार दिया. जो तुम्हारी कमर तोडे डाल रहा और तम्हारे लिए तम्हारे जिक्र को ऊँचा कर दिया

(कुरआन 94:1-4)

कुरआन के अधिकतर व्याख्याकारों के अनुसार ये आयतें मौलिक रूप से पैगम्बर को दिये गये तीन उपहारों का उल्लेख करती

1. उनके हृदय पर एक अल्लाह पर आस्था अंकित होन
2. पैगम्बर के रूप में चुना
3. और अन्त में परे मिशन के दौरान स्वयं अल्लाह द्वारा आपकी सहायत

2

पैगम्बरी की निशानियाँ

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के दादा हजरत अब्दुल मुत्तलिब ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में अपनी सम्पत्ति को क्षीण होते देखा था. और अबू तालिब जो अब अपने भतीजे के अभिभावक थे वह भी विशेष रूप से कठिन वित्तीय और आर्थिक परिस्थितियों से गुजर रहे थे। अतः मुहम्मद (सल्ल0) ने अल्पायु में ही अपनी जीविका स्वयं कमाना प्रारम्भ कर दिया था और वह सदैव अपने परिवार के सदस्यों की सहायता करने का प्रयास करते थे।

अबू तालिब एक व्यापारी थे। एक बार जब वह व्यापारिक यात्रा पर सीरिया जाने की तैयारी कर रहे थे तो पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनके साथ जाने की गहन इच्छा व्यक्त की यद्यपि ऐसी कठिन यात्रा करने के लिए आप बहुत छोटे थे. परन्तु अबू तालिब उनसे इतना अधिक स्नेह रखते थे कि वह उन्हें मना नहीं कर सके और आपको सीरिया ले जाने के लिए सहमत हो गये।

उनका व्यापारिक कारवाँ सीरिया के बसरा शहर में ठहरा। वहॉ पर एक बहीरा नाम के ईसाई भिक्षु थे। उन्होंने प्राचीन पुस्तकों में अन्तिम पैगम्बर के उदय के सम्बन्ध ा में पढ रखा था।

इस्लामी रिवायत में उल्लेख किया गया है कि बहीरा अधिकतर ईसाई‍ यहूदियों और प्रायद्वीप के हनीफ (हजरत इब्राहीम के एकत्ववादी) धर्म के लोगों की तरह अनिवार्य रूप से आने वाले पैगम्बर की प्रत्याशा में उसकी निशानियाँ तलाश कर रहे थे।

जब बहीरा ने कारवाँ को निकट आते देखा. तो उन्होंने देखा कि उस कारवाँ

के ऊपर. उसे धुप से बचाने के लिए बादल का एक टुकडा चला आ रहा है

इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने का निश्चय करते हुए बहीरा ने निर्णय लिया कि वह समस्त यात्रियों को भोजन के लिए आमन्त्रित करें. यद्यपि उस क्षेत्र के भिक्षुओं में यह परम्परा नहीं थी। उस कारवाँ के प्रत्येक सदस्य को सावधानीपुर्वक देखते हुए उन्होंने अपनी दृष्टि को अल्पायु मुहम्मद (सल्ल0) पर केन्द्रित कर दिया। उन्होंे मुहम्मद (सल्ल0) को एक तरफ बुलाया. और उन्होंने उनकी पारिवारिक दशा. उनर्क सामाजिक स्थिति तथा उनके स्वप्न के बारे में और इसी प्रकार के अनेक प्रश्न पुछे। उन्होंने अन्त में पुछा कि क्या वह अपनी पीठ दिखा सकते हैं और नवयुवक मुहम्मद (सल्ल0) सहमत हो गये। उनके कंधे की हड्डियों के बीच भिक्षु ने त्वचा में उभार देखा जिसे उसकी प्राचीन पुस्तकों में ''पैगम्बरी की मुहर'' के रूप में बताया गया था। उन्होंने मुहम्म (सल्ल0) के अन्दर पैगम्बरी की निशानियों को पहिचाना और इस तथ्य से तरन्त अवगत हो गया कि यह लडका अन्तिम पैगम्बर बनेगा

ईसाई भिक्षु बहीरा ने हजरत अबु तालिब से पुछा. ''आपका इस बच्चे से क्या रिश्ता है?'' उन्होंने उत्तर दिया. ''यह मेरा बेटा है'' बहीरा ने कहा. ''ऐसा नहीं हो सकता. इसका पिता जीवित नहीं हो सकता''। इसके बाद अब तालिब ने उसे बताया कि इस बच्चे के पिता का देहान्त हो चुका है

भिक्षु बहीरा ने कहा. ''कि यह बच्चा सम्पुर्ण मानव जाति का नायक है. अल्लाह इसके साथ एक सन्देश भेजेगा. जो कि सम्पुर्ण रचनाओं के लिए दया होगा''। अबु तालिब आश्चर्यचकित हो गये और पुछा. ''तुम यह कैसे जानते हो?'' बहीरा ने उत्तर दिया. ''जब आप लोग अकबा की दिशा से दिखाई दे रहे थे तो सभी पत्थर और पहाड स्वयं झुक गये थे। ये सब ऐसा कभी नहीं करते. सिवाय एक पैगम्बर के लिए। मैं इन्हें पैगम्बरी र्क मुहर से भी पहिचान सकता हुँ जो इनके कन्धे के नीचे एक सेब की आकृति की है''। बहीरा ने उन्हें परामर्श दिया कि अपने भतीजे के साथ तुरन्त वापस हो जायें और इनकी शत्रुओं से रक्षा करें। उसने कहा. ''अल्लाह की कसम. यदि इनको पहिचान लिया गया. तो अवश्य ही इनको हानि पहुँचायी जायेगी''। अबु तालिब ने उसके परामर्श का पालन किया और उनको कछ नौकरों के साथ मक्का वापस भेज दिया।

शिष्ट व्यक्तियों का संकल्प

ज़ुदान के बेटे अब्दुल्लाह जो कि तैम कबीले के सरदार एवं मक्के के कबीलों जो सुगन्ध
ा वाले लोगों के नाम से प्रसिद्ध थे. के दो बडे मोर्चों में से एक मोर्चे के सदस्य थे. ने उन सभी लोगों को अपने घर आमन्त्रित करने का निश्चय किया. जो इन झगडों को समाप्त करना चाहते थे और सम्मान और न्याय पर आधारित एक ऐसी सन्धि करना चाहते थे जो मात्र कबीले के राजनैतिक अथवा आर्थिक हितों पर ही आधारित न हों बल्कि उनसे हटकर सम्मान और न्याय के आधार पर एक सन्धि की जाये।

अनेक कबीलों के सरदारों और सदस्यों ने इस प्रकार संकल्प किया कि यः उनका सामूहिक कर्त्तव्य है कि वह कबीलाई लडाईयों में हस्तक्षेप करें और आक्रमणकारी के विरुद्ध पीडित का सहयोग करें. चाहे वह आक्रमणकारी कोई भी हों और उनकी सन्धि
ा उनको किसी भी अन्य कबीले से जोडती हो। यह संकल्प ''हिल्फुल फुज़ूल'' (शिष्ट व्यक्तियों का संकल्प) के नाम से प्रसिद्ध है। इस संकल्प अथवा सन्धि की विशेषता यह थी कि इसमें न्याय के सिद्धान्तों को सम्मान दिया गया था और परिवार और शक्ति के समस्त विचारों से ऊपर उठकर पीडित की सहायता करने का संकल्प लिया गया था। इस ऐतिहासिक बैठक में नवयुवक मुहम्मद और उनके भविष्य में होने वाले आजीवन मित्र अब बक्र ने भी भाग लिया था।

क़ुरआन के अवतरण के प्रारम्भ से काफी समय पश्चात पैगम्बर मह (सल्ल0) ने इस इस सन्धि की शर्तों को याद किया और कहा.

> *''मैं उस समय ज़ुदान के बेटे अब्दुल्लाह के घर पर उपस्थित था ज सन्धि को अन्तिम रूप दिया जा रहा था. यह बैठक इतनी उत्कृष्ट थी कि मैं इसमें प्रतिनिधित्व के बदले लाल ऊँटों का एक झुण्ड भी नहीं स्वीकार कर सकता. और यदि अब इस्लाम आने के बाद भी मुझे ऐसी सन्धि में भाग लेने के लिए कहा जाये तो मैं इसे सहर्ष स्वीकार करुँगा''।*

पैगम्बर (सल्ल0) ने मात्र सन्धि की शर्तों की उस समय प्रचलित कबायर्ल सन्धि समझौतों के दुरुपयोग के विपरीत इस सन्धि की उत्कृष्टता पर बल ही नहीं दिया अपितु आपने इसके अतिरिक्त यह भी कहा कि इस्लामी सन्देश के ध्वजावाहक के रूप में भी- एक मुस्लिम के रूप में भी- वह आज भी इसके महत्व को स्वीकार करते हैं और ऐसी वह बैठक में पुनः भाग लेने में संकोच नहीं करेंगे

फिर. महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि मुहम्मद (सल्ल0) स्पष्ट रूप से न्याय सिद्धान्तों से प्रतिबद्धता की वैधता और पीडित की सुरक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं. चाहे उन सिद्धान्तों के समर्थक इस्लाम के अन्दर से हों या इस्लाम के बाहर से हों।

''सच्चे''

कुरआन के अवतरण के प्रारम्भ से पहले और बाद का पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का जीवन उपरोक्त विश्लेषण की प्रासंगिकता को चित्रत करता है: आप (सल्ल0) की पैगम्बरी से पहले भी आपकी नैतिक विशेषताओं को स्वीकार किया जाता था जो ऐसी विशेषताओं के लिए एक कानून की पुष्टि करती थी

मुहम्मद (सल्ल0) एक चरवाहे के रूप में जीवन व्यतीत करने के बाद ए व्यापारी बने और आपने अपनी ईमानदारी और योग्यता में ख्याति अर्जित की. जिसे मक्का के सम्पर्ण क्षेत्र में स्वीकार किया जाता था।

जब मुहम्मद (सल्ल0) ने प्रौढता की आयु में प्रवेश किया तो अल्लाह ने स्वयं ही अज्ञानताकाल से फैली हुई बुराईयों से आपकी रक्षा की। आप (सल्ल0) बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे और गर्व और घमण्ड को पसन्द नहीं करते थे। आप निर्धनों. अनाथों और विधवाओं से सहानुभूति रखते थे और उनकी सहायता करके उनके कष्टों में भागीदार बनते थे। आपकी ख्याति एक सत्यनिष्ठ. सदाचारी. सज्जन प्रकति कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में थी

आप सभी बुराईयों जैसे जुआ. शराब और अश्लीलता से बचते थे। सदैव झगडों से अपने आप को दूर रखते थे और आपने कभी किसी को न तो अपशब्द कहे और न किसी को बरा-भला कहा। इसीलिए आप ''अस-सादिक'' (सच्चे) के नाम से प्रसिद्ध थे।

''विश्वसनीय''

व्यापारी कारवाँ के नायक के रूप में मुहम्मद को एक नयी संज्ञा अल-अमीन (अमानतदार) मिली। संयोगवश अंग्रेजी शब्द आमीन भी इसी धातु से निकला है जिसे प्रार्थना के अन्त में प्रयोग किया जाता है. जो सहृदय स्वीकृति का प्रदर्शन है। मक्का का प्रत्येक व्यक्ति धनी एवं निर्धन. स्त्री. पुरुष अपनी धनराशि और बहुमूल्य वस्तुएँ हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के घर सुरक्षित धरोहर के रूप में रखते थे। इस भूमिका में मुहम्मद (सल्ल(विश्वसनीयता और सतर्क ईमानदारी ने ही आपकी ख्याति अमानतदार व्यक्तित्व के रूप में कर दी थी।

आपके ऊपर सदैव दो लडने वाले पक्षों के बीच में मध्यस्थ के रूप में विश्वास किया जाता था। अली (रजि0) बिन अब तालिब का कथन है. ''वह सभी लोग जो आपके निकट आते आपसे प्यार करते''।

विवाह

मक्का के सर्वाधिक धनवान व्यापारियों में एक महिला खदीजा (रजि0) थीं जो विधवा थीं। वह एक ईसाई भिक्षु वरका की रिश्ते की बहन थीं। वह एक युवक मुहम्मद (सल्ल0) के सम्बन्ध में सुना करती थीं. जो एक ''ईमानदार. पारदर्शी एवं योग्य'' व्यक्ति थे। अतः उन्होंने निर्णय लिया कि उनकी परीक्षा ली जाये। खदीजा (रजि0) ने अपने प्रतिनिधि के माध्यम से महम्मद (सल्ल0) को कछ सामान ले जाकर सीरिया में बेचने को कहा। हजरत

खदीजा ने इस व्यापार में सफल होने पर दोगुना कमीशन का वचन भी दिया। मुहम्मद (सल्ल0) ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और हजरत खदीजा (रजि0) के एक दास मैसरः के साथ व्यापारिक यात्रा पर निकले। सीरिया में. मुहम्मद (सल्ल0) ने इस प्रकार वाणिज्य व्यापार की व्यवस्था की जिसके कारण खदीजा (रजि0) को दने से अधिक लाभ हआ।

कारवाँ के लौटने के पश्चात खदीजा (रजि0) ने धैर्यपूर्वक मैसरः के माध्यम से यात्रा का विवरण सुना. जिसने उस युवक के व्यक्तित्व और व्यवहार का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया था जिसकी आयु लगभग 25 वर्ष थी। मैसरः ने उन्हें बताया कि यात्रा के दौरान मुहम्मद (सल्ल0) की प्रकृति और व्यवहार में उसने अनेक निशानियों अवलोकन किया है जिससे प्रमाणित होता है कि वह अन्य व्यक्तियों जैसे नहीं हैं। इसके बाद हजरत खदीजा (रजि0) ने अपनी एक सहेली नुफैसा से कहा कि वह मह (सल्ल0) से सम्पर्क करके मालूम करें कि क्या वह विवाह में रुचि रखते हैं

मुहम्मद (सल्ल0) ने नुफैसा को उत्तर दिया कि विवाह उनके आर्थिक सामर्थ्य से बाहर है। नुफैसा ने हजरत खदीजा के नाम का उल्लेख किया और बताया कि उनके साथ वह ''प्रतिष्ठा. वंशानुक्रम. सौन्दर्य एवं सम्पत्ति'' प्राप्त कर सकते हैं और उस खदीजा (रजि0) से विवाह का औपचारिक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया। उनके शब्द इस प्रकार थेः उन्होंने अपने पत्र में लिखा. 'ऐ मेरे चाचा के बेटे' ''मैं आपको हमारे सम्बन्धों के कारण पसन्द करती हूँ और आपके लोगों में आपकी प्रतिष्ठा. आपकी विश्वसनीयता सदचरित्र एवं सच्चाई के कारण भी''। मुहम्मद (सल्ल0) ने उत्तर दिया कि उन्हें यह प्रस्ताव पसन्द है परन्तु अपनी आर्थिक दशा के कारण वह ऐसे विवाह बन्धन पर विचार नहीं कर सकते। नुफैसा ने परामर्श दिया कि मामलात आप उसके ऊपर छोड दें. वह सामंजस्य स्थापित कर देंगी। तब नुफैसा ने मुहम्मद (सल्ल0) का विचार विवाह के पक्ष में होने की सूचना खदीजा (रजि0) को दी। हजरत खदीजा (रजि0) ने मुहम्मद (सल्ल0) को अपने घर आमन्त्रित किया और विवाह का प्रस्ताव किया. जिसे आपने स्वीकार कर लिया। आपके सगे-सम्बन्धियों और परिवार के लोगों ने प्रस्तावित विवाह पर सहमति व्यक्त की।

हदीसों से ज्ञात होता है कि विवाह के समय हजरत खदीजा (रजि0) की आय

40 वर्ष थी। उनकी पहली सन्तान कासिम नाम का एक बेटा पैदा हुआ जो मात्र दो वर्ष तक जीवित रहा. इसके बाद जैनब (रजि0). रुकय्या (रजि0). उम्मे कुलसुम (रजि0 फातिमा (रजि0) और अन्त में अब्दुल्लाह पैदा हुए जिनकी दो वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले ही मृत्यु हो गयी। इस अवधि के दौरान पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने दास जैद बिन हारिसा को स्वतन्त्र करने और उन्हें बेटे के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। हजरत जैद को आपकी पत्नी हजरत खदीजा ने (रजि0) ने कुछ ही वर्षों पहले आपको उपहार के रूप में दिया था। अपने बेटे अब्दुल्लाह की मृत्यु के बाद आपने अपने चाचा अबू तालिब की सहायता उनके बेटे और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चचेरे भाई अली (रजि0) को अपने घर में लेकर करनी चाही. जो गंभीर वित्तीय संकट में घिरे हुए थे और एक बडे परिवार के बोझ से लदे हए थे। भविष्य में हजरत अली का विवाह हजरत महम्मद (सल्ल0) की बेटी हजरत फातिमा (रजि0) से हो गया।

दत्तक पत्र

हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के दत्तक पुत्र हजरत जैद (रजि0) की कहानी अनेक कारणों से रुचिकर है। खदीजा के दास बनने और फिर उसके बाद मुहम्मद (सल्ल0) के दास बनने से पहले हजरत जैद को युद्ध में कैद किया गया था और उन्हें कई बार बेचा गया था। आप पैगम्बर की सेवा में कई वर्षों तक रहे।

यह सुनने के बाद कि जैद मक्का में हैं. उनके पिता और चाचा तुरन्त मक्का की ओर जैद को ढूँढने के लिए. और उन्हें अपने कबीले में वापस लाने के लिए चल पडे। उनको ज्ञात हुआ कि जैद मुहम्मद (सल्ल0) के घर हैं अतः वह मुहम्मद (सल्ल0) के पास आये और जैद (रजि0) को आपसे खरीद कर वापस लेने का प्रस्ताव किया। हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने इसके उत्तर में परामर्श दिया कि जैद (रजि0) को इस सम्बन्ध में स्वयं चुनाव करने का अवसर दें: यदि वह अपने पिता और चाचा के साथ वापस जाने का निर्णय लेते हैं तो आप (सल्ल0) बिना किसी मआवजे के उन्हें जाने देंगे. परन्त इसके विपरीत

यदि जैद अपने स्वामी के साथ ठहरना चाहेंगे तो इनके रिश्तेदारों को इनकी पसन्द को स्वीकार करना होगा। उन दोनों ने सहमति व्यक्त की और वह दोनों जैद से उनकी इच्छा के सम्बन्ध में पूछने गये। उन्होंने निर्णय लिया कि वह अपने स्वामी के साथ रहेंगे और उन्होंने अपने सम्बन्धियों को बताया कि वह महम्मद (सल्ल0) से दर रहने की तलना में दासता को पसन्द करते हैं।

अतः वह अपने स्वामी के साथ ही रहे जिन्होंने तुरन्त उनको स्वतन्त्र कर दिया और सार्वजनिक घोषणा कर दी कि जैद (रजि0) अब उनके बेटे समझे जायेंगे और यह कि अब उन्हें मुहम्मद का पुत्र जैद कहा जायेगा और जैद उनसे विरासत प्राप्त करेंगे। यह नाम (जैद पुत्र मुहम्मद) उस वक्त तक जारी रहा जब यह वह्य उतरी कि सभी दत्तक पुत्र अपने परिवार के नाम से पहिचाने जायेंगे यदि उनके परिवार का नाम ज्ञात हों (कपया देखिये कुरआन 33: 45)

यह कहानी-- जैद (रजि0) का मुहम्मद (सल्ल0) का दास के रूप में रहने को अपने पिता के साथ जाने पर वरीयता देना- हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के उभरते हु व्यक्तित्व में एक और पहलू की वृद्धि करती है और वह्य के अवतरण के प्रारम्भ से पहले मुहम्मद (सल्ल0) के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ वर्णन करती है। साधारण जीवन. स्तुति करने वाला एवं विनम्र व्यक्तित्व. परन्तु व्यापार में ईमानदार और योग्य. आ महिलाओं. पुरुषों और बच्चों के साथ निरन्तर सम्मानपूर्ण व्यवहार रखते. जो इसके बदले में आभार और गहरा प्रेम प्रकट करते। आप अस्सादिक (सच्चे) थे अपने शब्दों के अनुसार सच्चे: आप अल-अमीन थे. एक विश्वसनीय और भरोसेमंद और प्रतिष्ठित व्यक्ति आपके चारो ओर ऐसी निशानियाँ दिखायी देती जो आपके भविष्य का वर्णन करतीं: जो आपके अदभत और प्रभावशाली व्यक्तित्व की ओर संकेत करती थी। आप असाधारण मानव गणों से परिपर्ण थे।

बरे कर्म

मुहम्मद (सल्ल0) के पैगम्बर बनने से पहले की दुनिया की विशषताएँ ये थीं कि अरब कबीले एक दुसरे पर वर्चस्व प्राप्त करने के लिए आपसी द्वेष. लडाईयाँ. तच्छ मामलों पर रक्तपात. दुराचार. बर्बरता एवं अन्धविश्वास में लिप्त थे।

मानव जाति के लिए. विशेष रूप से कमजोर वर्ग एवं महिला जाति के लिए कोई आदर भाव न था। महिलाओं को पुरुष के भोग विलास के लिए प्रयुक्त की जाने वाली वस्तु समझा जाता था। उस समय पुत्री का जन्म एक लज्जापर्ण विषय होता था तथा उसे स्वयं उसके पिता द्वारा जीवित दफन कर दिया जाता था।

करआन में सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

''और जब उनमें से किसी को पुत्री के जन्म की शुभ सुचना दी जाती थी. उसका चेहरा काला पड जाता और वह दुख में डुब जाता''। (कुरआन 16:58)

उस समय के प्राचीन अरब समाज के सामने हत्या और लुट एक बडी समस्या थी। उत्पीडन व हिंसा कोने कोने में फैली हुयी थी। इस तरह. मानवता अन्धकार व अज्ञानता में ग्रस्त थी. पीडा से कराह रही थी व उत्पीडन. अन्याय. वंचना एवं नैतिक क्षय से त्रस्त थी।

करआन मजीद उपरोक्त बुराईयों का वर्णन इस प्रकार करता है:

''थल और जल में बिगाड फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से. ताकि अल्लाह स्वाद चखाये उनको उनके कछ कर्मों का. संभवतः वह रुक जायें''।

(करआन 3

तीक्ष्ण बद्धि

एक अन्य घटना पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की तीक्ष्ण बुद्धि का अवलोकन कराती जिसका उपयोग आप सम्मान की सेवा और लोगों और विभिन्न परिवारों के बीच शान्ति

स्थापित करने के लिए करते थे।

जब अचानक आई बाढ ने काबा की बुनियादों को हिला दिया और दीवारों में दरार डाल दी तो पुराना ढाँचा नीव तक ढाँ दिया गया: तो कुरैश ने अल्लाह के घर काबा के पुनर्निमाण का निर्णय लिया। उन्होंने काबा का निर्माण किया यहाँ तक कि उस ऊँचाई तक पहुँचे. जहाँ काला पत्थर (यह काला पत्थर जिसे अरबी में हजर-ए असवद् कहते हैं जो मुसलमानों का एक प्राचीन अवशेष है. जिसका सम्बन्ध इस्लामी मान्यता के अनुसार आदिकाल अर्थात हजरत आदम और माँ हौवा से जुड जाता है. यह काबे के पूर्वी कोने की दीवार में रखा हुआ है।) पूर्वी कोने की दीवार में पुनः लगाना था। इस बिन्दु प· पहुँचकर मक्के के विभिन्न वंशों के बीच इस काले पत्थर को पुनः दीवार में प्रतिष्ठित करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए गंभीर विवाद उत्पन्न हो गया। कुछ लोग लगभग यहाँ तक पहुँच गये कि वह इस सौभाग्य को कौन प्राप्त करे उसका निर्धारण हथियारों से करना चाहते थे।

उनमें से एक बुजुर्ग व्यक्ति ने परामर्श दिया कि इस मामले का फैसला उस व्यक्ति से करने के लिये कहा जाये जो काबे के पवित्र स्थल में प्रातः सबसे पहले प्रवेश करे। और इस विचार पर सर्वसम्मति हो गयी।

मुहम्मद (सल्ल0) पहले व्यक्ति थे जो उस पवित्र स्थान पर प्रातः सबसे पहले पहुँचे। मुहम्मद (सल्ल0) के खानदान के बुर्जुग प्रसन्न थे कि सौभाग्य ने इस विवाद पर मध्यस्थता के लिए उन्हें चुना हैं। उन्होंने (सल्ल0) उन सब का परामर्श सुना और एक कपडा लाने के लिए कहा। उन्होंने पत्थर को उस कपडे पर रख दिया और प्रत्येक कबीले के मुखिया से कहा कि कपडे के किनारों को पकड लें और एक साथ मिलकर पत्थर को उठायें। जब उन्होंने निर्धारित ऊँचाई तक उठा लिया तो पैगम्बर (सल्ल0) ने निर्धारित स्थान पर उसे स्वयं रख दिया। इससे सभी कबीले सन्तष्ट हो गये. इसलिए कि इस तरह किसी की उपेक्षा नहीं हुई।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा इस प्रकार अकस्मात विवेकपूर्ण युक्ति ने प्रत्येक कबीले के स्वाभिमान में सामंजस्य स्थापित कर दिया। कालान्तर में अपने मिशन के दौरान उनके विवेक के इस विशेष गण के प्रकटीकरण ने प्रथम मस्लिम समदाय की एकता को

स्थापित करने की योग्यता को अक्सर चित्रित किया। हालाँकि उस समय व्यापक रूप से विभिन्न प्रवृत्तियों वाले सशक्त व्यक्तित्व वहाँ मौजुद थे।

शान्ति की खोज में आपने लगातार उसी तरह संघर्ष किया जिस तरह आपने कुरैश के विभिन्न कबीलों के मध्य इस कठिन परिस्थिति को सँभाला था। आपने दिलों को यह शिक्षा दी कि वह अपने अन्दर गर्व की भावनाएँ और अहंकारपूर्ण विचार प्रवेश न करने दें: मस्तिष्क को दिल पर मरहम लगाने वाले समाधान प्रस्तुत किया. जो अपने आप को सज्जनता और विवेक के साथ नियन्त्रित करना संभव बनाता है। वह्य का अवतरण प्रारम्भ होने से पहले. पैगम्बर के शिक्षक सर्वशक्तिमान अल्लाह. ने यह विशेष गुण उनको प्रदान किया था. यह विशेषता गंभीर हृदय और दिलों को छुने वाली भावनाओं के बीच एक समन्वय स्थापित करने और सभी परिस्थितियों में अपने आप को विवेकशील रखने का गुण. न सिर्फ अपने आप को बल्कि विभिन्न मनुष्यों के बीच भी।

जब मुहम्मद (सल्ल0) 35 वर्ष की आयु को पहुँचे तो आपने ऐसी प्रतिष्ठा स्थापित कर ली थी कि बनु हाशिम खानदान के लोग यह सोचने लगे थे कि वह अपने पुर्वजों की जिम्मेदारियाँ उठायेंगे और खानदान के नायक बनकर इस खानदान की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करेंगे।

अपने विवाह के बाद स्वयं आपकी गतिविधियाँ और आपके व्यक्तिगत गुण राजनैतिक और आर्थिक रूप से प्रकट होने लगे थे और आप अपनी बेटियों के लिए विवाह के प्रस्ताव प्राप्त करने लगे थे। उदाहरण के रूप में अपने चाचा अबु लहब की ओर से जो अपने दो बेटों उतबा और उसैबा का विवाह रुकय्या (रजि0) व उम्मे कुलसुम (रजि0) से करना चाहता था। परिवार का ताना-बाना इस आशा से बुना जा रहा था कि यदि महम्मद (सल्ल0) मखिया बन जाते हैं तो इससे लाभ के अवसर बढ जायेंगे।

सत्य की खोज

महम्मद (सल्ल0) स्वयं इस प्रकार के मामलों पर ध्यान नहीं देते थे। आप सार्वजनिक

मामलों में कम ही रुचि प्रकट करते थे। इस दौरान आपने (सल्ल0) अपना समय मक्का के निकट एक गुफा में एकान्तवास में जाकर व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया था। जब रमजान का महीना आता. वह हिरा की गुफा में कुछ दैनिक उपभोग का सामान लेकर जाते और वहाँ एकान्तवास में रहते और कभी-कभी अतिरिक्त भोजन सामग्री के लिए वापस आते। यह प्रक्रिया लगभग एक महीने चलती।

उस गुफा तक पहुँचने के लिए आपको एक छोटी पहाडी पर चढना पडता था और एक छोटी पहाडी के शिखर के दुसरी तरफ एक सँकरे रास्ते से होकर जाना पडता था। स्वयं यह गुफा पुर्णतः एकान्त में थी और इतनी छोटी थी कि वहाँ एक साथ दो व्यक्तियों का रहना भी कठिन था। गुफा के मुँह से कोई व्यक्ति वहाँ से बहुत नीचे स्थित काबा को देख सकता था. और काबा से आगे भी दिखायी देता था और जहाँ तक आँखें देख सकती थीं एक बंजर मैदान दिखाई देता था।

लोगों से दुर. प्रकृति की गोद में रहकर मुहम्मद (सल्ल0) शान्ति और जीवन के अर्थ व वास्तविकता की खोज कर रहे थे। आपने कभी मुर्ति-पुजा में भाग नहीं लिया था और आपने (सल्ल0) कभी उस क्षेत्र के कबीलों के विश्वासों और रीति-रिवाजों में भागीदारी नहीं की और आप (सल्ल0) अन्धविश्वासों और अन्याय से सदैव विरक्त रहे। आपको झुठे उपास्यों की मिथ्या से सुरक्षित रखा गया था चाहे यह आकतियों की पजा हो अथवा शक्ति और सम्पत्ति की पुजा।

आप पहले भी कुछ समय से अपनी पत्नी हजरत खदीजा (रजि0) को अपने उन सपनों के सम्बन्ध में बताया करते थे जो सच्चे सिद्ध होते थे और वह सपने आपके लिए परेशानी का कारण होते थे क्योंकि जब आप जागते थे तो वे सपने आपके ऊपर कठोर प्रभाव छोड जाते थे। आपको वास्तव में सच्चाई की तलाश थी क्योंकि आपके प्रश्नों के जो उत्तर आपके आस-पास मिलते थे उनसे आप सन्तुष्ट न थे। आपको इस सच्चाई का गहन आभास हो गया था कि आपको आगे सच्चाई की तलाश जारी रखनी है। आप (सल्ल0) ने स्वयं चिन्तन करने के लिए एकान्तवास का निर्णय लिया। आप (सल्ल0) चालीस वर्ष की आयु के निकट पहुँच रहे थे और आप (सल्ल0) आध्यात्मिक विकास के ऐसे बिन्द पर पहँच गये थे जिसमें अत्यन्त गहन आत्मनिरीक्षण आवश्यक रूप से अगला

कदम था।

हिरा की गुफा में अपने आप के साथ रहते हुए आपने अपने जीवन के अर्थ. पुथ्वी पर अपने अस्तित्व और जो निशानियाँ उनके जीवन में आती रहीं उनके सम्बन्ध में चिन्तन किया। आपके आस-पास जो वातावरण था वह आपको उस क्षितिज का स्मरण कराता रहा होगा जो आपने बचपन में मरुस्थल में देखा था. अन्तर अब यह था कि प्रौढता ने आपके मन को अनेक मौलिक प्रश्नों से भर दिया था।

पैगम्बर (सल्ल0) सच्चाई की खोज में लीन थे और यह आध्यात्मिक खोज प्राकृतिक रूप से उन आह्वानों और निशानियों की ओर ले जा रही थी जिस दिशा की ओर आपका जीवन केन्द्रित था। इन निशानियों ने आपकी रक्षा की थी और आपको शान्त किया था. विचार पहले आपके सपनों में आते फिर आपके जाग्रत जीवन से गुजरते और मन और हृदय जो प्रश्न पुछते वह प्रकुति ने जो क्षितिज प्रदान किया था उससे जुड जाते और इस तरह ये घटनाएँ मुहम्मद (सल्ल0) को जीवन के अर्थ के उच्चतम परिचय की ओर ले जा रहे थे जहाँ आपके एक मात्र पालनहार और शिक्षक से आपका सामना होना था। चालीस वर्ष की आयु में आपके जीवन का पहला चक्र पुरा हो रहा था।

उस समय जब आप रमजान के महीने में हिरा की गुफा की ओर सन् 610 ई0 में निकट पहुँच रहे थे तो आपने सबसे पहले आपको पकारती हई और अभिवादन करती हई ध्वनि सनी:

''अस्सलाम अलैक या रसलल्लाह''

(आपके ऊपर सलामती हो. ऐ अल्लाह के पैगम्बर)!

वह्य का प्रथम अवतरण

मुहम्मद (सल्ल0) एकान्त में. हिरा की गुफा में निरन्तर सत्य और जीवन के अर्थ की खोज करते रहे। अचानक फरिश्ता जिब्रील (अलै0) उनके समक्ष 21 रमजान की रात सोमवार के दिन. तदनुसार 10 अगस्त 610 ई0 को प्रकट हुए और आदेश दियाः ''पढो!'' मुहम्मद (सल्ल0) ने उत्तर दिया. ''मैं उन लोगों में से नहीं. जो पढ सके''। फरिश्ते जिब्रील ने उन्हें इतनी जोर से दबोच लिया कि वह मुश्किल से उसे सहन कर सके और फिर आदेश दियाः ''पढो!'' मुहम्मद (सल्ल0) ने फिर उत्तर दिया. ''मैं उन लोगों में से नहीं. जो पढ सके''। फरिश्ता जिब्रील ने उन्हें फिर जोर से दबोचा यहाँ तक कि आपका गला लगभग घुट रहा था और फिर तीसरी बार आदेश दिया. 'पढो!'' वही उत्तर आपने दुहराया. ''मैं उन लोगों में से नहीं जो पढ सके''। फरिश्ते ने उन्हें दबोचे हुए ही उच्चारण किया

> *''पढो. अपने पालनहार के नाम से. जिसने पैदा किया। पैदा किया मनुष्य को अलक (जमे हुए खून) से। पढो और तेरा पालनहार बहुत वरिष्ठ है। जिसने ज्ञान सिखाया कलम से। मनष्य को वह कछ सिखाया जो वह जानता न था''।*
>
> (कुरआन. 96: 1-5)

ये शब्द फरिश्ते जिब्रील (अलै0) द्वारा महम्मद (सल्ल0) पर उतारी गयी करआन की पहली आयतें थीं।

इन शब्दों का उच्चारण करने के बाद जिब्रील (अलै0) चले गये और महम्मद (सल्ल0) को गंभीर चिन्ता की दशा में छोड गये।

मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी पत्नी के पास वापस लौटने का निर्णय लिया। आप अपने घर अन्ततः अत्यन्त चिन्ता की स्थिति में पहँचे और कहाः ''मझे उढाओ! मझे

उढाओ!'' हजरत खदीजा (रजि0) ने आपको एक कम्बल में लपेटा और पूछा कि क्या मामला है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने विस्तारपूर्वक बताया. जो कुछ आपके साथ घटित हुआ था और आपने अपना भय प्रकट कियाः ''मेरे साथ क्या हो रहा है? मैं अपने सम्बन्ध ा में भयभीत हूँ''। खदीजा (रजि0) ने आपको सांत्वना देते हुए कहाः ''आपको डरने की कोई आवश्यकता नहीं. आराम कीजिए और शान्त हो जाइये। अल्लाह आपको किसी कठिनाई और अपमान में नहीं डालेगा. क्योंकि आप (सल्ल0) अपने परिवार के लिए दयालु हैं. आप सच बोलते हैं. जिनको आवश्यकता होती है उनकी आप सहायता करते हैं. आप अपने अतिथियों के लिए उदार हैं और आप प्रत्येक न्यायपर्ण उद्देश्य का समर्थन करते हैं''।

ईसाई भिक्षु वरकः

हजरत खदीजा (रजि0) ने अपने चचेरे भाई और एक ईसाई भिक्षु वरकः से परामर्श लेने के सम्बन्ध में विचार किया। वह उनके पास गयीं और उन्हें मुहम्मद (सल्ल0) के अनुभव के सम्बन्ध में बताया। वरकः उन निशानियों को समझ गये. जिनकी वह प्रतीक्षा कर रहे थे और निःसंकोच उत्तर दियाः ''उस हस्ती की कसम जिसके हाथ में वरकः के प्राण हैं. यह वही नामूस (उच्चतम साम्राज्य के भेदों का साथी. जो पवित्र सन्देश लाता है) मुहम्मद (सल्ल0) पर आया है. वही है. जो पैगम्बर मूसा (अलै0) पर आ चुका है। वास्तव में मुहम्मद (सल्ल0) इस जनता के पैगम्बर हैं''

कालान्तर में जब काबा के निकट वरकः की भेंट मुहम्मद (सल्ल0) से हुई तो उन्होंने यह भी कहाः ''आपको अवश्य झूठा घोषित किया जायेगा. आपके साथ दुर्व्यवहार किया जायेगा आप पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा और आप पर हमले किये जायेंगे। यदि मैं उस वक्त जीवित रहा. अल्लाह जानता है मैं इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए आपका समर्थन करूँगा!'' हजरत आयशा (रजि0) कहती हैं कि वरकः ने यह भी कहाः ''आपके लोग आपको निकाल देंगे!'' इससे पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को धक्का लगा और

उन्होंने पूछा. "क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे?"। वरकः ने उन्हें सचेत किया: "हाँ. वह वास्तव में ऐसा ही करेंगे! कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ. जो यह चीज लाया हो और उसके साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार न किया गया हो!"।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का मिशन अभी प्रारम्भ ही हुआ था और आपको अन्तिम सन्देश के मौलिक सिद्धान्तों को समझने का अवसर पहले ही दिया जा चुका था। इसके अतिरिक्त कुछ उन सच्चाईयों को समझने का अवसर दिया गया था जो लोगों के बीच में मानव इतिहास में विभिन्न भविष्यवाणियों के माध्यम से प्रस्तुत की गई थी।

खदीजा (रजि0) इस बात को समझ गयीं और वह महम्मद (सल्ल0) की सर्वाधि ाक सशक्त सहायक और समर्थक बन गयीं।

3
दिव्य सन्देश

वह्य अवतरण के प्रारम्भिक वर्षों में कुरआन के सन्देश ने चार मख्य अक्षों के इर्द-गिर्द धीरे-धीरे आकार लेना प्रारम्भ कर दियाः अल्लाह का एकत्व (Unity). कुरआन का स्थान. नमाज और मत्यु पश्चात जीवन। जो लोग सबसे पहले मुसलमान हुए उनका सम्पूर्ण और आमूल आध्यात्मिक परिवर्तन का आह्वान किया गया. और यह बात उनके अपने ही खानदान के विरोधियों ने भी भली-भाँति समझ लिया जिन्हें डर था कि यह नया धर्म समाज के विश्वासों और सामाजिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाला है।

सन्देश का प्रारम्भिक प्रसार

सबसे पहले इस्लाम धर्म ग्रहण करने वाली खदीजा (रजि0) थीं और मुहम्मद (सल्ल0) के मिशन के प्रथम दस वर्षों के दौरान एक विश्वस्त मित्र की भाँति आपकी सहयोगी बनी रहीं।

खदीजा (रजि0) के पश्चात उनके अपने परिवार के सदस्यों ने उसके बाद आपके मित्रों ने इस्लाम को स्वीकार किया। अली बिन अबू तालिब (रजि0) जो उ अभिभावकत्व में रहने वाले युवा चचेरे भाई थे. जैद आपके मुँहबोले बेटे थे. उम्मे ऐमन (रजि0) जो एक दाई थीं. जिन्होंने चार वर्ष की आय में मक्का वापस आने के बाद आपकी

देखभाल की थी और उनके जीवन-पर्यन्त मित्र अबु बक्र (रजि0). ये वह लोग थे जिन्होंने सबसे पहले आपके सन्देश की सत्यता को स्वीकार किया और इस विश्वास का अनुसरण करने की और इस्लाम से वफादारी की घोषणा कीः ''कोई उपास्य नहीं सिवाय अल्लाह के और महम्मद (सल्ल0) अल्लाह के पैगम्बर हैं''

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की अपनी विचारपूर्ण शिक्षाओं और अबु बक्र (रजि0) के दृढ निश्चयपूर्ण सहयोग के परिणामस्वरूप स्वरूप इस्लाम धर्म को स्वीकार करने वालों की संख्या धीरे-धीरे बढती रही। हजरत अबु बक्र (रजि0) सदैव इस नये धर्म के पक्ष में बोलने के लिए और इसके लिए कारवाई के लिए तत्पर रहते थे। वह दासों को उनके स्वामियों से खरीदते और उन्हें इस्लामी सिद्धान्तों के नाम पर स्वतन्त्र कर देते और समस्त मनुष्यों की समता पर बल देते। उन वर्षों के दौरान मक्का में मुहम्मद (सल्ल0) उपस्थिति. आपका व्यवहार और आपके आदर्श बडी संख्या में पुरुषों और स्त्रियों को आकर्षित कर रहे थे और वह लोग धीरे-धीरे नये धर्म इस्लाम को गले लगाते गये।

प्रथम तीन वर्षों के दौरान. कुरैश के मात्र तीस से चालीस व्यक्तियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। वह किसी एक मुसलमान के घर पर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से मिलते और इस्लाम की मौलिक शिक्षाएँ सीखते. जबकि अल्लाह की ओर से नये सन्देश निरन्तर आते रहे। जैसे-जैसे मक्कावासियों को इस्लाम के नये सन्देश के मौलिक तत्वों का ज्ञान होता गया और उन्होंने निर्धनों और नवयुवकों पर इसके प्रभावों का जायजा लिया तो आस-पास का वातावरण अधिक से अधिक प्रतिकूल होता गया।

प्रारम्भ से ही पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने संख्या के ऊपर गुणों को प्राथमिकता दी और संख्या की तुलना में उन लोगों के हृदय और मन की प्रकृति पर बल देने के वरीयता दी जिनको आपने सम्बोधित किया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उन विवादों और उस खतरे से अवगत थे जो आगे आने वाले थे। अतः आपने निर्णय लिया कि एक छोटे समूह को धीरे-धीरे ठोस शिक्षा देने पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आप यह भली-भाँति जानते थे कि आपको आलोचना. तिरस्कार और अतिसंभावी निष्कासन का सामना करना पडेगा। यही वह दृढ मुस्लिम समूह था जो कठिनाईयों और भय के समक्ष इस्लाम के लिए वचनबद्ध रहा।

तीन वर्षों तक. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम में गहन आस्था रखने वालों के पहले समूह का खामोशी से निर्माण किया। इस समूह की विशेष पहिचान यह थी कि इसने बिना किसी भेद-भाव के सभी कबीलों और सभी वर्गों के परुषों-स्त्रियों को एकत्रित किया।

वह्य अवतरण
एक आसमानी सम्प्रेषण

अल्लाह के पहले सन्देश ने मुहम्मद (सल्ल0) की चेतना को शिक्षा देने वाले अस्तित्व की सर्वोच्च हस्ती अल्लाह की ओर उन्मुख किया इसलिए कि उसने मुहम्मद (सल्ल0) को इस तरह सम्बोधित किया: जैसे *रब्बिक* अर्थात मुहम्मद (सल्ल0) का शिक्षक. उनका स्वामी। फरिश्ता जिब्रील ने सन्देश की पहली बुनियादी बातों को सम्प्रेषित किया. जिसमें अल्लाह के बोध (विश्वास के तत्व) में ज्ञान की केन्द्रीयता के साथ अच्छा व्यवहार बताया गया था। शुभ सूचनाओं की घोषणा के साथ मुहम्मद (सल्ल0) के साथ भविष्य में होने वाले विरोध के प्रति चेतावनी भी थी क्योंकि कोई भी धरती पर सच्चाई लेकर नहीं आया कि उसके विरुद्ध द्वेष. झूठ. मिथ्यारोप न किया गया हो। यहाँ तक कि खुद उनके अप सम्बन्धी जो उनसे प्यार करते थे वह उनसे नफरत करने लगे और इतनी नफरत कि वह उनकी हत्या करना चाहते थे।

फरिश्ता जिब्रील (अलै0) कई बार मुहम्मद (सल्ल0) के साक्षात प्रकट हुए पैगम्बर (सल्ल0) ने बाद में बताया कि उनके समक्ष जिब्रील कभी-कभी फरिश्ते के रूप में आते और कभी-कभी मनुष्य के रूप में। कभी-कभी मुहम्मद (सल्ल0) घण्टी जैर आवाज सुनते और अचानक वह्य अवतरित होने लगती और इसके लिए उन्हें इतना अधि ाक ध्यान केन्द्रित करना पडता कि आपका दम घुटने लगता। यह अन्तिम विधि विशेष रूप से कष्टकर थी इसके बावजूद इस प्रक्रिया के बाद वह जो वह्य प्राप्त करते उसको शब्दशः दहरा सकते थे। 23 वर्ष तक फरिश्ता जिब्रील उनके साथ रहे औ

परिस्थितिजन्य आवश्यकता होती तो वह आयतें और वह सूरतें अवतरित कर देते जो अब अन्ततः कुरआन में सम्मिलित हैं। कुरआन का यह अवतरण कुरआन में उस क्रम में नहीं है जिस क्रम में घटनाएँ घटित हुईं। कुरआन में वही क्रम है जिसे फरिश्ता जिब्रील ने मुहम्मद (सल्ल0) को संकेत में बता दिया था। रमजान के महीने में प्रतिवर्ष पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) फरिश्ता जिब्रील को जितना कुरआन अवतरित हो चुका होता उसे सुना देते और उसी क्रम में सुनाते जिस क्रम में जिब्रील ने उन्हें संकेत में बता दिया था। यह पुस्तक की सामग्री और स्वरूप को लगातार पष्टि करने जैसा था. जो शनैः शनैः 23 वर्षों तक पैगम्बर (सल्ल0) को मिलता रहा

शद्धिकरण और नमाज

एक दिन जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मक्का के निकटवर्ती क्षेत्रों में टहल रहे फरिश्ता जिब्रील (अलै0) एक दिन एक ऊँचे स्थान पर उनके पास आये और पहाडी के पास स्थित घास के मैदान पर अपनी एडी मारी और उसमें से एक फौव्वारा फूट पडा। फिर उन्होंने वजू किया ताकि मुहम्मद (सल्ल0) को नमाज की विभिन्न शारीरिक मुद्राओं. खडे होना. झुकना. सजदा और बैठना बार-बार अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बडा है) कहते हुए दिखाया और अन्त में अस्सलामु अलैकुम कहा और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनके निर्देशों का पालन किया। फिर फरिश्ता उनको छोडकर कर चला गया औ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने घर वापस आये और. आपने जो कुछ सीखा था उसे अपनी पत्नी हजरत खदीजा (रजि0) को सिखाया और दोनों ने मिलकर नमाज पढी।

अब धर्म वजू और नमाज पर आधारित हो गया और खदीजा (रजि0) के बाद सबसे पहले जिन लोगों ने इस धर्म को स्वीकार किया वह हजरत अली (रजि0) और हजरत जैद (रजि0) और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के मित्र हजरत अबू बक्र (रजि0) थे। मक्का के प्रारम्भिक दिनों में नमाज मात्र दो बार पढी जाती थी. प्रातः और सायं। बाद में समस्त मसलमानों के लिए पाँच समय की नमाज अनिवार्य हो गयी।

मक्का के केन्द्रिय स्थान में जिसका वातावरण निरन्तर विरोधी होता जा रहा था। पुरुष और स्त्री जो इस्लाम धर्म स्वीकार करते थे वह पूर्ण रूप से इसका प्रशिक्षण छिपते हुए प्राप्त करते थे: वह अल्लाह की उपासना करने के लिए रातों को उठते. कुरआन की आयतों को जबानी याद करते जिसे अल्लाह ने अपनी दयालुता और प्रत्येक रचना के हृदय के बीच एक विशेष सम्पर्क साधन के रूप में स्थापित किया था। यह गहन और तीक्ष्ण आध्यात्मिक प्रशिक्षण सबसे पहले इस धर्म में आस्था व्यक्त करने वालों की अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता का निर्धारण करती थी: वह पवित्र. अनवरत एवं दृढ प्रतिज्ञ होकर दया और शान्ति के स्वामी की उपासना करते। उसके अवतरित सन्देश का उच्चारण करते जो एक स्मरण और प्रकाश है. और अन्तिम पैगम्बर के आदर्श और शिक्षाओं का अनुसरण करते। इस्लामी सन्देश का सार. सर्वशक्तिमान अल्लाह के साथ विश्वास और प्रेम के निकट सम्बन्ध का पूर्ण रूप से प्रकटीकरण कराता है जो सर्वोच्च है. और इससे व्यक्ति और उसके रचयिता के बीच प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित होता है जिस अल्लाह ने एक पैगम्बर (सन्देशवाहक) के माध्यम से एक श्रेष्ठ व्यवहार को प्रकट करने के लिए चुना है औ जिसे उसने एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। बाद में अवतरित हुई तीन आयतें इस शिक्षा के उपयुक्त अर्थ को स्पष्ट करती हैं।

''और जब मेरे बन्दे (उपासक) तुमसे मेरे सम्बन्ध में पूछें. तो मैं निकट पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जबकि वह मुझे पुकारता है''।

(कुरआन 2:186)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) इस निकट सम्पर्क के केन्द्र में मार्गदर्शन करते

''कहो यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा। और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा''। (कुरआन 3:31)

वह लोग जो जीवन की सीमाओं से परे आसमानी उददेश्य के लिए प्रयास कर रहे हों उनके लिए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) आदर्श उदहारण हैं

''तुम्हारे लिए अल्लाह के सन्देष्टा में उत्तम आदर्श था. उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो और अधिकता से अल्लाह को याद करे''। (करआन 33:21)

4
दमन और उत्पीडन

वह्य अवतरण के प्रारम्भिक अनुभव के भय पर नियन्त्रण प्राप्त करने के बाद जब आप वह्य प्राप्त करने लगे तो आपने इस सन्देश को अपने निकट सम्बन्धियों तक पहुँचाया। हालाँकि अभी आपने लोगों के सामने सन्देश को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाये इसका निर्देश प्राप्त नहीं किया था. परन्त आपको घोर विरोध का सन्देह था. जैसा कि भिक्ष वरकः ने पहले ही बता दिया था।

सार्वजनिक आह्वान

तीन वर्षों के बाद. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के ऊपर एक वह्य अवतरित हई जिस
आपको आदेश दिया गया कि आप अपने आह्वान को सार्वजनिक कर दें:

"और अपने निकट सम्बन्धियों को डराओ"। (कुरआन 26:214)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने समझ लिया किया अब आपको अपने इस्लाम के सन्देश को अपने परिवार के उन सदस्यों तक पहुँचाना है जिनसे आपकी रिश्तेदारी है। एक अरब रीति के अनुसार. जब उन्हें किसी महत्वपूर्ण समाचार की घोषणा करनी होती तो लोग एक पहाडी पर चढ जाते थे। एक दिन पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) अल-सप

नामक पहाडी पर चढ गये और एक-एक करके कबायली सरदारों को पुकारा। यह समझते हुए कि आपको कोई आपात अथवा महत्वपूर्ण घोषणा करनी है आपको सुनने के लिए लोग पहाडी के दामन में एकत्र हुए। जहाँ वह खडे थे वहाँ से वह लोग घाटी में नहीं देख सकते थे जबकि वह घाटी मुहम्मद (सल्ल0) के सामने थी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कुरैश के लोगों को पुकारा और घोषणा की: *''क्या अगर मैं तुम्हें यह चेतावनी दूँ कि इस घाटी के नीचे हथियारबन्द घुडसवार तुम पर आक्रमण करने के लिए निकट आ चुके हैं तो तुम मुझपर विश्वास करोगे?''* उन्होंने लगभग एक स्वर में उत्तर दिया. ''अवश्य- आप भरोसे योग्य हैं और हमने आपको कभी झठ बोलते नहीं सना''।

फिर मुहम्मद (सल्ल0) ने आगे फरमाया: *''ठीक है. मैं तुमको यहाँ कट यातनाओं की चेतावनी देने आया हूँ! अल्लाह ने मुझे आदेश दिया है कि मैं अपने निकट सम्बन्धियों को डराऊँ। मैं तुम्हें इस संसार में बचाने की क्षमता नहीं रखता। और मैं आने वाले जीवन में सफलता की शुभ सूचना नहीं देता जब तक कि तुम एक अल्लाह : विश्वास न करो''।* आपने इसके अतिरिक्त फरमाया. *''मेरा स्थान उस व्यक्ति की तरह है जो दुश्मन सेना को देखता है और फिर अपने लोगों के पास दौडकर जाता है औ अचानक उनके ऊपर आक्रमण होने से पहले उन्हें चेतावनी देता है। और वह कहता है. सावधान हो जाओ!. सावधान हो जाओ!''।*

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चाचा अबू लहब का उत्तर त्वरित व कठोर था: ''तुम्हारा नाश हो! क्या यही बात थी जिसके लिए तुमने हमें एकत्र किया था?'' वह तुरन्त एकत्रित सरदारों को साथ लेकर चला गया। इस प्रकार अबू लहब उन लोगों को लेकर अलग हो गया जिन्होंने मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश को अस्वीकार किया और अत्यन्त कठोरतापर्वक उनका विरोध किया।

प्रारम्भ में अबू लहब उसकी पत्नी और मक्का के अन्य सरदारों ने पैगम्ब मुहम्मद (सल्ल0) को धन और सत्ता का लालच दिया. जिसमें यह प्रस्ताव भी सम्मिलित था कि यदि आप अपना सन्देश त्याग दें तो आपको (रजि0) बना दिया जायेगा. इस प्रकार आपको लालच देने का प्रयास किया गया। जब इस प्रस्ताव का प्रभाव आपके ऊपर नहीं

पडा तो उन्होंने यह आरोप लगाया कि आप किसी शैतान के प्रभाव में हैं. और कछ ने कहा कि आप पागल हो गये हैं

इसके बाद जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम का सन्देश प्रस्तुत करने के लिए खाने पर दो बार उनको बुलाया तो पहला प्रयास असफल रहा क्योंकि अबु लहब ने एक बार फिर हस्तक्षेप किया और उसने अपने भतीजे को बोलने से रोक दिया। दूसरे निमन्त्रण के दौरान मुहम्मद (सल्ल0) इस्लाम के सन्देश के तत्व को पहुँचाने में सफल रहे जिसको लोगों ने सुना और जिन सम्बन्धियों को आपने आमन्त्रित किया था उनमें से कछ लोगों ने गुप्त रूप से इसे स्वीकार कर लिया।

मुहम्मद (सल्ल0) अपने परिवार के सदस्यों तक निरन्तर यह सन्देश पहुँचाते रहे। उसके बाद आपके ऊपर कुरआन का एक और सन्देश अवतरित हआ जि· दढतापर्वक इस्लाम की तरफ प्रत्यक्ष आह्वान का आदेश दिया गयाः

''अतः जिस चीज का तुमको आदेश मिला है. उसको स्पष्ट सुना दो अं मश्रिकों (सत्य में मिलावट करने वालों) से मुँह मोड लो''। (कुरआन 15:94)

पैगम्बर का मिशन अब नये चरण में प्रवेश कर रहा था। अब इस्लाम का सन्देश सभी लोगों को सम्बोधित था. और अब तौहीद. (एक अल्लाह पर विश्वास). और कुरैश के बहुदेववाद के बीच अन्तर स्पष्ट करने की आवश्यकता थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने चारो तरफ विश्वस्त स्त्रियों और पुरुषों का समूह एकत्र कर लिया था। इनमें से कुछ लोग आपके रिश्तेदार थे लेकिन अनेक लोग विभिन्न सामाजिक वर्गों और कबीलों से आये थे और पिछले तीन वर्षों से आप इन लोगों को धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा उपलब्ध करा रहे थे। मसलमानों को सहनशीलता और वचनबद्धता के साथ भय और वहिष्करण का सामना था. और मक्के के समाज का विभाजन प्रारम्भ हो गया था।

प्रस्ताव एवं माँगे

इस्लाम का आह्वान अब सार्वजनिक हो गया था। यद्यपि इस्लाम धर्म में नये आने वाले. अरकम के घर जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे. वह संवेदनशील था। मुसलमान अपने सम्बन्धियों और अपने आस-पास के लोगों से बात करने में संकोच नहीं करते थे। समय व्यतीत होने के साथ-साथ कुरैश के सरदार. नया धर्म जो खतरा खडा कर रहा था. उस सम्बन्ध में अधिक जाग्रत होते जा रहे थेः यह उनके देवताओं और उनकी रीतियों के विरुद्ध प्रत्यक्ष विद्रोह था और यह निश्चित था कि अन्ततः यह उनकी सत्ता को खतरे में डाल देगा। इस्लाम के प्रचार के साथ अरब कबीलों के लोग काबा की परिक्रमा करने और उनकी मुर्तियों को श्रद्धांजलि देने से रुक जाते। इस प्रकार काबा के संरक्षक के रूप में जो सम्मान उन्हें प्राप्त था उससे वह वंचित हो जाते। इसके अतिरिक्त. विशेष रूप से मक्का की सम्पन्नता इन्हीं मुर्तियों पर आधारित थी जिनके ऊपर पुरे वर्ष आस-पास के कबीलों के लोगों द्वारा बडी मात्रा में चढावे चढाये जाते थे। तीर्थ-यात्रा के साथ-साथ व्यापार में भी वृद्धि होती थी और यह मक्का वालों के लिए आय का एक अच्छा स्त्रोत था क्योंकि नगर के लोगों के लिए धन कमाने का कोई और साधन न था।

कुरैश के सरदारों ने सबसे पहले पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चाचा के पास एक प्रतिनिधि मण्डल भेजने का निर्णय लिया. जो अब तक अपने भतीजे की रक्षा कर रहे थे। उन्होंने उनसे कहा कि मुहम्मद (सल्ल0) को समझायें कि वह अपने इस्लाम का सन्देश फैलाना छोड दें। इस्लाम को वह खतरनाक और अस्वीकार्य समझते थे क्योंकि वह उनके देवताओं और उनके पुर्वजों की विरासत के विरुद्ध सीधा आक्रमण कर रहा था। इन लोगों की पहली मुलाकात के बाद अबु तालिब ने कोई कारवाई नहीं की. तो वह पुनः आये और उन्होंने आग्रह किया कि यह मामला त्वरित कार्रवाही चाहता है। इसके बाद अबु तालिब ने अपने भतीजे को बुलाया और यह समझाने का प्रयास किया कि वह उनको लज्जा से बचाने के लिए अपनी गतिविधियों को रोक दें।

मुहम्मद (सल्ल0) का उत्तर दृढ था। *"ऐ मेरे चाचा. मैं अल्लाह की सौगन्ध खाता हूँ कि यदि वह मेरे दाहिने हाथ में सूरज रख दें और मेरे बायें हाथ में चाँद रख दें ताकि मैं इस उद्देश्य को छोड दूँ. तो मैं इसे उस समय तक नहीं छोड़ूँगा जब तक अल्लाह इसे सफल न बना दे अथवा इसके लिए मैं नाश हो जाऊँ!"* इस दृढ विश्वास के सामने अबू तालिब ने आग्रह नहीं किया: वास्तव में उन्होंने अपने भतीजे को स्थायी समर्थन का भरोसा दिलाया।

कुरैश सरदारों का एक नया प्रतिनिधि मण्डल मुहम्मद (सल्ल0) के पास आया और उन्हें सामान. धन. और सत्ता का लालच दिया। उन्होंने एक-एक करके सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया तथा स्पष्ट किया. कि वह केवल अपने मिशन में ही रुचि रखते हैं: वह लोगों का आह्वान करते हैं कि वह अल्लाह को पहिचानें और उसमें आस्था रखें चाहे इसका मल्य कछ भी चुकाना पडे।

"मैं किसी से वशीभूत में नहीं हूँ. न ही मैं तुम्हारे बीच सम्मान और सत्ता का अभिलाषी हूँ। अल्लाह ने मुझे तुम्हारे पास पैगम्बर बनाकर भेजा है. उसने मेरे पास एक पुस्तक अवतरित की है और मुझे आदेश दिया है कि मैं तुम्हारे लिए शुभ सूचना व चेतावनी प्रस्तुत करुँ। मैंने अपने स्वामी के सन्देशों को तुम तक पहुँचा दिया है और मैंने तुम्हें अच्छा परामर्श दिया है। मैं जो लाया हूँ तुम उसे यदि ग्रहण कर लोगे तो वर्तमान जगत में व परलोक में सफलता प्राप्त करोगे किन्तु यदि मैं जो लाया हूँ उसे अस्वीकार करोगे. तो उस समय तक मैं धैर्य के साथ प्रतीक्षा करुँगा जब अल्लाह हमारे बीच फैसला कर दे"।

उन शब्दों के साथ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) संभावित समझौते की सीमाएँ निध ार्रित कर रहे थे। उन्होंने अपने सन्देश के प्रचार को नहीं रोका और उन्होंने अल्लाह पर भरोसा रखा और इस संसार में इस निर्णय के परिणामों पर धैर्य रखने का निर्णय लिया। विरोध अब व्यवहारिक रूप से प्रारम्भ हो चका थाः कबीले के सरदार महम्मद (सल्ल0) का अपमान करते जा रहे थे और कहते थे कि यह पागल है. मजनँ है अथवा जादगर है।

करैश की प्रतिक्रिया

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपमान और व्यंग का सामना कर रहे थे। मक्का के लोगों ने आपसे चमत्कारों और प्रमाणों की माँग की और वह निरन्तर कुरआन से उल्लेख करते हुए उनका उत्तर देते रहे और यह कहते. "मैं और कुछ नहीं मात्र एक पैगम्बर हूँ!" दबाव बढता गया और विरोध के हिंसक प्रदर्शन में वृद्धि प्रतीत होने लगी।

- कुरैश के सरदार विशेष रूप से निर्धन मुसलमानों और उन लोगों पर आक्रमण करने लगे जो किसी कबीले से समझौते के माध्यम से सुरक्षित नहीं थे। अतः एक दास बिलाल (रजि0) अपने मालिक द्वारा मरुस्थल की धूप में बाँध दिये जाते और उनके पेट पर बडा पत्थर रख दिया जाता और उन्हें इस्लाम का तिरस्कार करने पर विवश किया जाता परन्तु बिलाल (रजि0) यह दुहराते रहतेः "अल्लाह एक है. अल्लाह एक है"। अबू बक्र (रजि0) ने बिलाल (रजि0) को खरीद लिया (जिस तरह उन्होंने अनेक अन्य दासों को खरीदा था) और उन्हें स्वतन्त्र कर दिया। बाद मैं हजरत बिलाल (रजि0) मदीना की मस्जिद के बाँगी (मुअज्जिन) बने. और उनके ईमान की शुद्धता. निष्ठा और उनके स्वर के सौन्दर्य के कारण उनका सर्वत्र सम्मान किया जाता था।
- 'इस्लाम के शत्रु' अबू लहब ने उत्पीडन और दमन की नयी श्रृंखला प्रारम्भ करने की पहल की और वह कष्टकारी कर्मों के अनगिनत पहलू से घृणा करने लगा और मुहम्मद (सल्ल0) के विरुद्ध घोर बुराई फैलाने लगा। जिसका प्रारम्भ उनके ऊपर पत्थर फेंकने से किया। अपने दो बेटों पर दबाब डाला कि वह अपनी पत्नियों रुकय्या (रजि0) और उम्मे कुलसूम (रजि0). जो पैगम्बर (सल्ल0) की बेटियाँ थीं. को तलाक दे दें और आपके दूसरे बेटे की मृत्यु पर आपको ऐसा व्यक्ति घोषित करके प्रसन्न होता कि यह व्यक्ति अपनी सन्तान से काट दिया गया। तारिक बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते हैं कि अबू लहब ने पैगम्बर का तिरस्कार करने पर भी बस नहीं किया. बल्कि उसने आप पर पत्थर फेंके यहाँ तक कि आपके टखने से खून निकलने लगा

• अब् लहब की पत्नी उम्मे जमील भी इस निर्दयी अभियान में साझीदार थी। उसने यह सिद्ध किया कि वह पैगम्बर (सल्ल0) से शत्रुता और घृणा में अपने पति से कम नहीं है। पैगम्बर को शारीरिक चोट पहुँचाने के लिए वह काँटों का बण्डल मूँझ की रस्सियों से बाँधकर उन रास्तों में फैला देती जहाँ से पैगम्बर के गुजरने की आशा होती।

वह एक बुरे व्यवहार वाली महिला थी और उसकी प्रवृत्ति बुरी थी और अपशब्द बोलती थीं। षडयन्त्र रचने में निपुण थी. और शत्रुता और घृणा की आग लगाती थी। करआन में उसे *''जलाने की लकडी ढोने''* वाली के नाम से सम्बोधित किया गया है।

• ''एक बार पैगम्बर (सल्ल0) काबा के निकट नमाज अदा कर रहे थे. तः इस्लाम के शत्रु अबु जहल अपने कुछ मित्रों के साथ बैठा हुआ था. उनमें से एक ने कहा. ''तुममें से ऊँट की अंतडियाँ लेकर कौन आयेगा और मुहम्मद (सल्ल0) जब दण्डवत की अवस्था में हों. तो उनकी की पीठ पर डाल देगा। उनमें से एक सबसे अभागा व्यक्ति उक्बा उठ खडा हुआ और अंतडियाँ ले आया। वह पैगम्बर (सल्ल0) के दण्डवत करने तक प्रतीक्षा करता रहा और जब आप सजदे में गये तब उसने उन्हें कन्धों के बीच डाल दिया।

यह देखकर उन्होंने हँसना और एक दूसरे पर गिरना शुरु कर दिया। पैगम्बर (सल्ल0) दण्डवत की अवस्था में पडे रहे और उन्होंने अपना सिर तब तक नहीं उठाया जब तक आपकी बेटी फातिमा (रजि0) ने आकर उनकी कमर से उस गंदगी को हटा न दिया।

• एक दिन जब पैगम्बर (सल्ल0) काबा में नमाज पढ रहे थे. वे लोग आपके पास आये और आपको घेर लिया. अक्बा आया अपने कपडे पैगम्बर की गर्दन में लपेट दिया और कठोरतापूर्वक उनका गला दबा दिया। कोई चीखते-चिल्लाते अबु बक्र (रजि0) के पास आया. ''अपने पैगम्बर को बचाइये''। अबु बक्र (रजि0) आये और अक्बा का कंधा पकड लिया और उसे पैगम्बर (सल्ल0) से अलग ढकेल दिया और कहाः ''क्या तुम एक व्यक्ति की हत्या मात्र इसलिए करना चाहते हो कि वह कहता हैः 'मेरा स्वामी अल्लाह है'?''

• एक बार अक्बा पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के निकट आया और अत द्वेषपूर्वक और निर्ल्लतापूर्वक आपके ऊपर क्रोधित हुआ. ''मैं कुरआन की किसी बात में विश्वास नहीं करता''। फिर वह पैगम्बर से अहंकारपर्वक व्यवहार करने लगा और आपके

ऊपर कठोरतापूर्वक हाथ उठाया. आपके कुर्ते को फाड दिया और आपके ऊपर थक लेकिन पैगम्बर का चेहरा उससे बच गया।

- इस्लाम के घोर शत्रु. अबु जहल ने अपने कुछ साथियों को सम्बोधित किया: ''ऐ कुरैश के लोगों! ऐसा लगता है कि मुहम्मद (सल्ल0) हमारे धर्म में बुराइयाँ निकालते रहने. हमारे पूर्वजों का अपमान करने और हमारी जीवन शैली की प्रतिष्ठा घटाने का निश्चय कर लिया है। मैं अपने देवता को गवाह बनाकर सौगन्ध खाता हूँ कि मैं एक बडा पत्थर लेकर आऊँगा और मुहम्मद (सल्ल0) जब सजदे में होंगे तो उसे उनके सिर पर गिरा दूँगा ताकि तुम्हें इनसे सदैव के लिए छुटकारा मिल जाये। मुझे इसका कोई भय नहीं कि उसके खानदान के लोग इसके उपरान्त क्या करेंगे''। अभागे श्रोताओं ने उसकी योजना का अनुमोदन किया और उसे प्रोत्साहित किया कि वह इस इरादे को निर्णायक कारवाई का व्यवहारिक रूप दे।

अगली सुबह अबु जहल पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के काबा के पास नमाज पढने के लिए आने की प्रतीक्षा करता रहा। करैश के लोग अपने सभागारों में समाचार के लिए प्रतीक्षारत थे।

जब पैगम्बर (सल्ल0) सजदे में गये. अबु जहल एक बडा पत्थर का टुकडा लिए हुए आगे बढा. ताकि अपनी शरारतपूर्ण नीयत को व्यवहार में लाये। जैसे ही वह पैगम्बर (सल्ल0) के निकट हुआ वह भयभीत होकर पीछा मडा. थरथराते हुए और उसके हाथ तने हुए थे. जबकि पत्थर गिर पडा।

जो लोग यह दृश्य देख रहे थे तुरन्त यह पूछते हुए आगे बढे कि क्या हो गया। उसने जबाव दिया: ''जब मैं निकट गया. एक ऊँट जिसका आकार असाधारण था और जिसके दाँत डरावने थे. उसने मुझे रोका और लगभग उसने मुझे निगल लिया''। इब्ने इस्हाक रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने इस घटना के सन्दर्भ में टिप्पणी करते हुए फरमाया: ''वह जिब्रील थे यदि अब जहल और निकट आता तो वह उसे मार डालते''।

मीडिया का प्रहार
विचार स्वतन्त्रता का उपयोग व दरुपयोग

पूर्व-इस्लामी दौर में सूचना-तन्त्र वर्तमान समय की भाँति विकसित न था अथवा यह कहा जा सकता है कि मौजूद ही नहीं था। उस युग में न तो प्रिंट मीडिया था और न इलेक्टानिक मीडिया। परन्तु इसके कारण लोगों की जबाने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और उनके लाये हुए इस्लाम के सन्देश के विरुद्ध निन्दापूर्ण भाषा बोलने से नहीं रुकती थीं। वहाँ ऐसे कवियों की बिल्कुल कमी नहीं थी जो मक्का के चारों तरफ मँडराते थे। जो ऐसी कविताएँ लिखते और पढते थे जो पैगम्बर और इस्लाम के लिए अपमानजनक थीं। ये कविताएँ और कछ नहीं बल्कि पैगम्बर को निशाना बनाते हुए चुनी हुई गालियाँ होती थीं।

इतिहास उस समय के कवियों का वर्णन करता है जो पैगम्बर (सल्ल0) के चरित्र हनन में लिप्त थे। कअब बिन जुहैर. हारिसा बिन तलातिल. हुबैरा बिन अबी बहब हुवैरिस बिन नफीज और अब्दुल्लाह बिन हन्जल कवियों में से कुछ नाम हैं। जो अपने काव्य कौशल का उपयोग आध्यात्मिकता में करने की बजाए पैगम्बर की शब्द छवि पर धब्बा लगाने के लिए इसका दुरुपयोग करते थे।

कुरैश के सरदार इन कवियों के लिए एक समारोह का आयोजन करते थे जहाँ वे इस्लाम विरोधी व पैगम्बर विरोधी गीत गाया करते। ये सिलसिला इतने पर नहीं रुका। अब्दुल्लाह बिन हंजल की दासी. कर्तना. अबू जहल के बेटे इकरिमा की दासी सारा कवियों के इस्लाम विरोधी व पैगम्बर विरोधी कविताओं पर नृत्य करती थीं। कुरैश के मदिरापान के समारोहों में इस प्रकार के कृत्य सामान्य थे। घटिया और अपशब्द युक्त कविताएँ पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथियों को गंभीर आघात पहँचाती थीं और यह उनके लिए एक मानसिक व मनोवैज्ञानिक यातना थी।

जैसा कि कुरआन में कहा गया है. ''प्रत्येक कठिनाई के बाद आसानी आती है''. इससे पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को अत्यन्त शान्ति प्राप्त होती थी। कुछ ही वर्षो बाद महान कवि कअब और हस्सान बिन साबित ने इस्लाम धर्म को गले लगा लिया। कवि हस्सान के द्वारा इस्लाम धर्म को अपनाने की घोषणा पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के लिए सर्वाधिक उल्लासपूर्ण अवसरों में से एक था।

पैगम्बर (सल्ल0) ने इस्लाम के शत्रुओं की घटिया और अपशब्द युक्त कविताओं के उत्तर में हस्सान (रजि0) को कविताएँ लिखने का परामर्श दिया तथा उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने हस्सान (रजि0) को सकारात्मक मुल्यों और इस्लाम के सिद्धान्तों को व्यक्त करने के लिए मिम्बर के प्रयोग की भी अनुमति दी. जहाँ से पैगम्बर (सल्ल0) अपने उपदेश दिया करते थे। और पैगम्बर (सल्ल0) ने टिप्पणी की कि ''कवि की कविताएँ शत्रुओं के विरुद्ध तलवारों की तुलना में अधिक प्रभावकारी हैं''। आपने एक बार यह भी कहा. ''एक मुसलमान अपनी तलवारों से भी जेहाद करता है और इसी प्रकार वह अपने शब्दों से भी जेहाद करता है''। इस प्रकार इस्लाम विरोधी व पैगम्बर विरोधी कवि और कविताएँ इस्लाम विरोधी अपशब्दों का प्रत्युत्तर पाते थे।

आज का परिदृश्य भी भिन्न नहीं है। सम्पूर्ण संसार के कुटिल लोग चाहे वह बुद्धिजीवी हों. लेखक हों. चित्रकार हों अथवा कलाकार हों. कार्टूनिस्ट हों. अपनी विचार स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करते हैं और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0). इस्लाम और मसलमानों की छवि को हानि पहुँचाने के लिए चित्र और कार्टून बनाते हैं।

मीडिया में से कुछ वर्ग ऐसे लेख प्रकाशित करते हैं जो इस्लाम के पुर्वाग्रहपर्ण व भेद-भाव पर्ण होते हैं। ये चारो तरफ नकारात्मक मानसिकता का प्रसार करते हैं।

जादगर

क़ुरैश के सरदार मुहम्मद (सल्ल0) पर व्यंग जारी रखे हुए थे और दूसरों को भी उनकी आलोचना करने और अपमान करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। कुछ लोग अल्लाह द्वारा पैगम्बरी के लिए मुहम्मद (सल्ल0) का चुनाव करने पर प्रश्न उठाते थे कि उसने ऐरे व्यक्ति को चुन लिया है जिसके पास कोई विशेष ताकत नहीं. जो बाजारों में घूमता है. जिसमें कोई ऐसी निशानी नहीं जो अन्य व्यक्तियों से उसे अलग करती हो। वह उनका और उनके दावों का उपहास करते थे और इसी प्रकार उनके सन्देश का भी।

ऐसी अफवाहें फैलती थीं कि मुहम्मद (सल्ल0) वास्तव में एक जादूगर है. जो परिवारों को तोडता है. माँ-बाप को उनके बच्चों से अलग करता. पतियों को उनकी पत्नियों से अलग करता और यह एक समस्या पैदा करने वाला व्यक्ति है। जब मक्का वासियों के वार्षिक बाजार का समय निकट आता तो क़ुरैश सरदार इस भय से कि मुहम्मद (सल्ल0) तीर्थ यात्रियों के बीच अपना सन्देश फैला सकते हैं. अपने लोगों को मक्का प्रवेश के विभिन्न द्वारों पर नियुक्त कर देते थे। वह मक्का आने वालों को चेतावनी देते कि मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथी इस्लाम को फैलाकर मक्के में अव्यवस्था फैला रहे हैं।

''अल्लाह जिसको चाहता है मार्ग दिखाता है''

क़ुरैश की मुसलमानों को अलग-थलग करने की रणनीति भली-भाँति कारगर सिद्ध हुई. यद्यपि कुछ लोग अपने आप को प्रभावित नहीं होने देते थे. जैसे राजमार्ग के लुटरे अबू जर. जिनका सम्बन्ध बनू गिफार कबीले से था। जब उन्होंने इस नये सन्देश के सम्बन्ध ा में सुना कि यह एक अल्लाह में आस्था रखने का आह्वान करता है। तो अबू जर क़ुरैश के लोगों की चेतावनी के बावजूद मुहम्मद (सल्ल0) के पास आये। उन्होंने मुहम (सल्ल0) को काबा के निकट छाया में लेटे हुए पाया। उन्होंने पैगम्बर का नाम पूछा और उनके सन्देश के सम्बन्ध में पछा. उनको ध्यान से सना. फिर तरन्त इस आस्था में अपना

विश्वास प्रकट करने की घोषणा कर दी। पैगम्बर (सल्ल0) चकित हो गये और फरमायाः ''अल्लाह उसी का मार्गदर्शन करता है जिसको वह चाहता है!'' अबु जर अल-गिफारी पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के अत्यन्त प्रसिद्ध साथियों में से बने जो अपनी निष्ठा. अपने श्रम और विलासितापर्ण जीवन की आलोचना और आलस्य की आलोचना के लिए जाने जाते थे।

इस्लाम के प्रहले शहीद

यमनी मुल के युवा अम्मार (रजि0) इस्लाम के सन्देश से बहुत अल्पायु में जुड गये थे और उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से अल-अरकम के घर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके पिता यासिर (रजि0) और उसके बाद उनकी माँ सुमय्या (रजि0) ने उनके बाद शीघ्र ही इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और निरन्तर इस्लामी शिक्षाएँ प्राप्त करते रहे: अबु जहल ने अपनी प्रतिशोधपूर्ण घृणा के निशाने के रूप में इनको चुनाः वह उन्हें मारने-पीटने लगा. उन्हें धुप में बाँध देता. उन्हें यातना देता। ''उन यातनाओं के बावजुद यह सिलसिला हफ्तों चला. सुमय्या (रजि0) व यासिर (रजि0) ने इस धर्म का तिरस्कार करने से इन्कार कर दिया''। सुमय्या (रजि0) ने अबु जहल को उसके कायरतापूर्ण व्यवहार पर डाँटा भी। क्रोधि ात होकर अबु जहल ने उनकी चाकु घोंपकर हत्या कर दी। फिर वह क्रोधित होकर उनके पति की तरफ मुडा और उनकी भी पीटते-पीटते हत्या कर दी। सुमय्या (रजि0) व यासिर (रजि0) इस्लाम के पहले शहीद थे। उन्हें अल्लाह का इन्कार करने से मना करने. उसके एकत्व और कुरआन के अवतरण की सच्चाई का इन्कार न करने के लिए उत्पीडन व प्रताडना झेलनी पडी।

मुसलमानों के लिए परिस्थितियाँ अधिक से अधिक कष्टप्रद होने लगीं। विशेष रूप से उनमें से अत्यधिक असहाय लोगों की जिनकी सामाजिक स्थिति और कबायली सम्बन्ध कमजोर होती थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की रक्षा का दायित्व उनके चाचा अबु तालिब और हमजा को दिया गया था। परन्तु यह सुरक्षा मुसलमानों के प्रथम आध्यात्मिक समुदाय के लिए नहीं थी. और उनके लिए अपमान. तिरस्कार और दर्व्यवहार एक नियम बन गया था।

5

क्रान्ति

मानसिक और सामाजिक

कुरैश का विरोध मात्र एक व्यक्ति अथवा एक सन्देश के विरुद्ध नहीं था। वास्तव में अल्लाह के सभी पैगम्बरों को इसी प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पडा। उनके अपने समाज के एक विशेष भाग से विरोध और घृणा का इस कारण से सामना करना पडा क्योंकि वह जो सन्देश लाये थे उसकी सामग्री समाज में आमल क्रान्ति की माँग करती थी।

पवित्र कुरआन उन शब्दों का वर्णन करता है जिनका विभिन्न युगों में पैगम्बरों को सामना करना पडा. जब वह अपने कौम के लोगों को सन्देश पहुँचाने के लिए आये। उनकी पहली प्रतिक्रिया अधिकतर किसी परिवर्तन से इन्कार करना होती थी। जिसमें सत्ता छूटने का डर सम्मिलित था। जैसा कि फिरऔन के लोगों ने पैगम्बर मसा (अलै0) और पैगम्बर हारुन (अलै0) को उत्तर दिया था:

''उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. और इस देश में तुम दोनों की श्रेष्ठता स्थापित हो जाये. और हम कभी तम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं''. (करआन 10:78)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) लोगों को मूर्तियों का तिरस्कार करने, एक अल्लाह को मानने, मृत्यु के पश्चात जीवन, नैतिकता और न्याय का आह्वान कर रहे थे। मुहम्मद (सल्ल0) ने मस्तिष्क में और समाज में एक आमूल क्रान्ति का प्रारम्भ किया। जो तथ्य इससे प्रकट हो रहा था वह यह था कि उनके सन्देश की दिशा परलोक की ओर केन्द्रित थी और इस कारण से सांसारिक सत्ता की बुनियादों को हिला रही थी।

एक अल्लाह पर विश्वास और शाश्वत जीवन की चेतना जो नैतिक शिक्षा से जुड़ी हुई थी वह नये मुसलमानों को उनकी आध्यात्मिक, बौद्धिक और सामाजिक मुक्ति के तत्वों के रूप में प्रकट हो रही थी। कुरैश के सरदार एक अल्लाह की आस्था प्रकट करने के पुष्टिकरण के महत्व को समझते थे जो अचानक आमूल परिवर्तन और व्यवस्था का सामान्य परिवर्तन चाहती थी:

"कहो, वह अल्लाह एक है। अल्लाह निर्लोभ है। न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान। और कोई उसके समकक्ष नहीं"। (कुरआन 112)

कुरआन का यह कथन एक रोड़े के अस्तित्व की ओर संकेत करता है:

" कहो कि ऐ अवज्ञाकारियों मैं उनकी उपासना नहीं करूँगा जिनकी उपासना तुम करते हो। और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो। जिसकी उपासना मैं करता हूँ। और मैं उनकी उपासना करने वाला नहीं जिनकी उपासना तुमने की है। और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो जिसकी उपासना मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म), और मेरे लिए मेरा दीन (धर्म)"।

(कुरआन, सूरः 109)

यह सूरः उस समय अवतरित हुई जब कुरैश के सरदारों ने अपने पूर्वजों के बहुदेववादी धर्म और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के एकत्ववादी धर्म के बीच समन्वय का प्रस्ताव किया था। इस सूरः का उत्तर स्पष्ट और अन्तिम हैं; यह सत्य-असत्य के मध्य पृथक्करण के अपरिहार्य चरित्र को निर्धारित करती है।

तीन प्रश्न

कुरैश यह समझ नहीं पा रहे थे कि वह मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश को और अधिक फैलने से किस प्रकार रोकें। उन्होंने प्रतिष्ठित यहूदियों से इस नये धर्म की प्रकृति वास्तविकता के सम्बन्ध में पूछने के लिए मदीना की ओर एक प्रतिनिधिमण्डल भेजने का निर्णय लिया। मदीना के यहूदी इसी एक अल्लाह के विचार के अनुसरणकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध थे और मुहम्मद (सल्ल0) अधिकतर हजरत मूसा (अलै0) का उल्लेख करते थे. जो उनके भी पैगम्बर थे। अतः वह लोग कोई विचार प्रकट करने अथवा किसी रणनीति का परामर्श देने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त थे।

जब नये पैगम्बर के सम्बन्ध में परामर्श माँगा गया तो यहूदी राहिबों (धार्मिक विद्वानों) ने परामर्श दिया कि मक्का के लोगों को मुहम्मद (सल्ल0) से तीन मौलिक प्रश्न पूछने चाहिए: कि क्या वह जो कुछ कहते हैं वह वास्तविक रूप से अवतरित होता है. अगर ऐसा होता है तो वह अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर हैं. परन्तु यदि वह कहते हैं कि नहीं तो वह झूठ गढने वाला व्यक्ति है। पहला प्रश्न युवकों के समूह का अपने लोगों द्वारा निर्वासन की कहानी का ज्ञान है: दूसरा प्रश्न एक महान यात्री के सम्बन्ध में था जो पूर्व और पश्चिम में पृथ्वी के अन्तिम सिरों तक पहुँचा था: और तीसरा प्रश्न रुह (आत्मा) की परिभाषा के सम्बन्ध में था। अगर वह तुम्हें तीन चीजें बता देता है. तो उसका आज्ञापालन करो क्योंकि उस स्थिति में वह पैगम्बर हैं। कुरैश के प्रतिमण्डल ने यह आश्वत होकर मदीना छोडा कि अब उनके पास मुहम्मद (सल्ल0) को फँसाने का एक साधन हाथ आ गया है। मक्का वापस आकर वह उनके पास गये और उनसे तीन प्रश्न पूछे। पैगम्बर (सल्ल0) ने लगभग तुरन्त उत्तर दियाः *"मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर कल दूँगा"*।

परन्तु अगले दिन हजरत जिब्रील (अलै0) प्रकट नहीं हुए। कोई वह्य न आयी। और न ही फरिश्ता तीसरे दिन भी आया अथवा अगले चौदह दिन भी नहीं आया।

क़ुरैश प्रसन्न थे कि उन्हें निश्चित रूप से ऐसा साधन मिल गया है तथाकथित पैगम्बर को नकली सिद्ध करने का माध्यम है जो यहूदी विद्वानों के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। दूसरी तरफ मुहम्मद (सल्ल0) दुखी थे और जैसे-जैसे दिन व्यतीत होते जा रहे थे. उन्हें अधिक से अधिक तिरस्कृत कर दिये जाने का डर बढता जा रहा थाः अल्लाह पर सन्देह किये बिना एक बार फिर उन्हें अपने ऊपर सन्देह की अनभति होने लगी और यह उनके विरोधियों के व्यंग से बढती जा रही थी।

इन्शा अल्लाह
''यदि अल्लाह चाहे''

दो सप्ताह बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पर एक सन्देश अवतरित हआ जो सन्देश भी था और एक स्पष्टीकरण भी थाः

> *''और तुम किसी कार्य के सम्बन्ध में इस तरह न कहो कि मैं इसको कल कर दूँगा। परन्तु यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने पालनहार को याद करो। और कहो कि आशा है कि मेरा पालनहार मझको भलाई का इससे अधिक निकट मार्ग दिखा दे''।* (क़ुरआन 18:23-24)

इस अवतरण में एक बार पुनः एक फटकार और एक शिक्षा सम्मिलित है। यह पैगम्बर (सल्ल0) को याद दिलाती है कि उनकी प्रतिष्ठा. उनका ज्ञान और उनकी नियति उनके पालनहार पर आधारित है. एक मात्र सम्प्रभु अल्लाह पर और यह कि उन्हें इसे कभी नहीं भूलना चाहिए। किसी व्यक्ति को इसी तरह शब्द-समूह इन्शा अल्लाह ''यदि अल्लाह ऐसा चाहे'' का अर्थ समझना चाहिए। यह सीमाओं के ज्ञान का प्रकटीकरण है. यह किसी व्यक्ति की विनम्रता का अनुभव है। वह यह जानते हुए काम करता है कि जो कुछ वह कर सकता है या कह सकता है उससे परे मात्र अल्लाह ही उनके घटित कराने की क्षमता रखता है। यह किसी प्रकार दार्शनिक सन्देश नहीं हैः अकर्मण्यता का इसके विपरीत किसी

व्यक्ति को कर्म करना बन्द नहीं करना चाहिए। सदैव यह अपने मन और हृदय में समझते हुए कि मानव क्षमता की सीमाएँ क्या हैं। दूसरी बार पैगम्बर (सल्ल0) को सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से फटकार आयी। कोई व्यक्ति जो प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करता हो. पृथ्वी पर उसका सामर्थ्य और स्वतन्त्रता उसके अपने सष्टा पर निरन्तर भरोसा करने में निहित रहती है।

इसके बाद ही पैगम्बर (सल्ल0) को उन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होना था जो आपसे पूछे गये थे। यह देरी आश्यर्चजनक रूप से ईमानवालों का विश्वास बढ़ाने के लिए थी। पैगम्बर (सल्ल0) की उत्तर देने में प्रारम्भिक असमर्थता और बाद में वह्य अवतरण का सम्पर्क देर से होने ने सिद्ध किया कि पैगम्बर (सल्ल0) उस पुस्तक के लेखक नहीं थे जो तैयार हो रही थी और यह वह वास्तव में अपने पालनहार की इच्छा पर निर्भर हैं।

अल-रुह अर्थात आत्मा के सम्बन्ध में प्रश्न को अल्लाह के सर्वोच्च ज्ञान की ओर हस्तान्तरित कर दिया गया. जिस प्रकार उनसे पहले विनम्रता चाही गयी थी: वह तमसे आत्मा के सम्बन्ध में पूछते हैं।

''और वह तुमसे आत्मा के सम्बन्ध में पूछते हैं। कहो कि आत्मा मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुमको बहुत कम ज्ञान दिया गया है''। (कुरआन 17:85)

जहाँ तक दो कहानियों (इफेसस के सात सोने वालों और यात्री जुल करनैन) का सम्बन्ध है उनका कुरआन की सूरः 18 ''अल-कहफ'' (गुफा) में वर्णन किया गया है। ये कहानियाँ ऐसी सूचनाओं और विवरणों से परिपूर्ण हैं जिनकी आशा मदीना के यहूदी विद्वानों और मक्का के कुरैश सरदारों को नहीं थी और जिसके सम्बन्ध में वह्य के अवतरण के पहले पैगम्बर (सल्ल0) कुछ भी नहीं जानते थे। इसी सूरः में पैगम्बर मूसा (अलै0) की कहानी भी सुनाई गयी है। जिन्होंने एक भूल के क्षण में और अत्याधिक उत्साह के कारण यह कह बैठे थे कि वह एक पैगम्बर के रूप में ''जानते हैं''। अल्लाह ने इसके बाद एक ऐसी हस्ती से उनका सामना कराकर उनकी परीक्षा ली जो उनसे अधिक जानती थी.... .। कुरआन में अल-खिज्र का चरित्र जिसमें अल्लाह के उच्चतर ज्ञान की समझ. धैर्य और विनम्र रहने का विवेक प्रदान किया।

मुहम्मद (सल्ल0) के इस अनुभव और उस शिक्षा से जो सम्पूर्ण मानवता से सम्बोधित है (जो ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया है वह मात्र थोडा है) प्रत्येक वस्तु मुसलमानों को उनकी अपनी कमजोरी की याद दिलाती है और उनकी प्रतिष्ठा जैसी भी हो परन्तु वह अल्लाह पर निर्भर है और यह शिक्षा *सूरः कहफ* में सर्वत्र विद्मान है। बाद में पैगम्बर (सल्ल0) ने प्रत्येक मुसलमान से आग्रह किया कि उन्हें प्रत्येक शुक्रवार को इस सूरः को परा-परा पढना चाहिए ताकि हर सप्ताह उनको यादिहानी हो सके कि उन्हें न तो अपने आप को भलना चाहिए और न अपने स्वामी को।

6
निर्वासन
हब्शा

जैसे-जैसे कुरआन की आयतें अवतरित होती रहीं मुसलमानों का अपमान और दमन बढता रहा। अब दमन और उत्पीडन का शिकार मात्र वही लोग नहीं रहे जो मुसलमानों में से कमजोर थे बल्कि वह स्त्री पुरुष भी इसका शिकार होने लगे जो साधारण रूप से उनकी प्रतिष्ठा के कारण सुरक्षित थे। जैसे हजरत अबु बक्र (रजि0)। मुहम्मद (सल्ल0) अपने चाचा अबु तालिब की सुरक्षा में थे। इन लोगों को भी व्यंग्य और उपहास के माध्यम से सताया जा रहा था. यह देखते हुए कि मक्का में परिस्थितियाँ और अधिक बरी होती जा रही हैं पैगम्बर (सल्ल0) ने मुसलमानों को परामर्श दिया:

''यदि तुम हब्शा की भूमि पर जाओ तो वहाँ एक ऐसे (रजि0) को पाओंगे जिसके शासन में किसी के साथ अन्याय नहीं होता। यह धर्म में निष्ठा की भूमि है। तुम वहाँ उस समय तक रहोगे जब तक अल्लाह तम्हें वर्तमान कठिनाईयों से निकाल न दे''.

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) हब्शा के (रजि0) नेगस की ओर संकेत कर रहे थे जो ईसाई था और जो अपनी प्रजा के साथ सम्मान और सदव्यवहार के लिए प्रसिद्ध था। मुसलमानों के समुदाय के एक भाग ने प्रस्थान के लिए तैयारी करना प्रारम्भ कर दिया और इसके परिणामस्वरूप अनेक व्यक्ति और परिवार सावधानीपर्वक मक्का छोडकर हब्शा की

ओर जाने लगे। इनमें लगभग 100 मसलमान. 82 अथवा 83 परुष और 20 महिलाएँ थीं।

यह घटना सन् 615 ई0 अर्थात वह्य के अवतरण के प्रारम्भ से 5 वर्ष बाद और सार्वजनिक आहवान के दो वर्ष बाद घटित हुई। परिस्थितियाँ विशेष रूप से इतनी विषम हो गयी थीं कि उसके कारण मसलमानों को मक्का से निर्वासित होकर बहत दर जाने के लिए विवश होना पडा।

कुरैश सरदारों को जल्द ही ज्ञात हो गया कि कुछ मुसलमान जिनमें बा कमजोर लोग नहीं थे. मक्का छोड चुके हैं। उन्हें यह जानने में अधिक समय भी न लगा कि मुसलमान कहाँ गये हैं। उनकी चिन्ता का कुछ कारण भी थाः यदि मुसलमानों का यह छोटा समूह कहीं शान्तिपूर्वक बसने में सफल रहा तो वह मक्का की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचा सकता है और संभवतः उनके विरुद्ध शत्रुता भडका सकता हैं और यह भी हो सकता है कि वह ऐसे (रजि0) के साथ समझौता करके उनके विरुद्ध खडे हो जायें जो इन्हीं की तरह एक अल्लाह पर विश्वास करता है। जब मुसलमान जा चुके तो कुरैश सरदारों ने दो दूतों को (रजि0) नेगस के पास भेजने का निर्णय लिया: अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीअः को ताकि (रजि0) नेगस को इन प्रवासियों को सुरक्षा देने से हतोत्साहित करें और उसे इन्हें मक्का वापस भेजने के लिए सन्तुष्ट करें। यह दोनों दूत नेगस के दरबार में गये जिनके पास अनेक उपहार थे। इन उपहारों के सम्बन्ध में वह समझते थे कि हब्शा के प्रतिष्ठित लोगों के लिए ये विशेष रूप से मूल्यवान थे। उन्होंने एक-एक व प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भेंट की। उनको उपहार दिये और उनकी ओर से उस समय समर्थन के वचन प्राप्त किये जब मक्कावासी अपना अनरोध दरबार में प्रस्तत करेंगे।

नेगस

कुरैश के दुत अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीअः चाहते थे कि (रजि0) प्रवासी मुसलमानों का पक्ष सुने बिना ही उन्हें मक्का वापस भेजने पर सहमत हो जायें। (रजि0) नेगस ने यह तर्क देते हुए मना कर दिया कि जिन लोगों ने उसे अपनी सुरक्षा के लिए चुना है उन्हें यह अधिकार है कि वह अपना पक्ष प्रस्तुत करें। (रजि0) ने मक्का के दुतों और प्रवासी मुसलमानों के एक प्रतिनिधिमण्डल को दरबार में बुला भेजा। मुसलमानों ने हजरत जअफर (रजि0) बिन अबु तालिब को अपना प्रतिनिधि चुना जो बुद्धिमान और अच्छे वक्ता थे। (रजि0) ने उनसे निर्वासन का कारण पुछा और विशेष रूप से उस नये धर्म के बारे में पुछा जो पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) लाये थे। हजरत जअफर ने (रजि0) के समक्ष कुरआन में निहित मौलिक सिद्धान्तों और महम्मद (सल्ल0) की शिक्षाओं को यह कहते हुए प्रस्तुत किया कि यह एक अल्लाह पर विश्वास. मुर्ति पुजा से इन्कार. पारिवारिक सम्बन्धों के सम्मान का आदेश. सच बोलना. न्याय का विरोध करना आदि पर आधारित था।

जअफर (रजि0) ने राजा नेगस को बताया: ''ऐ राजन. हम अज्ञानता औ बर्बरता में डुबे हुए थे: हम मुर्तियों की आराधना करते थे: हम पाप में लिप्त थे: हम मुर्दार जानवरों को खाते थे और लोगों से घुणा करते थे: हम किसी भी मानवीय भावना का सम्मान नहीं करते थे. कभी आथित्य संत्कार नहीं करते थे और पडोसियों के साथ दुर्व्यवहार करते थे: हमे किसी कानुन का ज्ञान नहीं था सिवाय इसके कि जो सामर्थ्यवान है। फिर हमारे बीच अल्लाह ने एक ऐसे व्यक्ति को उठाया जिसका जन्म सच्चाई. विश्वसनीयता और शुद्धता को सभी लोग मानते थे। उस व्यक्ति ने हमसे कहा कि हम एक अल्लाह में विश्वास करें. और उसने हमें यह शिक्षा दी कि हम उस अल्लाह के साथ किसी को साझी न ठहरायें। उसने हमे मुर्तियों की पुजा करने से मना किया और सच बोलने. विश्वसनीयता और दयालुता और पडोसियों के अधिकारों को सम्मान देने की शिक्षा दी। उसने हमे महिलाओं के सम्बन्ध में बरी बाते करने और अनाथों की सम्पत्ति के साथ छेडछाड करने से रोका।

उसने हमें बुराई से दूर रहने. नमाज पढने. दान देने और रोजा रखने का आदेश दिया। हमने उस पर विश्वास किया। हमने उसकी शिक्षाओं और आदेशों को स्वीकार किया। यही कारण है कि लोग हमारे विरुद्ध खडे हो गये हैं. हमें प्रताडित किया और हमसे एक अल्लाह की उपासना छोडने और लकडी और पत्थर की मुर्तियों और अन्य बुराईयों की ओर लौटने का आदेश दिया। उन्होंने हमें यातनाएँ दी और हमें घायल किया. यहाँ तक कि उनके बीच कोई सुरक्षा न पाकर हम आपके देश में आये हैं। हमे आशा है कि आप हमें उनके दमन से बचायेंगे''।

राजा नेगस ने जअफर की इस याचना से प्रभावित हुआ और पुछा कि क्या उनके पास मुहम्मद (सल्ल0) जो वह्य का सन्देश लाये हैं. उसके किसी अंश की प्रति है अथवा वह उसका उच्चारण यहाँ कर सकते हैं। हजरत जअफर ने हाँ कहा और करआन की सरः मरियम की आयतों की तिलावत करने लगेः

''और किताब में मरियम का वर्णन करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर पुर्वी घर में चली गयी। फिर उसने अपने आप को हमसे पर्दे में कर लिया. फिर हमने उसके पास अपना फरिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पुरा मनुष्य बनकर प्रकट हुआ। मरियम ने कहा. मैं तुझसे कृपालु अल्लाह की शरण माँगती हूँ यदि तु अल्लाह से डरने वाला है। उसने कहा. मैं तुम्हारे पालनहार का भेजा हुआ हूँ. ताकि मैं तुमको एक पवित्र लडका दूँ। मरियम ने कहा। मेरे यहाँ कैसे लडका होगा. जबकि मुझको किसी मनुष्य ने नहीं छुआ और न मैं बदचलन हूँ। फरिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा पालनहार फरमाता है कि यह मेरे लिए सरल है। और ताकि हम उसको लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी ओर से एक दयालुता। और यह एक नियत बात है''। (कुरआन 19:16-21)

राजा नेगस और उसके दरबारी अरबी भाषा में जो सन्देश सुनाया गया था उसके सौन्दर्य से प्रभावित हुए और वह उस समय और अधिक प्रभावित हुए जब उनके लिए उसका अनुवाद किया गया और वह समझ गये कि उसमें पैगम्बर ईसा (अलै0) चमत्कारिक जन्म की घोषणा की गयी है। (रजि0) नेगस ने चकित होकर कहा. ''वास्तव में यह उसी स्रोत से आया हुआ सन्देश है जिस सन्देश को पैगम्बर ईसा (अलै0) लाये

थे। और उसने मक्का के दतों को सम्बोधित करके उनके निवेदन को अस्वीकार कर दिया और उन्हें सचित किया कि वह उन्हें प्रवासी मसलमानों को हस्तान्तरित नहीं करेगा और इन लोगों को वह अपनी शरण देना जारी रखेगा।

मरियम के बेटे ईसा (अलै0)

करैश के दत अम्र और अब्दल्लाह निराश होकर बाहर चले गये लेकिन अम्र ने शीघ्र ही दढ निश्चय कर लिया कि वह (रजि0) नेगस के पास पनः जाकर उन्हें सचित करेगा कि वास्तव में यह नया सन्देश ईसा (अलै0) के बारे में क्या कहता है और यह ईसाई विश्वासों से किसी भी तरह अनकल नहीं है। उसने दसरे दिन ऐसा ही किया. और उसको सनने के बाद (रजि0) ने पनः हजरत जअफर (रजि0) और उनके प्रतिनिधिमण्डल को बलाया। और उनसे जानना चाहा कि पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) हजरत ईसा (अलै0) के बारे में क्या कहते हैं। मसलमान इस भेंट के खतरों से भिज्ञ थेः और दोनों धर्मों के बीच अन्तर को स्पष्ट करने के बाद (रजि0) नेगस उन्हें वापस मक्का भेज सकता था। तथापि उन्होंने उस सन्देश की सामग्री को यथावत बताने का निर्णय लिया और सच्चाईपर्वक बयान करने का निर्णय लिया। नेगस का सीधा प्रश्न था. ''तम मरियम के बेटे ईसा के सम्बन्ध में क्या मान्यता रखते हो। जअफर (रजि0) का उत्तर बिल्कल स्पष्ट थाः ''हम वही कहते हैं जिसे हमारे पैगम्बर ने हमें बताया हैः ईसा (अलै0) अल्लाह के बन्दे हैं. उसके पैगम्बर हैं. उसकी आत्मा हैं. और उसके शब्द हैं। उसने कँवारी मरियम के अन्दर उस आत्मा को डाल दिया था'' । इस उत्तर में हजरत ईसा (अलै0) का अल्लाह के बेटे होने का कोई संकेत नहीं था. नेगस ने हाथ में छडी उठाते हए और चकित होते हए उत्तर दियाः ''मरियम के बेटे ईसा (अलै0). क्या तमने जो अभी कहा वह इस छडी की लम्बाई से आगे नहीं है'' । धार्मिक प्रतिष्ठा रखने वाले लोग इस उत्तर पर चकित रह गये और उन्होंने अपने आश्चर्य को सावध ानीपर्वक प्रकट किया। परन्त (रजि0) नेगस ने उनकी अनदेखी की और आदेश दिया कि मक्का के दोनों दतों को अपने समस्त उपहारों के साथ वापस भेज दिया जाये। मसलमानों

को उसने अपने स्वागत को दोहराया और विश्वास दिलाया कि वह लोग उस भमि पर शान्ति और सरक्षा प्राप्त करते रहेंगे।

जोखिम और सच्चाई

यह मक्कावासियों के लिए एक बडी विफलता थी। जब दोनों दत वापस आये तो इसका परिणाम जल्द ही मुसलमानों के विरुद्ध उत्पीडन बढाने के रूप में सामने आया। जहाँ तक जाफर (रजि0) और उनके मुस्लिम समुदाय का सम्बन्ध है ईसाई बहुल देश को जहाँ यद्यपि वह निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे. और उनका धर्म वहाँ की जनता के धर्म से अलग था। वहाँ उनका स्वागत हुआ. सुरक्षा मिली और उन्हें वहाँ सहन किया जाता रहा मुसलमानों ने (रजि0) नेगस का सामना होने पर अत्यन्त प्रतिकुल क्षण में भी सत्य कहने का निर्णय लिया था। न तो उन्होंने प्रश्न से बचने का प्रयास किया और न उस सम्बन्ध ा में झुठ बोलने का प्रयास किया. कि मरियम के बेटे ईसा के सम्बन्ध में मुहम्मद (सल्ल0) क्या कहते हैं। वास्तव में उनको मक्का वापस भेजे जाने और प्रर्त्यपण का खतरा था। इसके खतरों के बावजुद इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं थाः मुसलमान अपने विश्वासों पर अटल रहे जिनको वह निष्ठा और ईमानदारी के साथ प्रकट करते थे। उनके सामने सच्चाई बोलने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था अतः उन्होंने ऐसा ही किया।

फलतः राजा नेगस ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और वह लगातार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के सम्पर्क में रहा। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जब राजा नेगस कं मृत्यु का समाचार सुना तो आपने उसके लिए जनाजे की नमाज अप्रत्यक्ष रूप से पढी। अधिकतर मुसलमान जो निर्वासित होकर हब्शा गये वह वहाँ पर लगभग 15 वर्ष रहे. जब खैबर अभियान (630 ई0) पुरा हो गया तो उस समय वह लोग पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथ मदीने में आ मिले। अन्य लोग सकारात्मक समाचार सनने के बाद पहले मक्का गये परन्त किसी को कभी राजा नेगस की ओर से कोई समस्या उत्पन्न नहीं हई।

7

प्रेरणा और साहस

हमजा (रजि0)

अन्याय और दमन के घने बादलों से घिरे हुए दुखद वातावरण के क्षितिज पर एक आशापूर्ण प्रकाश का प्रताडित लोगों के लिए उदय हुआ अर्थात हजरत अब्दुल मुत्तलिब के बेटे हजरत हमजा (रजि0) ने पैगम्बरी के छठे वर्ष में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

रिवायत किया गया है कि एक दिन पैगम्बर (सल्ल0) काबा के निकट सफा की पहाडी पर बैठे हुए थे. जब अबू जहल वहाँ से गुजरा और उसने मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा जिस धर्म का प्रचार हो रहा था उसे बुरा-भला कहा। तथापि पैगम्बर (सल्ल0) खामोश रहे और इसके उत्तर में एक शब्द भी न कहा। अबू जहल अबाधित रूप से आगे बढा एक पत्थर उठाया और पैगम्बर का सिर फोड दिया जिससे खुन बहने लगा। फिर आक्रमणकारी कुरैश के लोगों की सभा में जा मिला। इसके तुरन्त बाद हजरत हमजा (रजि0) एक शिकार से लौटते हुए उसी मार्ग से गुजरे। उनकी धनुष उनके कन्धे पर लटकी हुई थी। एक दासी लडकी ने अबू जहल के आक्रामक व्यवहार को देखा था। उसने पैगम्बर पर हमले की पूरी कहानी हजरत हमजा (रजि0) को सुना दी।

यह सुनकर हजरत हमजा (रजि0) को गहरा आघात लगा और वह तेजी से काबा की ओर गये और वहाँ अहाते में अबू जहल को अपने कुरैश सरदारों के साथ बैठे हुए पाया। हजरत हमजा (रजि0) उसकी ओर दौडे और अपना धनष उसके सिर पर जोर से मारा और

कहाः ''अरे! तुम मुहम्मद को बुरा-भला कहते रहते होः मैं भी उसके धर्म का पालन करुँगा और उसका अनुसरण करुँगा जिसकी वह शिक्षा देते हैं'' । हमजा (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पास गये और कहाः ''मुहम्मद तुम्हें खुश होना चाहिए. क्योंकि मैंने अबू जहल : तुम्हारा बदला ले लिया है'' । पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दियाः ''मेरा बदले से कोई सम्बन्ध ा नहीं है: यदि आप मुसलमान बन जायें और अपने आप को एक अल्लाह के सामने झुका दें. तो मुझे खुशी होगी'' । हजरत हमजा (रजि0) सन्देश को समझ गये और मुसलमान हो गये। हजरत हमजा (रजि0) ने घोषणा की कि वह स्वयं मुसलमान हुए हैं और यह कि वह अब स्वयं अपने भतीजे की सुरक्षा अपने हाथ में लेंगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अबू जहल ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को बुरा भला कहना बन्द कर दिया इसके बदले उसने पैगम्बर (सल्ल0) के निर्धन और सबसे कमजोर मस्लिम साथियों के साथ दरर्व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया।

वास्तव में हजरतम हमजा का धर्म-परिवर्तन प्रारम्भ में एक व्यक्ति के उ स्वाभिमान के कारण था कि वह दूसरों के द्वारा अपने रिश्तेदार का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। तथापि इसके बाद अल्लाह ने उनकी प्रकृति को शुद्ध कर दिया और वह सर्वाधिक विश्वसनीय सहारा पकडने में सफल रहे। वह इस्लाम धर्म और इसके अनयायियों के लिए बडी ताकत का स्रोत सिद्ध हुए।

हजरत उमर (रजि0)

इस्लाम की शक्ति में एक अन्य महत्वपूर्ण वृद्धि हजरत उमर बिन खत्ताब का पैगम्बरी के छठे वर्ष में ही हजरत हमजा के इस्लाम स्वीकार करने के तीन दिन बाद इस्लाम धर्म स्वीकार करना था। वह साहस और दुढ विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे और मक्का में उनसे लोग डरते भी थे और उन्हें सम्मान भी प्राप्त था और अब तक वह नये धर्म के कटु विरोधी थे। एक हदीस के विवरण में आया है कि पैगम्बर (सल्ल0) ने एक बार हाथ उठाकर यह दआ की थीः

''ऐ अल्लाह इस्लाम को शक्ति प्रदान कर विशेष रूप से दो व्यक्तियों के द्वारा जो तझे अधिक प्रिय होः उमर बिन खत्ताब अथवा हिशाम के बेटे अबु जहल''।

एक दिन हजरत उमर (रजि0) कुण्ठित थे: उन्होंने निर्णय लिया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से छुटकारा पाने के लिए केवल एक ही काम किया जा सकता है कि उनकी हत्या कर दी जाए। अव्यवस्था और विद्रोह समाप्त करने का यह एक मात्र निश्चित साधन है जो सम्पुर्ण मक्के के समाज को खतरे में डाले हुए है

उमर (रजि0) अपने घर से मुहम्मद (सल्ल0) की तलाश में बाहर निकले. उनकी तलवार उनके हाथ में थी। रास्ते में वह नुऐम से मिले जो इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुके थे। नुऐम ने उनसे पुछा कि वह इतने क्रोधित क्यों दिखायी दे रहे हैं और उमर (रजि0) ने उनको मुहम्मद (सल्ल0) की हत्या करने की अपनी नीयत के सम्बन्ध में बताया। नुऐम ने तुरन्त उनकी योजना को विमुख करने का माध्यम सोचा। उन्होंने उमर (रजि0) को परामर्श दिया कि मुहम्मद (सल्ल0) की ओर जाने से पहले अपने घर पर ध्यान दें। उन्होंने उनको बताया कि उनकी बहन फातिमा (रजि0) और उनके बहनोई सईद (रजि0) भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुके हैं। इससे चकित और क्रोधित होकर उमर ने अपनी योजना बदलकर सीधे अपनी बहन के घर की ओर प्रस्थान किया।

उनकी बहन फातिमा और उनके पति एक युवा सहाबी खब्बाब से कुरआन पढ रहे थे। जब उन्होंने अपने घर के निकट किसी के आने की आहट सनी तो खब्बाब ने

कुरआन पढना बन्द कर दिया और छिप गये। हजरत उमर ने घर के अन्दर कुरआन पढने की आवाज सुन ली थी। और उन्होंने शान्तिपुर्वक उनके साथ शिष्ट व्यवहार किया और सीधे पुछा कि वह लोग क्या पढ रहे थे? उन दोनों ने सच्चाई बताने से इन्कार कर दिया लेकिन उमर ने आग्रह किया कि उन्होंने निश्चित रूप से उनसे कोई चीज पढते हुए सना है। उन्होंने इस मामले पर बात करने से इन्कार कर दिया जिसने हजरत उम क्रोध को बढा दिया। उन्होंने अपने बहनोई को मारने के लिए छँलाग लगा दी और जब उनकी बहन ने हस्तक्षेप करने का प्रयास किया तो उन्होंने उन्हें मारा. जिससे उनको खुन निकलने लगा। अपनी बहन के चेहरे पर खुन देखने का उनपर एक त्वरित प्रभाव पडा और उमर थोडा रुक गये। उसी क्षण उनकी बहन ने जोश के साथ सम्बोधित करके कहाः ''हाँ. वास्तव में हम मुसलमान हैं और हम एक सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके पैगम्बर पर विश्वास करते हैं। और जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है. अब तुम हमारे साथ जो चाहो करो''। हजरत उमर पीछे हटे वह अपनी बहन को आघात पहुँचाने के विक्षोभ और अभी जो सुचना सुनी उस पर हक्का-बक्का की स्थिति के बीच उलझ गये। उन्होंने अपनी बहन से कहा कि जब वह आये थे उस समय जो पुस्तक तुम पढ रहे थे उसे मुझे दो। उनकी बहन ने कहा कि पहले उन्हें अपने आपको शुद्ध करने के लिए वजु करना होगा। अपने आपको नियन्त्रित किया परन्तु वह अब भी चिन्तित थे. उन्होंने वज करना स्वीकार कर लिया. वजु किया और फिर पढना प्रारम्भ कियाः

> *''ताहा. हमने कुरआन तुम पर इसलिए नहीं अवतरित किया कि तुम कष्ट में पड जाओ बल्कि ऐसे व्यक्ति के उपदेश के लिए जो डरता हो। यह उसकी ओर से अवतरित किया गया है जिसने पृथ्वी को और ऊँचे आकाशों को पैदा किया है। वह दयालुता वाला है. सिंहासन पर स्थापित है। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो पृथ्वी पर है और जो इन दोनों के बीच है। और जो कुछ पृथ्वी के नीचे है। और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो. वह चुपके से वह कही हुई बात को जानता है। और इससे अधिक धीमी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। सभी अच्छे नाम उसी के हैं''।*
>
> (करआन 20:1-8)

ये पहली आयतें थीं और उमर शेष सुरः पढते रहे. जो कि सिना नामक पहाडी पर हजरत मुसा (अलै0) के लिए अल्लाह की पकार का वर्णन था. यहाँ तक कि वह इस आयत पर पहुँचे।

''मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। अतः तुम मेरी ही उपासना करो। और मेरी याद के लिए नमाज स्थापित करो''। (कुरआन 20:14)

फिर हजरत उमर ने पढना रोक दिया और उन शब्दों के सौन्दर्य और श्रेष्ठता के बारे में अपना उत्साह प्रकट किया। हजरत उमर के प्रत्यक्षतः अच्छे स्वभाव से उत्साहित होकर खब्बाब अपने छिपने के स्थान से बाहर आकर उन्हें बताया कि उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) को सर्वशक्तिमान अल्लाह से यह दुआ करते हुए सुना था कि वह उनके समुदाय को अबु जहल अथवा उमर के इस्लाम स्वीकार करने के माध्यम से समर्थन प्रदान करे। हजरत उमर ने उनसे पुछा कि मुहम्मद (सल्ल0) कहाँ हैं। और जब उन्हें बताया गया कि वह अरकम के घर पर हैं तो उमर (रजि0) वहाँ गये। जब दरवाजे पर पहुँचे तो घर में रहने वाले डर गये क्योंकि उमर अब भी अपनी तलवार को अपने बेल्ट में लिये हुए थे। परन्तु पैगम्बर ने उनसे कहा. उसको अन्दर आने दो और उमर (रजि0) ने तुरन्त इस्लाम धर्म स्वीकार करने की इच्छा की घोषणा की। पैगम्बर (सल्ल0) ने प्रसन्नतापुर्वक और आश्चर्य से फरमाया. ''अल्लाह अकबर'' (अल्लाह सबसे बडा है) और उनके इस्लाम स्वीकार करने को अपनी दआ के स्वीकार होने के रूप में लिया।

दिलों की क्रान्ति

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) जानते थे कि दिलों पर उनका कोई वश नहीं। उत्पीडन और विकट कठिनाईयों में आप अल्लाह की ओर मुडते. इस आशा में कि वह दो व्यक्तियों में से एक अथवा दुसरे को मार्गदर्शन दे. जिनके सम्बन्ध में आप जानते थे कि इनके अन्दर मानवीय गुण भी हैं और परिस्थितियों को बदलने के लिए आवश्यक क्षमता भी है। वास्तव में पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि मात्र अल्लाह ही दिलों के मार्गदर्शन की क्षमता रखता

है। कुछ व्यक्तियों के लिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने की लम्बी प्रक्रिया होती जिसमें वर्षों तक प्रश्न करते रहना. सन्देह प्रकट करना. और कभी आगे बढना और कभी पीछे हटना हो सकता है जबकि कुछ दूसरे लोगों के लिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने की प्रक्रिया क्षणिक और त्वरित हो सकती है और कुरआन पढकर अथवा किसी विशेष प्रकृति अथवा व्यवहार की प्रतिक्रिया स्वरूप हो सकता है। इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। जिन परिवर्तनों ने बहुत लम्बे समय लिये. आवश्यक नहीं कि वह अत्यन्त ठोस हों और इसका विपरीत भी सही नहीं है। जब परिवर्तन का समय आता है तो दिलों की स्थिति. आस्था और प्रेम का महत्व होता है। और जो चीज प्रभावकारी होती है वह सर्वशक्तिमान अल्लाह की असाध ारण शक्ति होती है। हजरत उमर (रजि0) अपने घर से पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की हत्या करने का दृढ संकल्प लेकर निकले थे। मात्र एक अल्लाह का इन्कार करने में अन्धे हो रहे थे. वहाँ पर कुछ घण्टों बाद ही वह एक बदले हुए व्यक्ति बन गये. और यह परिवर्तन कुरआन द्वारा प्रेरित और अल्लाह के अर्थ द्वारा प्रेरित होने के परिणामस्वरूप हुआ था। वह उस व्यक्ति के सर्वाधिक वफादार साथियों में से बने जिसकी वह हत्या करना चाहते थे। मुसलमानों में से किसी व्यक्ति ने यह कल्पना नहीं की होगी कि उमर (रजि0) इस्लाम के सन्देश को पहिचानेंगे क्योंकि उन्होंने अत्यधिक दृढतापूर्वक इस्लाम के प्रति अपनी घृणा व्यक्त की थी। दिल की यह क्रान्ति एक निशानी थी और इसके दो अर्थ थे: अल्लाह के लिए कुछ भी असम्भव नहीं. और यह कि किसी व्यक्ति अथवा वस्तु व सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय की घोषणा नहीं करनी चाहिए।

अपने उत्साह और साहस से हजरत उमर (रजि0) ने अपने इस्लाम धर्म स्वीकार करने को सार्वजनिक करने का निर्णय लिया। वह तुरन्त यह समाचार देने के लिए अबू जहल के पास गये और उन्होंने मुहम्मद (सल्ल0) को परामर्श दिया कि उन्हें सार्वजनिक रूप से काबे के पास नमाज पढनी चाहिए। निश्चित रूप से यह एक जोखिम भरा कदम था। परन्तु यह कुरैश के सरदारों को यह भी दिखाने का मामला था कि मुसलमान उनके बीच मौजद हैं और वह दृढ संकल्प हैं। हजरत उमर (रजि0) और हजरत हमजा (रजि0) सशक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध थे। वह दोनों अपने समूह को लेकर अन्दर गये और मुसलमानों ने सामहिक रूप से नमाज पढी और किसी के अन्दर हस्तक्षेप करने का साहस न था।

8
प्रतिबन्ध

तथापि परिस्थितियाँ बहुत दूर निकल गयी थीं। तनाव दिन प्रति दिन बढता जा रहा था और कुरैश के सरदारों ने इस्लाम के विस्तार को रोकने के लिए बैठक की. वे और अधिक मौलिक कारवाई करना चाहते थे। सबसे पहले इस्लाम स्वीकार करने वाले सभी कबीलों से आये थे और यह परिस्थिति इसे असम्भव बना रही थी कि ऐसी रणनीति अपनायी जाये जो सामान्य रिवायती समझौतों पर आधारित हो। लम्बी वार्त्ताओं और जोशीली दलीलों के बाद जिसने खानदानों को अन्दर से बाँट दिया था. उन्होंने निर्णय लिया कि हाशिम खानदान पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए जो पैगम्बर का खानदान था और इस खानदान और इसके सदस्यों के विरुद्ध पूर्ण वहिष्कार लागू कर दिया गया।

एक सन्धि पर चालीस कुरैश सरदारों ने हस्ताक्षर किये और इसे काबा के अन्दर लटका दिया गया। काबा के अन्दर लटकाना इस निर्णय के अन्तिम रूप और इसकी गम्भीरता का प्रतीक था। अबू लहब जिसका सम्बन्ध स्वयं हाशिम परिवार से था उसने अपने परिवार का बहिष्कार किया और इस प्रतिबन्ध का समर्थन किया।

बनू हाशिम कबीले और मुसमानों के लिए वहिष्कार की यह अवधि एक घोर कष्टप्रद थी। जब वहिष्कार प्रभावी हुआ तो पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा व बनू हाशिम कबीले के सरदार अबू तालिब को एक संकीर्ण घाटी में शरण लेना पडा। तीन वर्षों तक पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथी इस घाटी में रहे। घाटी की सारी आपर्ति बन्द कर दी

गयी थी। पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथियों को कभी-कभी पेडों की पत्तियों और जडों से गजारा करना पडता था।

बीमारी और भुख के कारण स्थिति बद से बदतर होती जा रही थी। यह वहिष्कार तीन वर्ष से अधिक रहा और इसने आर्थिक रूप से दोनों खानदानों को कमजोर कर दिया। इस वहिष्कार के कारण हजरत अब बक्र अपनी अधिकतर सम्पत्ति खो चके थे और उनके लिए सामाजिक व मनोवैज्ञानिक दबाव असहनीय हो गये थे।

वहिष्कार सन्धि भंग हो गयी।

कुरैश के सरदारों में से अनेक लोग समझ रहे थे कि यह वहिष्कार यदि व्यर्थ नहीं तो अनावश्यक अवश्य है। उनमें से कुछ लोग रिश्तों के माध्यम से उनसे जुडे हुए थे जिनका भुलना और उन्हें अपनाने से मना करते रहना सम्भव नहीं था। इन तीन वर्षों के दौरान इस प्रतिबन्ध को समाप्त करने के अनेक प्रयास हुए परन्तु वह कभी सफल नहीं हुए क्योंकि अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति जैसे अबु लहब और अबु जहल इस मामले में कोई वार्त्ता करने से भी मना करते थे। अन्ततः. कुछ व्यक्तियों द्वारा दोनों खानदानों से सम्पर्क स्थापित करने का कदम उठाने के माध्यम से एक परिवर्तन आया। उस गुट के कुछ सदस्य जिन्होंने इस छोटे से विद्रोह को प्रारम्भ किया था इस समझौते के उल्लघंन के लिए निकले और उन्होंने प्रतिबन्ध से सम्बन्धित सभी धाराओं को शुन्य और अमान्य घोषित कर दिया। उन्होंने सौगन्ध खायी कि वह उस वक्त तक न मानेंगे जब तक वहिष्कार का पन्ना फाडकर टुकडे-टुकडे न कर दिया जाये और इस सन्धि को तुरन्त तोड दिया जाये। अब जहल जो निकट ही खडा था उसने कहा कि इसे कभी फाडा नहीं जायेगा।

इसी दौरान अबु तालिब कुरैश के सरदारों को यह सुचना देने के लिए आये कि उनके भतीजे पैगम्बर (सल्ल0) के ऊपर एक वह्य अवतरित हुई है जिसमें बताया गया है कि उनकी तमाम घोषणाओं को चीटियाँ खा गयी हैं जिनमें अन्याय और अत्याचार की बाते थीं सिवाय उन अंशों के जहाँ अल्लाह का नाम लिखा हुआ है। उन्होंने वादा किया

कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) के शब्द असत्य सिद्ध हुए तो वह उनका साथ छोड देंगे अन्यथा उन्हें अपने वहिष्कार को वापस लेना होगा और इसे रदद् करना होगा। मक्के के लोग उनके इस प्रस्ताव की गम्भीरता पर सहमत हो गये। एक कुरैश सरदार मुतइम उस पन्ने (भेड या बकरी का चमडा लिखने के लिए प्रयोग किया जाता था) को देखने गया और वहाँ उसने पाया कि उसे चीटियाँ खा गयी हैं और उसमें से कछ नहीं बचा है सिवाय उस अंश के (जहाँ अल्लाह के नाम से) लिखा हुआ था।

चरमपंथियों ने महसूस किया कि अब प्रतिरोध करने का कोई कारण नहीं है। इस प्रकार वह सन्धि समाप्त हो गयी और प्रतिबन्ध उठा लिया गया। मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथियों को घर लौटने की अनुमति दे दी गयी। उस परीक्षा के सन्दर्भ में जिससे मुसलमानों को गुजारा गया था. कुरैश सरदारों को एक सुनहरा अवसर मुहम्मद (सल्ल0) की पैगम्बरी की अनोखी पहिचान (सफेद चीटियाँ समझौते के पन्ने को खा गयीं।) को देखने का अनुभव करने के लिए मिला लेकिन उनके दयनीय समूह के लिए यह चमत्कार अर्थहीन था। वह अडे रहे और उन्होंने अपने अविश्वास को बढा लिया:

> *''और वह कोई भी निशानी देखें तो वह मँह मोडेंगे ही। और कहेंगे कि यह तो जाद है जो पहले से चला आ रहा है''।* (करआन 54:2)

दखों का वर्ष

वहिष्कार के समापन के बाद कुछ वर्षों के लिए छोटे से मुस्लिम समुदाय के परिस्थितियाँ सुधर गयी थीं। वह एक बार फिर कुरैश के साथ व्यवहारिक और मित्रता के सम्बन्ध स्थापित कर सकते थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपना सन्देश पहुँचाते रहे और उमर (रजि0) ने जो स्वप्न देखा था वह मक्के में दैनिक तथ्य बन गया था. यद्यपि अपमान और उत्पीडन नहीं रुका था।

परिस्थितियाँ शीघ्र ही नाटकीय ढंग से परिवर्तित हो गयीं. परन्तु वहिष्कार के समापन के शीघ्र ही बाद पैगम्बर (सल्ल0) की पत्नी हजरत खदीजा (रजि0) का देहान्त

हो गया। वह मुहम्मद (सल्ल0) की पत्नी. धर्म में सहयोगी. और 25 वर्षों तक सर्वाधिक विश्वसनीय सहायक रहीं और अल्लाह ने उन्हें मिशन के प्रारम्भ होने के नौ वर्षों बाद 619 ई0 में वापस बुला लिया था। पैगम्बर (सल्ल0) का दुख बहुत गहरा था: वह जानते थे कि उनके पक्ष में हजरत खदीजा (रजि0) की मौजूदगी अल्लाह की ओर से सुरक्षा और प्रेम की निशानियों में से एक निशानी थी। उनकी मौजूदगी और उन्होंने उनके जीवन में जो भूमिका निभायी थी उसकी रोशनी में कोई व्यक्ति बहुत बाद में अवतरित होने वाली एक आयत के अनेक संभावित अर्थों को समझ सकता है जो पति-पत्नी के सम्बन्धों का वर्णन करती है:

''वह तुम्हारे लिए वस्त्र हैं और तुम उनके लिए वस्त्र हो''। (कुरआन 2:187)

वह ऐसा वस्त्र रहीं जो बचाता (भावनात्मक रूप से और शारीरिक रूप से भी). छिपाता (कमजोरियों और सन्देहों तथा मुल्यवान वस्तओं को भी) और गर्मी. सामर्थ्य. पद प्रतिष्ठा और शालीनता प्रदान करता है।

अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ था कि पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा अबू तालिब गम्भीर रूप से बीमार हो गये। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उनसे मिलने गये जहाँ उन्होंने अपने शत्रुओं अबू जहल और अबू उमय्या को देखा। आपने चाचा अबू तालिब से अनुरोध ा किया: *''मेरे चाचा आप मात्र कह दें कि कोई वास्तविक प्रभु नहीं सिवाय अल्लाह के और मैं अल्लाह के समक्ष इसकी गवाही दूँगा (कि आप आस्थावान मुसलमान हैं)''*। अबू जहल और अबू उमय्या ने उन्हें सम्बोध्ति करते हुए कहा: ''अबू तालिब. क्या आप अपने पिता का धर्म छोड देंगे?'' पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) लगातार उनसे अनुरोध करते रहे और अबू जहल और अबू उमय्या उनसे वही दुहराते रहे यहाँ तक कि अबू तालिब ने अपना अन्तिम निर्णय सुना दिया कि वह अपने पिता के धर्म पर अटल हैं और यह कहने से मना कर दिया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और वास्तविक स्वामी नहीं है। इसपर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने टिप्पणी की

''अल्लाह की कसम. मैं निरन्तर आपके लिए क्षमा-याचना करता रहूँगा. यहाँ तक कि मझे अल्लाह के द्वारा ऐसा करने से मना कर दिया जाये''।

इस मामले पर और अधिक वार्त्ता करने का समय उन्हें नहीं मिला। अबु तालिब का देहान्त हो गया और पैगम्बर उनके पास थे। यह व्यक्ति जिसने अपनी प्रतिष्ठा और साहस के द्वारा अपने से छोटे व्यक्ति को सुरक्षा प्यार और सम्मान दिया था. उसने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया। मुहम्मद (सल्ल0) उनसे प्रेम करते थे और उनका सम्मान करते थे। उनका दुख और अधिक बढ गया। इस दुख और कमजोरी पर इस घटना के सम्बन्ध ा में एक आयत अवतरित हुई जिसमें दिलों की स्थिति और उसके रहस्यों के सम्बन्ध में एक शाश्वत शिक्षा दी गयी है:

> *''तुम जिनसे प्रेम करते हो मार्गदर्शन नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है मार्गदर्शन देता है। और वही भली प्रकार जानता है जो सन्मार्ग स्वीकार करने वाले हैं''।* (कुरआन 28:56)

कुछ ही महीनों के अन्तराल में पैगम्बर (सल्ल0) दोहरी दुर्बलता में ग्रस्त प्रतीत होने लगे. क्योंकि उन्होंने ऐसे व्यक्ति को खो दिया था जिसने उन्हें प्यार दिया था और जिस व्यक्ति ने उन्हें सुरक्षा प्रदान की थी। इस दुख के बावजुद आपको तत्परता प्रतिक्रिया की आवश्यकता और उस मुस्लिम समुदाय की सुरक्षा के अन्तिम साधन की आवश्यकता थी जो मक्के में रह गये थे। महम्मद (सल्ल0) ने मक्का शहर के बाहर से समर्थन प्राप्त करने का निर्णय लिया।

खदीजा (रजि0)
एक ध्यान रखने वाली पत्नी

घटनाओं से भरे उन वर्षों के दौरान हजरत खदीजा (रजि0) ने जो भूमिका निभायी थी उसमें अनेक घटनायें थीं. उन घटनाओं में कुछ असाधारण थीं और कुछ अन्य अत्यन्त पीडादायक थीं। वह ऐसी महिला थीं जिन्होंने मुहम्मद (सल्ल0) के अन्दर सबसे पहले आप ईमानदारी. पारदर्शिता. सज्जनता और आपके चरित्र को देखा और फिर आपको अपने लिए चुना। सामान्य रीति के विरुद्ध उन्होंने अपनी सहेली नुफैसा के माध्यम से विवाह का प्रस्ताव करने का साहस प्रकट किया। इस बन्धन ने उनको प्रसन्नता. दुख और निराशा प्रदान की: ''उन्होंने अपने दो बेटों कासिम और अब्दुल्लाह को बचपन में ही खो दिया और उनकी मात्र चार बेटियाँ जीवित रहीं। इस परिवार की मंजिल पर्याप्त रूप से कठिन थी परन्तु अरबों में एक बेटी का जन्म अपमानजनक समझा जाता था। हदीसों में रिवायत है कि इस रीति के विपरीत मुहम्मद (सल्ल0) और आपकी पत्नी खदीजा (रजि0) अपनी बेटियों को अपने से कितना अधिक निकट रखते. प्यार करते और देखभाल करते और सार्वजनिक रूप से ऐसे व्यवहार का प्रदर्शन करने में संकोच नहीं करते थे।

जब 40 वर्ष की आयु में मुहम्मद (सल्ल0) पर पहली बार वह्य का अवतरण हुआ तो वह उनकी पत्नी ही थीं और वह पहली व्यक्ति थी. जिन्होंने उनका सहयोग किया और साँवत्ना दी। इन वर्षों के दौरान उन्होंने उस व्यक्ति के चरित्र की सज्जनता को विशेष रूप देखा था जब पैगम्बर (सल्ल0) हिरा की गुफा से उनके पास वापस आये. परेशान और गहरे सन्देहों में घिरे हुए. कि वह क्या हैं? और उनके साथ हो क्या रहा है? उन्होंने उन्हें अपने प्यार में लपेटा। उनके गुणों को याद दिलाया और उनके आत्म-विश्वास को वापस दिलाया। पहली वह्य असाधारण उपहार भी थी और भयानक परीक्षा भी। आप अकेले थे

और हताश थे: आप अपनी पत्नी के पास आये जिन्होंने तुरन्त आपको साँवत्ना और सहयोग प्रदान किया। उस क्षण से आगे निरन्तर वह दोनों परीक्षा का सामना कर रहे थे. इसके अर्थ को समझने का प्रयास कर रहे थे। अल्लाह की पुकार का उत्तर देने और आध यात्मिक दिक्षा के मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास कर रहे थे। इस सम्बन्ध में मुहम्मद (सल्ल0) की परीक्षा में हजरत खदीजा (रजि0) उनके दिल में अल्लाह की मौजूदगी की एक निशानी थीं: खदीजा (रजि0) जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और मुहम्मद (सल्ल0) के मिशन के पहले दस वर्षों में वह सदैव आपके पक्ष में रहीं. विश्वसनीय रूप से एक वफादार साथी के रूप में रहीं। पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन में आपकी भूमिका असाधारण रही। पच्चीस वर्षों तक वह आपकी एक मात्र पत्नी रहीं. जिनकी मौजूदगी ने पैगम्बर की रक्षा की परन्तु उन्हें भी अपने घरवालों द्वारा तिरस्कार. उत्पीडन और वहिष्कार झेलना पडा। वह उनको अत्यधिक प्यार करते थे। हजरत खदीजा (रजि0) ने अल्लाह द्वारा उन्हें चुने जाने की सूचना को प्राप्त किया: वह स्वतन्त्र. गौरवान्वित और प्रतिष्ठित थीं। फिर उन्होंने एक पत्नी के रूप में सक्षम और ध्यान रखने वाली. वफादार और विश्वास से परिपूर्ण थीं। वह एक पवित्र मुसलमान. निष्ठापूर्ण. दृढ-संकल्प. सहनशील थीं। मुहम्मद (सल्ल0) जो अल्लाह के अन्तिम पैगम्बर थे. तन्हा नहीं थे। अल्लाह के उपकारों और उसके स्नेह की सबसे महत्वपूर्ण निशानी उनके लिए उनके जीवन में एक महिला थीं जो उनकी पत्नी थीं।

अपनी पत्नी खदीजा (रजि0) के निधन पर गहरे शोक की कोमल भावनाएँ पैगम्बर (सल्ल0) के मुख से इन भावपूर्ण शब्दों में फूट पडीं:

> *''उन्होंने मुझ पर विश्वास किया जब लोगों ने मुझे झुठलाया। और उन्होंने मुझपर भरोसा किया जब लोगों ने मुझे झूठा घोषित किया। और उन्होंने मेरी अपने आप के द्वारा और अपनी सम्पत्ति के द्वारा मदद की जबकि अन्य ने ऐसा नहीं किया. और अल्लाह ने मुझे उनके द्वारा बच्चे भी प्रदान किये''।*

तायफ

नुबुवत के दसवें वर्ष में अर्थात जुन 619 ई0 के प्रारम्भ में मुहम्मद (सल्ल0) मक्का से लगभग 60 कि0मी0 दुर तायफ के लिए. अपने स्वतन्त्रत किये हुए दास. जैद (रजि0) के साथ लोगों को इस्लाम की दावत देने और सकीफ कबीले के सरदारों से बात करने के लिए पैदल निकले. इस आशा में कि शायद वह इस्लाम के सन्देश को सुने। उनको वहाँ के लोगों ने नीरसतापुर्वक लिया और वहाँ के सरदारों ने आपके पैगम्बर होने के दावे को हास्यासपद बताया। उन्होंने पुछा कि अल्लाह किस प्रकार अपने पैगम्बर को अजनबी कबीलों से समर्थन माँगने के लिए विवश होने देगा? उन्होंने अब इस मामले पर बात करने से भी इन्कार कर दिया। बल्कि उन्होंने वहाँ की आबादी को पैगम्बर के विरुद्ध उत्तेजित कर दियाः जब आप तायफ छोड रहे थे तो उनको अपमानित किया गया और उनके ऊपर बच्चों ने पत्थर फेंके और आपके पैरों से खुन बहने लगा: और हजरत जैद (रजि0) जो उनको बचाने का प्रयास कर रहे थे. उनके सिर में चोट आयी। यह भीड उस समय तक न रुकी जब तक उसने उन्हें रेतीले मैदान पर आस-पास की पहाडियों के निकट तक पीछा न कर लिया। वहाँ थक कर और चुर होकर अंततः आपने आक्रमणकारियों से बचने के लिए बाग में शरण ली। मनुष्यों में से कोई सहायता करने वाला न पाकर अल्लाह की ओर ध्यान केन्द्रित किया और दुआ कीः

“ऐ अल्लाह. मात्र तुझसे ही मैं अपनी दुर्बलता की शिकायत करता हुँ. अपने संसाधनों की कमी और मनुष्यों के समक्ष अपनी महत्वहीनता की शिकायत करता हुँ। ऐ सबसे दयावानों के दयावान आप कमजोरों के स्वामी हैं और आप मेरे पालनहार हैं। आपने मुझे इनके हाथों में सौप दिया? कुछ दुर के अजनबी लोगों के हाथ. जो मेरे साथ दुर्व्यवहार करें? अथवा एक शत्रु को. जिनको तुने मेरे मामलों पर अधिकार दे रखा है? मुझे उस वक्त तक कोई डर नहीं जब तक आप मझसे क्रोधित न हों। आपका दयालतापर्ण समर्थन मेरे लिए ज्यादा चौडा

मार्ग और व्यापक क्षितिज प्रदान करे! मैं आपकी रोशनी में शरण माँगता हूँ जिससे सम्पूर्ण अन्धकार रोशन हो जाये और इस संसार की और परलोक की वस्तुएँ उचित दिशा में हो जायें. ताकि मुझे तेरा क्रोध न पडे और तेरा रोष मुझे न छुए। जबतक आप सन्तुष्ट न हों चेतावनी देने का आपको विशेषाधिकार है। आपके अतिरिक्त कोई शक्ति और कोई सामर्थ्य किसी और में नहीं है"।

उस विशेष क्षण में अन्य लोगों से दूर अपने विश्वास के एकान्तवास में और अपने आत्मविश्वास के साथ और अत्यन्त दयावान पर विश्वास के साथ. आपने अपने आप को पूर्ण रूप से अल्लाह के हाथों में दे दिया। इस अर्थ में यह दुआ यह बताती है कि मुहम्मद (सल्ल0) अपना आत्मविश्वास और शान्ति अपने सबसे निकट. सर्वशक्तिमान अल्लाह से सम्बन्धों के माध्यम से प्राप्त करते थे। यह दुआ जो बहुत प्रसिद्ध हो गयी. मनुष्य की मानवता की असहायता और पैगम्बर की असाधारण आध्यात्मिक शक्ति का आभास कराती है। प्रत्यक्ष रूप से अकेले और बिना किसी समर्थन के रहते हुए वह जानते थे कि वह अकेले नहीं हैं।

एक दास

जैसे ही मुहम्मद (सल्ल0) ने बाग में प्रवेश किया. बाग के दो स्वामियों ने उन्हें दूर से देखा. और यह देखा कि आप अपने दोनों हाथ ऊठाकर अल्लाह से दुआ कर रहे हैं। उन्होंने अपने एक दास अददास. जो कि ईसाई युवक था. अंगूरों के एक गुच्छे के साथ भेजा। जब अददास ने आपको अंगूर दिये तो उसने पैगम्बर (सल्ल0) को 'बिस्मिल्लाह!' (''अल्लाह के नाम से''. ''मैं अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ) कहते सुना. अददास अत्यधिक चकित हुआ और उसने आपका परिचय पूछा। जिस व्यक्ति ने इन शब्दों को कहा था. जिसे उस ईसाई ने किसी बहुदेववादी को कहते हुए कभी नहीं सुना था। मुहम्मद (सल्ल0) ने पूछा कि उसका सम्बन्ध कहाँ से है और अददास ने उत्तर दिया कि उसका सम्बन्ध नैनवा (जो अब इस्राईल में है) से है। पैगम्बर (सल्ल0) ने आगे कहाः ''न्यायप्रिय यहून्ना

की भूमि जो मत्ता का बेटा था'' । वह युवक उलझन में पड गया और उसे आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति कैसे उस सिलसिले में जान सकता है। यह बताने के बाद कि वह ईसाई है। अददास ने फिर महम्मद (सल्ल0) से पछा कि वह कौन हैं और यह जानकारी उन्हें . . . . *''यहन्ना मेरे भाई हैं। वह एक पैगम्बर थे और मैं एक पैगम्बर हूँ''* .

अददास पैगम्बर (सल्ल0) की ओर थोडी देर तक देखता रहा फिर उसने आपके सिर. हाथों और पैरों को चूमा: उसके मालिक इस पर आश्चर्यचकित हुए और जब वह उनके पास वापस गया तो बताया कि सिर्फ पैगम्बर ही वह बात जान सकता है जो यह व्यक्ति जानता है। अददास ने तुरन्त कुछ क्षणों की वार्ता के बाद इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। हब्शा के ईसाई (रजि0) ने तुरन्त दोनों सन्देशों (हजरत ईसा (अलै0) और मुहम्मद (सल्ल0)) के मध्य सम्बन्ध को पहिचान लिया था और अब एक युवा दास ने भी जो स्वयं भी ईसाई था. उसने भी उसी भावना के साथ मुहम्मद (सल्ल0) को पहिचाना। मुहम्मद (सल्ल0) जो पहले ही दुखः और अलग-थलग अवस्था में थे अपने मार्ग में दो बार ऐसे ईसाईयों को पाया जिन्होंने अपना भरोसा दिलाया. सम्मान किया और शरण दिया: ''एक (रजि0) ने मुसलमानों का स्वागत किया और उन्हें सुरक्षा प्रदान की और एक दास ने अपने पैगम्बर की सेवा की जब प्रत्येक व्यक्ति ने उनको और उनके इस्लाम के सन्देश ट अस्वीकार कर दिया था'' ।

अल्लाह के पैगम्बर (सल्ल0) इसके बाद ताजादम हो गये और आपका दिल. आपको दी गयी अदश्य आसमानी सहायता से शान्त हो गया और आप मदीना की तरफ बढे।

मदीना में सकारात्मक प्रतिक्रिया

अक्बा नामक स्थान पर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मदीना के एक प्रतिनिधिमण्डल मिले। उन लोगों का सम्बन्ध खजरज कबीले से था जो मदीना के दो प्रतिद्वन्दी कबीलों

में से एक था (दूसरा प्रतिद्वन्दी कबीला औस था) और मुहम्मद (सल्ल0) ने उनको इस्लाम का सन्देश पहुँचाना प्रारम्भ किया। वह पहले ही इस सन्देश के सम्बन्ध में मदीना शहर में रहने वाले यहूदी कबीलों से सुन चुके थे और वह लोग इस सन्देश के सम्बन्ध में और अधिक जानना चाहते थे। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) का सन्देश सुना और अन्ततः इस्लाम का सन्देश स्वीकार कर लिया। उन्होंने वचन दिया कि वह इस सन्देश के सार को अपने कबीले के सदस्यों तक पहुँचायेंगे और पैगम्बर (सल्ल0) के साथ निरन्तर सम्पर्क में रहेंगे। वह अपने घर वापस गये और उन्होंने इस्लाम का सन्देश मदीना में पहँचाना प्रारम्भ कर दिया।

एक वर्ष के बाद एक बार फिर हज करने वाले और व्यापारी वार्षिक समारोहों के लिए एकत्र हो रहे थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और मदीना के प्रतिनिधिमण्डल के बीच एक दूसरी बैठक आयोजित की गयी और उसमें मदीना के लोगों ने बताया कि मदीना में कैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रहीं है। इस बैठक में मदीना के 12 व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमें से दो व्यक्तियों का सम्बन्ध औस कबीले से था। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) के साथ अपने सहयोग का का वचन दिया और यह भी वचन दिया कि वह एक मात्र अल्लाह की इबादत करेंगे और वह इस्लाम के कर्त्तव्यों और माँगों का सम्मान करेंगे। इस प्रकार वह लोग मदीना का पहला मुस्लिम समुदाय स्थापित करने वाले थे। मुहम्मम (सल्ल0) ने उनके साथ अपने एक साथी मुसा बिन उमैर को भेजा जो अपनी शान्त प्रकति. विवेक और कुरआन के उच्चारण में अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थे।

मदीना वापस आकर प्रतिनिधिमण्डल इस्लाम के सन्देश का प्रचार करता रहा और मुसअब (रजि0) कुरआन का उच्चारण करते और उनके समक्ष मदीना के लोगों द्वारा जो प्रश्न प्रस्तुत किये जाते उनका उत्तर देते। औस और खजरज नामक कबीलों के बीच प्राचीन काल से जारी बँटवारे और प्रतिद्वन्दिता के बावजूद दोनों कबीले के लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और इस दौरान उनकी समझ में आया कि उनकी प्रतिद्वन्दता अब आध ारहीन हो चुकी है। इस्लाम का बन्धुत्वपादी सन्देश उनमें एकता पैदा कर रहा था। तथापि. कबीलों के सरदार इस्लाम धर्म स्वीकार करने से परहेज करते रहे। हजरत मुसअब (रजि0) उनके मौखिक आक्रमणों पर न तो प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे और न तो उनके आक्रामक

व्यवहार पर। इसके विपरीत वह उत्तर देते थेः ''बैठिये और सन्देश को सुनिये यदि आप इसे पसन्द करें तो स्वीकार कीजिए और यदि न पसन्द करें तो छोड दीजिए''। इसके परिणामस्वरूप सरदारों में भी इस्लाम स्वीकार करने की दर ऊँची हो गयी।

अगले वर्ष के हज के दौरान. मुहम्मद (सल्ल0) ने मदीना के मुसलमानों के एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधिमण्डल से भेंट की. जो 73 व्यक्तियों पर आधारित था. जिसमें 2 औरतें थीं और उनका सम्बन्ध औस और खजरज दोनों कबीलों से था और वह अपनी इस्लाम के प्रति प्रतिबद्धता की शुभ सुचना पैगम्बर (सल्ल0) को देने आये थे। भविष्य के सम्बन्धों की प्रकृति के सम्बन्ध में कुछ वार्त्ताओं के बाद उन्होंने एक दुसरी सन्धि का निर्णय लिया जिसमें मदीना के मुसलमानों ने पैगम्बर (सल्ल0) तथा मक्का के मुस्लिम महिलाओं और बच्चों को किसी भी आक्रमण की स्थिति में सुरक्षा प्रदान करने का वचन दिया।

यह दुसरा समझौता. जिसमें मदीना के मुसलमानों की ओर से मक्का मुसलमान भाईयों और बहनों के लिए शरण और सुरक्षा का वचन दिया गया था. मुहम्मद (सल्ल0) के समक्ष उज्जवल भविष्य की आशा का द्वार खोल दिया था। उस समय से महम्मद (सल्ल0) मसलमानों को छोटे-छोटे गटों में मदीना प्रवास करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे जबकि आपके निकटतम साथी आपके साथ अब भी मक्का में रहे।

एक षडयन्त्र

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के मक्का में अन्तिम रक्षक मुतइम का अभी जल्द ही देहान्त हुआ था। परिस्थितियाँ विशेष रूप से कठिन होती जा रही थीं और कुरैश यह देख चुके थे कि मुसलमानों ने मक्का छोडना प्रारम्भ कर दिया है. इसकी प्रतिक्रियास्वरूप वह अपने विरोध में अधिक से अधिक हिंसक होते जा रहे थे। कबीलों के सरदारों ने अबु लहब व अबु जहल के उकसावे पर एकजुट होने का निर्णय लिया। उन्होंने यह निश्चय किया कि मुहम्मद (सल्ल0) का काम तमाम कर दिया जाना चाहिए। उनकी योजना यह थी कि प्रत्येक कबीले से एक-एक व्यक्ति इस योजना के लिए चना जाये ताकि बन हाशिम के

लोगों द्वारा किसी एक विशेष कबीले से बदला लेने और खुनबहा माँगने की स्थिति को रोका जा सके। वह इस बात पर सहमत हुए कि थोडा भी समय नष्ट किये बिना जितना शीघ्र सम्भव हो सके। उन्हें पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से मुक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिए।

फरिश्ता जिब्रील (अलै0) मुहम्मद (सल्ल0) के पास उस स्वप्न की पुष्टि करने आये थे जो आपने कुछ ही दिनों पहले देखा था. जब आपने स्वप्न में देखा था कि एक विकासशील शहर दिखाई दिया और उसने उनका स्वागत किया। फरिश्ते ने आपके समक्ष घोषणा की कि उन्हें मदीना प्रवास के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और उनके साथ उनके मित्र अबु बक्र (रजि0) को होना चाहिए। पैगम्बर (सल्ल0) ने यह सुचना हजरत अबु बक्र (रजि0) को दी जिन्हें सुनकर खुशी के आँसु छलक पडे। तथापि उन्हें अब भी अपने प्रस्थान के अन्तिम विवरण की योजना अभी तैयार करनी थी। उन्होंने सुन रखा था कि कुरैश ने मुहम्मद (सल्ल0) से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक योजना तैयार की है। मुह (सल्ल0) ने हजरत अली (रजि0) से कहा कि अगली रात उनके बिस्तर पर वह सोयें और उस समय तक मक्का न छोडें जब तक वह उन्हें इसका आदेश न दें

पैगम्बर (सल्ल0) आपके घर के सामने छिप गये और आपके बाहर निकलने की प्रतीक्षा की क्योंकि आप सुर्योदय से पहले नमाज के लिए निकला करते थे। जब कुरैश के संभावित हत्यारों ने अन्दर कुछ शोरगुल सुना और समझा कि मुहम्मद (सल्ल0) उठ गये हैं और मक्का छोडने की तैयारी कर रहे हैं. वह लगभग अपने आक्रमण के लिए तैयार ही थे कि उन्हें मालम हआ कि उनको धोखा हो गया है और घर में जो व्यक्ति मौजद है वह उनका चचेरा भाई अली है। करैश और उनके सहयोगियों की योजना असफल हो गयी।

महम्मद से वफा......

9

प्रवास

हिजरत

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को पूर्णतः एक अल्लाह पर भरोसा था और घटनाओं के ज्वार के कारण आप कभी उससे विचलित न हुए। कुरआन का सन्देश उन्हें याद दिला रहा था कि उन्हें ''इन्शा अल्लाह'' (यदि अल्लाह चाहे) कहना कभी नहीं भूलना चाहिए. जब वह कुछ करने की योजना बनायें। और विनम्रतापूर्वक अल्लाह की याद सदैव उनके साथ रहनी चाहिए। (विशेष रूप से मनुष्य के रूप में उनकी क्षमता के सम्बन्ध में)।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मदीना के लिए हिजरत (प्रवास) की योजना लगभग दो वर्ष पहले से बना रहे थे और कुछ भी संयोग पर नहीं छोडा गया था। मात्र अपनी मानवीय क्षमताओं और अपनी बुद्धि का पूर्ण रूप से उपयोग करने के बाद वह स्वयं अल्लाह की इच्छा पर विश्वास करते थे। इस प्रकार आपने हमें तवक्कल अल-अल्लाह (अल्लाह पर भरोसा) का अर्थ बताया। हममें से प्रत्येक को बुद्धि. आत्मा. मन. भावना आदि के गुण उनके उपयोग की क्षमता के साथ प्रदान किये गये हैं। इसके साथ-साथ विनम्रतापूर्वक यह याद रखते हुए कि मानवीय रूप में हमारे लिए जो कुछ सम्भव है मात्र अल्लाह ही घटनाओं को व्यवहार रूप देता है। वास्तव में यह शिक्षा भाग्यवाद के लालचपूर्ण सिद्धान्त से पूर्णतः विपरीत है। अल्लाह उसी समय सहायता करेगा जब मनुष्य अपने स्तर पर खुद कर्म करे

और वह अपने कर्म के लिए सम्पूर्ण क्षमताओं का उपयोग कर चका हो. और यही करआन की इस आयत का वास्तविक अर्थ है:

''निस्सन्देह अल्लाह किसी कौम की दशा को नहीं बदलता जब तक कि वह उसको न बदल डालें जो उनके मन में है''। (करआन 13:11)

अब बक्र (रजि0)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और अबू बक्र (रजि0) ने रात में मक्का छोडने का निर्णय लिया और लोगों का ध्यान आकर्षित होने से बचने के लिए यमन की दिशा निकले। दक्षिण की दिशा में जाकर वह लोग कुछ दिनों के लिए सौर की गुफा में छिपे रहे

यद्यपि सम्पूर्ण योजनाएँ बनाने के बाद भी कुरैश के लोगों का एक गुट एक चाल की सम्भावना देखते हुए मुहम्मद (सल्ल0) को तलाश करने के लिए दक्षिण की ओर गया। वह लोग एक गुफा के समक्ष पहुँचे और अन्दर प्रवेश करने के लिए तैयार हुए। जह वह खडे थे. उन्हें अबू बक्र देख सकते थे और चेतावनी के रूप में उन्होंने पैगम्बर को सूचित किया कि अगर वह नीचे देखेंगे तो वह हम दोनों को देख लेने में असफल न होंगे और मुहम्मद (सल्ल0) ने आश्वस्त किया और उनके कान में धीरे से कहाः

''डरो नहीं क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है''। (कुरआन 9:40)

फिर आपने आगे कहा. ''तुम उन दो व्यक्तियों के सम्बन्ध में क्या समझते हो जिनके साथ तीसरा अल्लाह है?'' इन शब्दों ने अबू बक्र के दिल पर मरहम का काम किया। गुफा के मुँह पर उस गिरोह ने देखा कि एक मकडी का जाल गुफा के प्रवेश द्वार पर है और यह भी देखा कि एक सफेद कबूतर ने वहाँ घोसला बना रखा था। इससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि मुहम्मद (सल्ल0) इस गुफा में छिपे नहीं होंगे और उन्होंने निर्णय लिया कि उन्हें कहीं और तलाश किया जाये।

उनकी सावधानी पूर्वक नियोजित रणनीति के बावजूद मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथी कमजोरी की परीक्षा से गुजर रहे थे। उनका जीवन किसी भी प्रकार सुरक्षित नहीं था परन्तु एक कमजोर मकडी का जाल: अल्लाह पर भरोसा. जिसकी याददिहानी पैगम्बर (सल्ल0) उस विशेष क्षण करा रहे थे और इस प्रकार इसका पूर्ण अर्थ और इसकी क्षमता प्रकट हो रही थी। जब मुहम्मद (सल्ल0) ने प्रवास किया उस समय आपने यह ध्यान रखा कि उनके पास किसी की धरोहर न हो। उन्होंने किसी से उपहार लेने से मना किया। अपने कर्जों को चुकाया और आपके पास जो धरोहरे थीं उन्हें वापस किया लेकिन वह यह भी जानते थे कि उनके पास सब कुछ अल्लाह की धरोहर है और यह कि अल्लाह के प्रति वह ऋणी हैं और उनके कर्त्तव्य असीम है।

हजरत अबू बक्र (रजि0) ने एक गैर-मुस्लिम बद्दू उरैकत की सेवाएँ ऐसे रास्ते से मदीना की ओर ले जाने के लिए ली थीं जिस पर यात्रा करने का किसी को पता न चले और वह जाना पहिचाना रास्ता न हो। प्रस्थान के लिए निर्धारित समय पर. उरैकत उनसे गुफा में ऊँटों के साथ मिलने आये। फिर वह मक्का से 340 कि0मी0 दूर स्थित मदीना की ओर जाने से पहले पश्चिम की ओर गये. फिर दक्षिण की ओर। यह अत्यन्त जोखिम भरी यात्रा थी और यदि कुरैश उन तीनों यात्रियों को पकड लेते तो निश्चित रूप से वह मुहम्मद (सल्ल0) की इस्लामी क्रान्तिकारी गतिविधियों को समाप्त करने के लिए उन्हें कत्ल कर देते

निर्वासन
विश्वास (ईमान) की एक परीक्षा

मुहम्मद (सल्ल0) और आपके साथियों को अपने-अपने कबीलों के अपने भाईयों और बहनों के हाथों उत्पीडन और कठिनाईयों के कारण मक्का छोडना पडा। परिस्थितियं असहनीय हो गयी थीं। कछ स्त्रियाँ और परुष अपनी जान दे चके थे और अन्य लोगों

को यातनाएँ दी जा रही थीं। कुरैश के लोगों ने यह अन्तिम निर्णय ले लिया था कि वह मुहम्मद (सल्ल0) से छुटकारा पाकर रहेंगे। प्रवास सर्वप्रथम मुस्लिम स्त्रियों और पुरुषों के लिए वास्तविक विकल्प था क्योंकि वह लोग अपने धर्म के अनुसार कर्म करने के लिए स्वतन्त्रत नहीं थे और उन्होंने अपनी आस्थाओं के लिए अज्ञानतापूर्ण आस्थाओं से अलग होने का स्पष्ट रूप से निर्णय ले लिया था। क्योंकि कुरआन के अनुसार ''अल्लाह की जमीन पर्याप्त रूप से व्यापक है'' जैसा कि यह बात कुरआन में कही गयी है. उन्होंने अपनी मात्रभूमि को छोडने का निर्णय लिया. अपनी आदतों और अपनी दुनिया से अलग होने के लिए और मात्र अपनी आस्था के लिए वह निर्वासन के अनभव के लिए तैयार थे।

कुरआन का सन्देश उन मुस्लिम आस्थावानों के दुढ संकल्प और साहस की प्रशंसा करता है जिन्होंने ऐसा कठिन और मानवीय रूप से मँहगा कदम उठाकर एक अल्लाह में अपना विश्वास प्रकट कियाः

''और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना देश छोडा. इसके बाद कि उन पर अत्याचार किया गया. हम उनको संसार में अवश्य अच्छा ठिकाना देंगे और परलोक का पुण्य तो बहुत बडा है. काश वह जानते। वह ऐसे हैं जो धैर्य रखते हैं और अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं''। (कुरआन 16:41-42)

निर्वासन भी विश्वास (ईमान) की एक और परीक्षा है। सभी पैगम्बरों ने दिल की इस परीक्षा का अनुभव किया था और उनके बाद उन पर आस्था रखने वालों ने भी उसी परीक्षा का अनुभव किया। वह किस सीमा तक आगे जाने के लिए तैयार थे. किस सीमा तक वह अपने आप को न्यौछावर करने के लिए और एक अल्लाह. उसकी सच्चाई और उसके प्यार के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार थे? यह आस्था के ऐसे शाश्वत प्रश्न हैं जिनका सामना आस्थावान चेतनाओं को वर्तमान और अतीत में होता आया है। हिजरत मुस्लिम समदाय के लिए अपने अस्तित्व के प्रातःकाल में इसके उत्तरों में से एक उत्तर था।

वास्तव में. निवार्सन की आवश्यकता इसलिए भी थी ताकि सबसे पहले इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले मसलमान इस्लाम के भावार्थ के प्रति. स्थान. संस्कति और स्मति

के परिवर्तन के बावजूद इसके वफादार रहें। मदीना का अर्थ नये रीति-रिवाजों और नये ढंग के सामाजिक सम्बन्ध अंगीकार करने वाले थे।

निवार्सन एक अत्यधिक प्रबल अनुभव था क्योंकि इसका अर्थ एक भिन्न वातावरण में उसी अल्लाह के प्रति. उसी अर्थ में वफादार रहते हुए अपने आप को निर्मल करना था।

इस्लाम में अपने विश्वास के कारण प्रताडित किये गये आस्था मुसलमानों ने अपने अत्याचारियों से रिश्ता तोडकर स्वतन्त्रता की ओर प्र करने का निर्णय लिया। ऐसा करके उन्होंने इस बात पर बल दिया कि वह दमन को स्वीकार नहीं करेंगे. वह अत्याचार के शिकार बने रहने की दशा को स्वीकार नहीं करेंगे और मौलिक रूप से साधारण मामला है: सार्वजनिक रूप से यह एक अल्लाह का नाम लेने का अर्थ या तो स्वतन्त्र होना था या रिश्ता तोड लेना था। इस सन्देश को मक्का के सभी दासों तक पैगम्बर (सल्ल०) ने पहले ही पहँचा दिया था. फिर अब बक्र सिद्दीक (रजि0) के द्वारा पहँचाया गया: इस्लाम उनके आने का अर्थ उनकी मक्ति थी. और इस्लाम की सम्पर्ण शिक्षाएँ दासता के उन्मलन की ओर संकेत कर रही थीं। अतः सम्पर्ण मस्लिम आध्यात्मि समदाय को एक व्यापक आह्वान के साथ सम्बोधित किया गया: आस्था व स्वतन्त्रता और न्याय की आवश्यकता होती है और व्यक्ति को सदैव इ लिए तैयार रहना चाहिए. जैसा कि हिजरत करके लोगों को व्यक्तिगत सामहिक रूप से इसका मल्य चकाना पडा

हिजरत चेतना और हृदय से झठे भगवानों. बराईयों और पापों निष्कासन था। यह अपने जीवन के देवताओं (शक्ति. दौलत आदि) से मोडना: जीवन के अनैतिक मार्गों और असत्य से निर्वासन: अपना रिश्ता अपनी

जडों से तोडकर अपने आप को स्वतन्त्रत करना और उन सभ स्वतन्त्रताओं से अलग होना जो व्यंगात्मक रूप से हमारी आदतों ने लाग व लिया है। हिजरत का आध्यात्मिक अर्थ यही है। बाद में जब एक र (साथी) ने सबसे अच्छी और संभव हिजरत के बारे में पछा तो पैगम्बर (सल्ल०) ने उत्तर दियाः ''यह तुम्हारा बुराईयों (घृणित कर्मों. झठों और पापों) से निवार्सन हैं''। इस आध्यात्मिक निर्वासन की आवश्यकता बार-बार विभिन्न रूपों में होती है।

इस प्रकार. जिन मुसलमानों ने मक्का से मदीना की ओर प्रवास करके हिजरत की। वास्तव में उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं के एक अदभुत पहलू का अनुभव किया। क्योंकि उन्हें अपने आप की ओर एक नयी वापसी तक पहुँचना था। यह हृदय का प्रवास था। मदीना के लिए उनकी भौतिक यात्रा उन अपनी अन्तरात्मा की ओर एक आध्यात्मिक निर्वासन थाः अपने नगर अपनी जडों को छोडकर वह वापस अपने आप की ओर आ गये. अर्थात अपने अल्लाह के निकट. ऐतिहासिक संभावनाओं से परे. अपने जीवन के अर्थ ओर।

हजरत उमर (रजि0) ने बाद में यह निर्णय लिया कि यह अदभुत घटना इस्लामी युग का प्रारम्भ बिन्दु होगी। यह इस्लामी युग 622 ई0 से प्रारम्भ होता है। यह आध्यात्मिक निवार्सन का अनुभव है. आज भी हो सकता है प्रत्येक व्यक्ति के लिए और सभी युगों और कियामत तक के लिए खुला हुअ है. यह किसी व्यक्ति को अपनी ओर वापस लाता है और यह अनुभव अपने आप के और संसार के भ्रम से मुक्त करता है। वास्तव में अल्लाह लिए हिजरत करना प्रश्नों की एक श्रंखला का सामना करना है जिसे अल्ला

प्रत्येक हिजरत करने वाले व्यक्ति से पूँछता है: ''तुम कौन हो? तुम्हारे जीव का अर्थ क्या है? तुम कहाँ जा रहे हो? ऐसे निवार्सन का जोखिम स्वीकार करते हुए. एक अल्लाह पर विश्वास करते हुए उसका उत्तर यह होता है कि: आपके माध्यम से मैं अपने आप की ओर लौटता हूँ और अब मैं स्वतन्त्र हूँ

महम्मद से वफा......

10
मदीना

मक्का से कुबा तक की यात्रा में बीस दिन लगे। पैगम्बर (सल्ल0) और अबु बक्र (रजि0) कुबा नामक एक छोटे से गाँव में पहुँचे जो मदीना के बाहर स्थित था। लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और लोगों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रवास के प्रथम चरण के दौरान उन्होंने वहाँ तीन दिन व्यतीत किए और वहाँ एक मस्जिद का निर्माण शुरु कर दिया जो कि हिजरत के बाद पहली मस्जिद थी। जब उन्होंने कुबा छोडा. पैगम्बर (सल्ल0) ने मदीना की ओर रुख किया और दोपहर की नमाज के समय रनुना घाटी में पडाव किया जहाँ उन्होंने अपने साथियों के साथ पहली बार जुमे की नमाज अदा की. यहाँ पर पुनः एक मस्जिद का निर्माण शुरु किया गया। इसके बाद वह सोमवार. 4 अक्टूबर 622 ई0 (हिजरत के प्रथम वर्ष) को मदीना पहुँचे। बहुत से लोगों ने उन्हें रोक-टोक कर अपने साथ रहने के लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने लोगों से कहा कि लोग उनकी कस्वा नामक ऊँटनी को छोड दें वह जहाँ चाहे बिना रोक-टोक के जाये क्योंकि वह उस स्थान का संकेत करेगी जहाँ वह ठहरेंगे। वह भीड में आगे पीछे चलती रही और अन्त में दो अनाथों से सम्बन्धित एक जमीन पर रुक गयी। इस स्थान पर उनके लिए एक निजी आवास और एक मस्जिद का निर्माण तरन्त शरु कर दिया गया।

मस्जिद

इन तीन मस्जिदों का निर्माण करके पैगम्बर (सल्ल0) अल्लाह से सम्बन्ध. स्थान. मनुष्य और मानव समुदाय के लिए मस्जिद के महत्व और उसकी केन्द्रीयता की ओर संकेत कर रहे थे। मस्जिद का निर्माण सम्पूर्ण सृष्टि के मौलिक और महत्वपूर्ण धर्म पालन के अन्तर्गत एक विशेष आज्ञापालन के स्थल का निर्माण करना था: क्योंकि पैगम्बर (सल्ल0) फरमाया कि सम्पूर्ण धरती एक मस्जिद है। मुहम्मद (सल्ल0) के इस कथन का साधारण अर्थ यह है कि पैगम्बर (सल्ल0) को अल्लाह द्वारा धरती पर कहीं भी नमाज पढने की अनुमति दी गयी है और यह कि धरती का कोई भी भाग अपवित्र नहीं है। इसी प्रकार पैगम्बर का अनुसरण करते हुए इस्लामी कानून द्वारा मुसलमानों को यह अनुमति दी गयी है कि वह धरती पर कहीं भी नमाज पढ सकते हैं। अतः यह साधारण रूप से देखा जा सकता है कि मुसलमान विभिन्न स्थानों जैसे पार्कों. सडक के किनारे. रेलवे स्टेश एयरपोर्ट के टर्मिनल आदि पर नमाज पढते हैं। मुसलमानों के लिए पूरी धरती इबादत का स्थान है। वह कहीं भी हों. निर्धारित समय पर अल्लाह को याद करते हैं और नमाज पढते हैं।

इस साधारण अर्थ के अतिरिक्त पैगम्बर के कथन में एक और गहरा अर्थ पाया जाता है। एक मुसलमान यह समझता है कि मस्जिद एक शान्तिपूर्ण स्थान है। लोग इसमें शुद्ध दशा में प्रवेश करते हैं. उनके शरीर और उनके वस्त्र स्वच्छ रहते हैं। उनके हृदय और मन भी स्वच्छ रहते हैं: वह मस्जिद में अल्लाह के विनम्र दास के रूप में जाते हैं जब वह मस्जिद में प्रवेश करते हैं. तो वह उन लोगों को अस्सलामु अलैकुम (आपके ऊपर सलामती हो) कहते हैं जो मस्जिद में पहले से मौजूद होते हैं। नये आने वालों के द्वारा यह शान्ति की घोषणा होती है। मस्जिद शान्ति और सौहार्द फैलाती है। और यह दोहरा सन्देश देती है. अर्थात तौहीद (अल्लाह का एकत्व) और मानव बन्धुत्व। संसार की केन्द्रीय मस्जिद काबा है। काबा को इस्लामी कानन में हरम घोषित किया गया है। काबा में और इसके

आस-पास रक्तपात की अनुमति नहीं है। इस प्रकार शान्ति का सन्देश मस्जिद से सम्बन्धि ात है और यह सन्देश केन्द्रीय मस्जिद के सन्दर्भ में उच्चतम महत्व प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार जब पैगम्बर (सल्ल0) ने धरती की तुलना मस्जिद से की तो आपने धरती को शान्तिपूर्ण स्थान बनाने पर भी बल दिया। पैगम्बर के दृष्टिकोण के अनुसार ध ारती को. इसके प्रत्येक स्थान पर. सम्पूर्ण मानवता के लिए शान्ति का आनन्द लेने के योग्य बनाया जाना चाहिए। शान्ति का आदर्श उस समय प्राप्त किया जा सकेगा जब धरती वास्तव में मस्जिद तल्य हो जायेगी और मस्जिद की तरह वह सौहार्द और मानव बन्धत्व का सन्देश फैलायेगी।

अस्सलाम अलैकम
अल्लाह आपको सलामत रखे

कुबा पहँचने पर पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए सर्वप्रथम उनके मूलभूत दायित्व के सम्बन्ध में ये शब्द कहेः ''इस्लामिक अभिवादन *अस्सलाम अलैकम (आपके ऊपर सलामती हो!* के साथ शान्ति का प्रसार करो. व इसके उत्तर में *वअलैकम अस्सलाम (आपके ऊपर भी सलामती हो!* कहो. भूखे को भोजन कराओ. रिश्तों का सम्मान करो. जब लोग सो रहे हों तो उस समय नमाज पढो. तुम शान्ति के साथ जन्नत में प्रवेश पाओगे। अपने सम्बोधन मे शान्ति की ओर दो बार संकेत करके. प्रारम्भ में और अन्त में पैगम्बर (सल्ल0) ने लोगों को शिक्षा दी कि वह नये शहर में अपने आवास की प्रकृति को समझें। निर्धनों की देखभाल और रिश्तों के सम्मान के आदेश से ऐसा महसूस होता है कि वहाँ मुस्लिम मौजूदगी के नैतिक आधार की याददिहानी करायी जा रही थी जिसे प्रत्येक मुसलमान को स्थायी रूप से सम्मान देने का प्रण लेना चाहिए। रात की नमाज- जबकि लोग सो रहे हो- उपरोक्त आध्यात्मिक निर्वासन का संकेत करती है और

इसके द्वारा हृदय को आस्था में ऐसा सामर्थ्य और शान्ति उपलब्ध कराती है जिसरं नैतिकता का सम्मान और शान्ति के प्रसार की आवश्यकताओं को पुरा करना संभव हो सके। आन्तरिक शान्ति की तलाश (अकेले लेकिन अपने पारिवारिक प्यार के गर्म प्रकाश में) वह मार्ग है जिसका एक मुसलमान को पालन करना चाहिए ताकि वह संसार में शान्ति का प्रसार कर सके और निर्धनतम लोगों की सेवा कर सके।

मदीना में आवास के प्रत्येक चरण के साथ-साथ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के सम्पुर्ण जीवन में ये शिक्षाएँ मौजुद रहीं। मदीना पहुँचने पर आपको ऐसी सांकेतिक और राजनैतिक सत्ता प्राप्त हो गयी थी जिसकी शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से कोई अनदेखी नहीं कर सकता था। मदीना के वासियों में से अनेक लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था और उनको अल्लाह का पैगम्बर मान लिया था। इस्लाम में आने वाले. युगों तक युद्धरत रहे औस और खजरज दोनों कबीलों से सम्बन्ध रखते थे। इस्लाम का सन्देश इतना शक्तिशाली था कि उसने विभिन्न कबीलों के स्त्रियों और परुषों. विभिन्न सामाजिक वर्गों और विभिन्न मल के लोगों को एकता के सत्र में बाँध दिया था।

यहदियों के साथ एक सन्धि

मदीना प्रवास के बाद और यह सुनिश्चित कर लेने के बाद कि नये इस्लामीक समुदाय के स्तम्भ भली-भाँति प्रबल प्रशासनिक. राजनैतिक और वैचारिक एकता के आधार पर स्थापित हो चुके हैं तो पैगम्बर (सल्ल0) ने गैर मुस्लिमों के साथ नियमित और स्पष्ट परिभाषित सम्बन्ध स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। इन सम्पुर्ण प्रयासों में सम्पुर्ण मानवता के लिए शान्ति सुरक्षा और समृद्धि को व्यापक रूप से सुनिश्चित कराने पर बल दिया जा रहा था और इसका उद्देश्य विशेष रूप से अपने क्षेत्र में आपसी समझ और सौहार्द की भावना पैदा करना था।

भौगोलिक रूप से मदीना के सबसे निकटवर्ती लोग यहुदी थे। बुरी नीयत रखते हुए और विद्रोह की कट भावना अपने हृदय में पालते हुए भी उन्होंने तनिक भी द्वेष और

अवरोध का प्रदर्शन नहीं किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके साथ एक सन्धि करने का निर्णय लिया जिसकी धाराओं में आस्था तथा सम्पत्ति की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता सुनिश्चित की गयी हो। आपकी नीयत उनके साथ कठोर रणनीति जैसे निष्कासन. सम्पत्ति अथवा भमि अधिग्रहण अथवा वैमनस्य अपनाने की नहीं थी।

यह सन्धि मुसलमानों के आन्तरिक सम्बन्धों से सम्बन्धित एक अन्य व्यापक ढाँचे के सन्दर्भ में आ रही थी।

इस सन्धि के अनुमोदन के बाद मदीना और इसके निकटवर्ती कबीले एव गठबन्धन- लोकतान्त्रिक- राज्य के रूप में उभरे। जिसमें मदीना शहर उसकी राजधानी और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उसके राज्याध्यक्ष थे। इस राज्य की सत्ता मुख्य रूप से मुसलमानों के हाथों में थी और फलतः यह इस्लाम की वास्तविक राजधानी बन गया। शान्ति और सुरक्षा के क्षेत्र का विस्तार करने के लिए पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने राज्य के आस-पास बसने वाले अन्य कबीलों के साथ ऐसी ही सन्धियाँ करना प्रारम्भ कर दिया था।

समझौता (अल-अहद) इस्लाम में एक केन्द्रीय बिन्दु बन रहा था. वि‍ समझौतो से लेकर सामाजिक और व्यापारिक समझौतों तक. और वह भी जो युद्ध स्थितियों में मतभेदों को सुलझाने के लिए किये जाते हैं। कुरआन समझौतों के महत्व का वर्णन करता है और इसकी शर्तों का पालन करने की आवश्यकता पर बल देता हैः *''क्योंकि प्रत्येक समझौतों के सम्बन्ध में पूछा जायेगा''।* (कुरआन 17:34)

पैगम्बर (सल्ल0) ने इस सम्बन्ध में फरमायाः *''मसलमानों को अपने समझौतों की शर्तों पर अटल रहना चाहिए''।*

कपटाचारी

सन्धियों के बावजुद और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विभिन्न कबीलों और विभिन्न ध ार्मिक नेताओं को विश्वास में लेने के बावजुद परिस्थिति सामान्य नहीं थी। इसमें कुछ लोगों की ईर्ष्या. लालच और सत्ता के संघर्ष और अन्य लोगों की असफलताओं के साथ लेन-देन करना सम्मिलित था।

मदीना में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ऐसी प्रवुत्ति का सामना कर रहे थे जिसका सामना करने का अवसर उन्हें मक्के में न मिला था। वहाँ इस्लाम स्वीकार करने के लिए ऐसे मानवीय त्यागों की आवश्यकता होती थी कि वह मात्र निष्ठा और गहरी आस्था वाले दिलों में ही आ सकती थी। यहाँ इससे आगे की परिस्थितियाँ थीं। मदीना की सामाजिक संरचना. विभिन्न सत्ता केन्द्र. और मुहम्मद (सल्ल0) की भुमिका की प्रकुति भी लोगों के दिलों पर और सामाजिक मामलों पर ऐसा स्पष्ट प्रभाव डाल रही थी जिससे परिस्थितियाँ पुर्णतः बदल गयी थीं। कुछ लोग अपने इस्लाम में. धर्म परिवर्तन का प्रचार करके सत्ता के अवसर देख रहे थे। मदीना में जो कुरआन का पहला अध्याय अवतरित हुआ उसमें कपटाचार की समस्या पैदा करने वाले भुत की ओर संकेत किया गया है जिनको अरबी में मुनाफिकुन कहते हैं। यह लोग बडा खतरा थे क्योंकि यह मुस्लिम समुदाय पर अन्दर से आक्रमण कर रहे थे। सुरः बकरः जो कुरआन की सबसे लम्बी सुरः है. कपटाचारियों की प्रवुत्ति और उनकी दोअर्थी और कपटपर्ण भाषा का वर्णन करती हैं। उन लोगों में से कछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं

> *''और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये (विश्वास किया) अल्लाह पर और आखिरत (परलोक) के दिन पर. और वास्तविकता यह है वह ईमान वाले नहीं हैं। वह अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं परन्त वह मात्र अपने आप को धोखा दे रहें हैं और उन्हें इसका बोध नहीं हैं''।*
>
> (करआन 2:8-9)

और आगे बताया गया हैं:

"और जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं और जब अपने शैतानों कि बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तम्हारे साथ हैं. हम तो उनसे मात्र हँसी-मजाक करते हैं" । (कुरआन 2:14)

यह खतरा वास्तविक था और स्थायी रहने वाला था। उनमें से कुछ लोग ऐसे थे जो औस व खजरज के मध्यपुरानी लडाइयों को हवा दे रहे थे. और इन प्रयासों में से एक प्रयास लगभग सफल हो गया था। यदि एक सदस्य ने उचित समय पर उनव इस्लामी बन्धुत्व की उच्च प्रकृति की याददिहानी न कराया होता।

खजरज कबीले के एक सदस्य अब्दुल्लाह बिन उबई ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। लेकिन अनेक मुसलमानों के लिए वह समस्या उत्पन्न करने वाला प्रतीत होता था। यह कपटाचारियों में ऐसा कपटाचारी था जिसकी प्रवृत्ति को विशेष रूप से कुरआन में बयान किया गया है। औस कबीले का अबू आमिर भी ऐसा ही व्यक्ति समझा जाता था और उसने समस्या का विष फैला रखा था। उनके विरुद्ध कोई विशेष कदम नहीं उठाया गया बल्कि लोग उनसे सावधान रहते थे और यह ध्यान रखते थे कि उनके फैलाये हए जाल में न फँसें और इससे मसलमानों की पँक्तियों में मतभेद न उभरें।

बन्धत्व का शिखर

मुस्लमानों के मध्य सम्बन्धों को और अधिक मजबूत करने के लिये. और विशेषतः उन मुसलमानों के सम्बन्ध जो मदीना (अन्सार) से थे. और वह जो मक्का से प्रवास (मुहाजिर) करके आये थे। मुहम्मद (सल्ल0) ने मुसलमानों के बीच बन्धुत्व का एक नया औपचारिक गठबन्धन स्थापित करने का निर्णय लिया। इसका अभिप्राय यह था कि प्रत्येक मुहाजिर किसी एक अन्सार के साथ एक सन्धि से बँधा हुआ हो जो उसका पुनर्वास करने के लिए अपनी गहस्थ सामग्री में उसे साझी बनाये और उसे मदीना में हर संभव उपयु परिस्थितियों में रहने योग्य बनाये। एक व्यापक स्तर पर उनके सम्बन्ध बन्धत्व. भागीदारी

और परस्पर आध्यात्मिक सहयोग पर आधारित थे। (मक्का से प्रवास करने वाले मुसलमान अपने मदीना के भाईयों और बहनों को वह सब कुछ सिखाते थे जो अपने नये धर्म के बारे में जानते थे) इस समझौते का उद्देश्य नये मुस्लिम समुदाय को मदीना में विशेष क्षमता और एकता के साथ बसने में सक्षम बनाना था। इसके परिणाम स्वरूप इस्लाम में विश्वास रखने वालों के बीच अत्यन्त गहरे सम्बन्ध स्थापित हुए। और उनके आपसी प्रेम की यह तीव्रता उनके अल्लाह से प्रेम को प्रमाणित करती थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस आपसी प्रेम को ईमान में बन्धुत्व का शिखर घोषित किया और उनके सहाबी ने अपने दैनिक जीवन के कर्मों और वचनबद्धता में इसे स्थापित करने का प्रयास करते थेः कयामत के दिन अल्लाह तआला फरमायेगाः

> *''वह लोग कहाँ हैं जिन्होंने मेरी कृपा के लिए आपस में एक-दूसरे से प्यार किया? आज मैं उनको अपनी छाया में स्थान दूँगा, जिस दिन मेरी छाया के अतिरिक्त कोई छाया नहीं होगी''।*

मुसलमानों ने जिस प्रकार अनेक दर्दनाक, कठिन और भयानक परिस्थितियों का सामना किया उससे सिद्ध होता है कि उन्होंने बन्धुत्व और विश्वास का ऐसा उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था कि कोई भी कठोर परिस्थिति उनके बन्धत्व को नष्ट नहीं कर सकती थी।

यही सम्बन्ध मुस्लिम समुदाय की आध्यात्मिक और सामाजिक शक्ति का स्रोत थे और इसी में उनकी अल्लाह के समक्ष और मनुष्यों के बीच अल्लाह पर विश्वास माता-पिता से प्रेम, लोगों के बीच भाई-चारा और सृष्टि के साथ तथा उसकी सभी वस्तुओं के साथ नैतिकता के व्यवहार में सफलता निहित है।

‘अजान’

नमाज के लिए पकार

जैसे-जैस महीने व्यतीत होते गये. धीरे-धीरे संस्कार और अनुष्ठान को स्थापित किया जाने लगाः रमजान के महीने में रोजा और जकात (जकात का अर्थ अल्लाह की कृपा प्राप्त करने के लिए अपनी सम्पत्ति का शुद्धिकरण ताकि यह भलाई में वृद्धि का माध्यम बने) को इस्लाम धर्म स्वीकार करने की घोषणा और नमाज जोडा गया। मसलमान मस्जिदों में निध ाारित समय पर मिलते और सामूहिक रूप से नमाज पढते।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक ऐसे साधन की तलाश में थे जिससे मुसलमानों को नमाज के लिए पुकारा जा सके। आप इस सम्बन्ध में यहूदी और ईसाई रीतियों को अपनाने की सम्भावना पर विचार कर रहे थे। जिसमें घण्टियाँ और हार्न बजाये जाते हैं। एक दिन अब्दुल्लाह बिन जैद जो अन्सार में थे पैगम्बर (सल्ल0) के पास आये और उन्होंने अपने स्वप्न के बारे में बताया कि स्वप्न में मुझे एक व्यक्ति ने दूसरे लोगों को नमाज के लिए पुकारने का तरीका बताया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनकी बात सुनी और तुरन्त उसे एक सच्चे स्वप्न के रूप में स्वीकार कर लिया। आपने पूर्व में दास रह चुके हजरत बिलाल (रजि0) को बुलाने के लिए भेजा जिनकी आवाज असाधारण रूप से सुन्दर थी और उनको मस्जिद के निकट सबसे ऊँचे घर पर खडा करके लोगों को इस प्रकार नमाज के लिए पुकारने को कहा।

1. अल्लाहु अकबर	अल्लाह सबसे बडा है।
2. अशहदो अन ला इलाह इल्लल्लाह	‘मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है’।
3. अशहदो अन्न महम्मद रसलल्लाह	मैं गवाही देता हँ कि महम्मद अल्लाह के पैगम्बर हैं

4. हय्य अलस्सलाह	आओ नमाज की ओर।
5. हय्य अललफलाह	आओ भलाई की ओर।
6. अल्लाह अकबर	अल्लाह सबसे बडा है।
7. ला इलाह इल्लल्लाह	अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

यही अपरिवर्तित पुकार जो अल्लाह की बडाई की स्वीकारोक्ति (अल्ल अकबर). आस्था की घोषणा (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के पैगम्बर हैं) और लोगों को नमाज की ओर एक आमंत्रण और संसार और परलोक में सफलता की पुकार लगभग पन्द्रह सदियों से मुस्लिम कस्बों और शहरों में गूँज रही है। विभिन्न बोलियों. स्वरों और ध्वनियों में उठने वाली यह पुकार अपनी संगीत में. आस्था. सौन्दर्य आध्यात्मिक और कलात्मक एकता प्रकट करती है।

जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) चाहते थे जब आपने बिलाल (रजि0) को मुअज्जिन के रूप में चुना तो यह अजान एक ऐसे अल्लाह की याददिहानी थी जो सौन्दर्य को पसन्द करता है और जो दिन में पाँच बार उन लोगों का स्वागत करता है जो सुन्दर पुकार का उत्तर देते हैं और जो अत्यन्त सन्दर (अल-जमील. अल्लाह का एक नाम) से मिलने के लिए पकारे जाते हैं।

मदीना

एक कल्याणकारी राज्य

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और उनके जो साथी मक्का से प्रवास करके आये थे. धीरे-धीरे मदीना में पुनर्वासित हो रहे थे उन्होंने अपने नये वातावरण में अपनी निशानियाँ छोडना प्रारम्भ कर दिया था।

विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों में एक समाज बनता जा रहा था। सन्धियों और समझौतों के बावजुद मुसलमानों और विभिन्न कबीलों के सदस्यों के बीच सम्बन्ध ा अन्तः कबीलाई सत्ता संघर्ष अक्सर जटिल होते जा रहे थे।

तथापि पैगम्बर (सल्ल0) के साथियों की धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा जारी रही और पैगम्बर सदैव उन सिद्धान्तों की याददिहानी कराने के लिए मौजद रहते जिनके प्रति मसलमानों को अब वफादार रहना था।

मक्का में रोष बढ रहा था. और प्रवास की सफलता अपमान के रूप में नहीं देखी जा रही थी। बल्कि यह अरब प्रायद्वीप में सत्ता सन्तुलन के लिए एक खतरे के रूप में भी देखी जा रही थी। दशकों से कुरैश प्राकृतिक रूप से निर्विरोध नेता स्वीकार किये जाते थे। अपने अतीत के कारण ही नहीं बल्कि इस वास्तविकता के कारण भी कि वह मक्का शहर और मक्का की मुर्तियों और वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए सभी कबीले एकत्र होते थे. उसके वह प्रभारी थे। मुहम्मद (सल्ल0) के मक्का से अलग होकर मदीना में बसने की सुचना पुरे अरब प्रायद्वीप में फैल गयी और यह समाचार विशेष रूप से कुरैश की प्रतिष्ठा और उनकी सत्ता को प्रभावित कर रही थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथी इस परिस्थिति से अवगत थे और उन्हें अपने कबीले और परिवार के उन सदस्यों की प्रतिक्रिया की आशंका थी जिनको वह भली-भाँति जानते थे।

करैश से मतभेद

सभी मुसलमानों ने हिजरत नहीं की थी। जो मुसलमान मक्का में रह गये थे उनके साथ कुरैश के सरदार दुर्व्यवहार करते थे क्योंकि ये लोग मुहम्मद (सल्ल0) की सफलता रं स्पष्टतः बहुत चिन्तित थे। वास्तव में कुछ मुसलमान अपने इस्लाम धर्म को छिपाते हुए मक्का में रुक गये थे। और उन्हें डर था कि अगर यह सच्चाई खुल गयी तो इस परिणामस्वरुप अनिवार्य रूप से उनसे हिंसापूर्ण बदला लिया जायेगा।

कुरैश के कुछ लोग यहाँ तक बढे कि उन्होंने उस अरब प्रतिष्ठा के नियम का उल्लघंन करने का निर्णय लिया जिनका पालन प्रायद्वीप के सभी कबीले करते थे। यह निर्णय यह था कि मुस्लिम प्रवासी अपनी जो सम्पत्ति मक्का में छोड गये हैं उनको अपने अधिकार में ले लिया जाये। जब मुसलमानों ने कुरैश के इस निर्णय के सम्बन्ध में सुना जिसे निर्लज्जतापूर्ण और कायरतापूर्ण समझा जाता था। पैगम्बर (सल्ल0) और मदीना में बसने वाले मुसलमान प्राकृतिक रूप से क्रोधित हो गये।

एक वर्ष से अधिक समय से पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) लाल सागर के तट पर बसने वाले कबीलों के साथ सन्धियाँ करने में लगे हुए थे। यह ऐसा मार्ग था जहाँ मक्का के कबीले मदीना से हटकर उत्तर की ओर इराक और सीरिया की व्यापारिक यात्रा करते थे। इन संधियों के कारण कुरैश को परेशानी होना निश्चित थी। जिनको पूर्व से नया माल तलाश करना होता था। तनाव तेजी से बढ रहा था। जो कुरैश निर्वासित मुसलमानों की प्रतिष्ठा को हानि पहँचाना चाहते थे. उन्होंने उस क्षेत्र के कबीलों को उनके विरुद्ध उकसाना प्रारम्भ कर दिया।

इसी अवधि में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने भी कुछ अभियान भेजना प्रारम्भ किया जिनका मख्य उद्देश्य करैश की चलत-फिरत और गतिविधियों और उनकी नीयत

के सम्बन्ध में और उस क्षेत्र में वह जो नये गठबन्धन बना सकते थे. उस सम्बन्ध में गुप्त सुचनाएँ एकत्र करना था। सावधानी बरतना आवश्यक था. क्योंकि कुरैश का द्वेष बढता जा रहा था और यह अत्यधिक मुखर और व्यापक होता जा रहा था।

मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा अपने दुतों के माध्यम से जो गुप्त सुचनाएँ एकत्र की गयी थीं उनसे इस वास्तविकता का संकेत मिल था कि टकराव अवश्य संभावी है।

✵

जिहाद

प्रतिरोध

जब भी आपके विरोधी आपके ऊपर आक्रमण करते. पैगम्बर (सल्ल0) अपने आप का बचाव और प्रतिरोध और उनका उत्तर देने के लिए क़ुरआन का प्रयोग करते। क़ुरआन की वह्य ने उनको यही शिक्षा दी थी। यही आयत है जिसमें जिहाद का शब्द पहली बार करआन में प्रयोग किया गया है:

''अतः तुम अवज्ञाकारियों की बात न मानो और इसके माध्यम से उनके साथ महा धर्म युद्ध (जिहाद) करो''। (क़ुरआन 25:52)

हल्के से लेकर अत्यन्त हिंसक. सभी प्रकार के दबाबों. का सामना करने के बाद पैगम्बर (सल्ल0) ने यह आयत प्राप्त की जो उन निर्देशों की ओर संकेत करती थी कि प्रतिरोध अथवा जिहाद किस प्रकार करना है।

यहाँ हम जिहाद की धारणा का प्रारम्भिक और महत्वपूर्ण अर्थ पाते हैं. जिसका मूल अरबी में 'जहद' है जिसका अर्थ प्रयास करना है। लेकिन इसमें प्रतिरोध का भी अर्थ है (अर्थात जब आप दमन और उत्पीडन का सामना कर रहे हों)। जिहाद का अर्थ दूसरों द्वारा थोपे गये अन्याय और दमन को मिटाने के लिए चरणबद्ध प्रयास करना है। गनीमत का माल लूटने. स्वाभिमान प्रतिष्ठा और लोगों को पराजित करने अथवा दमन करने के लिए युद्ध नहीं छेडना चाहिए।

सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को आदेश देते हैं कि क़ुरैश के दुर्व्यवहार का क़ुरआन पर भरोसा करते हुए प्रतिरोध करें। उनके अत्याचार के विरुद्ध क़ुरआन की आयतें वास्तव में आध्यात्मिक और बौद्धिक अस्त्र हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) समान रूप से उन लोगों का उत्तर क़ुरआन की ढाल और अस्त्र से देते हैं जो आपका उपहास करते हैं. व्यंग करते हैं और अपमानित करते हैं. वह लोग जो आपके ऊपर आक्रमण करते हैं. यातनाएँ देते हैं. हत्याएँ करते हैं. और उन लोगों को जो चमत्कार और प्रमाण की माँग करते हैं. क्योंकि करआन स्वयं जैसा कि हमने देखा है अपने आप में एक चमत्कार और एक प्रमाण है।

इस ज्ञान से लैस होकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और आपके साथियों ने सबसे पहले अपने सन्देश को टकराव से बचते हुए स्वतन्त्रत रूप से पहुँचाने का प्रयास किया।

क़ुरैश के सरदार ऐसा होने नहीं देना चाहते थे. और उन्होंने जैसे-जैसे एक के बाद एक तीव्रता से वह्य सन्देश आने लगा. वैसे ही वैसे उन्होंने अपनी दमनकारी गतिविधियों बढा दिया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की तरह जो लोग पहले मुसलमान हुए थे वह जिहाद- संघर्ष में एक अल्लाह के अस्तित्व. मृत्यु के बाद जीवन. अन्तिम निर्णय और भलाईयों की आवश्यकता को याद दिलाते हुए लीन हो गये और क़ुरआन उनके आध्यात्मिक गुणों और शारीरिक यातनाओं के सामने सदैव हथियार का काम करता रहा।

तथापि दमन इतना हिंसक और निरन्तर था कि यह जिहाद कभी-ं असहनीय हो जाता। एक दिन मुसलमानों का एक समूह उस समय पैगम्बर (सल्ल0) के पास आया जब आप काबा के निकट छाया में लेटे हुए थे। उन्होंने आपसे पूछाः ''क्या आप अल्लाह से दुआ नहीं करेंगे कि वह हमारी सहायता करे?'' पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने दृढतापूर्वक उत्तर दियाः

''आस्थावानों में तुम से पहले ऐसे लोग हुए हैं जिनमें से अनेक लोगों को उनके लिए खोदी गयी खाईयों में फेंक दिया गया और उन्हें आरे से चीरकर सिर से पैर तक दो टुकडे कर दिया गया और यह (अत्याचार) उन्हें उनके धर्म से विमुख न कर सकाः लोहे के कंघों से उनके माँस को उनकी हड्डियों से अलग कर दिया गया और नसों को चीर दिया गया और यह उन्हें उनके धर्म से विमख न कर सका।

अल्लाह की कसम यह मिशन निश्चित रूप से सफल होगा. और यह संभव होगा कि एक अकेला यात्री सनआ से हजरमौत तक यात्रा करेगा और अल्लाह द अतिरिक्त उसे किसी और का भय न होगा अथवा उसे किसी भेडिये से अपनी भेडों के लिए डर न होगा। परन्तु तुम लोग अत्यन्त कम धैर्य रखते हो!''

अतः उन्हें धैर्यवान. सहनशील. दृढतापूर्वक प्रयासरत होना चाहिए और अल्लाह और उसकी इच्छा से कभी निराश नहीं होना चाहिए। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथियों को अल्लाह पर भरोसा. और दुख के बीच कठिन सम्बन्ध की शिक्षा दे रहे थे। भौतिक और नैतिक कष्टों के अनुभव ने आस्था की ऐसी दशा को पहुँचना सम्भव बनाया था जहाँ व्यक्ति विपत्ति को स्वीकार कर सकता था. और जहाँ कोई अल्लाह पर सन्देह किये बिना अपने आप पर सन्देह कर सकता था।

किताल

सशस्त्र प्रतिरोध

इस अवधि के दौरान पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को लगातार दो सन्देश प्राप्त हुए जो अपनी प्रकृति में पूर्णतः भिन्न थे लेकिन जिनके परिणाम अपने अतीत से उतने ही अलग करने वाले थे। तेरह वर्षों से अधिक समय से मुसलमानों का आह्वान किया जाता रहा था कि वह कुरैश के अत्याचार और आतंक के समक्ष निष्क्रिय अवरोध का मार्ग अपनाये। वह अत्याचार पर कोई प्रतिक्रिया किये बिना और टकराव से बचते हुए पहले सब कुछ सहन करते रहे और फिर उन्होंने प्रवास किया।

एक बार जब मुसलमान मदीना में बस गये तो यह बात स्पष्ट हो गयी कि कुरैश के लोग अपने विरोध में और आगे बढ रहे थे और मुहम्मद (सल्ल0) के मिशन को मिटाने के लिए अन्य तरीके तलाश कर रहे थे जो अब मात्र मक्का में राजनीतिक सन्तुलन के

लिए खतरा नहीं रह गया था। बल्कि सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप में शक्तियों के सन्तुलन के लिए भी खतरा था। जो चीज दाव पर लगी थी वह अन्य कबीलों से सम्बन्धित कुरैश के लोगों की स्थिति थी. उनकी धार्मिक और सैनिक स्थिति जोखिम में थी। जो हिजरत एक मक्ति का साधन थी वह टकराव और आने वाले संघर्ष का संकेत भी थी।

उसके बाद पैगम्बर (सल्ल0) पर एक वह्य अवतरित हुई जिसमें सन्देह का कोई कारण नहीं छोडा गया।

> *"अनुमति दे दी गई है उन लोगों को जिनसे युद्ध किया जा रहा है इस कारण से कि उन पर अत्याचार किया गया है। और निस्सन्देह अल्लाह उनकी सहायता का सामर्थ्य रखता है। वह लोग जो अपने घरों से अकारण निकाले गये। मात्र इसलिए कि वह कहते हैं कि हमारा पालनहार अल्लाह है"।*
>
> (कुरआन 22:39-40)

हजरत अबू बक्र (रजि0) ने बाद में बताया कि जब उन्होंने यह आयत सुनी तो वह समझ गये कि यह इस बात की घोषणा है कि आगे युद्ध होना है और इसी प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) और आपके अन्य साथियों ने भी समझ लिया। अतः अब मुसलमानों को निष्क्रिय विरोध की आवश्यकता नहीं रह गयी थी बल्कि अब उन्हें शत्रुओं का आक्रमण होने पर अपनी सुरक्षा करनी थी। अब आध्यात्मिक और बौद्धिक जिहाद जिसमें मन के अज्ञानतापूर्ण आकर्षण. स्वार्थ. लालच या हिंसक मन या अपने काफिर विरोधियों के तर्कों का उत्तर कुरआन से देने के विकल्प से आगे बढकर संभावित रूप से जिहाद का एक नया रूप जोडा गया जिसका नाम अल-किताल (युद्ध) अर्थात अत्याचार के समक्ष सशस्त्र प्रतिरोध और आक्रमण के विरुद्ध अपनी रक्षा था।

प्रत्येक प्रकार के जिहाद के रूपों को हम देखते हैं कि वह प्रतिरोध के सिद्धान्त पर आधारित हैं। यद्ध के स्तर पर सशस्त्र प्रतिरोध भी है जिसे हम निम्न आयत में देख सकते हैं

> *"और यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के माध्यम से पराजित न करता रहे तो खानकाहें (आश्रमों) और गिरजा और उपासनाघर और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम अधिक से अधिक लिया जाता है. ढा दिये जाते। और अल्लाह अवश्य*

उसकी सहायता करेगा जो अल्लाह की सहायता करे। निस्सन्देह अल्ल बलवान. प्रभुत्वशाली है''। (कुरआन 22:40)

मानवीय प्रकृति के कारण वर्तमान में शक्तियों के सन्तुलन और नियन्त्रण की वैकल्पिक आवश्यकता को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। सम्पूर्ण शक्ति या सत्ता किसी एक देश या किसी (रजि0) परिवार के हाथ में आने का परिणाम लोगों के बीच अनेकता को पूर्णतः नष्ट करने के रूप में होता है और इसका परिणाम विभिन्न उपासनाघरों (उपासना घरों की सूची का अन्त मस्जिद पर हो रहा है) के नाश के रूप में भी होता है. जिसका संकेत यह है कि अल्लाह ने धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की है। इस प्रकार सैनिक शक्तियों के साथ टकराव और मनुष्यों से युद्ध की चाहत को शान्ति के लिए एक वचन के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो एक दुर्भाग्यपर्ण व्यंग्य है। इसी बात की पष्टि एक अन्य आयत अधिक साधारण स्तर पर करती है:

''और यदि अल्लाह कछ लोगों को कछ लोगों से न बचाता रहे तो पृथ्वी बिगाड से भर जाये''। (कुरआन 2:251)

इस प्रकार उन्होंने स्मरण कराया कि मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार सत्ता के अभिलाषी हैं और वह बुराई फैलाने और हत्या करने की ओर प्रवृत्त रहते हैं: मनष्यों की प्रकति के अन्य पक्ष अर्थात उनमें भलाई और न्याय से प्रेम करना है।

इस प्रकार जिहाद का सार और इसकी आत्मा शान्ति की तलाश और इसका मिशन है. इसके साथ-साथ यह शान्ति का अनिवार्य मार्ग है।

✵

जेहाद

'संघर्ष'

वरिष्ठ राजनीतिशास्त्री और अमेरिका की नेशनल इन्टेलिजेन्स ऐजेन्सी (सी.आई.ए.) के पुर्व उपाध्यक्ष ग्राहम ई. फुलर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ए वर्ल्ड विदआउट इस्लाम' में इस्लाम ध ार्म में जेहाद की धारणा की व्याख्या करते हैं।

वह लिखते हैं. ''जेहाद के सिद्धान्त और इसके इर्द-गिर्द विस्तुत साहित्य. ईसाई धर्म के 'जस्ट वार' (न्याय के लिए युद्ध) के सिद्धान्त के समान है: इस धारणा का उद्देश्य युद्ध के दौरान मुसलमानों की गतिविधियों को परिभाषित और सीमित करना है। जेहाद संभवतः सर्वाधिक विवादित और भावुक शब्द है जिसे आज पश्चिम इस्लाम के साथ जोडता है: मीडिया में कोई ऐसा दिन व्यतीत नहीं होता जब इस्लाम के आलोचक इस शब्द का प्रयोग न करते हों। अनेक टीकाकार जेहाद शब्द के उदभव और प्रयोग की जाँच करते समय अपना धैर्य यह महसुस करते हुए खो देते हैं कि यह पश्चिमी शक्तियों के लिए जिहादी चुनौती के भयानक चरित्र को बौद्धिक रूप प्रदान करने से कुछ अधिक व प्रतिनिधित्व करता है और यह शान्ति और स्थायित्व के लिए भी एक चुनौती है।

कुरआन और हदीस में जेहाद के कई अर्थ बताये गये हैं। शब्द जेहाद का अरबी भाषा में जो मुल है उसका अर्थ प्रयास या संघर्ष है। इसका प्रयोग किसी व्यक्ति द्वारा शिष्ट जीवन व्यतीत करने के लिए. व्यक्तिगत जीवन में धार्मिक मुल्यों को अपनाने. व्यक्तिगत प्रयासों के माध्यम से इस्लाम का प्रचार करने में सहायता और इस्लामी विश्वास क

विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से आदर्श बनकर इसका प्रसार करना है। उस सन्दर्भ में मुसलमानों के लिए जेहाद शब्द भलाई के लिए पुर्णत सकारात्मक धार्मिक लगाव और व्यक्तिगत समर्पण है। इसका प्रयोग अरबी भाषा में सामान्य रूप से *''मैं प्रयास करुँगा. मैं हर संभव प्रयास करुँगा''* है। यह *''महान जेहाद''* अथवा व्यक्तिगत जेहाद है जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने परिभाषित किया था।

''निम्न स्तरीय जेहाद'' को मौलिक रूप से पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उस युद्ध के संदर्भ में प्रयोग किया जिसका मौलिक उद्देश्य इस्लाम और उम्मत (मुस्लि समुदाय) की सुरक्षा और संरक्षण है। चूँकि मदीना का प्रारम्भिक मुस्लिम समुदाय मक्का के काफिरों (जो ईसाई. यहुदी अथवा मुसलमान नहीं थे) से घिरा हुआ था और वह लोग मुसलमानों के विरुद्ध लगातार युद्ध कर रहे थे. अतः कुरआन की अनेक वह्य संदेशों और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के व्यक्तिगत चिन्ता का केन्द्र बिन्दु मुसलमानों की सुरक्षा थी। परन्तु जैसे-जैसे प्रारम्भिक मुस्लिम समुदाय स्थायित्व प्राप्त करता गया और इस्लाम विस्तृत क्षेत्रों में फैल गया तो इसका सामना अन्य राज्यों और साम्राज्यों से हुआ और मसलमानों ने उन क्षेत्रों पर नियन्त्रण जारी रखने के लिए उनसे युद्ध किया।

इस्लामी धर्मशास्त्र ने युद्ध के शिष्टाचार के नियमों को परिभाषित करने के लिए विस्तृत निर्देश दिये हैं जिसमें यह भी सम्मिलित है कि महिलाओं और बच्चों को कभी निशाना न बनाया जाए. और शत्रु की क्षमता के अनुपात में ही शक्ति का प्रयोग किया जाए. सिविलियन (Civilian) ढाँचे को अकारण नुकसान न पहुँचाया जाये और यह कि जेहाद की घोषणा वैध शासक अथवा राज्याध्यक्ष ही कर सकता है और जेहाद के आदेशों के बाहर युद्ध करना अवैध है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का यह कीर्तिमान है कि आपने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वह महिलाओं. बच्चों. बढों अथवा मन्दिरों. गिरजाघरों और मठों में रहने वालों को हानि पहुँचाने से बचें।

वहत्तर जेहाद

तथापि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) महिलाओं और पुरुषों के लिए सदैव उपलब्ध रहे और जो लोग इस्लाम को समझने अथवा सच्चाई की तलाश का प्रयास करते. उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहते। वह उनको देखते. उनके प्रश्नों का उत्तर देते और उनके विकास में उनके साथ होते। जब आप हुनैन के अभियान से वापस हो रहे थे तो पैगम्बर (सल्ल0) ने घोषणा की थीः ''हम छोटे जेहाद (प्रयास. प्रतिरोध और सुधार के लिए संघर्ष) से वापस हो रहे हैं। और वृहत्तर जेहाद की ओर जा रहे हैं''। आपके एक साथी ने पूछा. ''अल्लाह के पैगम्बर वृहत्तर जेहाद क्या है''? फिर आपने उत्तर दिया. ''यह अपनी आत्मा (अहंकार) से युद्ध करना है''। सम्पूर्ण मानवता की तरह मुसलमानों के लिए भी यह आन्तरिक संघर्ष सर्वाधिक कठिन. सर्वाधिक उत्कृष्ठ था और जिसमें सर्वाधिक समझ और क्षमाशीलता की आवश्यकता थी और वास्तव में अपने प्रति गम्भीरता भी। युद्ध और इसके निम्नतर जेहाद ने दिखाया था कि अल्लाह के लिए मरना कितना कठिन थाः दैनिक जीवन और इसका वृहत्तर जेहाद अब मुसलमानों को यह प्रदर्शित कर रहा था कि अल्लाह के लिए पारदर्शिता. सामन्जस्य. आध्यात्मिक माँग. धैर्य और शान्तिपर्वक जीवित रहना और भी कठिन है।

महम्मद से वफा......

11

प्रथम युद्ध

बद्र

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के संज्ञान में अभी आया था कि कुरैश सरदार अबु सुफियान के नेतृत्व में एक कारवाँ सीरिया से बडी मात्रा में सामान लेकर लौट रहा है और इस जोखिम भरे व्यापार में अधिकतर सहयोगी कुरैश के हैं। करैश के लोगों ने सेना की एक टुकडी अपने कारवाँ की रक्षा और मुसलमानों की उभरती हुई शक्ति को कुचलने के लिए भेजी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने 313 साथियों के साथ मदीना से निकले। उनके साथ साधारण हथियार थे तथापि उन हथियारों को युद्ध के लिए तैयार नहीं किया गया था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने हजरत उस्मान (रजि0) से रुके रहने और अपनी पत्नी रुकय्या (रजि0) की देखभाल करने के लिए कहा जो आपकी बेटी थीं और गम्भीर रूप से बीमार थीं। हजरत उस्मान (रजि0) साधारणतः किसी भी यद्ध अभियान का अंग हआ करते थे।

अपने गुप्तचरों द्वारा कुरैश सरदार अबु सुफियान को किसी आक्रमण चेतावनी प्राप्त हो चुकी थी। उन्होंने मक्का में कुरैश सरदारों को यह सूचना देने के लिए कि वह खतरे में हैं और उनसे सैनिक सहायता माँगने के लिए दूतों का एक दल भेजा। उन्होंने तुरन्त अपना मार्ग भी बदल लिया और जब एक बार वह आश्वस्त हो गये कि उन्होंने आक्रमण से बचने की व्यवस्था कर ली है। उन्होंने करैश के सरदारों को यह बताने

के लिए कि अब खतरा टल गया है और सहायता की आवश्यकता अब नहीं रही. दतों का एक नया प्रतिनिधिमंडल भेजा।

हालाँकि उस समय तक. कुरैश सरदार पहले ही एक हजार से अधिक व्यक्तियों का एक समूह रवाना कर चुके थे और उन्होंने अबू जहल के आग्रह पर निश्चय किया कि युद्ध अभियान आक्रमण का खतरा कम होने के बावजूद भेजा जाना चाहिए। यद्यपि टकराव को टाला जा सकता था परन्तु उन्होंने अपनी ओर से यह निश्चय किया कि मसलमानों के विरुद्ध शक्ति प्रदर्शन किया जाना चाहिए।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथियों ने मदीना से 130 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित बद्र गाँव के निकट अपना शिविर लगा लिया था और उन्होंने यह सूचना प्राप्त की कि मक्के से एक विशाल सेना रवाना हो चुकी है। इसका अर्थ यह था कि अब स्वयं उनकी सेना की तीन गुनी शक्तिशाली सेना उनकी ओर आ रही है और उनके सरदारों की नीयत स्पष्ट रूप से यद्ध करने की है। यह यद्ध था और मसलमान वास्तव में तैयार न थे।

परामर्श

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने साथियों के साथ परामर्श करने और इस मामले मे उनका दृष्टिकोण मालूम करने का निर्णय लिया। आपके साथियों ने मानसिक रूप से तैयार होकर आगे बढने और पूर्ण स्तर पर टकराने का जोखिम उठाने के संकल्प की पुष्टि की। अल-मिकदाद (रजि0) ने कहाः ''आप आगे बढें. आप और आपका अल्लाह आगे बढे और लडे और आपके साथ हम भी यद्ध करेंगे. दाहिनीं ओर से. बायीं ओर से. आपके आगे से और आपके पीछे से''।

इस व्यवहार से मुहम्मद (सल्ल0) को साँत्वना मिली और प्रसन्नता हुई परन्तु यही वह बात थी जिसकी आशा आपने मक्का के प्रवासी मुसलमानों से प्राकृतिक रूप से की थी। आप मदीना के लोगों से स्पष्ट समर्थन की आवश्यकता महसस कर रहे थे क्योंकि

यह लोग प्रत्यक्ष रूप से कुरैश के साथ टकराव में सम्मिलित नहीं थे और उन्होंने केवल इस समझौते पर हस्ताक्षर किया था कि यदि मदीना में युद्ध होता है तो वह उनका समर्थन करेंगे। मदीना के बाहर के युद्ध में उनके समर्थन का समझौता नहीं था। मदीना के अंसार (मुसलमानों की मदद करने वाले) में से दृढतापूर्वक बोलते हुए हजरत सअद (रजि0) ने कहाः ''आप करिये जो आप चाहते हैं और हम आपके साथ हैं। उस हस्ती की सौगन्ध ा खाते हैं जिसने आपको सच्चाई के साथ भेजा है. यदि आप हमें यह आदेश भी दें कि समुद्र पार करो और इसमें डुब जाओ तो हम आपके साथ डुब जायेंगे। हममें से कोई एक भी पीछे नहीं हटेगा''। इस प्रकार दोनों समूहों के समर्थन का संकेत पाकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने आगे बढने का निर्णय लिया ताकि करैश को यह अवसर न दें कि वह अपने सैनिक अभ्यास के द्वारा मसलमानों को धमकाएँ।

सजनात्मक यद्धशैली

यहाँ हम पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन का वह पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे प्रदर्शित होता है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने किस प्रकार विचार स्वतन्त्रता की संस्कृति को प्रोत्साहित किया था और सामूहिक जीवन में किस प्रकार लोकतान्त्रिक चरित्र को स्थापित किया। राजनैतिक और धार्मिक सत्ता प्राप्त करने के बाद लोग जो जीवन-शैली अपनाते हैं इसकी जाँच उन शैलियों के सन्दर्भ में की जायेगी। यह समझा जाता है कि धार्मिक नेताओं को परामर्श की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उनको ईश्वर द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होता है अथवा ईश्वर स्वयं ही उनके रूप में अवतरित हआ होता है। यही परिस्थिति अतीत में थी और यही परम्परा आज भी प्रचलित है।

पैगम्बर (सल्ल0) अपने मिशन के दौरान अपने वफादार साथियों से परामर्श लेते. उन्हें अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते और उनके दृष्टिकोण ध्यानपूर्वक सुनते। इसके अतिरिक्त पैगम्बर (सल्ल0) ने ऐसी उपयुक्त शिक्षा शैली का सृजन किया था जिसके द्वारा वह मसलमानों को अपनी आलोचनात्मक योग्यताओं को विकसित करने.

अपनी बौद्धिक क्षमता को प्रकट करने और इसमें अपनी मौजदगी में प्रौढता उत्पन्न करने की अनमति देते थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अक्सर विभिन्न विषयों पर प्रश्न पुछते और उनका उत्तर तभी देते जब उनके साथी स्वयं चिन्तन कर चुके होते और अपना दुष्टिकोण प्रकट कर चुके होते थे। कभी-कभी अधिक समय समझदारी का प्रदर्शन करते हुए अपना निर्णय विरोध के रूप में व्यक्त करते ताकि अपने श्रोताओं को अधिक गहराई में विचार करने के लिए उत्साहित करें। उदाहरण के लिए एक बार आप (सल्ल0) ने कहाः

''बहादुर व्यक्ति वह नहीं है जो अपने शत्रु को नियन्त्रण में ले ले''।

आपके साथियों ने काफी देर तक इस सम्बन्ध में चिन्तन किया और फिर पछाः ''तो फिर बहादुर कौन है?''

पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने श्रोताओं को चकित कर दिया और इस प्रश्न की अधिक गहरी समझ प्राप्त करने के लिए उनका मार्गदर्शन किया और यह उत्तर दियाः

''बहादुर व्यक्ति वह है जो उस समय अपने आप को नियन्त्रित कर ले जब वह क्रोधित हो''।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) कभी-कभी अलंकृत भाषा में बोलतेः

''दौलत वह नहीं है जो तुम अपने पास रखे हुए हो''।

जब आपके साथियों ने इसके ऊपर चिन्तन कर लिया तो महम्मद (सल्ल0) ने इसकी व्याख्या कीः

''सच्ची दौलत आत्मा की दौलत है''।

कभी-कभी पैगम्बर (सल्ल0) का कथन सामान्य बद्धि अथवा नैतिकता विरोधी प्रतीत होता था।

''अपने भाई की सहायता करो चाहे वह अत्याचारी हो अथवा पीडित हो''।

आपके साथी इस सिलसिले में आश्चर्यचकित होने के अतिरिक्त क्या क सकते थे? कि वह समझ नहीं पा रहे थे कि अपने अत्याचारी भाई की किस प्रकार सहायता करेंः

"अपने अत्याचारी भाई को अत्याचार करने से रोक दो. उसकी सहायता करने का यही तरीका है"।

पैगम्बर (सल्ल0) विरोधाभासी प्रश्न पुछकर और स्पष्टत विरोधाभासी वक्तव्य देकर अपने साथियों की आलोचनात्मक भावना को उत्तेजित करते और प्रयास करते कि अन्धानुकरण अथवा यान्त्रिक रूप से समझ को नष्ट करने वाली नकल से परे उनकी योग्यताओं को उभारें। यह विधि बौद्धिक योग्यताओं को विकसित करती जिससे परामर्श लेना वास्तविक रूप में प्रभावपूर्ण हो जाता। यदि आपके साथियों को लाभदायक परामर्श देना हो तो उन्हें बौद्धिक रूप से जागृत. निर्भीक और स्वतन्त्र होना चाहिए चाहे पैगम्बर (सल्ल0) मौजुद हों जिनका व्यक्तित्व और जिनकी प्रतिष्ठा उनको प्रभावित करती थी। उनकी बौद्धिक क्षमता को प्रेरित करके और बोलने के अवसर प्रदान करके आप उनके अन्दर ऐसा नेतृत्व उत्पन्न करने का प्रयास करते जो उनके साथियों को इस योग्य बनाये कि वह आत्मविश्वास के साथ अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करना और पहल करना सीखें।

युवा हुबाब (रजि0) इसके सर्वाधिक उपयुक्त उदाहरण थे। जब वह बद्र के युद्ध में पहुँचे तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उनका शिविर उस कुँए के पास लगाया जिसको आपने पहले पाया था। यह देखकर युवा हुबाब (रजि0) उनके पास आये और पुछाः "क्या यह वही स्थान है जहाँ रुकने के लिए हमें अल्लाह द्वारा सन्देश दिया गया है ताकि हम उससे न आगे बढें और न पीछे हटें। अथवा यह आपका अपना दृष्टिकोण और अपनी रणनीति है जिसका सम्बन्ध मात्र युद्धशैली से होता है?" पैगम्बर (सल्ल0) ने इस बात की पुष्टि की कि यह उनका अपना दृष्टिकोण है। हुबाब (रजि0) ने एक दुसरी योजना का परामर्श दिया जिसमें सबसे बडे कुँए के पास शिविर लगाना सम्मिलित था जो कुँआ उस मार्ग से सबसे निकट था जिससे शत्रु को आना था। इस प्रकार. उस क्षेत्र के सभी कुँओं को अवरुद्ध कर दिया जाना था ताकि शत्रु पानी तक न पहुँच सके। युद्ध के दौरान मुसलमानों के विरोध ी इस प्रकार कठिनाई में पडने के लिए विवश थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने हुबाब (रजि0) की इस रणनीति को विस्तारपुर्वक और ध्यानपुर्वक सुना और इसे यथावत स्वीकार कर लिया। शिविर को स्थानान्तरित कर दिया गया और इस तरह हबाब (रजि0) की योजना लाग कर दी गयी।

इस उदाहरण से प्रदर्शित होता है कि जो वह्य पैगम्बर (सल्ल0) सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्राप्त करते थे उसमें और मुहम्मद (सल्ल0) के दृष्टिकोण में आपके साथी अन्तर करते थे और वह अल्लाह के आदेश का बिना कुछ सोचे पालन करते और मुहम्म (सल्ल0) चूँकि एक मनुष्य थे इसलिए रणनीति के मामले में आपके दृष्टिकोण विचार-विमर्श किया जा सकता था. बहस की जा सकती थी और उसे विकसित किया जा सकता था। मानवीय मामलों में पैगम्बर का अधिकार न तो दमनात्मक था और न निर्बाध ा था: वह अपने साथियों को परामर्श में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर देते थे और जैसा कि हमने देखा आपकी शिक्षा ऐसी परिस्थितियाँ विकसित करती थी जिससे उन आलोचनात्मक और सृजनात्मक योग्यताओं को लाभकारी बनाया जा सके।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथियों. स्त्रियों और पुरुषों को समान रूप से ऐसा साधन और आत्मविश्वास प्रदान करते ताकि वह स्वतन्त्र रह सकें. सम्बोधित करने का साहस कर सकें और आपसे मतभेद कर सकें और इसे अपनी प्रतिष्ठा में कमी आने का कारण न बनने दें। इस व्यवहार से पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें यह दिखाया कि वह उनकी बौद्धिक क्षमता और उनके दिलों को सम्मान प्रदान करते हैं: और जहाँ तक उनका सम्बन्ध था अपने पैगम्बर और अपने नायक से इस उपलब्ध रहने. ध्यान देने और उनकी योग्यताओं को पर्ण रूप से प्रयोग करने की प्रेरणा देने के कारण प्यार करते थे।

बद्र का यद्ध

जब यह स्पष्ट हो गया कि कुरैश सरदार अबू सुफियान का कारवाँ सुरक्षित बच कर निकल गया है और युद्ध पूर्णतः निश्चित है. तो पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कुरैश को युद्ध का विकल्प अपनाने से हतोत्साहित करने का प्रयास किया। आप (सल्ल0) ने उमर (रजि0) को कुरैश सरदारों को परामर्श देने के लिए भेजा कि वह वापस चले जायें और टकराव से बचें। करैश के कछ लोग भी यद्ध से बचना चाहते थे तथापि करैश के लोगों में से यद्ध

के समर्थकों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पडा क्योंकि वह दुढ संकल्प कर चुके थे और वह जानते थे कि उनकी संख्या स्पष्ट रूप से उनके पक्ष में है। वास्तव में उन्होंने हजरत उमर (रजि0) के प्रयास को कमजोरी का संकेत समझा था। यह उनके लिए एक बडा अवसर था जिससे वह मुस्लिम समदाय को नष्ट कर सकते थे और महम्मद (सल्ल0) से छटकारा प्राप्त कर सकते थे।

सभी उपलब्ध सुचनाएँ प्राप्त करने के बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने शत्रु से मदीना के बाहर बद्र के स्थान (मक्का से 319 किलोमीटर और मदीना से 130 किलोमीटर दुर) पर मुकाबला करने का निर्णय लिया। आप अपने 313 अनुयायियों को लेकर निकले थे। यह छोटी सी सेना मदीना से मार्च करते हुए निकली जिसमें हजरत अली (रजि0) पैगम्बर का झण्डा पकडे हुए थे। दुसरे दिन भोर में शनिवार के दिन 13 मार्च 624 ई0 तदनुसार 17 रमजान सन् 2 हिजरी पैगम्बर (सल्ल0) ने अपनी सेना को पाँच भागों में विभाजित कर दिया और उनके सेनापति नियुक्त कर दिये और उन्हें दाहिने. बायें और मैदान के केन्द्र में स्थापित कर दिया। उन्होंने अपने लोगों की सुरक्षा और सलामती के लिए हर संभव सावधानी बरती। पहाडी के शिखर पर एक छोटी सी झोपडी बनायी गयी ताकि पैगम्बर (सल्ल0) युद्ध के दौरान पुरे परिदृश्य को देख सकें और अपने सेनापतियों को उपयुक्त आदेश दे सकें। आपका मुख्यालय खुला हुआ स्थान नहीं था और उस शरण स्थल पर सीधी तीरें नहीं आ सकती थीं और जहाँ से पैगम्बर (सल्ल0) मख्य सेनापति के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकते थे।

मुस्लिम सेना के सचल दस्ते ने पानी लेने के लिए कुँए के निकट आ रहे दो व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। उनको पैगम्बर (सल्ल0) के पास ले जाया गया। उस समय आप (सल्ल0) नमाज पढने में व्यस्त थे। मुस्लिम सैनिकों ने दोनों कैदियों से पुछताछ की। कैदियों ने बताया कि उनका सम्बन्ध मक्का की सेना से है। मुस्लिम जाँचकर्त्ताओं ने दबाब डाला कि वह यह मान लें कि वह अबु सुफियान के कारवाँ के अंग हैं। बाद में पुछताछ करने पर उन्होंने अपना बयान बदल दिया और यह बयान दिया कि उनका सम्बन्ध मक्का की सेना से है।

जब पैगम्बर (सल्ल0) नमाज पढ चुके तो उन्होंने अपने सैनिकों से कहाः

"तुम उन्हें मारते हो जब वह सच बोलते हैं. तम उन्हें छोडते हो जब वह झठ बोलते हैं"।

फिर पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे स्वयं पुछताछ की. *"तुम कौन हो?"* आपने पुछाः "हम मक्का की सेना के लोग है" उन्होंने कहा। उनसे पुछा गया. *"तुम्हारी संख्या कितनी है"*. उन्होंने उत्तर दिया. "हमें नहीं मालुम" और वह सच बोल रहे थे। *"तुम्हारे लोगों को खाने के लिए दैनिक रूप से कितने ऊँट जबहः किये जाते हैं.* उन्होंने उत्तर दिया "एक दिन नौ. दुसरे दिन दस"। पैगम्बर (सल्ल0) ने यह निष्कर्ष निकाला कि उनकी संख्या 900 से 1000 के मध्य होगी. क्योंकि एक ऊँट 100 व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होता था। वास्तव में उनकी संख्या 950 थी। उनसे उनकी विभिन्न सेना टुकडियों के सेनापति के नाम पुछे गये। पैगम्बर (सल्ल0) उन सभी नामों से परिचित थे क्योंकि यह लोग उनके अपने ही वतन के लोग थे।

अबु जहल के नेतृत्व में मक्का के कुरैश 950 व्यक्ति थे जबकि मुसलमानों की संख्या 313 थी। मुसलमानों की सेना में दो घोडों से अधिक नहीं थे जबकि कुरैश के पास 100 घोडे थे। मुसलमानों के पास एक दर्जन कवच थे जबकि कुरैश के पास दो सौ थे। प्रत्येक पहलु से शत्रु श्रेष्ठ और अधिक शक्तिशाली था। पैगम्बर (सल्ल0) अपनी छोटी सी झोपडी में सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष सजदे में गिर गये और अल्लाह तआला से सहायता की गुहार की। यह दुआ अत्यन्त करुणामय और अत्यधिक प्रभावशाली थीः

"ऐ अल्लाह! यदि आज आस्थावानों (ईमान वालों) का यह छोटा सा समह पराजित होता है: तो कयामत के दिन तक कोई तेरी इबादत न करेगा"।

युद्ध तीन कुश्तियों से प्रारम्भ हुआ जिसमें हमजा (रजि0). अली (रजि0) और उबैदा (रजि0) सम्मिलित हुए। हमजा (रजि0) और अली (रजि0) ने अपने दुश्मन को चित्त कर दिया। लेकिन उबैदा (रजि0) घातक रूप से घायल हो गये। इसके बाद लडाईयाँ शुरु हुईं और मसलमानों ने ऐसे दृढ संकल्प का प्रदर्शन किया कि कुरैश जल्द ही पराजित हो

गये। हालाँकि वह मुसलमानों से तीन गना अधिक थे लेकिन करैश मसलमानों आक्रमण को सहन न कर सके

बाद में अवतरित हुई कुरआन की आयतों ने युद्ध में अल्लाह की ओर से. और उसके फरिश्तों की ओर से निरन्तर सुरक्षा का उल्लेख किया और उसके वचन का उल्लेख किया और उसके वचन को पूरा होने का उल्लेख किया।

"और अल्लाह तुम्हारी सहायता कर चुका है बद्र (के मैदान) में जबकि तुम कमजोर थे। अतः अल्लाह से डरो ताकि तुम आभारी रहो"। (कुरआन 3:123)

यह विजय एक निर्णायक बिन्दु था। कुरैश की प्रतिष्ठा और सर्वोच्चता बुरी तरह प्रभावित हो गयी थी और उनकी पराजय की सचना अरब प्रायद्वीप में जंगल की आग की तरह फैल गयी थी।

मुसलमानों ने अपने चौदह साथियों को खो दिया था जबकि मक्का वालों ने सत्तर से अधिक साथियों को खो दिया जिनमें अबू जहल भी सम्मिलित था. जो कि इस्लाम का सबसे भयानक शत्रु था और वह युद्ध के लिए सर्वाधिक लालायित था। पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा अब्बास जो आपके मक्का में विश्वासपात्र थे और जिन्होंने निवार्सन से पूर्व सम्पूर्ण तैयारियों को देखा था. वह उन 70 करैश कैदियों में सम्मिलित थे जो इस यद्ध में गिरफ्तार हुए।

मक्का में
बदला लेने की गहार

कुरैश की मक्का वापसी पीडादायक थी क्योंकि अधिकतर कबीलों के किसी न किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई थी। कुछ लोग. जैसे हिन्द:: पहले से ही बदले के लिए पुकार रही थी जिसके पिता. भाई और चाचा उस युद्ध के शिकार हुए थे। उसने सौगन्ध खायी थी कि वह हजरत हमजा (रजि0) का खन पीयेगी जिन्होंने उसके पिता और चाचा का वध

ा किया था। कुरैश सरदार ने प्रतिक्रिया में कोई समय नष्ट नहीं किया और पडोसी शहरों और कबीलों से मुसलमानों से लडने और अपने अपमान का बदला लेने और अरब प्रायद्वीप में मुसलमानों के अस्तित्व को समाप्त कर देने के लिए सन्धियों का प्रयास करना प्रारम्भ कर दिया।

इस्लाम का घोर शत्रु अबु लहब जिसे उसकी अस्वस्थ्यता ने युद्ध में भाग लेने से रोक दिया था. मक्का में रह गया था। उसने अबु सुफियान से युद्ध में जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई थीं उनके सम्बन्ध में और पराजय के सम्बन्ध में पूछा। अबु सुफियान ने कहा कि इससे अधिक कुछ नहीं हुआ कि हमने युद्ध में मुकाबला किया और पीठ दिखा आये। उन्होंनें हमे युद्ध में भगा दिया और जितना चाहा बन्दी बना लिया। मैं अपने लोगों पर आरोप भी नहीं लगा सकता. क्योंकि हमें सिर्फ उनका सामना नहीं था बल्कि ऐसे व्यक्तियों का सामना था जो श्वेत वस्त्र पहने हुए थे और धरती से लेकर आकाश तक रंग बिरंगे घोडों पर सवार थे और उनके सामने कोई ठहर नहीं सकता था''।

जब अबु सुफियान युद्ध का वर्णन कर रहे थे. एक दास अबु रफी जो पास ही बैठे थे. और जिन्होंने अपने इस्लाम धर्म स्वीकार करने को अब तक रहस्य में रखा था पैगम्बर (सल्ल0) की विजय के समाचार पर अपनी प्रसन्नता को नियन्त्रित न कर सके: और जब उन्होंने यह बात सुना कि ''सफेद वस्त्र में धरती और आकाश के बीच लोग थे'' तो उन्होंने आश्चर्यचकित होकर और विजय की मुद्रा में कहाः ''वह फरिश्ते थे''। अबु लहब उनके ऊपर उछल पडा और उनके चेहरे पर ऐसा मारा कि घाव हो गया और उनको दबाये हुए था। अबु लहब की भाभी और हजरत अब्बास (रजि0) की पत्नी उम्मुल फजल जो वहाँ मौजुद थीं और वह भी गुप्त रूप से इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुकी थीं अपने देवर पर दौडी और उन्होंने तम्बु के बल्ले से उसको जोर से मारा। इससे अबु लहब को सिर में गहरा घाव हो गया और वह संक्रमित हो गया जिससे अबु लहब का पुरा शरीर प्रभावित हो गया। कुछ ही सप्ताहों में उसकी मुत्यु हो गयी। अबु लहब और उसकी पत्नी को इस्लाम के प्रति घुणा प्रकट करने के लिए सदैव स्वतन्त्र छोडा गया था और वास्तव में वर्षों पहले उसके और उसकी पत्नी के अन्त के सम्बन्ध में पुर्व घोषणा कर दी गयी थी। (कुरआन.

सुरः 111. अबु लहब एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जिसका नाम लेकर कुरआन में निन्दा की गयी है)। अन्य अत्याचारियों के विपरीत जिन्होंने बाद में अपना मन बदल लिया था. अबु लहब और उसकी पत्नी ने मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश के प्रति कभी कोई सहानुभुति प्रकट नहीं की। अबु लहब की मुत्यु जो इस्लाम के इन्कार और अत्याचारी के रूप में हुई. करआन की सरः में जो घोषणा की गयी थी. उससे उसकी पष्टि हो गयीः ये दोनों अन्त तक उन लोगों में से रहे जिन्होंने इस्लाम का इन्कार किया और उसके प्रति विद्रोह किया।

मदीना में
हर्ष एवं दख का माहौल

मदीना के निकटवर्ती स्थान अल-रवहा में मुस्लिम सेना का मदीना के लोगों ने उल्लासपुर्ण स्वागत किया। लोग वहाँ मुहम्मद (सल्ल0) को अल्लाह द्वारा प्रदान की गयी विजय पर शुभकामना देने आये थे। पैगम्बर (सल्ल0) अब मदीना में ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रवेश होते हैं जिनकी गिनती नये पहलु से हो रही थी- अर्थात सैनिक दुष्टि से। परिणामस्वरूप बडी संख्या में मदीना के लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया जिससे सच्चे धर्म की क्षमता. शक्ति और नैतिक प्रतिष्ठा में वुद्धि हो गयी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को आपकी बेटी हजरत रुकय्या (रजि0) की मुत्यु की सुचना दी गयी। उन्होंने अभी अपने प्रारम्भिक साथियों को खोया था और जब आप विजय के अभियान से लौट रहे थे तो उन्हें यह सुचना दी जा रही थी कि उनकी बेटी जा चुकी हैं। दुखः और प्रसन्नता के मिश्रण की भावनाएँ उन्हें जीवन की क्षणभंगुरता को याद दिला रही थीं और एक बार फिर कठिनाईयों अथवा विजय के माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह के साथ आवश्यक सम्बन्ध का स्मरण करा रही थीं। कोई भी चीज कभी अन्त तक रहने के लिए नहीं प्राप्त की जाती।

पैगम्बर (सल्ल0) ने मुसलमानों को कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए इतना प्रोत्साहित किया कि मसलमानों ने अपनी रोटी कैदियों को खिलाया और स्वयं मात्र खजरें खायीं।

अब कैदियों के सम्बन्धियों से मोल-भाव शरु हआ. कछ रिश्तेदार अर्थदण्ड देकर अपने सदस्य को ले जाने के लिए आये. कुछ कैदियों को बिना किसी अर्थदण्ड के छोड दिया गया जबकि सबसे निर्धन कैदियों के साथ व्यक्तिगत रूप से उनकी ि परिस्थितियों के अनुसार मामला किया गया। उदाहरण के रूप में उन कैदियों को जो पढ और लिख सकते थे और अर्थदण्ड नहीं दे सकते थे. उन्हें उनको रिहा करने के लिए मदीना के दस मुस्लिम युवकों को लिखना पढना सिखाने के लिए कहा गया। पैगम्बर (सल्ल0) ने एक बार फिर अपने समुदाय के सदस्यों को इस सन्देश के माध्यम से ज्ञान के महत्व का प्रदर्शन कियाः ''चाहे युद्ध की स्थिति में हों अथवा शान्ति की स्थिति में''। ज्ञान-विद्वता. पढना और लिखना- लोगों को आवश्यक कुशलता उत्पन्न करता है और उन्हें प्रतिष्ठा प्रदान करता है। कछ कैदियों के पास जो ज्ञान था वह उनकी दौलत थी और वही उनका अर्थदण्ड बन गयी।

हार्दिक न्याय-प्रियता

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथियों में से एक साथी अबू लुबाबा (रजि0) का बहुत सम्मान करते थे. इतना कि आपने उनको बद्र के अभियान पर जाते समय मदीना का प्रभारी बना दिया था। कुछ दिनों बाद एक अनाथ युवक मुहम्मद (सल्ल0) के पास यह शिकायत करने आया कि अबू लुबाबा ने एक ताड का वृक्ष उनसे ले लिया है जो लम्बे समय से उसका था। पैगम्बर (सल्ल0) ने अबू लुबाबा (रजि0) को बुलाया और उन्हें अपना पक्ष रखने के लिए कहा। एक जाँच कराने के बाद मालूम हुआ कि ताड का वृक्ष अबू लुबाबा (रजि0) का ही है। अतः पैगम्बर (सल्ल0) ने अबू लुबाबा (रजि0) के पक्ष मे निर्णय दिया जिससे अनाथ युवक अत्यन्त निराश हो गया और इसके द्वारा उसकी मूल्यवान वस्तु नष्ट हो रही थी। निर्णय देने के बाद पैगम्बर (सल्ल0) ने एकान्त में अबू लुबाबा से कहा कि न्याय कर दिया गया है और उनसे अनुरोध किया कि वह अनाथ युवक को पेड दे दें। क्योंकि वह उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अबू लुबाबा (रजि0) ने दृढतापूर्वक इन्कार कर दिया। वह अपने स्वामित्व के अधिकार पर अटल रहते हुए इस सीमा तक गये जो कल्पना से परे था। यह भावना उनके हृदय और सहानुभूति के विपरीत थी। वह्य का सन्देश व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर आध्यात्मिक विकास की एकता की प्रकृति जो न्याय की चेतना से परे जाने को संभव बनाता है जो अपने अधिकार की माँग करती है और अधिकारों की माँग करने वाली चेतना को क्षमा करने अथवा लोगों को अधिकार से अधिक देने के लिए प्रेरित करती है

"निस्सन्देह अल्लाह आदेश देता है न्याय का और उपकार का और रिश्तेदारों को देने का". (कुरआन 16:90)

यह किसी को अपना अधिकार देने का प्रश्न नहीं था (और अबू लुबाबा (रजि0) इस मामले में अपने पक्ष को मनवाने की आवश्यकता में सच्चाई पर थे): बल्कि प्रश्न यह सीखने का था कि हार्दिक कारणों से आगे बढकर विचार किया जाये जो मन को क्षमा करना. छोड देना और अपने आप के अधिकारों में से दे देना सिखाती है और यह भावना मानवता और प्रेम की भावना से प्रेरित होती है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथी अबू लुबाबा (रजि0) की प्रतिक्रिया और प्रवृत्ति से दुखी थे जिनको वह पर्याप्त प्रतिष्ठा प्रदान करते थे। वह समझ रहे थे कि अबू लुबाबा इस्लाम के न्याय के प्रति अनुमोदन से लगाव में लगभग अन्धे हो गये थे और यही उनको हार्दिक न्याय के उच्चतर स्तर पर जाने में रुकावट बन रही थीः यह उच्चतर स्तर उपकार. उदारता और दान का था। इसके परिणामस्वरूप आप (सल्ल0) के एक साथी साबित (रजि0) जिन्होंने यह दृश्य देखा था. उस एक ताड के पेड के बदले अपने पूरे बाग को अबू लुबाबा (रजि0) को देने के लिए प्रस्तावित किया जिसे उन्होंने अनाथ युवक को दे दिया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस परिणाम पर प्रसन्नता व्यक्त की और अबू लुबाबा के व्यवहार पर आपत्ति नहीं की। उन्होंने बाद में अबू लुबाबा को अन्य अभियानों का दायित्व सौंपा. उदाहरण के रूप में करैजा के लोगों को समर्पण की शर्तों से अवगत कराने के लिए भेजना।

बनू कुरैजा के घेराव के समय अबू लुबाबा को बनू कुरैजा से वार्त्ता के लिए भेजा गया परन्तु अनजाने में उन्होंने उनकी हत्या का रहस्य समय से पहले बता दिया। अपने इस व्यवहार पर लज्जित होकर उन्होंने क्षमा याचना की और अपने आप को मस्जिद के खम्भे से छः दिनों तक बाँधे रखा. इस आशा में कि अल्लाह और उसके पैगम्बर अपने आज्ञापालन में कमी पर उन्हें क्षमा कर देंगे।

एक दिन जब पैगम्बर (सल्ल0) उम्मे सलमा (रजि0) के घर में थे. आप मुस्कराते हुए उठे। (अल्लाह आपको सदैव मुस्कराता हुआ रखे. इस मुस्कराहट का कारण क्या है?) उम्मे सलमा (रजि0) ने पूछा. "अबू लुबाबा की तौबा स्वीकार कर ली गयी है...... यह

समाचार उनको सुना दो यदि तुम चाहो'' पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया। फिर उम्मे सलमा (रजि0) अपने घर के द्वार पर खडी हो गयीं और जोर से चिल्लायीं. ''अबु लुबाबा! तुमको शुभकामनाएँ. तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली गयी है''। यह आवाज सनकर परा मदीना शहर मस्जिद की ओर दौड पडा।

तौबा की स्वीकृति आ गयी और पैगम्बर (सल्ल0) ने स्वयं अबु लुबाबा (रजि0) को खोल दिया। यह व्यक्तिगत अनुभव दर्शाता है कि आध्यात्मिक शिक्षा कभी पूर्ण नहीं होती. और यह कि चेतना कि सदैव परीक्षा होती रहती है और यह कि पैगम्बर (सल्ल0) अपनी शिक्षा अनशासन के साथ और कठोरतापर्वक देते थें परन्त इसमें उपकार भ सम्मिलित होता था।

महम्मद से वफा......

12
सज्जनता. स्नेह. प्यार

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने व्यस्त दैनिक जीवन के बावजूद अपने आस-पास के लोगों की अपेक्षाओं और उनके जीवन की छोटी-छोटी विस्तृत बातों के प्रति भी सदैव सजग रहते थे। आपके साथी और आपकी पत्नियाँ आपको रात में नमाज पढते हुए देखतीं. दूसरों से अलग रहकर एकान्त में उनके अपने पालनहार से कानाफूसी और दुआएँ. अल्लाह से उनकी वार्त्ता को प्रतिबिम्बित करती थीं। मुहम्मद (सल्ल0) की पत्नी आयशा (रजि0) प्रभावित भी थीं और चकित भीः ''क्या आप इतना अधिक इबादत नहीं करते हैं जबकि अल्लाह ने आपके अगले और पिछले गुनाहों को पहले ही क्षमा कर दिया है?'' पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः ''क्या मैं अपने पालनहार का आभारी बन्दा न बनूँ?''

वह अपने साथियों से उस स्तर तक इबादत. रोजा और स्तुति की माँग नहीं करते थे जितना आप स्वयं करते थे। इसके विपरीत आप अपने साथियों से अपने बोझ को हल्का रखने और अति करने से परहेज करने की आशा करते थे। कुछ साथियों से जो अपनी कामुकता को समाप्त करना. पूरी रात नमाज पढना अथवा लगातार रोजे रखना चाहते थे (उष्मान बिन मजऊम या अब्दुल्लाह बिन अम्र थे)। आपने उनसे कहाः ''ऐसा न करो! कुछ दिनों रोजे रखो और कुछ दिन खाओ। रात के कुछ हिस्से में सोओ और कुछ हिस्से में नमाज में खडे रहो. क्योंकि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे शरीर के अधिकार हैं. तुम्हारी आँखों के तुम्हारे ऊपर अधिकार हैं. तुम्हारी पत्नी के तुम्हारे ऊपर अधिकार है. तुम्हारे अतिथि के तुम्हारे ऊपर अधिकार हैं''। एक बार आपने सम्बोधित करते हुए तीन बार कहा. ''

नाश हो उन लोगों का अति करते हैं!'' और एक दसरे अवसर पर आपने कहा ''सन्तलन. सन्तलन! क्योंकि मात्र सन्तुलन से ही तुम सफल हो सकते हो''।

जो मुसलमान अपनी कमजोरियों और कमियों के कारण भयभीत रहते थे। आप उनकी चेतनाओं पर मरहम लगाने का प्रयास करते रहते थे। एक दिन आपके सार्थ हन्जला (रजि0) अब बक्र (रजि0) से मिले और उनके समक्ष स्वीकार किया कि वह अपने 'गम्भीर कपट' को स्वीकार करते हैं क्योंकि वह अपने आपको दो विरोधाभासी भावनाओं में विभक्त पाते हैं: ''पैगम्बर की मौजदगी में वह स्वर्ग और नरक को लगभग देखते हैं परन्तु जब वह उनसे दर होते हैं तो उनकी पत्नी और बच्चे और उनके दैनिक कार्य उसे भला देते हैं। अब बक्र (रजि0) ने इसके उत्तर में स्वीकार किया कि वह भी ऐसे ही तनाव का शिकार हैं। वह दोनों पैगम्बर (सल्ल0) के पास अपनी आध्यात्मिकता की आंशिक दशा के सम्बन्ध में प्रश्न पछने गये। हन्जला (रजि0) ने अपने सन्देहों की प्र सम्बन्ध में विस्तारपर्वक बताया और महम्मद (सल्ल0) ने उसका उत्तर दियाः

''उस हस्ती की कसम जिसके हाथों में मेरी जान है यदि तुम सदैव उसी आध यात्मिक दशा में रह सको जिस दशा में तुम मेरे साथ हआ करते हो और अल्लाह को सदैव याद रखे रहो तो फरिश्ते तुमसे तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुमसे हाथ मिलायेंगे। लेकिन हन्जला ऐसा नहीं हैः कुछ समय इसके लिए (नमाज और स्तुति) और कुछ समय उसके लिए (आराम और मनोरंजन) है''।

उनकी आध्यात्मिक दशा का सम्बन्ध कपटाचार से कदापि नहीं थाः यह मात्र मानव प्रकृति की वास्तविकता थी जो याद करती है और भल जाती है और इसको याद दिलाने की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह भलती है और क्योंकि मनष्य फरिश्ते नहीं होते।

दसरे अवसरों पर पैगम्बर (सल्ल0) यह कहकर अपने साथियों को चकित कर देते कि नमाज में लीनता. एक दान अथवा इबादत मनुष्य की आवश्यकताओं के अन्दर और उनकी मानवता की विनम्र स्वीकृति में भी मौजद हैः ''भलाई का आदेश देना नेकी है. बराई से रोकना नेकी है। अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखना भी नेकी है।

चकित साथियों ने पुछा. ऐ अल्लाह के पैगम्बर क्या उस समय भी जब हम काम इच्छाओं की पुर्ति करते हैं? क्या उससे भी हमें पुरस्कार मिलता है?'' मुहम्मद (सल्ल0) ने उत्तर दिया तुम बताओ यदि तुममें से कोई अवैध शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तो क्या वह पाप नहीं करता है? यही कारण है कि उसे वैध शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने पर पुरस्कार मिलता है'' । इस प्रकार वह उनको अपनी मानवीय आवश्यकताओं में से किसी चीज का इन्कार न करने और उन्हे न छिपाने के लिए आमन्त्रित करते. और उनको यह शिक्षा देते कि वास्तविकता आत्मनियन्त्रण प्राप्त करने में है। आध्यत्मिकता का अर्थ अपनी इच्छाओं को स्वीकार करना और उनपर नियन्त्रण करना है। अपनी प्राकुतिक आवश्यकताओं को अपने सिद्धान्तों के अनसार नियन्त्रित रखना ही इबादत है। यह न तो पाप है और न यह कपट है

पैगम्बर (सल्ल0) अपने साथियों में व्यर्थ भावनाओं को विकसित होने देने से घुणा करते थे। आप उन्हें यह बताते रहते कि उन्हें कभी सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपना सम्पर्क नहीं तोडना चाहिए जो अत्यन्त दयालु और अत्यन्त कुपाशील है। वह अपनी कुपा और अपने उपकार में सबको सम्मिलित करता है और वह दिलों की शुद्धता को पसन्द करता है. जिसके कारण वह अपने पापों पर दुख प्रकट करते हैं और उसकी ओर लौटते हैं और यही अत्तौवाब (क्षमा माँगने वाले) का वास्तविक अर्थ है जिसे सबको बताया गया है अर्थात अपने आप को हार्दिक रूप से किसी चुक. गलती अथवा पाप के बाद अल्लाह की ओर लौटना। अल्लाह दिल से लौटने को पसन्द करता है. क्षमा करता है और वह शद्ध कर देता है

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने सभी साथियों से कहा था कि वह शिष्ट व्यवहार और क्षमाशील व्यवहार अपनाने का निरन्तर प्रयास करें: *''यदि तुम अपने भाई के सम्बन्ध में कोई ऐसी बात सुनो जिसे तुम पसन्द नहीं करते तो उसके लिए सत्तर बार क्षमा माँगो. यदि तुम ऐसी कोई चीज न पाओ तो अपने आप आश्वस्त कर लो कि यह ऐसी क्षमा है जिसे तुम नहीं जानते''* ।

निष्ठावान साथियों ने महसुस किया कि मुहम्मद (सल्ल0) उनका सम्मान करते हैं. उन्हें समझते हैं. और उनको प्यार देते हैं। वास्तव में वह उनसे प्यार करते थे और उनसे

ऐसा करने के लिए कहते थे। इस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) को प्यार भी देते और आध यात्मिक शिक्षा भी और वह शिक्षा भी दिल में उतरने वाली थी क्योंकि यह प्यार में लिपटी हई थी।

सफ्फा के लोग

इस्लाम में नये आने वाले जिनके पास घर नहीं होता था. खाने के लिए भी नहीं होता था. वह मस्जिद के आस-पास और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के घर के पास रहने लगे। यह लोग निर्धन थे और उनकी जीविका मुसलमानों के दान और उपहार पर निर्भर होती थी। उन लोगों की संख्या बढती रही. और जल्दी ही उनको अहलुस्सुफ्फा कहा जाने लगा। पैगम्बर (सल्ल0) उनकी दशा से सर्वाधिक चिन्तित रहते और उनके साथ लगातार एकता का प्रदर्शन करते। वह उनकी बातें सुनते. उनके प्रश्नों का उत्तर देते और उ आवश्यकताओं की देखभाल करते। आपके व्यक्तित्व और आपकी शिक्षाओं की एक विशेषता यह भी थी कि सुफ्फा के लोगों के सम्बन्ध में और अन्य मुसलमानों के सम्बन्ध ा में आपसे जो प्रश्न आध्यात्म. ईमान. शिक्षा और अन्य सन्देहों के सम्बन्ध में पूछा जाता तो अलग-अलग लोगों को एक ही प्रश्न के अलग-अलग उत्तर देते थे। इन उत्तरों की भिन्नता का सम्बन्ध उनकी मनोवैज्ञानिक संरचना. अनभव और प्रश्नकर्त्ता की बद्धि पर निर्भर होता था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका घर विशेष रूप से खाली रहता और वह अधिकतर खाने के लिए कुछ खजूरों के अतिरिक्त कुछ न पाते। इसके बावजूद वह अपने आस-पास के निर्धन लोगों विशेष रूप से सफ्फा के लोगों की सहायता करते।

आपने अपनी सादगी जीवनपर्यन्त जारी रखी और अपने समुदाय के लोगों को आपसे मिलने की सदैव अनमति रहती। पैगम्बर (सल्ल0) के पास कछ नहीं था और वह

औरतों. बच्चों. दासों और सबसे निर्धन लोगों को अपने आप से मिलने देते। वह उनके बीच रहते और वह उनमें से एक थे।

ज्ञान का विकास

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ज्ञान प्राप्त करने को अत्यत महत्व प्रदान करते और आपः घोषणा की कि

"ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है"।

"एक छोटी मात्रा में ज्ञान इबादत के भण्डार से बेहतर है"।

आपने एक बार टिप्पणी की कि

"बुद्धिजीवी की लोगों के ऊपर बडाई ऐसी ही है जैसे तारों पर पर्णमासी के चाँद को प्राप्त है"।

"फरिश्ते अपने पंख ज्ञान प्राप्त करने वाले के लिए फैला देते हैं"

अतः जिसने ज्ञान अर्जित किया उसने एक बडी दौलत प्राप्त कर ली।

पैगम्बर (सल्ल0) ने घोषणा की कि "मैं एक शिक्षक बनाकर भेजा गया हूँ"।

आपने विद्यालय स्थापित करके ज्ञान प्रदान करने की सर्वांगीण योजना तैयार की: अल-सफ्फा ऐसी ही संस्था का एक उदाहरण है।

पैगम्बर (सल्ल0) अल-सुफ्फा में एक या दो व्याख्यान स्वयं दिया करते थे मदीना के समाज में आप (सल्ल0) की बढती हुई महत्वपूर्ण भूमिका और उसमें आपकी अनेक जिम्मेदारियों के बावजूद जब भी संभव होता आप अल-सुफ्फा में पढाने का अवसर निकालते और आपके अनेक साथी उस व्याख्यान में भाग लेते। एक दिन पैगम्बर (सल्ल0) अपने कमरे से मस्जिद में आये। आपने वहाँ लोगों के दो गुटों को देखा। एक गुट स्तुति करने में व्यस्त था और दूसरा गुट ज्ञान प्राप्त करने में व्यस्त था। पैगम्बर (सल्ल0) ने टिप्पणी की कि यद्यपि यह दोनों गुट भलाई के कार्यों में लीन हैं. परन्तु जो गुट ज्ञान प्राप्त करने में लीन है वह श्रेष्ठ है। यह कहकर आप ज्ञान प्राप्त करने वाले गट में सम्मिलित

हो गये। पैगम्बर (सल्ल0) ने यह भी फरमायाः ''रात्रि के समय ज्ञान प्राप्त करने में व्यतीत किया गया एक घण्टा परी. रात जागकर इबादत में गजारने की तलना में उत्तम है''।

महिलाओं की शिक्षा

ज्ञानार्जन के सम्बन्ध में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेद नहीं किया। जब भी कुरआन की कोई आयत अवतरित हुई. पैगम्बर उसे पहले पुरुषों की सभा में सुनाते फिर स्त्रियों की सभा में सुनाते। आपने सप्ताह में एक विशेष दिन भी महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष रूप से निर्धारित कर दिया था। इस अवसर पर वह प्रत्येक किस्म के प्रश्न पछतीं। पैगम्बर (सल्ल0) इन प्रश्नों का उत्तर धैर्य तथा स्नेहपर्वक देते।

पैगम्बर (सल्ल0) की पत्नी हजरत आयशा (रजि0) का एक कथन रिवायत किया गया है कि उन्होंने कहा कि अन्सार (मदीना के पारम्परिक वासी) की महिलाएँ प्रशंसा और आभार की हकदार हैं. क्योंकि उनकी शालीनता उनके ज्ञान प्राप्त करने में रुकावट नहीं बनती। पैगम्बर (सल्ल0) के जीवनकाल में कुछ महिलाओं ने कुरअ कण्ठस्थ कर लिया था. उनमें से कुछ कुरआन की व्याख्या की कक्षाएँ लिया करती थीं। उनमें से अनेक महिलाओं ने हदीसों की रिवायत की और उनकी शिक्षा दी। उनमें से कुछ महिलाओं ने फतवा अथवा धार्मिक निर्देश उसी आत्मविश्वास के साथ जारी किये जिस प्रकार पुरुष जारी करते थे। एक महिला उम्मुल फज्ल करीमः अपने घर में एक विद्यालय चलाती थीं। रिवायत के अनसार पैगम्बर (सल्ल0) के जीवनकाल में कम से कम पाँच महिलाएँ लिखना पढना जानती थीं।

फातिमा (रजि0)

'एक बेटी'

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की बेटी फातिमा (रजि0) अपने पिता के बहुत निकट थी उनका विवाह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चचेरे भाई और अबू तालिब के बेटे अली (रजि0) के साथ हुआ था। अतः वह अपने पिता के आवास के निकट स्थानान्तरित हो गयी थीं और वह निर्धनों के हित के लिए विशेष रूप से निष्ठावान थीं। इन निर्धनों में सफ्फा के लोग भी सम्मलित थे।

पैगम्बर (सल्ल0) के तीन पुत्र पैदा हुए. जिनमें से सभी की मृत्यु बचपन में ही हो गयी। उनकी चार बेटियाँ जो आपकी पहली पत्नी हजरत खदीजा (रजि0) से पैदा हुई थीं. प्रौढता को पहुँचीं। हजरत फातिमा पैगम्बर (सल्ल0) की सबसे छोटी बेटी थीं और आप उनसे अत्यन्त लगाव रखते थे। जब आप कभी किसी यात्रा से लौटते तो मस्जिद में नमाज पढने के बाद जो पहला काम करते वह यह था कि फातिमा के घर जाते और उनके हाथ और माथे को चूमते। जुमै बिन उमैर ने एक बार हजरत आयशा (रजि0) से पूछा कि पैगम्बर (सल्ल0) किसे सर्वाधिक प्यार करते थे। उन्होंने उत्तर दिया. ''फातिमा (रजि0) को''। पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. *''फातिमा (रजि0) मेरा एक हिस्सा है. अतः जो कोई उसे क्रोधित करेगा वह मझे क्रोधित करेगा''।*

जब भी पैगम्बर (सल्ल0) घर पर होते अथवा जनता के बीच होते और आपकी बेटी फातिमा (रजि0) आपके पास आ जातीं अथवा कमरे में प्रवेश करतीं. तो आप खडे हो जाते और उनका अभिवादन करते और उनसे सार्वजनिक रूप से अत्यन्त सम्मान और स्नेह प्रकट करते। मदीना और मक्का दोनों शहरों के लोग एक बेटी के प्रति ऐसे व्यवहार पर चकित थे जो अपनी-अपनी रीतियों के कारण सामान्य रूप से ऐसा व्यवहार नहीं करते थे।

पैगम्बर (सल्ल0) अपनी बेटी को चुमते. उनसे बात करते. रहस्य बताते. और उनको अपने पहलु में बैठाते और इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग क्या टिप्पणी करेंगे अथवा किस तरह की आलोचनाएँ करेंगे। एक बार आप (सल्ल0) ने अपने नाती और फातिमा (रजि0) के बेटे हसन को कुछ बद्दु लोगों के सामने चुम लिया. जिनको अचरज हुआ। उनमें से एक जिनका नाम अल-अकरा बिन हाबिस था. आश्चर्य प्रकट किया और कहाः "मेरे पास दस बच्चे हैं और मैनें उनमें से किसी को कभी नहीं चुमा है!" पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. *"जो व्यक्ति अपने बच्चों के प्रति उदार नहीं होता तो अल्लाह उसके प्रति उदार नहीं होता"।* अपने खामोश उदाहरण एवं टिप्पणी की रोशनी में पैगम्बर (सल्ल0) अपने लोगों को अच्छे आचरण. दयालुता. स्नेह. बच्चों के लिए सम्मान और महिलाओं का महत्व और उनके ऊपर ध्यान देना सिखाते। आप (सल्ल0) ने फरमायाः *"मैं केवल प्रतिष्ठित आचरण को पुरा करने के लिए भेजा गया हुँ"।*

फातिमा (रजि0) अपने पिता से प्यार और इस्लामी आस्था तथा स्नेह प्राप्त करतीं और अपनी गतिविधियों के माध्यम से उन्हें निर्धनों में फैला देतीं। तथापि एक दि॰ फातिमा (रजि0) ने अपने पति हजरत अली (रजि0) से अपनी कठिनाईयों का वर्णन कियाः उनके पिता की तरह उनके पास भी कुछ नहीं था और वह अपने दैनिक जीवन. अपने परिवार और अपने बच्चों को व्यवस्थित करने में अधिक कठिनाई महसुस करने लगीं। उनके पति अली (रजि0) ने उनको परामर्श दिया कि सहायता के लिए अपने पिता के पास जायें. संभवतः वह सहायता कर दें। वह उनसे मिलने गयीं परन्तु वह उनसे कुछ अनुरोध करने का साहस न कर सकीं। वह अपने पिता का इतना गहरा सम्मान करती थीं। जब वह खामोश और खाली हाथ वापस आयीं तो हजरत अली ने उनके साथ जाने और पैगम्बर से स्वयं मदद माँगने का निर्णय लिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनकी बात सुनी और उनको सुचित किया कि वह उनके लिए कुछ नहीं कर सकते और यह कि उनकी परिस्थिति सुफ्फा के लोगों की तुलना में बहुत अच्छी है और सुफ्फा के लोगों को शीघ्र उनकी सहायता की आवश्यकता है। उनको सहन करना होगा और धैर्य रखना होगा। वह

दोनों दुखी और निराश होकर चले गयेः यद्यपि वह दोनों पैगम्बर की बेटी और चचेरे भाई थे. वह दोनों उनसे किसी सामाजिक विशेषाधिकार का दावा नहीं कर सके।

देर सायं पैगम्बर (सल्ल0) उनके दरवाजे पर आये। वह उनका स्वागत करने के लिए खडे होना चाहते थे परन्तु मुहम्मद (सल्ल0) प्रवेश करके बिस्तर के पास बैठ गये। आपने उनके कान में कहाः *"क्या मैं तुम लोगों को एक ऐसी चीज न बताऊँ जो उससे उत्तम है जिसे तुम लोगों ने मुझसे माँगा है?"* उन दोनों ने सहमति व्यक्त की और पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें बतायाः *"ये शब्द हैं जिन्हें फरिश्ता ज्रिबील (अलै0) ने मुझे सिखाया है. और यह कि तुम प्रत्येक नमाज के बाद इन्हें दस बार पढोः 'सुब्हान अल्लाह (अल्लाह महान हैं). फिर अलहम्दु लिल्लाह (प्रशंसा अल्लाह के लिए हैं). फिर अल्लाहु अकर (अल्लाह सबसे बडा है)'"* सोने के लिए जाने से पहले तुम लोग तीनों शब्दों को तैंतीस तैंतीस बार पढा करो। यह आध्यात्मिक शिक्षाएँ विभिन्न शताब्दियों से गुजरते हुए हम तक पहुँची हैं और प्रत्येक मुसलमान आज अपने दैनिक जीवन में इनका पालन करता है। हजरत फातिमा (रजि0) अपने पति अली (रजि0) की तरह नेकी. उदारता और प्यार का आदर्श थीं। उन्होंने अपना जीवन अपने पिता की आध्यात्मिक शिक्षाओं की रोशनी में व्यतीत किया। थोडे पर गुजारा करना. प्रत्येक वस्त को मात्र एक अल्लाह से माँगना और अपने पास से दूसरों को हर वस्तु दे देना।

एक दिन पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की प्रिय बेटी फातिमा (रजि0) उनसे मिलने आयीं। फातिमा (रजि0) के एक प्रश्न के उत्तर में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने क "फातिमा (रजि0). पैगम्बर की एक बेटी होने के कारण इस आशा में न रहो कि तुम स्वर्ग में विशेष स्थान प्राप्त करोगी। वह तुम्हारे कर्म ही होंगे जो तुम्हारे स्थान को निर्धारित करेंगे"। पैगम्बर (सल्ल0) यह स्पष्ट करना चाहते थे कि पैगम्बर (सल्ल0) के साथ वंशगत सम्बन्ध किसी को न्याय के दिन सहायता नहीं कर सकता। किसी पवित्र व्यक्ति. खानदान या परिवार के साथ वंशगत सम्बन्ध किसी को स्वर्ग में नहीं ले जा सकता बल्कि उसके अपने कर्म ही वहाँ ले जा सकते हैं।

कुछ वर्षों बाद अपने पिता की मृत्यु के समय वह फूट फूट कर रोने लगीं जब पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके कान में बताया कि अल्लाह उन्हें अपने पास वापस बुलाने वाला है. और इस तरह अब उनके जाने का वक्त है। कुछ मिनट बाद फातिमा (रजि0) उस समय प्रसन्नतापूर्वक मुस्करानें लगीं जब पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको रहस्य के रूप बताया- यह प्यार भरा विश्वास आभास दिलाता है कि पिता और बेटी के सम्बन्धों का सार क्या है- कि वह स्वर्ग में मेरे परिवार से पहली सदस्य होंगी जो मझसे मिलेंगी।

आयशा (रजि0)
एक पत्नी

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की पत्नी. आयशा (रजि0) भी मुहम्मद (सल्ल0) के आदर्श के सावधानीपूर्ण देखरेख में रहीं और उनसे बहस करती थीं। उनकी हर बात उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा की ओर ले जाती और कालान्तर में वह पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व. निजी जीवन में आपका व्यवहार और सार्वजनिक समझौतों के पालन के सम्बन्ध में जानकारी का अमूल्य स्रोत बन गयीं। उन्होंने बताया कि मुहम्मद (सल्ल0) उनकी आशाओं और इच्छाओं के प्रति कितने सचेत थे कि जब वह अभी छोटी थीं. वह उनके मदीना के घर में पहुँची। खेल-कूद दैनिक जीवन का अंग था और पैगम्बर (सल्ल0) उसमें भाग लेने से अथवा उनकी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने से परहेज कभी नहीं करते थे। जैसे. उदाहरणस्वरूप जब हब्शा से एक प्रतिनिधि मण्डल उनसे मिलने आया। हब्शा के लोग विभिन्न खेल और लोकनृत्य पैगम्बर (सल्ल0) के घर के बरामदे में प्रस्तुत करते और पैगम्बर (सल्ल0) अपने कमरे के द्वार पर खडे हो जाते और अपनी पत्नी को अपने कन्धे के पीछे से सीधे इन खेलों और लोक नत्यों को देखने की अनुमति देते।

अनेक अवसरों पर उन्होंने उनके प्रति पैगम्बर (सल्ल0) के ध्यान देने की विशेष प्रकति. स्नेह का प्रकटीकरण और दैनिक जीवन में जो स्वतन्त्रता प्रदान की उसका वर्णन

किया है। जिन हदीसों की उन्होंने रिवायत की है उनकी सामग्री को देखने से पता चलता है कि मुहम्मद (सल्ल0) किस सीमा तक उनसे बात करते. विचार-विमर्श करते और प्रेम तथा स्नेह प्रकट करते अपनी पत्नी के प्रति उनका जो व्यवहार था. उसके द्वारा इसका उदाहरण प्रस्तुत करते।

आयशा (रजि0) अन्य महिलाओं की भाँति व्यवहार करती और मदीना व सार्वजनिक जीवन में सर्वाधिक उपस्थित रहीं। पैगम्बर (सल्ल0) आपको सम्मिलित रखते और अपने साथियों से चाहते कि इनके आदर्शों के माध्यम से समझें कि महिलाओं को विशेष रूप से पत्नियों को अपने दैनिक जीवन तथा सार्वजनिक जीवन में कैसी भमिका का निर्वाह करना चाहिए।

एक ईरानी पडोसी ने एक बार पैगम्बर (सल्ल0) को खाने के लिए निमन्त्रित किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपनी पत्नी आयशा (रजि0) की ओर संकेत करते हुए पूछाः ''इसके बारे में क्या विचार है?'' उस व्यक्ति ने नकारात्मक उत्तर दिया. जिसका अर्थ यह था कि यह निमन्त्रण मात्र मुहम्मद (सल्ल0) के लिए था। अतः मुहम्मद (सल्ल0) निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया। उस पडोसी ने आपको एक बार फिर आमन्त्रित किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने फिर पूछाः ''इसके बारे में क्या विचार है?'' ईरानी पडोर नकारात्मक उत्तर दिया। अतः पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने पुनः निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया। ईरानी पडोसी ने आप (सल्ल0) को तीसरी बार आमन्त्रित किया और जब पैगम्बर ने पूछा कि इनके बारे में क्या विचार है तो उसने सकारात्मक उत्तर दिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और आयशा (रजि0) के साथ पडोसी के घर गये। एक दृष्टिकोण पर कायम रहकर कि पैगम्बर (सल्ल0) अपनी पत्नी को निमन्त्रण मिलने पर ही पडोसी के घर जायेंगे आप अरब प्रायद्वीप के वासियों और बद्दू लोगों में प्रचलित रीतियों का सुधार कर रहे थे। जबकि उनकी प्रचलित रीतियों की आलोचना नहीं कर रहे थे। हजरत आयशा (रजि0) तथा उनसे पहले हजरत खदीजा (रजि0) और वास्तव में सभी पत्नियाँ और बेटियाँ जो आपके जीवन में मौजूद रहीं. वह सार्वजनिक जीवन में भी सक्रिय रहीं और उन्होंने कभी सामाजिक. राजनैतिक आर्थिक अथवा सैनिक क्षेत्र में भाग लेने में शालीनता को रुकावट नहीं बनने दिया।

पैगम्बर (सल्ल0) ने महिलाओं को ऐसे साधन प्रदान किये थे जिससे : सार्वजनिक जीवन में मौजूद रहने. अपने आप को विकसित करने. अपनी प्रतिभाओं को प्रकट करने और आलोचनात्मक प्रवृत्ति पैदा करने और झूठी शालीनता से बचने और महिलाओं से सम्बन्धित नाज़ुक विषयों के सम्बन्ध में बात करने. उनकी इच्छाओं और आशाओं को प्रकट करने का अवसर प्रदान किया था। वर्षों बाद हजरत आयशा (रजि0) ने मदीना की अन्सार महिलाओं के साहस और बौद्धिक प्रवृत्ति को सम्मानपूर्वक याद किया कि वह महिलाएँ अधिकतर मक्का की महिलाओं के विपरीत बोलने का साहस करती थीं और सीधे प्रश्न पूछ लेती थीं: ''अन्सार की महिलाएँ कितनी ही अच्छी महिलाएँ हैं कि शालीनता उनको धर्म के सम्बन्ध में निर्देश प्राप्त करने से नहीं रोकती थी''।

आयशा (रजि0) का प्रशिक्षण पैगम्बर (सल्ल0) ने उसी प्रकार किया था: वह उस समय उपस्थित रहीं जब क़ुरआन की आयतें अवतरित हुईं और वह पैगम्बर (सल्ल0) के साथ रहीं जब आप सन्देश पहुँचा रहे होते अथवा परामर्श और अनुमोदन करते अथवा साधारण रूप से जब आप अकेले होते और अपने धर्म पर निजी जीवन में अमल करते। वह उनसे सुनतीं. प्रश्न करतीं और वह अपने पति की पसन्द के भावों को और उनके लिए तर्कों को समझने का प्रयास करतीं। उनकी स्मरण. बौद्धिक और आलोचनात्मक क्षमता की कृपा से उनके माध्यम से दो हजार से अधिक हदीसें हम तक पहुँची हैं और उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) के अन्य साथियों द्वारा रिवायत की गयी हदीसों में बार-बार सुधार भी किया।

पैगम्बर (सल्ल0) और हजरत आयशा (रजि0) एक दूसरे से जो प्यार प्रकट करते वह अत्यन्त प्रभावपूर्ण और तीव्र था। हजरत आयशा (रजि0) अपनी आस्था व पैगम्बर (सल्ल0) के प्यार के मामले में सदैव निष्ठावान रहीं और वह अपनी पवित्रता और निष्ठा में उसी प्रकार निष्ठावान रहीं जिस प्रकार वह बौद्धिक और सामाजिक प्रतिबद्धताओं में थीं। वह इस मामलें में भी आदर्श थीं कि पैगम्बर ने जो प्यार उनके प्रति प्रकट किया: यह उन्हीं का कमरा था जहाँ पैगम्बर (सल्ल0) अन्तिम साँसे लेना चाहते थे और वहीं पर वह दफन हुए।

13
पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) "सभी रचनाओं के लिए दया"

क़ुरआन में अल्लाह की महत्वपूर्ण विशेषताएँ अल-रहमान (अत्यन्त दयावान) ं अल-रहीम (अत्यन्त कृपाशील) बतायी गयी हैं। इन दोनों शब्दों के भाव में दया. प्रेम. उपकार. सहानुभूति. दयालुता और कृपा सम्मिलित हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः "जब अल्लाह तआला ने समस्त चीजों को बनाया तो उसने उसके पास जो पवित्र किताब है जो सबसे ऊपर के आसमान में है. लिख दिया कि "मेरी दया. मेरी यातना से बढकर है"। इसके बाद अल्लाह तआला फरमाता है कि उसने अपनी दया को सौ भागों में बाँट दिया. उसने निन्यानवे भाग को अपने पास रखा और एक भाग को अपनी रचनाओं के लिए पृथ्वी पर भेज दिया। इसी एक अंश के द्वारा समस्त रचनाओं में एक दसरे के प्रति दयालता का प्रकटीकरण होता है।

"सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है. "हमने तुम्हें सम्पूर्ण रचनाओं के लिए दया बनाकर भेजा है। यह दया सम्पूर्ण संसारों के लिए है"। (क़ुरआन. 21:107)

अल्लाह तआला ने पैगम्बर (सल्ल0) को जो दया प्रदान की है वह मात्र मानवता तक ही सीमित नहीं है. बल्कि इस सबसे बडे दैवीय उपकार में सभी रचनाएँ (सजीव व निर्जीव) साझीदार हैं।

कुरआन के व्याख्याकारों ने कहा है कि चूँकि कुरआन संसार में समस्त दयालुता का स्रोत है. इसे सबसे पहले पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को दिया गया जो मानवता के लिए दयालुता के सन्देश के एक मात्र वाहक हैं। इस प्रकार यह आयत ऐसी है जो बताती है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) सम्पूर्ण रचनाओं के लिए दया बना कर भेजे गये थे। क्योंकि उनके बिना कुरआन का अवतरण नहीं होता।

कुरआन और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) दोनों अल्लाह की सर्वत्र विद्यमान कृपा की अभिव्यक्ति हैं। इसका परिणाम एक मनुष्य का चित्रण है. और उन दोनों की अन्य अनेक विशेषताओं के अतिरिक्त यह चित्रण. अपने अन्दर सहानभति और दया के आदर्शों को समेटे हए है

चिडियों और पशओं के प्रति दया

पैगम्बर (सल्ल0) ने दया का परिचय जिस अनोखे और बहुमुँखी ढंग से कराया है उसका इतिहास में अब तक कोई उदाहरण नहीं है। इसे आपके जीवन के निम्नलिखित उदाहरणों से भली-भाँति समझा जा सकता है।

- आपके एक साथी ने एक बार एक घोसले से एक चिडिया का बच्चा ले लिया था जिसके कारण उस बच्चे की माँ घबराई हुई उसे ढूँढ रही थी. और अचानक चिडिया ने साथी (सहाबी) पर हमला कर दिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथी से कहा कि चिडिया के बच्चे को वापस उसके घोसले मे डाल दें और वहाँ उपस्थित साथियों से कहा. ''तुम्हारे ऊपर अल्लाह की दयालता उस दयालता से बढ कर है जो यह चिडिया अपने बच्चे के लिए रखती है''।

चिडिया अल्लाह के अस्तित्व. असीम दया और उपकारों का प्रतीक है। बावजद इसके. उनकी दुनिया अलग है।

''क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पवित्रता बयान करती हैं वह जो आकाशों और पथ्वी में हैं और पक्षी भी पंखों को फैलाये हए हैं। प्रत्येक अपनी नमाज को

और अपनी स्तति को जानता है। और अल्लाह को ज्ञात है जो कुछ वह करते हैं''। (कुरआन. 22:41)

इस दैवीय मार्गदर्शन से प्रभावित होकर पैगम्बर (सल्ल0) पक्षियों और पशुओं के कल्याण के लिए अत्यन्त चिन्तित रहते थे। वह अपनी दया सम्पूर्ण रचनाओं मनुष्य और अमानव के प्रति प्रदर्शित करते। उन्होंने तत्वों का अवलोकन करने उसके चमत्कारों पर विचार करने और अपने आस-पास स्थित प्रकति और सबसे छोटे जीवों से शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश दिया।

यह भी रिवायत किया गया है कि आप (सल्ल0) ने मात्र मनोरंजन के लिए और बिना किसी विशेष आवश्यकता के पक्षियों को मारने से मना किया है। आपने कहा. ''जो कोई अकारण किसी पक्षी को मारता है. वह पक्षी कयामत के दिन आयेगा और कहेगा 'ऐ अल्लाह. इस व्यक्ति ने मनोरंजन के लिए मेरी हत्या की और उसे इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी'।

- पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा पशुओं के प्रति दयालुता के लिए विभिन्न अवसरों पर उठाये गये कदमों पर विचार कीजिए और देखिये कि आपने किस तरह उनके सा उपयुक्त व्यवहार करने की शिक्षा अपने साथियों को दी। आपने फरमाया है *''कुछ लोग ऐसे हैं जिनके हृदय पक्षियों के हृदय (दयालता और शालीनता के अनसार) जैसे हैं और वह स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे''।*
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जीवित रचनाओं को जलाने से मना किया। जब आप चीटियों की एक ऐसी पहाडी से गुजरे जो जलायी गयी दिखायी दे रही थीं. आपने पुछा. ''इसे किसने जला दिया?'' जब उनको बताया गया कि अमुक-अमुक ने इसे जला दिया है तो पैगम्बर (सल्ल0) ने कहाः *''मात्र अल्लाह ही आग द्वारा दण्ड देने का अधिकार रखता है''।* इस प्रकार आपने लोगों को इस दुर्बल जीवन को बचाने का निर्देश दिया।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) प्रत्यक्ष रूप से हानिकारक वस्तुओं को भी अल्लाह द्वारा रचित व्यवस्था का अंग मानते थे। एक बार जब पैगम्बर (सल्ल0) मक्का के निकट मिना नामक स्थान पर अपने साथियों के साथ थे। एक गुफा से एक साँप निकला और आपके साथियों ने उसे मारने का प्रयास किया परन्त वह बच निकला। इस पर पैगम्बर (सल्ल0)

ने फरमाया. ''अल्लाह ने तुम्हें उसकी हानि से बचा लिया और उसने उसको तुम्हारी हानि से बचा दिया। पैगम्बर (सल्ल0) का यह कथन कि ''अल्लाह ने उसको तुम्हारी हानि से बचा दिया है'' इसमें एक महत्वपूर्ण संकेत यह है कि साँप भी प्राकृतिक संसार में एक भूमिका का निर्वाह करता है। पैगम्बर (सल्ल0) सम्पर्ण रचनाओं को सांसारिक व्यवस्था का हिस्सा मानते थे।

- पैगम्बर (सल्ल0) ने सदैव लोगों को परामर्श दिया कि एक अन्य प्राकृति संसार के प्राणी. ऊँट के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये। पवित्र कुरआन पूछता हैः *''क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि उन्हें किस प्रकार बनाया गया है''।* (कुरआन 88:17)

पैगम्बर (सल्ल0) का सामना एक ऐसे ऊँट से हुआ. जो इतना भूखा था कि उसका पेट सिकुड गया था। जो लोग उसके साथ थे उनसे आपने कहाः *''इन मूक पशुओं के सम्बन्ध में अल्लाह से डरो। यदि तुम इन पर सवारी करो तो उस समय सवारी करो जब वह स्वस्थ्य हों। जब तुम हरे-भरे क्षेत्र में यात्रा करो तो भूमि से इन्हें अपना अधिकार प्राप्त करने से न रोको। जब तम बंजर और सखी भमि पर यात्रा करो तो इसे जल्दी से ढाँक दो''।*

पैगम्बर (सल्ल0) के एक साथी हजरत अनस (रजि0) ने रिवायत किया कि ''अल्लाह के पैगम्बर ने बँधे हए और कैद किये हए जानवरों को जबहः करने से मना किया है''।

- जहाँ तक पशुओं का सम्बन्ध है पैगम्बर (सल्ल0) की दयालुतापूर्ण शिक्षा आपके सम्पूर्ण जीवन में बिखरी हुई हैं। हमने देखा है कि जब आप अपनी सेना के साथ मक्का की ओर कूच कर रहे थे तो रास्ते के किनारे पडे हुए एक कुत्ते के बच्चे के सम्बन्ध ा में परामर्श दिया कि उसकी रक्षा की जाए। जब पैगम्बर (सल्ल0) ने एक कुतिया को अपने बच्चों को दूध पिलाते हुए देखा तो आपने अपने सैनिक साथी जुएल बिन सुराका (रजि0) को आदेश दिया कि खडे होकर उसकी रक्षा करें ताकि कूच करती हुई सेना से ये परेशान न हों। वह वहाँ उस समय तक खडे रहे जब पूरी सेना वहाँ से गुजर गयी। इससे मालूम होता है कि पैगम्बर (सल्ल0) पशुओं के लिए अपने हृदय में किस सीमा त सहानभति रखते थे क्योंकि उस कतिया की दयनीय दशा पर आपने उस समय ध्यान दिया

जबकि आप एक सेना का नेतृत्व कर रहे थे. जिसको अनेक कार्यों का सम्पादन करना था।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) विशेष रूप से बिल्लियों से प्यार करते थे. परन्तु सामान्य रूप से वह सदैव अपने साथियों को पशुओं के सम्मान की आवश्यकता के प्रति जागृत करते रहते थे। आपने एक बार अपने साथी को यह कहानी सुनायीः "एक व्यक्ति प्रचंड गर्मी में एक मार्ग पर जा रहा था. उसने एक कुँआ देखा और वहाँ जाकर कुँए के अन्दर गया और अपनी प्यास बुझायी। जब वह ऊपर आया तो उसने एक कुत्ता देखा जो प्यास से हाँफ रहा था और अपने आप से कहाः "यह कुत्ता उतना ही प्यासा है जितना प्यासा मैं था। वह कुँए में दूसरी बार गया और अपने जूते (चमडे का मोजा) को पानी से भरा और उसे अपने दाँतों से पकडे हुए ऊपर आया। उसने उस पानी को कुत्ते को पीने के लिए दिया और अल्लाह ने उसे इस कर्म के लिए पुरस्कृत किया और उसके पापों को क्षमा कर दिया"। इसके बाद पैगम्बर (सल्ल0) से पूछा गया. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर. क्या हम पशुओं के साथ दयालुता के लिए भी पुरस्कृत किये जाते हैं"? पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दियाः "किसी भी जीवित रचना के साथ भलाई करने का पुरस्कार प्राप्त होता है"।
- एक अन्य अवसर पर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमायाः "एक औरत को एक बिल्ली के कारण दंडित किया गया जिसने उस बिल्ली को उस समय तक कैद रखा जब तक वह मर न गयी। इस बिल्ली के कारण वह नरक में गयी। वह उसे कैद में रखकर न खाना देती थी. न पानी देती थी और उसे अपना शिकार खाने की अनुमति भी नहीं देती थी"। इन हदीसों द्वारा पैगम्बर (सल्ल0) ने पशुओं के प्रति सम्मान पर बल देने को इस्लामी शिक्षाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग बताया। आपने इस पहल पर बल देने के लिए प्रत्येक अवसर का उपयोग किया।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने सचेत किया थाः "जो व्यक्ति किसी गौरैया या एक बडे पशु को उसे जीवित रहने के अधिकार का सम्मान किये बिना मारता है तो वह इसके लिए कयामत के दिन अल्लाह तआला के समक्ष उत्तरदायी होगा। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने शिक्षा दी कि किसी पशु के जीवन के अधिकार की रक्षा का सम्मान किया जाना चाहिए. इसको जिस चारे की आवश्यकता है उसे मिलना चाहिए और उसके

साथ भला व्यवहार किया जाना चाहिए। इन अधिकारों से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह मानवता के कर्त्तव्यों में से एक था और यह समझना चाहिए कि आध्यात्मिक विकास के लिए यह एक शर्त है

प्रकति के साथ और पथ्वी के जीवों के साथ दया

पृथ्वी के रचयिता सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मनुष्य को धरती पर अपना खलीफा (नायब) बनाया है और वह मानवता को आदेश देता है कि वह इसकी देखभाल करे और इसका दरुपयोग करने अथवा शोषण करने से बचे।

''और पृथ्वी पर बिगाड न करो उसके सुधार के उपरान्त''। (कुरआन. 7:56)

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने और अधिक स्पष्ट किया कि पृथ्वी और इसकी सम्पूर्ण रचनाएँ. पौधों से लेकर निर्जीव तक. सभी आज्ञाकारी बन्दे हैं जो अल्लाह के लिए प्रिय हैं और यह सब उसके सामने सजदा (दण्डवत) करती हैं:

''क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सजदा (दण्डवत) करते हैं जो आसमानों में हैं और जो धरती में हैं। और सूरज और चाँद और तारे और पहाड और सूरज और पशु और बहुत से मनुष्य। और बहुत से ऐसे हैं जिनपर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसको अल्लाह अपमानित कर दे तो उसको कोइ सम्मान प्रदान करने वाला नहीं। निस्सन्देह अल्लाह करता है जो वह चाहता है''। (कुरआन. 22:18)

जैसा कि प्रत्यक्ष रूप से महत्वहीन वस्तुओं का वर्णन किया गया था एक बार फिर निर्जीव पृथ्वी को एक बुद्धिमान अस्तित्व के रूप में चित्रित किया गया और इससे आगे बढकर बताया गया है कि वह मनष्यों के मामलों की देखभाल करती है:

''जब धरती जोर से हिला दी जायेगी ।और धरती अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। और मनुष्य कहेगा कि इसको क्या हआ। उस दिन धरती अपनी परिस्थितियों का वर्णन करेगी''। (कुरआन. 99:1-4)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इन आसमानी शिक्षाओं को वास्तविक जीवन के अनभवों में परिवर्तित किया।

आप ने फरमायाः

''पृथ्वी को मेरे लिए इबादत का स्थान और शुद्धिकरण का स्रोत बनाया गया है''। यहाँ तक कि पृथ्वी की निर्जीव वस्तुओं को जीवित और प्रेम करने वाली वस्तुओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है''.

इससे बढकर पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया.

''पृथ्वी पर जो भी हैं उनके लिए दयाल बनो और जो आकाश में है वह तम्हारे लिए दयाल रहेगा''।

हरी-भरी पथ्वी

पेड. भोजन. स्वास्थ्य और हरे आवरण के रूप में उपयोगी हैं। इनमें औषधीय गुण होते हैं। इनसे हमें भवन निर्माण कार्य के लिए लकडी व घरेलु उपभोग के लिए ईधन प्राप्त होता है। क्षेत्र की जलवायु में जंगल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये भ-कटाव और डेसिबल स्तर को नियन्त्रित करते हैं और वर्षा में सहायक होते हैं।

अनस (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

''यदि कोई व्यक्ति एक पेड लगाता है और लोग अथवा अल्लाह की अन्य रचनाएँ इसके फलों को खाती हैं तो यह उसकी ओर से एक दान होता है''।

इस रिवायत में मार्ग के किनारे छायादार वृक्ष लगाने. सामाजिक वनीकरण. पार्क और जंगलों के संरक्षण के पुण्य कार्य पर बल दिया गया है।

पैगम्बर (सल्ल0) ने एक बार फरमाया.

''यदि कोई व्यक्ति जंगल का ऐसा वृक्ष काटता है जो पथिकों और पशुओं को छाया प्रदान करता है तो अल्लाह उसको कयामत के दिन दण्ड देगा''।

इस कथन से ज्ञात होता है कि पैगम्बर (सल्ल0) पृथ्वी को हरा-भरा रखने में कितनी अधिक रुचि रखते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने जिस संसार में हम रहते हैं उसकी सुरक्षा के विचार को पूर्ण रूप से भिन्न पहलू से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इससे पता चलता है कि इस संसार का हमारे ऊपर अधिकार है और एक निर्धारित दिन अल्लाह के समक्ष इस संसार की वस्तुएँ हमारे कर्मों को प्रकट कर देंगी।

पैगम्बर (सल्ल0) ने यह भी फरमायाः

''यदि कयामत का समय ऐसे क्षण आ जाता है जब तुममें से कोई अपने हाथ में एक पौधा लिए हो तो उसे चाहिए कि तुरन्त उसे रोप दे''।

मुस्लिम आस्थावानों की चेतना अपने जीवन के अन्त में भी प्रकृति से निकट सम्बन्ध बनाये रखती है। यहाँ तक कि किसी व्यक्ति का अन्तिम क्षण जीवन नवीनीकरण और इसके जीवन चक्र से सम्बन्धित होना चाहिए।

भौतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के मध्य पारस्परिक निर्भरता

कारेन आर्मस्टांग ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को ''हमारे युग का पैगम्बर'' कहा है वास्वत में उसकी पुस्तक में प्रत्यक्ष रूप से यह बात जिस अर्थ में कही गयी है। उसका कथन उससे अधिक अर्थों में उपयुक्त है। इस प्रकार हम देखते हैं कि धरती और इस पर रहने वाले- कीडो मकोडों. पशुओं. पक्षियों. वृक्षों. चट्टानों. पहाडों. नदियों और समुद्रों- के सम्बन्ध में पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) की शिक्षाएँ अपने क्षेत्र और प्रकति के अनरु शाश्वत सत्य हैं।

आज जब मानवता वातावरणीय आपदा. पारिस्थितिकीय असन्तुलन. ओजोन परत का क्षय और ग्लोबल वार्मिंग (तापमान में वृद्धि) के खतरों का सामना कर रही है। अब हम पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के कथनों और कर्मों पर आधारित पुस्तकों के व्यापक भण्डार में विवेक के मूल्यवान भण्डार की अनदेखी सहन नहीं कर सकते।

मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षाओं का मूल्य तथा उनकी व्यवहारिकता उस वक्त और अधिक स्पष्ट हो जायेगी जब हम यह गहन अध्ययन करेंगे कि आधनिक संसार किस प्रकार इस आत्मघाती स्थिति में पहुँचा है।

वातावरणीय संकट के सिलसिले में मुहम्मद (सल्ल0) का दृष्टिकोण मात्र एक बचाव के कदम के रूप में नहीं था जो व्यक्तिगत मानव कल्याण. सम्पन्नता और ख़ुशी पर आधारित हो और जिसमें इस कायनात में जो अन्य जीव हों उनकी अनदेखी की गयी हो।

प्राकतिक संसाधन

प्रकृति अल्लाह की रचना है और इसके संसाधन मानवता के लिए उपहार हैं। इस प्रकार वह हमें आदेश देता है कि हम इसे न तो नष्ट करें और न इसके किसी अंश का अपव्यय करें।

> *''ऐ आदम की सन्तान. प्रत्येक नमाज के समय अपना वस्त्र पहनो और खाओ पीओ। और अपव्यय न करो। निस्सन्देह अल्लाह अपव्यय करने वालों क पसन्द नहीं करता''।* (कुरआन. 7:31)

प्राकृतिक संसाधनों का निर्ममतापूर्ण दोहन. प्रकृति के रचयिता और मानवता के विरुद्ध एक निर्मम कृत्य है। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों को प्राकृतिक अथवा अन्य संसाधनों का उपभोग करने में अत्यन्त सजग रहने की शिक्षा दी है। उदाहरण के लिए आपने उन्हें पानी का उपयोग करते समय प्रत्येक स्थिति में मितव्ययी रहने की शिक्षा दी।

एक बार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) गुजर रहे थे कि आपने अपने एक महत्वपूर्ण साथी सअद को वज़ु करते हुए देखा। जब आप (सल्ल0) ने देखा कि वह बहुत अधिक पानी का प्रयोग कर रहे हैं तो आपने उनसे कहा. ''ऐ सअद क्यों इतना अपव्यय कर रहे हो''?. सअद (रजि0) ने पूछा ''क्या वज़ु करते समय भी अपव्यय होता है''. पैगम्ब (सल्ल0) ने उत्तर दिया. ''हाँ. बहते हुए पानी का उपयोग करते हुए भी''।

सभी शिक्षाओं में और धार्मिक कर्मकाण्डों में पानी एक केन्द्रीय तत्व है. क्योंकि. यह शारीरिक और आध्यात्मिक स्वच्छता का प्रतिनिधित्व करता है।

इस सम्बन्ध में पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

''जब एक मुसलमान वज़ु करता है और अपने चेहरे को धोता है तो उसकी आँखों ने जो पाप किये थे उनको धो देता है. जब वह अपने हाथों को धोता है तो उसने जो पाप अपने हाथों से किये हैं वह धुल जाते हैं। जब वह अपने पैरों को धोता है तो जिन पापों की ओर उन्होंने कदम उठाया था वह इससे धल जाते हैं''।

पैगम्बर (सल्ल0) ने सअद और अपने अन्य साथियों को सिखाया कि पानी या प्रकृति के किसी अन्य तत्व को अपने आध्यात्मिक महल के निर्माण का साधारण साधन न समझें। इसके विपरीत अपने रचयिता की खोज के आध्यात्मिक अभ्यास में प्रकति का सम्मान और इसका संयमपूर्ण प्रयोग स्वयं भी साधन हैं।

पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा किसी प्राकृतिक संसाधन का दुरुप्रयोग न करने व आग्रह ''बहते हुए पानी का उपयोग करते समय भी'' संकेत करता है कि वह प्रकृति के सम्मान को महत्वपर्ण सिद्धान्त के स्तर पर रखते थे. चाहे स्थिति कछ भी हो अथवा परिणाम कुछ भी हो।

करआन हमें स्मरण कराता है कि जल अल्लाह के वरदानों में से एक हैः

''और हमने आकाश से पानी बरसाया एक पैमाने के साथ। फिर हमने उसको धरती में ठहरा दिया। और हम उसको वापस लेने पर सामर्थ्यवान हैं''।

(करआन 23:18)

आज. बहुत से देश पानी की कमी के संकट का सामना कर रहे हैं. अब समय आ गया है कि हम अल्लाह के आभारी बनें और यह ध्यान में रखते हुए कि अप व्यक्तिगत जीवन में हम पानी का सावधानीपूर्ण प्रयोग किस प्रकार करें। इस प्रकार. हम सभी को पैगम्बर की इन चेतावनियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है और हम किसी भी चीज को नष्ट करने तथा पथ्वी पर बिगाड फैलाने से बचें।

मानवता के प्रति दया

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पूरी कायनात के लिए दया हैं. लेकिन उन्हें सबसे पहले मनष्यों की ओर दया बना कर भेजा गया था। इसके परिणामस्वरूप उनकी (सल्ल0) दया संभवतः सर्वाधिक नाटकीय ढंग से मानव कर्मों के मंच पर प्रकट होती है। क्योंकि यह मानवीय भूमिकाओं के अनगिनत रंगों पर आधारित होती है। इसमें पुरुष और स्त्री. माता-पिता और बच्चे. पति और पत्नी. स्वामी और दास. धनी और निर्धन. मित्र और शत्रु. पडोसी और अजनबी आदि सम्मिलित हैं। आपने लिंग. रंग और आस्था के भेद के बिना प्रत्येक मनुष्य पर ध्यान दिया। आपका हृदय. ममता. सहानुभूति और स्नेह का बहता हुआ झरना था। दूसरों के दखों को देखकर उनका हृदय रक्त-रंजित होता और आँखों से आँस छलक पडते थे।

माता-पिता

माता-पिता को दया का सबसे अधिक अधिकारी बताया गया है. क्योंकि करआन एकत्व (अल्लाह की एकता) को माता-पिता के प्रति दयालु होने से जोडता हैः

> *"और तेरे पालनहार ने निर्णय कर दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना न करो और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो"।*
>
> (करआन. 17:23)

अल्लाह की उपासना करने के आदेश के बाद हमसे कहा गया है कि हम लोगों के साथ दयालुतापर्ण व्यवहार करें। इस सम्बन्ध में माता-पिता का उल्लेख सबसे पहले किया गया है।

"और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो"। (कुरआन 4:36)

कुरआन में अनेक स्थानों पर अल्लाह की उपासना के बाद अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि अल्लाह को प्रसन्न करने के बाद माता-पिता को प्रसन्न करने का महत्व सबसे अधिक है। वह मनुष्य के अस्तित्व. जन्म. पालन-पोषण. उसकी शिक्षा और उसके नैतिक एवं भौतिक विकास में बहुत अधिक भूमिका निभाते हैं। माता-पिता के बिना उसका विकास संकट में पड जाता है। अनपढ और निर्धन भी अपने बच्चों के लिए अत्यधिक त्याग करते हैं जिसकी सम्पूर्ण समाज में कोई बराबरी नहीं कर सकता। माता-पिता की कुपा में हम अल्लाह की कुपा की झलक पाते हैं। इबादत वास्तव में अल्लाह की कुपा का आभार व्यक्त करना है। माता-पिता का स्थान अल्लाह के समान नहीं है। अतः उनकी उपासना नहीं की जा सकती। परन्तु उनके साथ अत्यन्त सम्मानपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। उनके साथ व्यवहार में दयालता उनकी कपा का बदला है। करआन ने हमें अल्लाह और माता-पिता का आभार व्यक्त करने का आदेश दिया है।

"तू मेरा आभार प्रकट कर और अपने माता-पिता का। मेरी ही ओर लौट कर आना है"। (कुरआन 31:14)

आधुनिक सभ्यता ने परिवार की संस्था को तोड दिया है। इस व्यवस्था से जुडे उच्च आदर्श भी छिन्न-भिन्न हो गये हैं। इस प्रक्रिया में इसने बूढ़े माँ-बाप को अत्यधिक प्रभावित किया है। आज लोग यह वार्त्ता कर रहे हैं कि बूढे माँ-बाप का क्या किया जाए. जिनका उपयोग समाप्त हो गया है। जब भविष्य के निर्माण में उनकी उपयोगी भूमिका नहीं रह गयी तो उन्हें कितने दिनों तक सहन किया जा सकता है। जिन माँ-बाप के साथ आज तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है कभी उनका अपने बच्चों पर इतना अधिकार था कि वह सरलतापर्वक उन्हें बचपन में रास्ते से हटा सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं

किया। आधुनिक पीढी कभी इन्हीं बढ़े माँ-बाप की दया पर निर्भर थी। इसके बावजुद उन्होंने अथक परिश्रम किया. अपने बच्चों के पालन-पोषण में उन्होंने पसीना बहाया। कुरआन विशेष रूप से बढे माँ-बाप के साथ दयालता और विनम्रतापर्ण व्यवहार करने का आदेश देता है।

''और तेरे पालनहार ने निर्णय कर दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना न करो और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि वह तेरे सामने बुढापे को पहुँच जायें. उनमें से एक या दोनो. तो उनको उफ्फ न कहो और न उनको झिडको. और उनसे सम्मानपूर्वक बात करो। और उनके सामने विनम्रतापूर्वक स्नेह की बाँहे झुका दो। और कहो कि ऐ पालनहार. इन दोनों पर दया कर. जैसा कि. इन्होंने मझे बचपन में पाला''।

(कुरआन 17:23-24)

इस्लाम में. यही पर्याप्त नहीं है कि हम मात्र अपने माता-पिता के लिए दुआएँ करें. परन्तु हमें असीम सहानुभुति के साथ काम करना चाहिए और यह याद रखना चाहिए कि जब हम असहाय बच्चे थे तो उन्होंने हमें अपने लिए पसन्द किया। माँओं को विशेष रूप से सम्मानपुर्ण स्थान दिया गया है।

जब माता-पिता दीर्घायु को पहँच जाएँ तो उनके साथ नरमी. दयालता और निःस्वार्थपर्ण व्यवहार करना चाहिए।

जीवन के इस सर्वाधिक कठिन समय में किसी व्यक्ति द्वारा अपने माता-पिता की देख-रेख में जो तनाव झेलना पडता है उसको जीवन के लिए एक सम्मान और एक वरदान और आध्यात्मिक विकास के लिए एक महान अवसर समझना चाहिए।

इस्लाम धर्म में माता-पिता की सेवा एक ऐसा कर्त्तव्य है जिसका स्थान इबादत के तुरन्त बाद आता है और उनका अधिकार है कि वह अपनी सन्तान से इसकी आशा करें। जब बढापे का जीवन बढे लोगों की बिना किसी गलती के कठिन हो जाता है तो उनके साथ झँझलाहट प्रकट करना निन्दनीय माना गया है।

माँ

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने फरमाया. *"निस्सन्देह जन्नत हमारी माँओं के कदमों के नीचे है"*।

पैगम्बर (सल्ल0) अपनी माँ आमिना की कब्र पर जाने के लिए उत्सुक रहते थे जिनका देहान्त उस समय हो गया था जब आपकी आयु छः वर्ष थी। एक बार जब आप अपनी माँ की कब्र पर गये तो वह चीखे और जो लोग उनके साथ थे वह भी चीखने लगे।

पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि अपने माँ-बाप के प्रति दया और सहानुभुति उच्च मानव मुल्य हैं और आपने इसकी छाप उनके हृदय और मन पर डालने का प्रयास किया। अबु हुरैरा (रजि0) रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति ने पैगम्बर (सल्ल0) से पुछा. "कौन व्यक्ति मेरी ओर से बन्धुत्वपुर्ण व्यवहार का सर्वाधिक अधिकारी है?" आपने उत्तर दिया. *"तुम्हारी माँ"*। उस व्यक्ति ने पुछा उसके बाद कौन है. और पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. *"तुम्हारी माँ"*। उस व्यक्ति ने तीसरी बार पुछा और फिर वही उत्तर था. *"तुम्हारी माँ"*। अन्ततः उसने पुछा कि उसके बाद कौन है. और इस बार पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. *"तुम्हारा बाप"*।

अस्मा (रजि0) कहती हैं कि एक बार जब मुसलमानों का कुरैश के साथ शान्ति समझौता हो गया था तो उनकी गैर मुस्लिम माँ उनके पास मिलने आयीं। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) से पुछा. "मेरी माँ जिसका इस्लाम के प्रति दुष्टिकोण अच्छा नहीं हैं. वह मुझसे मिलने आयी हैं तो क्या मैं उनके साथ स्नेह प्रकट करुँ और उनके साथ दयालतापर्ण व्यवहार करुँ?" पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. *"हाँ. तुम ऐसा ही करो"*।

पैगम्बर (सल्ल0) धर्म के आधार पर किसी भेद-भाव के बिना अपने साथियों से अपने माँ-बाप के प्रति दयालुतापुर्ण व्यवहार करने का आदेश देते थे। आपके एक साथी रिवायत करते हैं. "मेरी माँ जो मुसलमान नहीं है. मुझसे मिलने के लिए उसने मक्का से मदीना की यात्रा की है और मझसे कछ माँगा है। मैंने पैगम्बर (सल्ल0) से पछा. " मेरी

माँ मुझसे मिलने आयी हैं और वह मुझसे कुछ आशा कर रही हैं तो क्या मैं उनके अनरोध ा पर ध्यान दँ?'' उन्होंने कहा. *''हाँ. अपनी माँ के प्रति विन्नम रहो''।*

पिता

पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. *''किसी पिता के पास अपनी सन्तान के लिए इससे बडा उपहार नहीं कि वह अपने बेटे के अन्दर शिष्ट आचरण उत्पन्न करने का प्रयास करे''।*

पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः. *''एक बाप अपने बच्चों को जो सबसे अच्छी चीज दे सकता हैं वह यह है कि उनको शिष्ट रहन-सहन और अच्छी शिक्षा प्रदान करे''।*

पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. *''एक व्यक्ति के सभी कर्म उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाते हैं परन्तु तीन चीजें समाप्त नहीं होतीं: ऐसा दान जो सन्तान के लिए लाभदायक हो. लाभदायक ज्ञान. और अपने बच्चों को ऐसा बनाना कि वह उसके लिए दआएँ करें।*

सगे-सम्बन्धी

करआन कहता हैः

''सगे-सम्बन्धियों के साथ अच्छा व्यवहार करो''। (कुरआन. 4:36)

कुरआन कहता है माँ-बाप के बाद हमारे सगे सम्बन्धी हमारी दयालुता के सर्वाधि ाक अधिकारी हैं। हमारे सगे सम्बन्धी हमारे माता-पिता के द्वारा हमसे जुडे होते हैं। अपने सगे सम्बन्धियों के साथ सम्बन्धों को कायम रखने से हमारा सामाजिक जीवन खुशहाल हो जाता है। जहाँ पर सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध नहीं होता तो वहाँ सामाजिक द्वेष उत्पन्न होता है। सुलेमान बिन आमिर (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) से रिवायत करते हैं किः

> *''किसी निर्धन व्यक्ति (जो रिश्तेदार न हो) उसे दान देकर सन्तुष्ट करना मात्र उसकी सहायता है परन्तु यही दान यदि किसी रिश्तेदार को दिया जाए तो यह दान भी है और अपने रिश्तेदार से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रतीक भी है''।*

इसका अर्थ यह है कि रिश्तेदारों पर खर्च करने का दोगुना बदला है। २ वास्तविकता है कि मनुष्य अपने सगे सम्बन्धियों से प्राकृतिक लगाव रखता है लेकिन यह भी वास्तविकता है कि यह सम्बन्ध बहुत नाजुक होते हैं। छोटी-छोटी घटनाएँ इन सम्बन्ध ाों को प्रभावित कर देती हैं। पैगम्बर (सल्ल0) कहते हैं कि इन सम्बन्धों को टूटने नहीं देना चाहिए। इन सम्बन्धों को बनाये रखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा थाः

> *''अपने रिश्तेदारों से सम्बन्ध बनाये रखने का तात्पर्य यह नहीं है कि अपने रिश्तेदारों के सत्कर्मों के बदले में सत्कर्म किये जाएँ बल्कि वास्तव में इसका अर्थ है. जब सम्बन्ध टट जाएँ तो सम्बन्ध स्थापित करना''।*

वयोवद्ध

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षाओं में बडे-बूढे लोगों को भी अत्यधिक महत्व और सम्मान प्रदान किया गया है और उनके जीवन के अन्तिम चरण में उनके अन्दर आशा और उत्साह की भावनाओं को जगाने का प्रयास किया गया है। हजरत अनस (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. ''यदि एक युवा व्यक्ति किसी बूढे व्यक्ति की सहायता उसके बुढापे के कारण करता है तो अल्लाह निश्चित रूप से उसके लिए ऐसे लोगों को नियक्त करेगा जो उस समय उसका सम्मान करेंगे जब वह बढा हो जायेगा''।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एक बार बताया कि *''फरिश्ता जिब्रील (अलै0) ने मुझे आदेश दिया कि मैं बडे-बूढे लोगों को वरीयता प्रदान करूँ। उन्होंने शिक्षा दी कि 'खाना परोसते समय और समारोहों में बडे-बूढे लोगों को अन्य लोगों की तुलना में वरीयता देनी चाहिए'''।* उन्होंने कहा. खाना परोसते समय बूढे व्यक्ति से प्रारम्भ करो। इसमें वही बात प्रदर्शित होती है जो अब्दल्लाह बिन अम्र (रजि0) ने रिवायत की हैः पैगम्बर (सल्ल0)

ने फरमाया. *"जो व्यक्ति हमारे छोटों के प्रति स्नेह नहीं प्रकट करता है और जो हमारे बड़े-बुढ़े लोगों का सम्मान नहीं करता है वह हममें से नहीं (अर्थात मसलमानों में नहीं)"।*

पैगम्बर (सल्ल0) ने बुढ़े लोगों को उन सभी लोगों के ऊपर सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आदेश दिया है जिनका सम्मान और आदर किया जाना चाहिए। यह वरीयता युद्ध के दौरान भी दी जाती रही। जैसा कि पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने सेनापतियों को आदेश दिया. *"बड़े-बुढ़े लोगों. बच्चों और महिलाओं की हत्या न करो"।*

मक्का विजय के दिन जब पैगम्बर (सल्ल0) पवित्र मस्जिद में प्रवेश हुए तो अबु बक्र सिद्दीक (रजि0) अपने बहुदेववादी बुढ़े पिता को पैगम्बर (सल्ल0) से भेंट कराने के लिए लेकर आये। जब उन्होंने अपने साथी के बुढ़े बाप को देखा तो आपने अबु बक्र (रजि0) से कहा. "आपने इन्हें घर पर ही क्यों नहीं छोड दिया? मैं स्वयं उनके पास चला गया होता"। अबु बक्र (रजि0) ने उत्तर दिया. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर आप चलकर इनके पास जाते उससे बेहतर है कि यह आपके पास चलकर आयें"। दयालु पैगम्बर ने उस बुढ़े व्यक्ति को अपने समक्ष बैठाया और उनको सम्मानित किया फिर आपने उनके सीने पर स्पर्श किया और कहा. "मसलमान हो जाइयें" और वह हो गये।

महिलाएँ

इस्लाम औरतों के अधिकारों को मान्यता प्रदान करने वाला पहला धर्म है। इस्लाम ने महिलाओं की दशा और स्तर में व्यापक सुधार किये। मानव सभ्यता के इतिहास में इस्लाम ने पहली बार लैंगिक समानता के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की और उसे व्यवहारिक बनाया। इस्लाम ने उनकी प्रतिष्ठा की सुरक्षा और उसको शोषण से बचाने के लिए एक प्रभावुपर्ण वैधानिक ढाँचा प्रदान किया। इस्लामी कानन उसे वह सभी अधिकार प्रदान करता है जो स्वतन्त्र मनष्य को प्राप्त होने चाहिए।

'तममें से सबसे अच्छे वह लोग हैं जो अपने परिवार वालों के लिए सबसे अच्छे हों'।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने महिलाओं को वह अधिकार. प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान किया जिनसे वह पहले कभी परिचित नहीं थी। वह पुरुष की साझीदार और आध यात्मिक संगिनी थी। कुरआन ने घोषणा की. ''महिलाएँ और पुरुष परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं''। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया. ''तममें से सबसे भला व्यक्ति वह है जो अपनी पत्नी के प्रति सर्वाधिक भला हो''।

पैगम्बर (सल्ल0) ने महिला को ऐसे प्रतिष्ठित स्तर पर उठाया जो संसार मे लगभग 1.5 हजार वर्ष पहले नहीं सुना गया था। पैगम्बर (सल्ल0) ने महिलाओं पर लिंग के आधार पर जो धब्बा लगा था. उसे मिटा दिया और आपने अपने अन्तिम सम्बोधन में यह वसीयत की कि महिलाओं के साथ सम्मान और दया का व्यवहार किया जाना चाहिए।

अल्लाह से डरने वाली एक महिला एक पवित्र पुरुष से उत्तम हो सकती है यदि सत्कर्मों के अनुसार वह उससे बढी हुई है। अन्य किसी धार्मिक पुस्तक ने महिलाओं को ऐसा आध्यात्मिक स्थान प्रदान नहीं किया जितना उच्च स्थान पवित्र करआन प्रदान करता है।

> *''.....मैं तुममे से किसी का कर्म नष्ट करने वाला नहीं. चाहे वह मर्द हो या औरत. तुम सब एक दूसरे से हो''।* (कुरआन. 3:195)

फिर हम किस तरह एक महिला के साथ दसरे स्तर के नागरिक का सा व्यवहार कर सकते हैं?

> *''और जो व्यक्ति कोई भला कर्म करेगा. चाहे वह मर्द हो या औरत शर्त यह है कि वह मोमिन हो. तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे. और उन पर तनिक भी अत्याचार न होगा''।* (करआन. 4:124)

पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

> *''यह संसार उन वस्तुओं से परिपूर्ण है जिनका तुम आन्नद लेते हो। इनमें से सबसे अधिक आनन्द देने वाली वस्त एक नेक औरत है''।*

"अल्लाह की कृपापूर्ण निगाहें उन जोडों पर पडती हैं जो परस्पर एक-दसरे को प्यार से देखते हैं"।

पैगम्बर (सल्ल0) ने भी फरमाया.

"तुममें से सर्वाधिक सज्जन व्यक्ति वह है जो अपनी पत्नी के साथ सर्वाधिक सम्मानपूर्ण व्यवहार करता है"।

"तुम अपनी महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके प्रति दयालु रहो. क्योंकि वह तुम्हारी संगिनी हैं और प्रतिबद्ध सहायक हैं"। यह बात पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने अन्तिम सम्बोधन में कही।

महिलाओं की मक्ति और सशक्तिकरण

इस्लाम धर्म में महिलाओं को अत्यन्त प्रबल पारिवारिक और पैत्रिक सम्पत्ति में अधिकार प्रदान किये गये हैं. अतः विवाह के सम्बन्ध में उनके शोषण का प्रश्न नहीं उठताः इस्लाम के अनुसार. मुस्लिम महिलाओं को इन अधिकारों से उपकृत किया गया हैः

1. जब एक मुस्लिम महिला का विवाह होता है. तो वह अपने कुल नाम ः समर्पित नहीं करती है बल्कि वह अपनी विशेष पहिचान को बचाये रखती है।
2. विवाह के लिए उसकी अनुमति आवश्यक है और अपने होने वाले पति को चुनने का उसे अधिकार है।
3. मुस्लिम विवाह में. वर दुल्हन को दहेज (महर) देता है न कि उसके पिता को: वह विवाह के समय महर की माँग कर सकती है. उसे निर्धारित कर सकती है और विवाह के समय प्राप्त कर सकती है। यह उसे अपने अधिकार में रखने. निवेश करने अथवा खर्च करने के लिए उसकी अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बन जाती है और इस सम्बन्ध में उसके अपने किसी परुष सम्बन्धी का आदेश मानने की कोई बाध्यता नहीं होती है।

4. अपने भाईयों की तरह माँ-बाप से उत्तराधिकार प्राप्त करने का अधिकारः उत्तराधिकार का मुस्लिम कानून सभी महिला सम्बन्धियों के लिए समान रूप से सम्पत्ति में भागीदारी को सुनिश्चित करता है विशेष रूप से पत्नी. बेटी. माँ और बहन।
5. वह अपने माता-पिता से जो उत्तराधिकार अथवा उपहार प्राप्त करती है उसका वह पुर्ण रूप से स्वामित्व रखती है और वह इस सम्पत्ति में अपने पति अथवा ससुराली रिश्तेदारों को साझीदार बनाने के लिए बाध्य नहीं होती।
6. इस प्रकार वह पति की विरासत भी प्राप्त कर सकती है. और माता-पिता की विरासत भी प्राप्त करती है।
7. वह सम्पत्ति की स्वामी हो सकती है और इसे अपनी इच्छा के अनसार बेच सकती है।
8. कुरआन पुरुषों पर समस्त महिला सम्बन्धियों की रक्षा करने और उ भरण-पोषण का दायित्व डालता है। इसका अर्थ यह भी है कि पुरुष ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी और अपने परिवार को भरण-पोषण प्रदान करेगा जब उसके पास अपनी सम्पत्ति अथवा धन मौजुद हो। उसे अपना परिवार चलाने के लिए अपना धन खर्च करने को बाध्य नहीं किया गया है।
9. यदि पति के साथ रहना असम्भव हो जाए और वह उसे तलाक देने से इन्कार कर दे तो वह तलाक (खुलअ) ले सकती है।
10. विधवा दुबारा विवाह कर सकती है।
11. तलाकशुदा महिला पुनः विवाह कर सकती है।
12. यदि वह चाहे. अथवा परिस्थितियों के कारण इसके लिए विवश हो तो वह काम कर सकती है और जीविका कमा सकती है।

यह समस्त व्यवस्थाएँ समाज की ओर से कृपा के रूप में नहीं हैं. जिन्हें किसी की इच्छा या संकेत से वापस लिया जा सके। इन समस्त व्यवस्थाओं की गारंण्टी इस्लामी कानुन में दी गयी है जो स्थायी है और धरती पर कोई सत्ता इसमें संसोधन का अधिकार नहीं रखती। इस प्रकार इस्लाम महिलाओं की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। महिलाओं को

यह अधिकार ऐसे समय में दिये गये थे जब पश्चिमी दुनिया में उन्हें व्यक्तिगत सम्पत्ति समझा जाता था और इस बात पर गंभीर सन्देह व्यक्त किया जाता था कि इनके अन्दर आत्मा होती भी है अथवा नहीं।

लेडी कोबोल्ड के अनुसार. ''यह वह व्यवस्था है जिसने उस बन्धन को खोल दिया जिसमें महिलाएँ इतिहास के उदय से ही जकडी हुई थीं. और उन्हें सामाजिक स्थान और वैधानिक अधिकार प्रदान किया. उन्हें ऐसे अधिकार दिये जिन्हें इग्लैण्ड में कई सदियों बाद तक नहीं दिये गये थे''।

प्रचलित धारणा के विपरीत इस्लाम महिलाओं की भूमिका चार दीवारी के अन्दर सीमित नहीं करता जो महिला व्यवसाय करना चाहती है. इस्लाम उसपर प्रतिबन्ध नहीं लगाता। जो महिलाएँ खेती. व्यापार. हस्तकला में संलग्न थी उन्हे पैगम्बर (सल्ल0) ने हतोत्साहित नहीं किया। पैगम्बर (सल्ल0) की एक पत्नी जैनब (रजि0) हस्तकला में दक्ष थीं।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और पवित्र कुरआन ने ऐसी ही सभ्यता का सूत्रपात किया था और अल्लाह ने मनष्य के लिए ऐसे ही जीवन की योजना बनायी थी।

बच्चे

पैगम्बर (सल्ल0) बच्चों से प्यार करते थे. अपनी मासूमियत और निश्छलता के कारण वह जीवन्त होते हैं। अल्लाह के निकट. अपने हृदय के निकट वह उन लोगों की ओर विशेष रूप से ध्यान देते जो हृदय की भाषा समझ सकते थे।। आप बच्चों को चूमते और उनके मासूमियत के स्तर तक पहुँच कर उन्हें अपने कन्धों पर बिठाते और उनके साथ खेलते. जो अपने सार के अनुसार अल्लाह की शाश्वत इबादत का प्रकटीकरण है। पैग (सल्ल0) का व्यवहार इसका निरन्तर संस्मरण था। यदि आपकी नमाज किसी बच्चे के रोने से प्रभावित हो जाती तो पैगम्बर (सल्ल0) अपनी नमाज छोटी कर देते मानो आप बच्चे की नमाज के प्रति सजग हो रहे हों

पैगम्बर (सल्ल0) बच्चों से उनके खेलने की भावनाएँ और मासमियत सीखते. वह उन बच्चों से लोगों को और अपने आस-पास के संसार को आश्चर्यपर्वक देखने का ढंग सीखते। बच्चों को देखकर आप सौन्दर्य का अनभव करते और अपनी सौन्दर्य भावना को पर्ण रूप से और अधिक विकसित करते।

अनस (रजि0) ने कहा. "मैने कभी किसी को बच्चों के प्रति इतना दयाल नहीं देखा जितना दयाल अल्लाह के पैगम्बर (सल्ल0) थे। उनके बेटे इब्राहीम को मदीना के निकटवर्ती क्षेत्र में दध पिलाया जा रहा था। वह वहाँ हमको साथ लेकर जाते और उस घर में प्रवेश करते जो धएँ से भरा होता. क्योंकि उस बच्चे के अभिभावक पिता एक लोहार थे। वह उसे लेते. उसे चमते और फिर वापस आ जाते"। पैगम्बर (सल्ल0) बच्चों के प्रति बहत दयाल थे और उन्हें *"जन्नत के फल"* कहा करते थे। आप यह भी कहा करते थे. *"किसी व्यक्ति के लिए सौभाग्य की चीजों में नेक बच्चा भी सम्मिलित है"।*

यदि कोई मौसम का पहला फल लेकर आता तो पैगम्बर (सल्ल0) सबसे पहले वहाँ उपस्थित सबसे छोटे बच्चे को देते। वह बच्चों का अभिवादन मैत्री भाव से कपोल अथवा माथे पर चम्बन द्वारा किया करते थे। एक बार जब आप कछ बच्चों का अभिवादन चम्बन द्वारा कर रहे थे तो एक बदद ने कहा. "आप बच्चों को इतना अधिक प्यार करते हैं। मेरे दस बच्चे हैं. मैने उनमें से कभी किसी को नहीं चमा"। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. "यदि अल्लाह ने तम्हारे हृदय से प्यार छीन लिया हो तो मैं क्या कर सकता हँ?"

आपके एक साथी युद्ध के मैदान में शहीद हो गये थे. पैगम्बर (सल्ल0) ने उस व्यक्ति की पत्नी से अपने बच्चों को लेकर आने के लिए कहा। इसके बाद पैगम (सल्ल0) ने उनको गले लगाया और रोते हुए उनके पिता की मत्य की सचना दी। आपने अपने परिवार के लोगों से कहा कि उनके लिए खाना तैयार करें क्योंकि वह लोग इतने दखी थे कि अपने लिये खाना नहीं तैयार कर सकते थे।

आपका प्यार और आपकी दयालता मस्लिम बच्चों तक ही सीमित नहीं थी। वास्तव में आप प्रत्येक बच्चे की शद्धता और निर्दोषता की घोषणा करते। "प्रत्येक बच्चा अपनी शद्ध प्रकति पर जन्म लेता है"। एक बार एक गैर मस्लिम बच्चा अब महजरा जिसे

बहुत सुन्दर और सुरीली आवाज मिली थी. वह अजान का मजाक उडाया करता था। दयालुता के पैगम्बर (सल्ल0) ने कभी उसको दण्डित नहीं किया बल्कि इसके बजाए उसके सिर पर हाथ रखते और दुआ करते. ''ऐ अल्लाह इसके ऊपर कृपा कीजिए और इसका इस्लाम की ओर मार्गदर्शन कीजिए। ऐ अल्लाह इसके ऊपर कृपा कीजिए और इसका इस्लाम की ओर मार्गदर्शन कीजिए''। बाद में अपने जीवन में ही अब महजरा मसलमान हो गये और मक्का में अजान दिया करते थे।

युद्ध के दौरान कुछ बच्चे अचानक युद्धरत सेनाओं के बीच फँस गये और मार डाले गये। जब पैगम्बर (सल्ल0) को इसकी सूचना मिली तो आप बहुत दुखी हुए। एक व्यक्ति ने कहा. ''ऐ अल्लाह के पैगम्बर. वह बच्चे गैर मुस्लिमों के थे''। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. ''गैर मुस्लिमों के बच्चे भी तुमसे बेहतर हैं। सावधान रहो! बच्चों की हत्या न करो। सावधान रहो! बच्चों की हत्या न करो। प्रत्येक आत्मा अल्लाह की प्रकति पर जन्म लेती है''।

पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. *''झठ बोलना बराई है चाहे यह मजाक में हो अथवा गम्भीरतापर्वक हो। अपने छोटे बच्चों से छटे वादे न करो''।*

पडोसी

कुरआन की निम्नलिखित आयतों में पडोसियों के प्रति सदव्यवहार और दयालता का परामर्श दिया गया है:

> *''अच्छा व्यवहार करो सम्बन्धियों के साथ और अनाथों और निर्धनों और सम्बन्धी पडोसी और अजनबी पडोसी और पास बैठने वाले और यात्री के साथ और दासों के साथ''।* (कुरआन. 4:36)

जिन लोगों के साथ हम रहते हैं और वह पडोसी और जिनके साथ हम सामाजिक सम्बन्ध होते हैं उन्हें छोडा नहीं जा सकता। इनके हमारे ऊपर उन लोगों से अधिक अधिकार हैं जिनका हमसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ पडोसियों को तीन वर्गों में

वर्गीकृत किया गया है- वह पडोसी जो हमारे रिश्तेदार हैं. वह पडोसी जो हमारे रिश्तेदार नहीं हैं और वह लोग जो संयोगवश हमसे मिलते हैं यात्रा करते समय. कार्यालय में. स्कूल अथवा कॉलेज में और उन स्थानों पर जहाँ हम काम करते हैं। ऐसे लोग भी हमारे पडोसी हैं। सभी धर्मों में पडोसियों के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार को महत्व दिया गया है। परन्तु इस्लाम ने मात्र सदव्यवहार को महत्व ही नहीं दिया है बल्कि उसने पडोसी की धारणा को इतना व्यापक बना दिया है कि इसका उदाहरण कहीं नहीं मिलता। किसी भी तरह से थोडी देर के लिए भी साथ हो जाना पडोसी होने के अधिकार के लिए पर्याप्त है। यदि यह साथ अधिक समय के लिए हो जाता है तो पडोसी का अधिकार उसी के अनसार और अधिक मजबूत हो जाता है।

हजरत आयशा (रजि0) और हजरत अब्दल्लाह बिन उमर (रजि0) दोनों ने रिवायत किया कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

''फरिश्ता जिब्रील (अलै0) ने पडोसी के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार पर इस सीमा तक अधिक बल दिया कि मझे डर लगा कि वह पडोसियों को उत्तराधिकार में हिस्सा देने का आदेश न दे दें''।

इस्लाम मात्र यह ही नहीं कहता कि पडोसियों को किसी भी तरह दुख पहुँचाया जाए बल्कि वह बल देता है कि पडोसी हमारी ओर से नैतिक और सामाजिक सहायता का अधिकार रखते हैं। हमें उनके साथ सर्वाधिक शिष्ट व्यवहार करना चाहिए ताकि समाज का प्रत्येक सदस्य इस विश्वास के साथ जी सके कि वह अपने शुभ-चिन्तकों के बीच सुरक्षित है। और वह लोग किसी भी समय मेरे काम आ सकते हैं। इस सम्बन्ध ा में इस्लाम के व्यवहार का निष्कर्ष निम्नलिखित हदीस से लिया जा सकता हैः
हजरत अब हरैरा (रजि0) कहते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने तीन बार कहा

''अल्लाह की कसम वह मोमिन नहीं है!''

''अल्लाह की कसम वह मोमिन नहीं है!''

''अल्लाह की कसम वह मोमिन नहीं है!''

जब आपसे पूछा गया कि वह व्यक्ति कौन है तो उन्होंने उत्तर दियाः ''जिसका पडोसी उसकी शरारत से सरक्षित न हो''।

यह हदीस स्पष्ट कर देती है कि पडोसी को कष्ट पहुँचाना ईमान (आस्था) के प्रतिकूल है। एक अन्य हदीस में हजरत अब्दल्लाह बिन अब्बास (रजि0) कहते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

"वह व्यक्ति ईमान वाला अथवा मसलमान नहीं जिसका पेट भरा हो और उसका पडोसी भूखा रहे"।

इन हदीसों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईमान की निशानी यह है कि उस व्यक्ति का पडोसी उससे सरक्षित हो और वह संकट के समय अपने पडोसी की सहायता करता हो।

निर्धन

"तुमको क्या चीज नरक में ले गयी। वह कहेंगे हम नमाज पढने वालों में से न थे। और हम निर्धनों को खाना नहीं खिलाते थे। (कुरआन. 74: 42-44)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पैगम्बरी का दायित्व प्रदान किये जाने से पहले भी अत्यन्त आतिथ्य-सत्कार करने वाले थे और अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। आपके सबसे निर्धन और वंचित साथियों में अल-सुफ्फा के लोग थे जो मुसलमानों के और स्वयं पैगम्बर के अधिकतर स्थायी अतिथि थे। एक बार पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. "जिस व्यक्ति के पास दो व्यक्तियों के लिए पर्याप्त खाना हो वह उनमें से तीन को खाना खिलाने के लिए ले जाये और जिसके पास चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त खाना हो वह इनमें से पॉच लोगों को खिलाने के लिए ले जाये"। अबू बक्र (रजि0) उनमें से तीन लोगों को अपने घर ले गये जबकि पैगम्बर (सल्ल0) दस लोगों को ले गये।

पैगम्बर (सल्ल0) अधिकतर यह दुआ करते. *"ऐ अल्लाह. मुझे एक निर्धन के रूप में जीवित रख. मुझे निर्धन व्यक्ति के रूप में मृत्यु प्रदान कर और मुझे कयामत के दिन निर्धनों के साथ उठा"*। हजरत आयशा (रजि0) ने पूछा. "क्यों ऐ अल्लाह पैगम्बर?" पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. *"क्योंकि वह लोग धनवान लोगों की तुलना में चालीस वर्ष पहले जन्नत में जायेंगे"*। फिर आपने कहा. *"ऐ आयशा (रजि0) कभी*

किसी निर्धन व्यक्ति को अपने दरवाजे से खाली हाथ न लौटाओ। उसको कुछ अवश्य दो चाहे तुम्हारे पास देने के लिए मात्र आधी खजूर हो। ऐ आयशा! निर्धनों से प्रेम करो और उन्हें अपने निकट लाओ और तुम्हें अल्लाह कयामत के दिन अपने निकट लायेगा''।

पैगम्बर (सल्ल0) ने बलपर्वुक कहा: *''किसी समारोह में यदि इस प्रकार खाना परोसा जाए जिसमें मात्र धनवान लोगों को ही आमन्त्रित किया गया हो. और जिससे निध र्नि लोगों को अलग रखा गया हो वह खाना सबसे बुरा है''।*

एक बार एक व्यक्ति पैगम्बर (सल्ल0) के पास से गुजरा। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से पुछा. ''इस व्यक्ति के सम्बन्ध में तुम्हारे क्या विचार हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया. *''ऐ अल्लाह के पैगम्बर. हम समझते हैं कि यह भले लोगों में से है. यदि यह विवाह के लिए कहे तो लोग उसके अनुरोध को स्वीकार करेंगे। यदि यह किसी मामले में हस्तक्षेप करे तो इसका हस्तक्षेप स्वीकार किया जायेगा और यदि यह बात करे तो लोग इसकी बात ध्यान से सुनेंगे''।* कुछ समय बाद दुसरा व्यक्ति गुजरा और पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से पुछा. *''इस व्यक्ति के सम्बन्ध में तुम्हारे क्या विचार हैं?''* उन्होंने कहा. *''यह एक निर्धन व्यक्ति है. यह किसी के पास विवाह का सन्देश भेजे तो कोई स्वीकार नहीं करेगा. यदि यह हस्तक्षेप करे तो कोई उसके हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेगा और यदि यह बात करे तो इसकी बात कोई नहीं सुनेगा''।* पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. *''यद्यपि संसार पहली किस्म के लोगों से भरा हुआ है परन्तु दसरी किस्म के लोग समस्त लोगों में सबसे अच्छे हैं''।*

पैगम्बर (सल्ल0) के साथी जअफर (रजि0) निर्धनों से प्रेम करते थे. उनके साथ बैठते. उनके साथ ठहरते और उनके साथ बात करते। पैगम्बर (सल्ल0) उन्हें अब मसाकीन (निर्धनों का पिता) कहकर पुकारते।

पैगम्बर (सल्ल0) के अन्य साथी सअद (रजि0) की प्रवृत्ति कुछ अहंकारी थी और वह अपने आप को निर्धनों से ऊँचा समझते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको यह कहते हुए सम्बोधित किया. *''तुम्हारे पास जो भी सफलता और पूँजी है वह निर्धनों की मेहनत के कारण ही है''।*

नौकर

हजरत अब्दल्लाह बिन उमर (रजि0) ने पैगम्बर (सल्ल0) से रिवायत किया कि वह कहते थेः

''मजदूर को उसकी मजदूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो''।

पैगम्बर (सल्ल0) दासों के प्रति विशेष रूप से दयालु थे। आप कहा करते थे. ''वह तुम्हारे भाई और बहन हैं अतः जो तम खाते हो वही खिलाओ और जो तम पहनते हो वही पहनाओ''।

अधिकतर जब दासों को दास कहकर पुकारा जाता था तो वह अपमानि महसूस करते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों को परामर्श दिया कि उन्हें 'मेरा दास' अथवा 'मेरी दासी' न कहो बल्कि 'मेरा बेटा' और 'मेरी बेटी' कहो। उन्होंने दासों से भी कहा कि अपने मालिकों को स्वामी न कहें क्योंकि एक मात्र स्वामी अल्लाह है। आप (सल्ल0) उनके लिए इतने दयालु थे कि उन्होंने मृत्यु से पहले अपने सम्बोधन में कहाः ''दासों के सम्बन्ध में अल्लाह से डरो और इनका सम्मान करो''।

पैगम्बर (सल्ल0) ने यह भी कहा. *''ये दास तुम्हारे भाई और बहनें हैं जिनके ऊपर अल्लाह तआला ने अस्थायी रूप से तुम्हें अधिकार दे दिया है। यदि वह तुम्हारी प्रकृत्ति के लिए उपयुक्त नहीं हैं तो उन्हें बेच दो। अल्लाह की रचनाओं के प्रति कठोरता का व्यवहार न करो। उन्हें खाने के लिए वही दो जो तुम खाते हो और पहनने के लिए वही दो जो तुम पहनते हो और उन्हें इतना अधिक दायित्व न सौपों कि वह कर न सकें। और यदि तम उन्हें अधिक काम दो तो उस काम को सम्पन्न करने में उनकी सहायता करो''।*

लोगों के सम्बन्ध में मुहम्मद (सल्ल0) के व्यवहार का चित्रण आपके व्यक्तिगत सहायक सचिव हजरत अनस (रजि0) के शब्दों से होता है. ''मैं पैगम्बर (सल्ल0) की दस वर्षों से सेवा कर रहा हूँ और आपने मुझे एक बार भी नहीं डाँटा। मैंने उनके लिए जो भी किया उसके लिए कभी उन्होंने आलोचना नहीं की और अगर मैं कोई काम न कर सका

तो कभी आप क्रोधित नहीं हए। वह अपने सभी नौकरों और निर्भर लोगों से ऐसा ही व्यवहार करते थे। आपने अपने किसी नौकर को कभी नहीं मारा''।

विकलांग

पैगम्बर (सल्ल0) अपनी उमडती हुई सहानुभूति और प्यार के साथ उन लोगों के सम्बन्ध ा में चिन्तित रहते और उन्हें विशेष ध्यान देते जो शारीरिक रूप से अथवा मानसिक रूप से विकलांग थे। सम्पूर्ण इतिहास में आज तक समाज अन्यायपूर्ण ढंग से कमजोरों और विकलांगों की अनदेखी करता आया है। यह लोग पहले भी वहिष्कृत और समाज के लिए अनचाहे बोझ के रूप में देखे जाते थे और आज भी देखे जाते हैं। दयालु पैगम्बर ने उनको दयनीय दशा की गर्त से उठाकर प्रसन्नता के शिखर तक पहुँचाया और यह शिक्षा दी कि: ''जो पृथ्वी पर हैं उनके प्रति दया करो और जो आसमान पर है वह तुम्हारे प्रति दया करेगा। पैगम्बर (सल्ल0) की यह असाधारण घोषणा अपने अन्दर समाज के साधारणतः उपेक्षित वर्गों को समेट लेती है जिनमें अन्धे. बहरे और मानसिक तथा शारीरिक रूप से विकलांग लोग सम्मिलित हैं।

इसके सर्वाधिक प्रेरक उदाहरणों में से एक उदाहरण अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तुम (रजि0) जो कि अन्धे थे. उनसे सम्बन्धित घटना हैं जिससे प्रदर्शित होता है कि अल्लाह ने मानवता को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा कमजोरों की हल्की सी अनदेखी का प्रयोग किया है। यह अन्धा और निर्धन व्यक्ति एक बार पैगम्बर (सल्ल0) के पास कुछ सीखने के लिए आया। उस समय पैगम्बर (सल्ल0) कुछ कुरैश सरदारों से बात कर रहे थे और उनको इस्लाम धर्म में आने के लिए कह रहे थे और इस दौरान आपने अन्धे व्यक्ति की अनदेखी की। इसके परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला ने पैगम्बर (सल्ल0) के इस व्यवहार की ओर संकेत करते हुए सन्देश अवतरित किया:

''उसने त्यौरी चढाई और मुँह फेर लिया। इस बात पर कि अन्धा उसके पास आया। और तमको क्या पता कि वह सधर जाये। अथवा उपदेश को सने. तो

उपदेश उसके काम आये। जो व्यक्ति बेपरवाही बरतता है। तुम उसकी चिन्ता में पडते हो। हालाँकि तुम पर कोई दायित्व नहीं यदि वह न सुधरे। और जो व्यक्ति तुम्हारे पास दौडता हआ आता है। और वह डरता है। तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो''। (कुरआन. 80:1-10)

उसके बाद जब कभी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तुम (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पास मिलने आते तो पैगम्बर (सल्ल0) उनका गर्मजोशी के साथ यह कहते हुए स्वागत करते. ''स्वागत हो उस व्यक्ति का जिसके कारण मेरे पालनहार ने मुझे फटकारा''। यही नहीं बल्कि पैगम्बर (सल्ल0) ने उस अन्धे व्यक्ति को मदीना का दो बार गवर्नर नियक्त किया।

एक अन्य घटना घटित हुई जिससे पैगम्बर (सल्ल0) की सहनशीलता. क्षमाशील प्रकृति और सबके साथ प्यार का प्रदर्शन होता है। पैगम्बर (सल्ल0) और आपकी सेना उहद की ओर कुच कर रही थी जहाँ कुरैश ने मदीना को जीतने के लिए रुक कर अपना शिविर लगाया था। जब मुसलमान एक अन्धे कपटाचारी व्यक्ति के खेत से गुजर रहे थे तो उसने मौखिक रूप से पैगम्बर (सल्ल0) को बुरा-भला कहना प्रारम्भ कर दिया। उसने अपने हाथ में कीचड उठाया और अत्यन्त क्रोध में पैगम्बर (सल्ल0) से कहा. ''यदि मैं जानता कि यह दुसरों को कष्ट नहीं पहुँचायेगा तो मैं इसे तुम्हारे ऊपर फेंक देता''। इस पर आपके साथी क्रोधित हो गये और निकट था कि वह उसकी हत्या कर देते। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको यह कहते हुए रोकाः ''इसको छोड दो. इसको न मारो. वह अपने हृदय से भी अन्धा है और आँखों से भी''। अतः अत्यन्त तनावपुर्ण स्थिति में रहते हुए भी और अन्धे व्यक्ति द्वारा अपमानित किये जाने पर भी पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) जीवन के सम्पर्ण क्षेत्रों के व्यक्तियों के लिए 'प्रकाश देने वाले मार्गदर्शक' थे।

अनाथ

माता-पिता और रिश्तेदारों के अधिकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। इन लोगों के बाद समाज के कमजोर वर्ग हमारे दयालुतापूर्ण व्यवहार के अधिकारी हैं। इस सम्बन्ध में अनाथों और निर्धन व्यक्तियों का उल्लेख पहले किया गया है।

करआन कहता हैः

''और अनाथों और निर्धनों के साथ दयालता का व्यवहार करो''।

(कुरआन. 4:36)

माता अथवा पिता की मृत्यु किसी बच्चे को प्यार. स्नेह और कभी-कभी आर्थिक स्थायित्व से वंचित कर देती है जिनका महत्व जीवन में बुनियादी है। अतः इन अनाथ बच्चों की देख-रेख समाज का कर्त्तव्य है और इन बच्चों को अपने माता अथवा पिता की कमी को महसूस होने का अवसर नहीं देना चाहिए। समाज की ओर से उनकी कोइ अनदेखी उनके शारीरिक विकास को ही प्रभावित नहीं करेगी बल्कि उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से भी कमजोर कर देगी। इस बात की प्रबल सम्भावना है कि ऐसे बच्चे जिनकी उचित ढंग से देखभाल न की गयी हो उनके अन्दर ऐसे निर्मम समाज के विरुद्ध विद्रोह की भावनाएँ उत्पन्न हों। अच्छे नागरिक बनने की बजाये वह असामाजिक तत्व बन सकते हैं

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) बचपन में ही अनाथ हो गये थे। उनके (अब्दुल्लाह) का देहान्त उनके जन्म से पूर्व ही हो गया था। और उनकी माँ का देहान्त उनके जन्म के छः वर्ष बाद हुआ। अनाथ के रूप में आपके जीवन की दशा का आपके ऊपर व्यापक प्रभाव पडा। जैसा कि. आपके पूरे जीवन में अनाथ बच्चों के लिए गहरी संवेदना दिखायी देती है। वास्तव में वह उन्हें अपने बच्चे ही समझते थे। वह सदैव उनके लिये छाया और समर्थन देने वाले थे। पैगम्बर (सल्ल0) अनाथों के पालन-पोषण और शिक्षा के लिए अथक प्रयास करते थे ताकि वह समाज के महत्वपर्ण अंग बन सकें।

''कदापि नहीं. बल्कि तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते। और तुम निर्धन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को समेट कर खा जाते हो। और तम सम्पत्ति से बहत अधिक स्नेह रखते हो''।

(करआन. 89:17-20)

करआन और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की हदीसों ने बार-बार अनाथ बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं और उनकी सम्पत्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया है।

पैगम्बर (सल्ल0) सभी लोगों के लिए दयालु थे. परन्तु आप अनाथों के लिए विशेष रूप से दयालु थे। आपने अपने साथियों से कहा कि वह उनके आदर्शों का पालन करें और अनाथों के साथ शिष्ट व्यवहार करें।

अबू हुरैरा (रजि0) ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को यह कहते हुए रिवायत किया है कि: *''मुसलमानों के घरों में से सबसे अच्छा घर वह है जिसमें एक अनाथ हो और उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता हो. और मुसलमानों के घरों में सबसे बुरा घर वह है जिसमें कोई अनाथ हो और उसके साथ सबसे बुरा व्यवहार किया जाता हो''।*

और अबू उमामा (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने कहाः *''यदि कोई व्यक्ति एक अनाथ के सिर पर स्नेहपूर्ण हाथ रखे और ऐसा वह मात्र अल्लाह के लिए करे तो उसे उस प्रत्येक बाल के लिए कृपा प्राप्त होगी जिससे उसका हाथ गुजरेगा और यदि कोई व्यक्ति अपने पालन पोषण में एक अनाथ लडकी को रखे. उसके सद्व्यवहार करे तो मैं और वह जन्नत में इस तरह होंगे. यह कहते हए आपने अपनी दो ऊँगलियों को मिलाकर दिखाया''।*

अनाथ अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकते क्योंकि. वह असहाय और कम समझ वाले होते हैं। उनके अधिकारों को छीन लेना सरल होता है। करआन ने यतीमों के अधिकारों का हनन करने वालों की निन्दा की है।

''जो लोग अनाथों की पूँजी अनधिकृत रूप से खाते हैं वह लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वह शीघ्र भडकती हई आग में डाले जायेंगे''।

(करआन. 4:10)

इस्लाम इन अनाथ बच्चों की देखभाल को ही समाज को उत्तरदायी नहीं बनाता बल्कि वह उन्हें अल्लाह से डरने वाले और सुसंस्कृत नागरिक बनाने में सहायता करता है जो भविष्य में समाज के लिए एक पँजी बनें।

भिखारी

कुरआन में माँगने वालों का उल्लेख अनाथों के साथ किया गया है। माँगने वाले लोग वह हैं जो अपनी मुलभुत आवश्यकताओं की पुर्ति स्वयं नहीं कर सकते क्योंकि वह शारीरिक रूप से विकलांग और आर्थिक रूप से वंचित होते हैं। जो लोग आर्थिक कठिनाई में हों उनकी सहायता इस प्रकार की जानी चाहिए कि वह मात्र अपनी मुलभुत आवश्यकताओं की पुर्ति ही न कर सकें अपितु वह आर्थिक स्थायित्व भी पुनः प्राप्त कर सकें। कुरआन और पैगम्बर (सल्ल0) की हदीसों में बार-बार माँगने वाले लोगों और जरुरतमंदों के नैतिक और वैधानिक अधिकारों का उल्लेख किया गया है। एक स्थान पर कुरआन कहता है:

"अतः रिश्तेदार को उसका अधिकार दो और वंचित व यात्री को। यह श्रेष्यकर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं और वही लोग सफलता पाने वाले हैं"। (कुरआन. 30:38)

निर्धनों और वंचितों को समान रूप से भिखारी कहा गया है। भीख माँगना असहाय होने और कठिन परिस्थिति का प्रतीक नहीं। कुछ लोग बिना किसी असहायता के भीख माँगते हैं। यह लोग निर्धन नहीं बल्कि निर्धन दिखायी देने वाले हैं। इसके विपरीत ऐसे लोग भी हैं जिनको अत्यधिक आवश्यकता होती है परन्तु उनका आत्म-सम्मान उन्हें दुसरों के समक्ष हाथ फैलाने से रोकता है। कुरआन कहता है कि मौलिक रूप से ऐसे वंचित लोग आर्थिक रूप से बहत पीछे रह जाते हैं और ऐसे लोगों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। करआन कहता है कि:

''अनभिज्ञ व्यक्ति उनको धनवान समझता है. उनके न माँगने के कारण। तुम उनको उनके रूप से पहिचान सकते हो। वह लोगों से लिपट कर नहीं माँगते। और जो धन तुम खर्च करोगे वह अल्लाह को ज्ञात है''। (कुरआन. 2:273)

अबु हुरैरा (रजि0) की एक रिवायत में हम इस आयत की व्याख्या पाते हैं। वह कहते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कह

''निर्धन व्यक्ति वह नहीं है जो माँगने जाता है और तुम उसे एक या दो मुठ्ठी खाना दे देते हो. अथवा एक या दो खजूरें. बल्कि निर्धन वह है जो अपन निम्नतम आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होता है। वह ऐसा दिखायी देता है कि कोई व्यक्ति उसकी वास्तविक दशा को समझ नहीं सकता कि उसे कोई दान दे सके और न तो वह लोगों से माँगने के लिए खडा होता है''।

इस प्रकार. ऐसे लोगों की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है जो समाज सम्मानित लोग हैं परन्त वास्तविक रूप से जरूरतमंद हैं।

रोगी

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) विशेष रूप से रोगियों के पास जाने में रुचि लेते थे। वह उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछते. उनके बिस्तर के पास बैठते। रोगी के माथे पर हाथ फेरते. और यदि वह कुछ खाने के लिए माँगता तो वह इसकी व्यवस्था करते। आप (सल्ल0) रोगी की देखभाल करते. उसको साँत्वना देते और उनसे कहते. ''अगर अल्लाह चाहेगा तो तुम पुनः स्वस्थ्य हो जाओगे''। जिस क्षण भी आप किसी मुस्लिम अथवा गैर मुस्लिम व्यक्ति की बीमारी की सूचना पाते तो आप उसे देखने जाते। यहाँ तक कि आप इस्लाम के शत्र और कपटाचारियों के सरदार अब्दल्लाह बिन उबई को देखने गये. जब वह बीमार पडा।

बेटियाँ

बच्चे अल्लाह का उपहार हैं और उसकी महान कृपा है. परन्तु एक बेटी का जन्म सामान्य रूप से अपमानजनक समझा जाता है। बेटे को बेटियों पर वरीयता दी जाती है। यह पर्णतः इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध है।

आज ऐसी अनेक घटनाओं का समाचार दुनिया के विभिन्न भागों से मिलता है जिनसे आभास होता है कि कम से कम महिलाओं के साथ व्यवहार के मामले में हम अज्ञानता काल के यग की ओर लौट रहे हैं। अर्थात पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के उदय से पहले का युग

करआन में अल्लाह तआला कहा हैंः ´

'और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना दी जाये तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है। और वह अपने आप में घुटता रहता है''।

(कुरआन. 16:58)

अरब में बेटियों की हत्या की रीति बहुत सामान्य थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसे अवैध ठहराया और माता-पिता को चेतावनी दी कि कयामत के दिन इस कर्म पर कठोर दण्ड मिलेगा। वह लोग अपने बच्चों की हत्या तीन कारणों से करते थे। इन तीनों कारणों का उल्लेख कुरआन में किया गया है। पहला. यह कि वह अपने देवताओं के लिए उनको प्रसन्न करने के लिए बलि चढाते

''और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों (साझी ठहराने वालों) के लिए उन साझीदारों ने अपनी सन्तान की हत्या को भलाई बना कर प्रस्तुत किया है''।

(करआन. 6:137)

और पुनः हम इन शब्दों को पाते हैंः

''वास्तव में घाटे में पड गये वह लोग जिन्होंने अपनी सन्तान की अज्ञानता और मूर्खता के कारण हत्या की और अल्लाह की दी हई जीविका को अल्लाह पर झूठ गढ कर अवैध ठहरा लिया''। (करआन. 6:140)

दूसरा. वे अपने बच्चों की निर्धनता के भय से हत्या कर देते थे। कुरआन ने ऐसा करने वालों को चेतावनी दी है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने बच्चों की हत्या करने को पूरी तरह गैर कानूनी बताया हैः

''तुम निर्धनता के भय से अपनी सन्तान की हत्या न करो. क्योंकि हम ही तुम्हें भी जीविका देते हैं और उन्हें भी''। (कुरआन. 6:151)

और हम पुनः अध्याय 17 'बनी ईस्राइल' में इन शब्दों को पाते हैं

''और अपनी सन्तान की निर्धनता के सन्देह से हत्या न करो. हम उनको भी जीविका देते हैं और तमको भी। निस्सन्देह उनकी हत्या करना बडा पाप है''।

(कुरआन. 17:31)

यह आयत परिवार नियोजन की जड को ही काट देती है जो कि पुराने समय से लेकर आज के वर्तमान युग तक प्रचलित है। निर्धनता का भय ही लोगों को अपने बच्चों की हत्या करने अथवा गर्भपात कराने के लिए प्रेरित करता है। हमारे वर्तमान युग में एक और साधन इनमें जोड दिया गया है. अर्थात गर्भ निरोधक उपाय और जन्म से पर्व लिंग परीक्षण।

एक नवजात बेटी अपमान का कारण थी और वह उस अपमान से बचने के लिए जीवित दफन कर दी जाती थी। प्रत्येक दस में से एक व्यक्ति इसका अपराधी हो जाता था। इस कृत्य में पुरुष ही नहीं अपितु स्त्रियाँ भी भागीदार होती थीं। माँएँ अपनी बेटी को दफन करने के लिए पिता के हवाले कर देती थीं। इस प्रकार की रीतियाँ वर्तमान युग में भी कन्या भ्रूण हत्या के रूप में संसार में प्रचलित हैं। यूनीसेफ की वर्ल्ड चिल्डेन रिपोर्ट के अनुसार भारत में लडकों की संख्या लडकियों से अधिक है. भारत में 1000 लडकों पर मात्र 880 लडकियाँ हैं। विश्व लिंग अनुपात से भी स्पष्ट होता है कि संसार में एक हजार लडकों पर 995 लडकिया हैं। लडकियों की जन्म दर में कमी. कन्या भ्रूण हत्या के कारण आ रही है।

बेटों के लिए प्रबल सांस्कृतिक वरीयता और जन्म पूर्व लिंग परीक्षण दोनों ने मिलकर भ्रूण के लिंग को पहिचानने और कन्या भ्रूण का गर्भपात कराने का रास्ता दिखाया है. ताकि लोग मात्र बेटों का ही जन्म होने दें।

कयामत के दिन उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में कुरआन इसका उल्लेख करता है और कहता है कि कन्या की हत्या करने वाले से पछा जायेगा कि उन्होंने अपनी बेटियों की हत्या क्यों कीः

''कयामत के दिन जब जीवित दफन हई लडकी से पछा जायेगा कि उसे किस पाप में मारा गया''। (कुरआन. 81:8-9)

एक बार एक व्यक्ति ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से अपने ऐसे कृत्य सम्बन्ध में बताया जो निर्दयतापूर्ण था। इस्लाम से पहले कन्याओं की हत्या करने की रीति को अपनाते हुए वह अपनी बेटी को मरुस्थल में ले गया और उसको एक गड्ढे में डालने के बाद उसको जीवित दफन करने लगा। निर्दोष बालिका रोती रही ''अब्बा!. अब्बा!'' परन्त उसने चीख-पकार की अनदेखी कर दी। इस दखदायी घटना को सनकर पैगम्बर (सल्ल0) भावावेश में आ गये और रोने लगे।

बेटियाँ. स्वाभिमान

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम पूर्व अज्ञानताकाल की प्रवृत्ति को पूर्णतः रदद कर दिया और उसकी निन्दा की. जब बेटियों से घृणा की जाती थी और बेटी के जन्म की सूचना ऐसी बुरी सूचना होती थी जिससे बरी सचना की आशा कोई अपने जीवन में नहीं कर सकता था।

उस युग के सम्बन्ध में कुरआन कहता है.

''और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना दी जाये तो उसका चेहरा काला पड जाता है। और वह अपने आप में घुटता रहता है। जिस चीज की उसको शुभ सूचना दी गई है उसकी लज्जा से लोगों से छिपता फिरता है। उसको अपमान के साथ रख छोडे या उसको मिटटी में दबा दे। क्या ही बुरा निर्णय है जो वह करते हैं''. (करआन. 16:58-59)

कुरआन ने अपने बच्चों के प्रति माता-पिता के दृष्टिकोण को पूर्णतः बदल दिया और उनके साथ समानता का व्यवहार करने की शिक्षा दी. चाहे उनका लिंग अथवा रंग कुछ भी हो। ये सभी बच्चे हैं और इनको समान व्यवहार का अधिकार प्राप्त है। माता-पिता के चिर-प्रचलित दृष्टिकोण को बदलने के लिए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) वास्तविक रूप से बेटियों की ओर ज्यादा झुके। अपनी बेटी फातिमा (रजि0) के लिए आपका प्रेम और स्नेह एक ज्वलंत उदाहरण है।

पैगम्बर (सल्ल0) की अनेक हदीसे हैं जिनमें आपने बेटियों का पालन-पोषण ध्यानपूर्वक करने पर अल्लाह की ओर से महान पुरस्कार का वादा किया है। ''यदि किसी के पास एक बेटी हो और उसने उसे जीवित दफन न किया हो अथवा उसका गला न काटा हो अथवा अपने बेटों को उस पर वरीयता न दी हो तो अल्लाह उसको जन्नत में ले जायेगा''।

और हजरत आयशा (रजि0) के अनुसार पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

> *''यदि कोई व्यक्ति अपनी बेटियों के सम्मान के लिए कष्ट उठाया हो औ उनके साथ सदव्यवहार करे. तो वह नरक से बचाने के लिए उसके ऊ आवरण होंगी''।*

मुहम्मद (सल्ल0) ने स्पष्ट रूप से बताया कि कोई बेटी अपने परिवार के लिए अपमान का माध्यम नहीं है। बल्कि दूसरी तरफ वह गर्व का साधन है। यदि कोई व्यक्ति अपनी बेटियों का पालन-पोषण उपयुक्त ढंग से करता है तो उसको कयामत के दि पैगम्बर (सल्ल0) के साथ खडे होने का सम्मान मिलेगा।

हजरत अनस (रजि0) ने अल्लाह के पैगम्बर को यह कहते हुए रिवायत किया है

> *''जिस व्यक्ति ने अपनी दो बेटियों का पालन-पोषण उपयुक्त ढंग से किया. यहाँ तक कि वह बडी हो गयीं. तो कयामत के दिन मैं और वह बहुत निकट होंगे और आपने दोनों ऊँगलियों को मिलाकर दिखाया (अर्थात ये द ऊँगलियाँ जिस प्रकार मिली हुई हैं उसी प्रकार हम और वह एक साथ होंगे)''।*

महम्मद से वफा......

14

उहद

अपनी आध्यात्मिक और सामाजिक शिक्षाओं से आगे बढकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मदीना के मुसलमानों की सुरक्षा के प्रति सावधान रहे और आप जानते थे कि कुरैश के लोग प्रतिकार की तैयारी कर रहे हैं आपको अपने चाचा हजरत अब्बास से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसके माध्यम से आपको सुचित किया गया था कि तीन हजार व्यक्तियों पर आध ारित एक सेना मदीना की ओर चल पडी है। मुहम्मद (सल्ल0) के पास अपनी रणनीति पर विचार करने और प्रतिरोध की व्यवस्था करने के लिए लगभग एक सप्ताह ही बचा था।

आपने अति शीघ्र अपने साथियों के साथ एक परामर्श बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया ताकि उनसे उनका दृष्टिकोण मालुम करें। उन्हें यह चुनाव करना था कि वह शहर के अन्दर रहकर शत्रु सेना के प्रवेश की प्रतीक्षा करेंगे ताकि जब वह उनपर आक्रमण करें अथवा शहर के बाहर प्रस्थान करें और शहर के निकट स्थित मैदान में शत्रु से सीधा मुकाबला करें। पैगम्बर (सल्ल0) अपने अनेक साथियों की तरह जिनमें अब्दुल्लाह बिन उबई जो कि एक कपटाचारी था वह भी सम्मलित था. का विचार था कि उन्हें शत्रु के शहर में प्रवेश करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तथापि वार्त्ता के दौरान आपका दृष्टिकोण निरस्त हो गया. विशेष रूप से युवा साथियों के विरोध के कारण और उन लोगों के कारण जिन्होंने बद्र के यद्ध में भाग नहीं लिया था।

अधिकतर लोगों ने शहर से बाहर कूच करने और शत्रु से सीधा मुकाबला करने के पक्ष में अपना दृष्टिकोण रखा। पैगम्बर (सल्ल0) ने निर्णय को स्वीकार किया और तुरन्त युद्ध वस्त्र पहनने के लिए घर चले गये क्योंकि उनके पास नष्ट करने के लिए समय न था। अपराध बोध के कारण और यह समझने के कारण कि पैगम्बर (सल्ल0) आज्ञापालन उनके लिए बेहतर है. कुछ साथी आपके पास आये जबकि आप अपने घर से बाहर निकल रहे थे और यह परामर्श दिया कि इस निर्णय पर पुनर्विचार होना चाहिए और उनको पैगम्बर के दृष्टिकोण के अनुसार काम करना चाहिए। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसे पर्णतः अस्वीकार कर दिया। निर्णय सामहिक रूप से लिया गया था. आप यद्ध के लिए तैयार हो चके थे और वापस मडने का प्रश्न नहीं रह गया था।

उहद की ओर कच

मुसलमान हिजरत के तीसरे वर्ष 23 मार्च 625 ई0 को मदीना से 5 किमी0 उत्तर की ओर स्थित उहद की ओर निकले। मुस्लिम सेना लगभग एक हजार पर आधारित थी जिसको तीन हजार की सेना से मुकाबला करना था। जब मुसलमान कूच कर रहे थे तो कपटाचारी अब्दुल्लाह बिन उबई ने अलग होने का निर्णय लिया और उसके साथ उसके तीन सौ व्यक्ति वापस हो गये। कपटाचारी अब्दुल्लाह ने युवा और गैर अनुभवी लोगों को अपने ऊपर प्रभावी होने का अवसर देने और इसके बजाय स्वयं निर्णय न लेने के लिए पैगम्बर (सल्ल0) की आलोचना की- जो निर्णय स्वयं उसका अपना भी था- अर्थात यह कि मदीना में रुके रहा जाये और शत्रु की प्रतीक्षा की जाये। सेना से उसका अलग होना एक गम्भीर मामला था क्योंकि इससे मुस्लिम सेना घटकर सात सौ रह गयी जो अब अपनी न तो रणनीति बदल सकती थी और न वापस हो सकती थी। अब्दुल्लाह बिन उबई का कपट चिर-परिचत था और उससे अनेक विश्वासघातों की आशंका थीः शक्ति प्रदर्शन से ठीक पहले यह निर्णय उसकी दोहरी नीति का अतिरिक्त प्रमाण था। मस्लिम सेना आगे बढती रही यद्यपि अब वह प्राकतिक रूप से कमजोर हो गयी थी।

मुस्लिम सेना को ऐसा मार्ग अपनाना पडा जिससे वह युद्ध स्थल पर पहुँच सके और शत्रु सेना को उसकी गतिविधियों का अनुमान न हो सके अथवा वह उसको देख न सकें। एक बार फिर पैगम्बर (सल्ल0) ने एक गैर मुस्लिम पथ निर्देशक पर विश्वास किया जिसने आपके आग्रह को स्वीकार कर लिया. इस पथ निर्देशक की योग्यताओं सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाता था और वह मुस्लिम सेना को मंजिल तक ले गया।

उन्होंने अपना मोर्चा सँभाल लिया और पैगम्बर (सल्ल0) ने अपनी सेना को युद्ध रणनीति का निर्देश दिया। इसके अनुसार तीर चलाने वालों को पहाडी पर रहना था जबकि घुडसवारों को शत्रु सेना से मैदान में सीधा मुकाबला करना था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने तीरंदाजों को सम्बोधित कियाः

> *''यदि तुम हमें मारे जाते. देखो तब भी हमारी सहायता के लिए न आओ: यदि तुम हमें देखो कि हमारी बोटियाँ पक्षी नोच रहे हैं तब भी तुम इस मोर्चे को न छोडो. जब तक मैं तुम्हें न बुलाऊँ। चाहे हम युद्ध जीत जायें अथवा हार जायें अपने मोर्चे को न छोडो. निष्ठापूर्वक अपने मोर्चे पर डटे रहो और यह ध्यान रखो कि तुम्हारी ओर से हम पर आक्रमण न हो सके''।*

पैगम्बर (सल्ल0) ने तीरंदाजों को आदेश दिया कि वह किसी भी स्थिति में अपने मोर्चें को न छोडें चाहे वह नीचे की सेना को हारते हुए देखें या जीतते हुए देखें. ताकि वह करैश की सेना को पहाडी के पीछे आकर हमला करने से रोक सकें।

कुरैश की एक टुकडी वास्तव में युद्ध के पहले चरण से ही ऐसा ही करने का प्रयास कर रही थी. परन्त उनका स्वागत तीरों की वर्षा से होता जिससे वह वापस जाने के लिए विवश हो जाते। यह रणनीति सफलापर्वक काम रही थी।

उहद का यद्ध

युद्ध प्रारम्भ हुआ. मुस्लिम सेना धीरे-धीरे मैदानी क्षेत्र में नियन्त्रण प्राप्त कर रही थी। कुरैश के लोग साहस खोते जा रहे थे और उनको अनेक आघात लगे जबकि मस्लिम सेना ने असाधारण साहस का प्रदर्शन किया।

उन योद्धाओं में दो महिलाएँ अपनी ऊर्जा और आवेश के साथ खडी थीं: उम्मे सुलैम (रजि0) और एक अन्सार महिला नुसैबा: दोनों सबसे पहले पानी ढोने के लिए आयीं और घायलों की सहायता करतीं। वह अन्ततः युद्ध में कुद गयीं. एक तलवार लिया और कुरैश के विरुद्ध युद्ध किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने महिलाओं को कभी युद्ध करने का न तो परामर्श दिया और न उन्हें आमन्त्रित किया परन्तु जब आपने नुसैबा का जोश और युद्ध में उनकी ऊर्जा को देखा तो आपने उनके व्यवहार की प्रशंसा की और उनकी सरक्षा की और उनकी विजय और सफलता के लिए अल्लाह से दुआ की।

यह स्पष्ट होता जा रहा था कि आघातों और कुछ साथियों की मुत्यु के बावजुद मुस्लिम सेना विजयी हो रही है तथापि जैसे-जैसे युद्ध आगे बढा ऐसा प्रतीत होने लगा कि विजय मुसलमानों के हाथ से बच नहीं सकती. जो आगे बढते जा रहे थे जबकि करैश पीछे हट रहे थे और वह अपने घोडे और अपना सामान छोडते जा रहे थे।

पहाडी पर मोर्चा सँभाले हुए तीरंदाजों ने देखा कि घटनाएँ उनके पक्ष में हो रही हैं और विजय निकट आ चुकी है और विशेष रूप से शत्रु का छोडा हुआ सामान सैनिकों की पहुँच में है. जो उनके विपरीत. मोर्चे पर लड रहे थे। वह पैगम्बर (सल्ल0) के आदेशों को और अपने नेता अब्दुल्लाह बिन जुबैर के निर्देशों को भुल गये। पहाडी पर मात्र कुछ तीरंदाज जमे रहे जबकि उनमें से चालीस लोग पहाडी से नीचे की ओर यह आश्वस्त होते हुए दौडे कि विजय प्राप्त हो चुकी है और गनीमत के माल में वह भी हकदार हैं।

खालिद बिन वलीद. जो कि युद्ध कौशल के विशेषज्ञ थे जो कुरैश के एक दस्ते के नायक थे ने देखा कि तीरंदाज वहाँ से हट चके हैं तो उन्होंने पहाडी के पीछे से मस्लिम

सेना पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। वह पैगम्बर (सल्ल0) के साथियों पर दो तरफा आक्रमण करने में सफल हुए जिसके परिणामस्वरूप मुसलमान पूर्णतः भ्रमित हो गये और मुस्लिम सेना अव्यस्थित होकर बिखर गयी। कुछ लोग मारे गये और कुछ लोग भाग गये जबकि कछ लोग लडते रहे। उन्हें पता न था कि आक्रमण कहाँ करें

पैगम्बर (सल्ल0) पर भी आक्रमण हुए यहाँ तक कि आप मृत्यु से बाल-बाल बचे। गुलेल से मारे गये एक पत्थर से आपका ऊपरी होठ फट गया और आगे का एक दाँत टूट गया। एक अन्य पत्थर की चोट से आपकी खुद की दो कीलें आपके माँस में चुभ गयीं और आपके माथे से खून बह निकला। आप हक्का-बक्का होकर जमीन पर गिर पडे परन्तु आपको सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। आपके छः सहायक मारे गये जबकि सातवाँ गम्भीर रूप से घायल हो गया. जो कि निराशापर्वक पैगम्बर (सल्ल0) की सरक्षा के लिए लड रहा था।

एक अफवाह फैली कि पैगम्बर (सल्ल0) मारे जा चुके हैं: जिसके क मुसलमानों में अफरा-तफरी फैल गयी। अन्ततः कुछ साथी आपको अपनी पहाडी पर ले गये और आपकी रक्षा की। इस प्रकार आप आक्रमणकारियों से बच गये।

मुसलमान किसी तरह युद्धस्थल से निकलने में सफल हुए जहाँ यह समझ पाना कठिन हो रहा था कि वहाँ क्या हो रहा है. और फिर एकत्र हुए ताकि यदि आवश्यक हो तो दश्मन से मकाबला करें। जब यद्ध समाप्त हआ तो करैश में से बाईस व्यक्तियों की मत्य हई जबकि मसलमानों में से सत्तर व्यक्ति मारे गये थे।

प्रतिकार

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चाचा हम्जा (रजि0) कुरैश सरदार अबू सुफियान की पत्नी हिन्दः: का निशाना थे और वह उन्हें ढूँढ़ रही थीं. वह बद्र की हार से ही युद्ध का बदला लेना चाहती थीं। एक हब्शी भालेबाज वहशी. को एक मात्र दायित्व सौंपा गया था कि वह हमजा (रजि0) की हत्या करे. और वह इसी कार्य को करने के लिए ध्यान केन्द्रित किये हुए था। जिस समय पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चाचा युद्ध कर रहे थे. वहशी उनके पास गया और उसने अत्यन्त सटीक निशाने पर भाला मारा जिससे हजरत हम्जा (रजि0) की तुरन्त मृत्यु हो गयी। बाद में हिन्दः: ने हजरत हम्जा (रजि0) के शव को युद्धक्षेत्र में तलाश किया और उनका कलेजा चबाकर अपने उस प्रण को पूरा किया कि वह अपने सम्बन्धियों की मृत्यु का बदला उनका खून पीकर लेगी। उसने उनका शव क्षत-विक्षत किया और उनके कान और नाक काटकर अपने गले में लटका लिये।

कुरैश अपने मृतकों को और सामग्री को लेकर वापस गये और जब मुसलमान युद्ध के मैदान में वापस गये तो उन्होंने देखा कि शवों को क्षत-विक्षत किया गया है: पैगम्बर (सल्ल0) अपने चचा हमजा (रजि0) को देखकर अत्यधिक दुखी हुए।

पैगम्बर (सल्ल0) जीवितों और मृतकों के शरीर का सम्मान करना चाहते थे। अर्थात यातना देने और शवों को क्षत-विक्षत करने को न तो स्वीकार किया जाता और न प्रोत्साहित किया जाता. ताकि सृष्टि और मानवता की प्रतिष्ठा और एकता का सम्मान किया जा सके।

तीरंदाजों की अवज्ञा

तीरंदाजों की अवज्ञा के नाटकीय परिणाम निकले। सम्पत्ति और लाभ से आकर्षित होकर तीरंदाज अपने अज्ञानताकालीन अतीत की रीतियों के शिकार हो गये थे। एक अल्लाह में आस्था के सन्देश. न्याय. सांसारिक सामान से दूरी की शिक्षा के बावजूद वह अचानक प्रत्येक आदेश को उस समय भूल गये जब उन्होंने दौलत को अपनी पहुँच में देख लिया। प्राचीन अज्ञानताकाल की रीतियों में विजय की माप लूट की सम्पत्ति की मात्रा से की जाती थी और यह कि वह अतीत और उनकी संस्कृति के कुछ भाग को उनके आध्यात्मिक शिक्षा का उत्तम अंश मिला था। परिणाम स्वरूप मुसलमान खालिद बिन वलीद जैसे अनुभवी व्यक्ति की रणनीति के शिकार हो गये जो कुछ वर्षों बाद स्वयं इस्लाम धर्म में आ गये और मुस्लिम समुदाय के नायक योद्धा बन गये। उहद के मुकाबले का वह विशेष क्षण अपने अन्दर अत्यधिक शिक्षाएँ रखता है: मनुष्य कभी अपनी उस संस्कृति और अनुभव पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं प्राप्त कर सकता. जिसने उनके अतीत की रचना की है और उनकी पसन्द और उनकी प्रवृत्ति के भविष्य के सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय नहीं किया जा सकता। मुसलमान अपने अतीत की रीतियों की दुर्भाग्यपूर्ण विशेषता के शिकार हो गये: खालिद बिन वलीद को जिन्हें भविष्य में इस्लाम धर्म स्वीकार करना था और जिसे अतीत के सम्बन्ध में जो निर्णय किये गये थे उन्हें मिटाना था। ''कोई भी चीज अन्तिम नहीं है'' यह विनम्रता की शिक्षा है: ''कोई अन्तिम निर्णय नहीं लेना चाहिए'' यह आशा की एक प्रतिज्ञा है।

'शरा'

परस्पर परामर्श

घटनाओं के परिवर्तन के कारण मुसलमान मदीना की ओर घायल होकर और अत्यन्त निराश होकर लौटे थेः इसका कारण तीरंदाजों की अवज्ञा थी. उन्होंने अनेक लोगों को खोया थाः स्वयं पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और अनेक सम्मानित साथी घायल हुए थे।

आने वाले दिनों में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पर वह्य अवतरित हुई जिसने उहद के युद्ध के विषय पर वापस लौटा दिया और विशेष रूप से इसमें रणनीतिक मतभेद. तीरंदाजों की अवज्ञा. आपके साथियों की मत्य और अन्त में पैगम्बर (सल्ल0) के व्यवहार पर विशेष रूप से टिप्पणी की गयी थी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) आत्म-नियन्त्रित रहे और उन साथियों के सम्बन्ध में सोचते रहे जो दौलत की अभिलाषा की ओर आकर्षित हो गये और जिन्होंने उनकी अवज्ञा की थी।

कुरआन मजीद उस घटना की ओर संकेत करता है और इस बात की पुष्टि करता है जिसे हमने इस अध्याय के प्रारम्भ में सिद्धान्तों के सम्मान का निरन्तर रंग चढाया था और पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व की सज्जनता की क्षमता के सम्बन्ध में कहा थाः

> *''यह अल्लाह की अत्यन्त दयालुता है कि तुम उनके लिए कोमल हो। यदि तुम कठोर स्वभाव और कठोर हृदय होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। अतः उनको क्षमा कर दो और उनके लिए मुक्ति माँगो और मामलों में उनसे परामर्श लो। फिर जब निर्णय कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सन्देह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं''।* (कुरआनः 3:159)

घटनाओं की श्रृंखला वहाँ से शुरु होती है जब निर्णय पैगम्बर के दृष्टिकोण के विपरीत लिया गया. इसके बाद सच्चाई यह है कि तीरंदाजों ने अवज्ञा की थी।

कुरआन मजीद यहाँ शूरा (परस्पर परामर्श) के सिद्धान्त की पुष्टि करता है चाहे परिणाम कुछ भी होः यह आयत अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो मंत्रणा के सिद्धान्तों और बहुमत के निर्णय का वर्णन करती है. और बताती है कि बहुमत के निर्णय पर वार्त्ता नहीं की जानी चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए चाहे ऐतिहासिक रूप से भविष्य में उसवं परिणाम कुछ भी हों और चाहे निर्णय लेने में मानवीय त्रुटियाँ रह जायें।

अतः मुसलमान वह हैं "जो अपने मामलों को परामर्श के द्वारा चलाते हैं". और यह कि सिद्धान्त जारी रहेगा चाहे जिस तरह इसको लागू किया गया था. वह समय और स्थान के अनुसार परिवर्तित होने में असफल न हो सकेगा।

जहाँ तक तीरंदाजों की अवज्ञा का सम्बन्ध है उपरोक्त आयत संकेत करती है कि पैगम्बर (सल्ल0) के हृदय के वह गुण थे जिन्होंने परिस्थितियों पर आत्म-नियन्त्रण रखा और अपने साथियों को अपने आस-पास जमाये रखा। वह न तो कठोर थे और न निर्मम थे और उन्होंने उनके अतीत से चली आ रही रीतियों के कारण जिस लालच ने उन्हें आकर्षित कर लिया था उसकी निन्दा नहीं की। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के सज्जन व्यवहार ने साथियों के दिलों पर मरहम का काम किया और उन्हें इस पराजय से अनेक सबक लेने का अवसर प्रदान कियाः अल्लाह उनकी नियति में उनके साथ रहा और जहाँ तक उनका सम्बन्ध है वह स्वयं इसके लिए अपने आप को उत्तरदायी महसस कर रहे थे।

✵

विनम्रता

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया

"विनम्रता और शिष्टाचार स्वयं भी अल्लाह के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के माध्यम हैं"।

विनम्रता को अंग्रेजी में ह्यूमिलिटी कहते हैं जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द ह्यूमस अर्थात मिट्टी से हुई हैं और इसी धातु से ह्यूमन शब्द बना है जिसे मानवता के लिए प्रयोग किया जाता है। हम सब मिट्टी से बनाये गये हैं और जैसा कहा जाता है कि हम मिट्टी में ही लौटाये जायेंगे। इसका आग्लो-सेक्शन समानार्थी शब्द हमें लोली (Lowly) अर्थात विन्रम. निम्न मिलता है। विनम्रता का अर्थ यह है कि कोई व्यक्ति यह स्वीकार करे कि वह एक मनष्य है न तो वह मनष्य से कम है और न अधिक और न वह अल्लाह है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कुरआन में कहा है:

> *"और पृथ्वी पर अकडकर न चलो। तुम भमि को फाड नहीं सकते और न तुम पहाडो की ऊँचाई को पहँच सकते हो"।* (करआनः 17:37)

और आगे कहा है:

> *"और लोगों से अपना मुँह न फेर। और धरती पर अकड कर न चल। निस्सन्देह अल्लाह किसी अकडने वाले और अभिमान करने वाले को पसन्द नहीं करता"।*
>
> (कुरआनः 31:18)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह से इस प्रकार डरते रहते थे कि वह सदैव विनम्रता का चित्र होते थे।

मदीना में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक लम्बे नीची छत वाले मिट्टी के घर में रहे जिसकी खिडकियाँ खुली थीं और जिसकी छत ताड के पत्ते से बनी हुई थी. और इस घर को बनाने में आपने स्वयं अपने हाथों से सहायता की थी। यह आपकी पत्नियों के लिए विभिन्न भागों में बँटा हुआ था और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के पास एक बद्दु (तम्बु के स्वामी) की तरह अपने सोने के कमरे नहीं थे। बाद में मुहम्मद (सल्ल0) ने एक पर्दा लगा लिया था जैसा मरुस्थल में बद्दु लोगों के काले तम्बु में डाला जाता था। आप अत्यन्त साधारण और कम जीविका में जीवन व्यतीत करते। दिन के समय आप अपने युग के सर्वाधिक व्यस्त व्यक्ति थे क्योंकि आप एक राज्य के मुखिया. मुख्य न्यायाधीश. मुख्य सेनापति और शिक्षक सभी एक साथ थे। रात में आप सर्वाधिक श्रद्धालु व्यक्ति थे। आप रात के दो तिहाई नमाजों में जागते. स्तुति करते। अक्सर आँसु फुट पडते औ सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष रोने के कारण गला बैठ जाता। आप दुआ करते कि अल्लाह तआला आपको अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने के लिए क्षमता प्रदान करे। आपके फर्नीचर में खजुर की एक बुनी हुई चटाई. एक जग. कम्बल और ऐसी ही साधारण वस्तुएँ थीं। यद्यपि आपको अरब प्रायद्वीप की सम्प्रभुता प्राप्त हो गयी थी। आपका जीवन इतना कठिन और साधारण था कि एक बार आपकी पत्नियों ने सांसारिक साधनों के लिए आप पर दबाब डाला परन्तु उन्हें वह कभी प्राप्त न हो सका। आपने कभी मेज पर खाना नहीं खाया बल्कि आप ऊकड़ुँ भुमि पर बैठकर खुली हवा में एक बद्दु की तरह भोजन करते। आप मात्र अपना दाहिना हाथ खाने के लिए प्रयोग करते और यदा-कदा चाकु का प्रयोग किया। वह साधारण वस्त्र को पसन्द करते थे। आपने जिस वस्त्र में अपनी अन्तिम साँसे ली थीं उसके ऊपर अनेक पैबन्द लगे थे। जिस घर से सम्पुर्ण संसार में प्रकाश फैला वह अँधेरे में रहता था क्योंकि चिराग के लिए तेल नहीं होता था।

- सम्पुर्ण सत्ता का अधिकारी होने के बावजुद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने परिवार के लिए पीछे कुछ नहीं छोडा। आपने कोई वसीयत भी नहीं छोडा। अपने मात्र यह साधारण घोषणा छोडीः हम पैगम्बकरों के वारिस नहीं होते. हम जो कुछ पीछे छोडते हैं उसे दान कर दिया जाता है''. यह शब्द संसार के महानतम साम्राज्य के संस्थापक के थे. जो

भली भाँति जानते थे कि यह शीघ्र ही एशिया और अफ्रीका को घेरे में ले लेगा और यरोप की सीमा को पार कर लेगा।

मैं एक यात्री जैसा हूँ

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अरब प्रायद्वीप के शासक थे और आपके पास व अनुयायियों का ऐसा समूह था जिसे सम्पूर्ण मानव इतिहास में एक बार फिर प्राप्त करना कठिन है। परन्तु घटनाओं से प्रदर्शित होता है कि आपके जीवन के बिल्कल अन्तिम क्षणों तक आपका दैनिक अस्तित्व अत्यन्त विन्रम था।

आपके एक अत्यन्त घनिष्ठ मित्र हजरत उमर (रजि0) रिवायत करते हैं कि जब वह पैगम्बर (सल्ल0) के घर गये तो उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) को किस दशा में देखा। ''जब मैंने उनके कमरे में प्रवेश किया तो मैंने देखा कि आप खजूर की चटाई पर लेटे हुए हैं और आपके शरीर पर कुर्ता नहीं है। चटाई के निशान आपकी पीठ पर दिखायी दे रहे थे। एक कोने में लकडी की मेज रखी थी और थोडी मात्रा में जौ रखा हुआ था''। यह देखकर मैं रोने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकता था। पैगम्बर (सल्ल0) ने पूछा. *'तुम क्यों रो रहे हो?'* मैंने उत्तर दिया कि: ''रोम और ईरान के शासक सम्पूर्ण सांसारिक वैभव का प्रयोग कर रहे हैं और आप अल्लाह के पैगम्बर होकर इतने अधिक कष्ट झेल रहे हैं''। इन शब्दों को सुनकर पैगम्बर (सल्ल0) बैठ गये और फरमाया. *''उमर तुम धरती पर क्या चाहते हो? क्या तम नहीं चाहते कि इन लोगों को संसार के साधन मिलें और हमें परलोक मिले?''*।

• पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) जिस मदीना शहर में रहते थे वहाँ के समस्त लोग आगे चलकर धनवान हो गये. इसके बावजूद उन खुशहाली के दिनों में अरब प्रायद्वीप के सम्राट के रसोईघर में आग कई दिनों तक नहीं जलती थी. आपकी खुराक खजूरें और पानी हुआ करता था। आपके परिवार के लोग अनेक रातों निरन्तर उपवास करते क्योंकि उन्हें शाम में खाने के लिए कुछ न मिलता। जब आपके एक साथी उर्वः (रजि0) ने पैगम्बर (सल्ल0) की पत्नियों से पछा कि इतने कम आपर्ति में वह कैसे गजारा करती थीं. उन्होंने

उत्तर दिया कि उनका खाना खजूरों और पानी पर आधारित होता था। ऐसा बहुत कम हुआ कि पैगम्बर (सल्ल0) के परिवार के पास कभी लगातार तीन दिनों के लिए अनाज का भण्डार हो।

• एक बार एक अन्सारी महिला आयशा (रजि0) के पास आयीं और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के बिस्तर को देखा जो कि पुराने कुर्तों की एक तह थी। वह वापस गयीं और ऊन से भरा हुआ एक बिस्तर ले आयीं। जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने आयशा (रजि0) से पूछा. *यह क्या है* आयशा (रजि0) ने कहा. ''ऐ! अल्लाह के पैगम्बर. एव अन्सारी महिला आयी और उसने आपके बिस्तर को देखा और उसने यह आपके लिए भेजा है''। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनसे कहा. *''इसे वापस कर दो''*. लेकिन आयशा (रजि0) ने इसे वापस नहीं भेजा और सोचा कि बेहतर है कि यह मेरे घर में ही रहे। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. *''अल्लाह की कसम ऐ आयशा. अगर मैं चाहता तो अल्लाह मेरे लिए पहाडों के बराबर सोने और चाँदी बना देता''।*

एक दिन पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक खुरदुरी चटाई पर आराम कर रहे थे जिससे आपके शरीर पर निशान पड गये। आपके कुछ साथियों ने आपसे पूछा. ''यदि आप हमें अनुमति दें तो हम आपके लिए एक मुलायम बिस्तर की व्यवस्था कर दें। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया। इस संसार से मुझे क्या लेना-देना? मैं एक यात्री की तरह हूँ. जो थोडी देर के लिए धधकते हुए दोपहर में एक पेड की छाया में आराम कर लेता है और फिर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर देता है।

उदार व्यक्तित्व

आयशा (रजि0) ने रिवायत किया है कि मुहम्मद (सल्ल0) घर में मौजूद रहते और घरेलू कामों में सहयोग करते. इसलिए कि वह घरेलू कामों के सम्बन्ध में चिन्तित रहते और उनकी सहायता करते. ''अपने कपडे सिल लेते. जूतों में टाँका लगा लेते. बकरियाँ दूहते. और फटे हुए कपडों और चमडे के मिश्किजों को सिल लेते. आप बोझ ढोते और अपने

जानवरों को चारा खिलाते। यदि कोई सेवक होता तो काम में स्वयं भी उसके साथ हाथ बटाते। आप स्वयं बाजार से घरेलू सामान लाते और कपडे के एक टुकडे में उन्हें ढो कर लाते।'' हजरत आयशा (रजि0) ने यह भी रिवायत किया है कि ''पैगम्बर (सल्ल0) घर के अन्दर अत्यन्त उदार. मुस्कराते हुए और सौहार्द पूर्वक रहते। वास्तव में पैगम्बर (सल्ल0) से अधिक अपने लोगों से स्नेह करने वाला कोई और व्यक्ति न था''।

- यातायात के साधन के रूप में मुहम्मद (सल्ल0) घोडे को पसन्द करते। वह स्वयं अपने हाथों से उसकी आँखों. नाक और मुँह की सफाई करते।

अपने लिए विशेषाधिकार नहीं

मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने अनुयायियों के साथ चलने में कभी भी आगे-आगे नहीं चले। आप मार्ग में आगे चलने का सम्मान प्राप्त करने का अवसर बच्चों और सेवकों को देने की अनुमति देते।

मुहम्मद (सल्ल0) ने किसी बैठक में अपने लिए कोई स्थान आरक्षित कभी नहीं किया। आप जहाँ भी खाली जगह होती बैठ जाते। जब लोग आपके आने पर खडे होते तो आप फरमाते कि आप मात्र उसी स्थिति में खडे हों जब आपके मानवता के प्रति सम्मान प्रकट करने का यही तरीका हो। यदि लोग आपको सम्मान देने के लिए खडे होते तो आप सदैव कहते कि बैठे रहो। इसलिए कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उनसे कहतेः 'मैं तुम्हीं जैसा एक व्यक्ति हूँ मैं तुम्हारी ही तरह खाना खाता हूँ और मैं भी तुम्हारी ही तरह बैठता हूँ जबकि मैं थक जाता हूँ'। कभी-कभी जब आप थके होते तो आप आने वालों का अभिवादन घुटनों पर खडे होकर अथवा जमीन पर बैठे-बैठे करते। दूसरे शब्दों में आप अपने लिए कोई विशेषाधिकार स्वीकार नहीं करते थे।

''और रहमान के बन्दे वह हैं जो धरती में नम्रतापूर्वक चलते हैं। और जब अज्ञानी लोग उनसे बात करते हैं तो वह कह देते हैं कि तुमको सलाम''।

(कुरआनः 25:63)

भेदभाव नहीं

अपने साथियों के साथ एक यात्रा के दौरान आपने अपने साथियों से एक बकरी भनने के लिए कहा। एक साथी ने उसे जबहः किया दसरे ने उसकी खाल उतारी और एक अन्य ने उसको पकाया। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा कि वह स्वयं लकडी एकत्र करेंगे। आपके साथियों ने कहा. नहीं ऐ अल्लाह के पैगम्बर! हम लोग सारा काम करेंगे। पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमाया. मैं जानता हँ कि तम लोग करोगे। ''परन्त यह एक तरह का भेद-भाव होगा जिसका अनमोदन मैं नहीं करता। अल्लाह तआला अपने बन्दों से यह नहीं चाहता कि वह अपने साथियों के बीच वरीयता का दावा करें''।

पैगम्बर (सल्ल0) इतने विनम्र थे कि आपने एक बार फरमायाः *''अल्लाह की कसम. वास्तव में मैं नहीं जानता कि मेरा अन्त कैसा होगा और तम्हारा अन्त कैसा होगा जबकि मैं अल्लाह का पैगम्बर हँ''*

धैर्य

एक बार पैगम्बर (सल्ल0) को जैद बिन सआना के लिए एक यहदी से पैसा उधार लेना पडा। इसकी वापसी के लिए जो तिथि निर्धारित थी उससे कछ दिन पहले यहदी अपने पैसे की वापसी की माँग करने आया। वह पैगम्बर (सल्ल0) के पास गया उसने आपके कपडे पकड लिये और कठोरतापर्वक कहाः ''महम्मद. तमने मेरा पैसा क्यों नहीं वापस किया? मैं मत्तलिब के वारिसों के सम्बन्ध में यह जानता हँ कि वह ऋण चकाने को टालते रहते हैं''। उस समय हजरत उमर (रजि0) पैगम्बर के पास थे। वह बहत क्रोधित हो गये। उन्होंने यहदी को डाँटा और वह उसे पीटने के लिए तैयार हो गये। परन्त पैगम्बर (सल्ल0) खामोश रहे। उन्होंने यहदी से जो कछ कहा वह यह थाः

''अभी मेरे वचन को परा करने के लिए तीन दिन शेष हैं''।

फिर आपने हजरत उमर (रजि0) को सम्बोधित कियाः

> *''जैद और मैं तुम्हारी ओर से बेहतर व्यवहार का अधिकारी हैं'' ''तुम्हें मुझसे यह कहना चाहिए कि आप ऋण अदा करने के मामले में अच्छे बनें. और उससे कहते कि तुम ऋण वापस माँगने में अच्छा व्यवहार करो. इसे अपने साथ ले जाओ और इसे इसका ऋण वापस कर दो। वास्तव में इसको बीस साअ (लगभग 40 किलो) खजरें अतिरिक्त दो क्योंकि तमने इसे धमकी देकर भयभीत किया है''।*

इस घटना का सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष यह है कि पैगम्बर (सल्ल0) मदीना के इस्लामी राज्य के राज्याध्यक्ष होने के बावजद अब भी सहनशीलता और विनम्रता का व्यवहार करते रहे।

हँसमख चरित्र

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अन्य लोगों के बीच समता पूर्वक रहते। कोई भी कटु आलोचना अथवा उकसावा आपके धैर्य को खोने न देता। एक बार एक मरुस्थलवासी आपके पास आया और आपके अँगोछे को इस तरह खीचा कि आपकी गर्दन पर उसका निशान पड गया। उसने कहा. ''मुहम्मद!'' ''मुझे सामान से लदे हुए दो ऊँट दो। इसलिए कि तुम्हारे पास जो दौलत है वह तुम्हारी नहीं है और न तुम्हारे बाप-दादा की है''। ''प्रत्येक वस्त अल्लाह की है''. पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. ''और मैं उसका बन्दा हूँ''। फिर पैगम्ब (सल्ल0) ने मरुस्थलवासी से पुछा. ''जिस प्रकार तुमने मेरे साथ व्यवहार किया क्या इसके कारण तुम्हे भय नहीं लगता?'' 'उसने कहा नहीं'। पैगम्बर (सल्ल0) ने उससे पुछा क्यों? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया ''क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते'' यह सुनकर पैगम्बर (सल्ल0) मस्कराये और उसको एक ऊँट जौ और दसरा खजरों से लदा हआ ऊँट दिया।

कपाशील

एक काली महिला मदीना की मस्जिद में झाड़ लगाती थी। एक दिन उसे न देखकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उसके बारे में पुछा। उन्हें बताया गया कि उसका देहान्त हो गया है। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहाः ''उन्हें सुचित क्यों नहीं किया गया। मुझे उसकी कब्र दिखाओ। उसकी कब्र पर खडे होकर पैगम्बर (सल्ल0) ने उसके लिए दआ की

मानवता के उद्धारक

विजेता साधारण रूप से दो प्रकार की भावनाओं- अहंकार और प्रतिशोध के शिकार हुआ करते हैं तथापि पैगम्बर (सल्ल0) ने सन् आठ हिजरी में मक्का विजय के पश्चात इन दोनों प्रवृत्तियों का प्रदर्शन नहीं किया। उनकी विजय अल्लाह के पैगम्बर की विजय थ इतिहासकार इब्ने इस्हाक के अनुसार जब पैगम्बर (सल्ल0) मक्का में प्रवेश हुए तो उनका सिर इतना झुका हुआ था कि लोगों ने देखा कि उनकी दाडी ऊँट की काठी को छु रही थी। अपने विजय के क्षणों में भी आपके पैगम्बर की विनम्रता इस प्रकार की थी। काबा के द्वार पर खडे होकर पैगम्बर (सल्ल0) ने लोगों को सम्बोधित किया जिसके दौरान आपने कहाः

> *''अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं. उसने अपने वचन को पुरा कर दिया और उसने अपने बन्दे को कठोर और विपत्ति के समय में सहायता प्रदान की और मात्र उसी ने शत्रु सेना को नीचा कर दिखाया है''।*

दुसरे शब्दों में उन्होंने विजय का श्रेय लेने का कोई दावा नहीं किया बल्कि इसका सम्पर्ण श्रेय अल्लाह को प्रदान किया।

मैं अल्लाह का दास हूँ

एक बार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथियों ने कहना प्रारम्भ किया. "यदि यह अल्लाह की इच्छा हो और पैगम्बर की इच्छा हो ...." पैगम्बर (सल्ल0) के चेहरे का रंग क्रोध ा से बदल गया और जब आपने यह सुना तो आप बहुत संवेदनशील हो गये। *"क्या तुम मुझे अल्लाह के समतुल्य ठहराने का प्रयास कर रहे हो?"* आपने उस व्यक्ति से कठोरता पूर्वक पूछा। फिर आपने कहा कि इस तरह कहने के बजाय यह कहोः *"यदि अल्लाह ही चाहे"*

- पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः *"तुम मेरी प्रशंसा और मेरे प्रति स्नेह में इतने उदार न बन जाओ जैसे ईसाई हजरत ईसा (अलै0) के सम्बन्ध में हो गये। तुम मुझे अल्लाह का एक दास और पैगम्बर कहो (अर्थात कभी अल्लाह का बेटा अथवा कोई दैवीय गण रखने वाला व्यक्ति न बनाओ)"।*
- पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः *"नाश हो उन लोगों का जिन्होंने अपने पैगम्बरों की कब्रों को संग्रहालय अथवा उपासना स्थल बना लियाः मेरी कब्र को उपासना स्थल न बनाओ"।*

शान्त स्वभाव और मर्यादा

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) शोरगल व कोलाहल पसन्द नहीं करते थे। इसके विपरीत आप हर काम में शान्ति. मर्यादा और सुव्यवस्था पसन्द करते थे।

आपने अपने अनयायियों को नमाज के लिए भी मस्जिद की ओर दौडने से मना किया।

आप कहा करते थे. *"शान्ति और मर्यादा का स्वभाव तुम्हारे लिए है"*।एक बार आपने हज के अवसर पर शोरगल और कोलाहल सना। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपना चाबक उठाकर व्यवस्था को बहाल किया और कहाः *"अनावश्यक जल्दबाजी नेकी नहीं है"*।

15
खाई. कटनीति और एक चाल

मदीना में मुस्लिम समुदाय के लिए स्थिति विकट हो गयी थी। उहद की घटना के कई परिणाम सामने आये। यह कोई छोटा नुकसान न था कि पडोसी कबीलों की दृष्टि में मुसलमानों का सम्मान कम हो गया था। कुछ कबीले अब मुसलमानों को दूसरे दृष्टिकोण से देखने लगे और इन्हें कमजोर समझने लगे। इस परिस्थिति का लाभ उठाने के लिए मुसलमानों को कमजोर देखकर उनके विरुद्ध कई अनेक अभियान छेडे गये। जहाँ तक मुहम्मद (सल्ल0) का सम्बन्ध था उन्हें मदीना पर सुनियोजित आक्रमण की धमकियाँ दी गयी थीं अतः उन्होंने अपने लोगों को 100 से 150 के गटों में अन्य कबीलों के पास उनसे किसी खतरे को रोकने के लिए भेजा।

हिजरत के चौथे वर्ष (626 ई0) में इस तरह के कम तीव्रता वाले स्थानीः अभियान छेडे गये. जिन्होंने उस क्षेत्र में शक्ति सन्तुलन के लिए गठबन्धनों को नया रूप दिया। यह मक्का के कुरैश सरदारों और मदीना के मुसलमानों के बीच एक शह और मात के खेल जैसा था। उन्हें मालूम था कि एक व्यापक स्तर का संघर्ष आगे आने वाला है। मक्का के कुरैश अरब प्रायद्वीप से मुस्लिम समुदाय का नामो-निशान मिटाने की अपनी इच्छा को छिपाते नहीं थे और इस उद्देश्य के लिए वह आस-पास के कबीलों से सन्धियाँ और समझौते कर रहे थे। उनकी परिस्थिति अधिक विकट हो गयी थी क्योंकि उत्तर की ओर सीरिया और इराक को समद्र के किनारे जाने वाले व्यापारिक मार्गों पर अब भी

मुसलमानों की नजर थी और इन्हें मदीना के मुसलमान नियन्त्रित करते थे। अतः कुरैश के लोग महसस करते थे कि उन्हें सीरिया और इराक को जाने वाले मार्गों को स्वतन्त्र कराने के लिए निर्णायक और कठोर कदम उठाने पडेंगे

सहयोगी

अरब प्रायद्वीप में इस्लाम विरोधी कबीले और कुरैश के लोग मुस्लिम समुदाय को नष्ट करने के लिए एक व्यापक आक्रमण की तैयारी कर रहे थे ताकि अन्ततः पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के मिशन को समाप्त किया जा सके। कबीला बनू नजीर का सरदार हुयय अपने यहूदी सरदारों के साथ खैबर से मक्का गया ताकि वह कुरैश सरदारों के साथ गठबन्धन को अंतिम रूप दे सके जिससे इस बात में कोई सन्देह न रह जाये कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और उनके समुदाय पर आक्रमण करके उनका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाए। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने इस सन्धि में सम्मिलित करने के लिए अन्य कबीलों के साथ सम्बन्ध स्थापित किये। अतः इस्लाम को नष्ट करने के लिए बन नजीर. असद. बनू गतफान और बनू सुलैम ने आपस में एक सन्धि की।

कुरैश और सहयोगी शक्तियाँ पर्याप्त रूप से विशाल संख्या में थीं और जब इन सेनाओं ने मदीना की ओर कूच किया तो ऐसा प्रतीत होता था कि मुसलमानों का इनकी तुलना में कोई मेल नहीं। कुरैश की सेना और उनके दक्षिणी सहयोगी चार हजार सैनिकों पर आधारित थे और एक अन्य सेना जो पूर्वी भाग नज्द से आ रही थी और इसके साथ अनेक कबीले सम्मिलित थे अपने साथ छः हजार सैनिकों को ले आयी। मदीना शहर पर दो दिशाओं से आक्रमण होने जा रहा था और उसका दस हजार सैनिकों द्वारा घेराव किया जा रहा थाः कोई व्यक्ति मुश्किल से कल्पना कर सकता था कि मदीना के मसलमान बिना किसी नकसान के मदीना से निकल सकते हैं

जब कुरैश की सेनाओं ने कूच किया तो पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा अब्बास (रजि0) ने एक गप्त प्रतिनिधिमण्डल मक्का से मदीना भेजा ताकि पैगम्बर मह॰

(सल्ल0) को शत्रुओं के आक्रमण की चेतावनी पहुँचायें। जब यह प्रतिनिधिमण्डल मदीना पहुँचा तो मदीना के मुसलमानों के पास प्रतिरोध की रणनीति बनाने के लिए मात्र एक महीने का समय बचा हुआ था। वह लोग तीन हजार से अधिक बडी सेना एकत्र नहीं कर सकते थे जो शत्रुओं की सेना से एक तिहाई से भी कम होती।

आविष्कारशीलता और अनोखी युद्ध तकनीक

इस्लामी परम्परा के अनुसार. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने साथियों को एकत्र किया और परिस्थितियों और उनका मुकाबला करने के लिए रणनीति अपनाने की योजना के सम्बन्ध में परामर्श किया। कुछ लोग महसूस कर रहे थे कि उन्हें बाहर निकलना चाहिए और शत्रु का सामना करना चाहिए जैसा कि उन्होंने बद्र के युद्ध में किया था। कुछ अन्य लोग सोच रहे थे कि मात्र शहर के अन्दर उनकी प्रतीक्षा करके ही उन्हें सफलता का अवसर मिल सकता है और उहद के युद्ध से यही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पैगम्बर के साथियों में एक ईरानी साथी सलमान (रजि0) मौजूद थे जिनकी कहानी अनेक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। वह लम्बे समय से सच्चाई और अल्लाह की तलाश में थे और उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) से निकट रहने की आशा में मक्का की यात्रा की थी। वह उनकी बैठकों में भाग लेते और निष्ठा और आज्ञापालन के साथ उनके बीच रहते। जब सलमान फारसी (रजि0) बोलने के लिए खडे हुए तो उन्होंने एक ऐसी रणनीति बतायी जो उस समय तक अरबों के लिए अजनबी थीः ''ऐ अल्लाह के पैगम्बर ईरान में जब हमें घुडसवारों के आक्रमण की आशंका होती तो हम शहर के चारों ओर एक खाई खोदा करते थे। अतः हमें अपने चारों तरफ एक खाई खोदनी चाहिए। यह परामर्श अप्रत्याशित था परन्तु सभी साथियों ने इसे पसन्द किया और उन्होंने इसे लागू करने का निर्णय लिया। उन्हें तेज काम करना था क्योंकि उनके पास खाई खोदने के लिए मात्र एक महीने का समय बचा था और इस

खाई को पर्याप्त चौडी और गहरी खोदना था ताकि शत्रु के घोडों को छँलाग लगाने से रोका जा सके. और यह खाई इतनी गहरी थी कि यदि कोई व्यक्ति इसमें गिर जाता तो वह स्वयं बाहर न आ सकता था।

यह कुरैश से तीसरा बडा मुकाबला था और यह मुहम्मद (सल्ल0) की रणनीतियों में तीसरी रणनीति भी थी। बद्र में पानी के कुँओं के पास एकत्र हुए थे और उहद में पहाडी का रणनीतिक प्रयोग किया था और इन रणनीतियों का वर्तमान तकनीक से कोई सम्बन्ध ा नहीं था। क्योंकि अब यह तकनीक शहर में रुक कर प्रतीक्षा करने और दुश्मन को अपने आप से दूर रखने की थी. जो संभावित आक्रमण से बचने के लिए एक मात्र उपलब्ध साध ान हो सकता था। यदि घेराबंदी अधिक दिनों तक रहती तो जिन लोगों ने शहर में शरण ले रखी थी उन्हें प्रतिरोध का अवसर प्राप्त होता। सैनिक रणनीति में इस प्रकार र्क आविष्कारशीलता उस शिक्षा का आभास कराती है कि किस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) अपने साथियों को गहरी आस्था और सम्पूर्ण परिस्थितियों में बौद्धिक रचनात्मकता का उपयोग करने की शिक्षा देते थेः पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और आपके साथियों ने एक विदेशी तकनीक को उधार लेने में संकोच महसूस नहीं किया जिसका परामर्श एक फारसी साथी ने दिया था और इसका मदीना में अपनी परिस्थितियों के अनुसार प्रयोग किया गया। उनकी चिन्तन शैली में बिना किसी संकोच के लोगों की प्रतिभा. राष्ट के विवेक और स्वस्थ्य मानव रचनात्मकता का मिश्रण था। पैगम्बर (सल्ल0) ने बलपूर्वक कहा थ ''मानव विवेक मोमिन (आस्थावान) की खोयी हई पँजी है यदि वह उसको मिल जाये तो वह उसका सबसे अधिक अधिकारी है''।

यह श्रेष्ठ मानव चिन्तन और उसके उत्पाद के अध्ययन का एक आह्वान था और इसे मानवता की सकारात्मक विरासत के रूप में अपनाना था। (जिसे जन-कल्याण के रूप में स्वीकार करना था) एक व्यापक स्तर पर इसका अर्थ मनुष्यों के मामलों के प्रबन्ध ान में उत्सुकता. आविष्कारशीलता और रचनात्मकता का प्रदर्शन करना था और इसका प्रदर्शन युद्ध के सम्बन्ध में पैगम्बर के दृष्टिकोण और रणनीतियों में ही नहीं होता था बल्कि जैसा कि हमने देखा इसका प्रदर्शन विचारों और सभ्यताओं के संसार से सम्बन्धित उनकी विचारशैली में भी था।

खाई

मदीना तीन दिशाओं से घरों और नखलिस्तान (खजरों के बाग) से घिरा हुआ था. और एक दिशा से खुला था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने 3000 साथियों को खाई खोदने के लिए लगा दिया। उन्होंने प्रत्येक को 10 गज भूमि खोदने के लिए दी। खाई की लम्बाई 6 किमी0. चौडाई लगभग 10 गज और गहराई लगभग 5 गज थी। इस प्रकार तीन लाख अट्ठाइस हजार घन गज मिट्टी को खोदने और हटाने का काम तीन सप्ताह में करके एक कीर्तिमान स्थापित किया था जो इतिहास का एक अनोखा कारनामा था। संसाधन इतने कम थे कि खुदाई के कुछ सामान कुदाल. फावडा और टोकरी बनू कुरैजा कबीले से एक सन्धि के अन्तर्गत उधार लिये गये थे। काम करने के दिन लम्बे थे और सहाबा (पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथी) भोर से सूर्यास्त तक काम करते थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया. *'मैं एक कार्यकर्त्ता हूँ:* यदि करने का काम इस प्रकार की रक्षात्मक खाई की खुदाई हो। उन्होंने एक फावडा लिया और अपने साथियों के साथ खुदाई की। उन्होंने अपने कंधों पर मिट्टी की टोकरियाँ ढोयीं। हजरत सलमान फारसी (रजि0) याद करते हैं कि जब वह खाई में फावडे से खुदाई कर रहे थे तो एक बडे पत्थर ने रोडा अटकाया और उन्होंने उसको तोडने के लिए पर्याप्त संघर्ष किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके प्रयासों को देखा और सहायता के लिए उनके पास आये। उन्होंने अपने हाथ में फावडा उठाया और ऐसा फावडा चलाया कि पत्थर दो टुकडे हो गया।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) कोई कार्य प्रगति पर हो तो हाथ बँटाने के लिए तैयार रहते थे. यहाँ तक कि घरेलू कार्यों में भी। हजरत अनस (रजि0) जो बाद में पैगम्बर के सेवक की तरह कार्य करते थे. याद करते हैं कि: 'पैगम्बर (सल्ल0) की जितनी सेवा मैंने की उससे ज्यादा सेवा उन्होंने मेरी की! वह मुझ पर कभी क्रोधित नहीं हुए। उन्होंने कभी मेरे साथ कठोर व्यवहार नहीं किया'।

जब दूसरे लोग काम कर रहे हों तो पैगम्बर (सल्ल0) पीछे नहीं बैठे रह सकते थे। वह कार्य में भाग लेते और इस दौरान आपके साथी आपको दुआएँ करते हुए सुनते और कभी कविताएँ पढते. जिसमें आपके सहाबा सुर में सुर मिलाते। सामुदायिकता के ऐसे क्षण जिसमें लोग कार्यरत होते उनमें उनकी बन्धुत्व और लगाव की भावना उत्पन्न होती और उनकी भावनाओं. उमंगों और आशाओं को सामूहिक रूप से प्रकट करने को संभव भी बनाती। इस प्रकार जब वह अपने साथियों की ऊर्जा को एकत्र करने व आवश्यकता महसूस करते तो वह सभी स्तर के साथियों को बुलाते ताकि अपने समुदाय में एकता को पर्णता प्रदान करें: एक अल्लाह में गहरी आस्था. भावनाओं का काव्य रूप में प्रकटीकरण और भावुक स्वरों की संगीतबद्धता। वह अपने समुदाय में से एक थे उनके दैनिक जीवन में सम्मिलित थे. उन्होंने प्रमाणित किया कि जब वह वास्तव में समय और स्थान से परे अल्लाह की सेवा में हैं तथापि वह उनके इतिहास और संस्कृति में उनके साथ अनभव भी करते थे और वास्तव में वह उन्हीं में से एक थें।

प्रतिभाशाली सेनापति

कार्य की प्रगति के साथ जो खाई बनती दिखायी दे रही थी वह एक बडी सफलता थी। किसी घडसवार के लिए किसी भी जगह से इसको पार करना सम्भव न था और बिना किसी कठिनायी के मस्लिम तीरंदाज आक्रमण के किसी साहसपर्ण प्रयास को रोकने में सक्षम थे।

पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व में सैनिक व्यह रचनाकार की योग्यता का प्रदर्शन खाई के यद्ध के समय की तैयारी में दिखायी पडता है। पैगम्बर (सल्ल0) ने यद्ध से पहले अनेक कदम उठाये ।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) कछ साथियों के साथ घोडे पर सवार होकर शहर के कमजोर स्थानों का सर्वेक्षण करने गये जहाँ खाई खोदनी थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने एक

इंजीनियर की भमिका निभायी और व्यक्तिगत रूप से अपने अनयायियों का नेतत्व किया और उन्होंने शत्र के आक्रमण से पहले अपना काम परा कर लिया।

यह भली-भाँति जानते हए कि अरब प्रायद्वीप के लोगों के लिए मदीना के चारों ओर खाई खोदना पर्णतः एक नया और विचित्र विचार था. आपने यह प्रयास किया कि इस सम्बन्ध में करैश के लोगों और उन लोगों को कोई सचना न पहँचे जो मसलमानों के विरुद्ध व्यापक आक्रमण की तैयारियाँ कर रहे थे। आप शत्र को आश्चर्यचकित करना चाहते थे। अतः आपने मदीना में आने और मदीना से बाहर जाने की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया और इस तरह आपने खाई की परियोजना के सम्बन्ध में किसी भी सचना के लीक होने की सम्भावना को रोक दिया। आप (सल्ल0) ने हजरत अली और अन्य सहाबा को कमाण्डो के रूप में मदीना की सीमा पर 24 घंटे प्रहरी नियक्त कर दिया। आपने शत्र के विरुद्ध उनकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए निगरानी केन्द्र बनाने का आदेश दे दिया।

महम्मद (सल्ल0) के आदेश पर आपके साथियों ने मदीना के बाहर स्थित अपने खेतों और बागों से तमाम अनाज को एकत्र कर लिया ताकि शत्र को अपने ही अनाज भण्डार पर भरोसा करना पडे। इस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) ने मदीना शहर में अनाज का एक भण्डार स्थापित कर लिया और इसे शत्र सेनाओं के हाथ में आने की आशंका से बचा लिया।

जब करैश की सेनाएँ निकट आना प्रारम्भ हईं तो मस्लिम सैनिकों की संख्या तीन हजार थी। सब लोग जल्द ही शहर में खाई के पीछे आ गये ताकि दश्मन सेना की प्रतीक्षा करें।

कान्सेन्टिन वर्गिल घेरोग्य एक रोमानिया का लेखक था वह अपनी पस्तक ''महोमेट (सल्ल0)' में निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखता है।

सोवियत सेनाओं ने भी जर्मनी के विरुद्ध अपने यद्ध में इस रणनीति व अपनाया। उन्होंने अपने खेतों से और बागों से अनाज को एकत्र कर लिया अथवा उसे नष्ट कर दिया। जो आती हई जर्मन सेना के रास्ते में पडती थी ताकि वह उन्हें नष्ट करने या उनका लाभ उठाने का अवसर न पाएँ। इसका सम्बन्ध बीसवी शताब्दी से है। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने इसे सातवीं शताब्दी में अपनाया। अतः जब करैश सीमा पर पहँचे तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हआ। उन्होंने कभी ऐसी दश्मन सेना का मकाबला नहीं किया था जिसने इतने कलात्मक ढंग से खाई के माध्यम से दश्मन के सीधे प्रहार को रोका हो और न ही उन्होंने ऐसे दश्मन का सामना किया था जिसने अपने दश्मन को अपने खेतों और फलों से वंचित कर दिया हो। इस प्रकार करैश शीघ्र ही अपने सैनिकों के लिए खराक और घोडों और ऊँटों के लिए चारे के लिए इधर-उधर भटकने लगे।

घेराबन्दी

हिजरत के चौथे वर्ष 31 मार्च 627 ई0 को मदीना के दक्षिण पुर्व में मक्का के कुरैश अपनी सहयोगी सेनाओं के साथ दस हजार योद्धाओं. जिसमें छः सौ घोडे और कुछ ऊँट थे. आये और मदीना के चारों ओर ठहरे। कुरैश को यह देखकर निराशा हुई कि नखलिस्तान की फसलें पहले ही काटी जा चुकी हैं। अतः उनके घोडों के पास वही चारा था जो वह अपने साथ लेकर आये थे। अतः यह आवश्यक था कि मुसलमानों को जितना जल्दी सम्भव हो समाप्त कर दिया जाये। इस नीयत से उन्होंने मदीना की ओर कुच किया। वह खाई को देखकर चकित रह गये और मदीना को घेरने और प्रत्येक दिशा से एक साथ आक्रमण करने की उनकी योजना विफल हो गयी। वास्तव में खाई एक ऐसी युद्ध तकनीक थी जिससे अरब और उनकी सहयोगी सेनाएँ अनभिज्ञ थीं। अतः मदीना शहर को जीतने और मदीना शहर को पराजित करने के लिए उन्हें किसी अन्य कार्य योजना की आवश्यकता थी।

कुरैश और उनकी सहयोगी कबीलायी सेनाओं के बीच घेराबंदी की अवधि कम करने और मदीना शहर पर अधिकार प्राप्त करने के उत्तम साधन खोजने के लिए परामर्श प्रारम्भ हो गया। उन्होंने निर्णय किया कि अधिकतर सेनाओं को उत्तर की ओर एकत्र कर दिया जाये ताकि मदीना की सेनाएँ उस दिशा में चली जाएँ और शेष लोग खाई को दक्षिण दिशा से पार करने का प्रयास करें जिस समय वह असरक्षित हो. जहाँ से चटटानों के माध्यम से मदीना में पहँचना सरल प्रतीत हो रहा था।

कटनीति

यहदी कबीला बनु कुरैजा विशेष रूप से उसी क्षेत्र में रहता था: उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथ सहयोग सन्धि पर हस्ताक्षर किया था। परन्तु वह मदीना की एकता में एक कमजोर बिन्दु थे। बनु नजीर का सरदार हुयय बनु कुरैजा के किले पर जाने और उनके सरदार कअब बिन असद से बात करने का आग्रह कर रहा था। और उन्हें इस बात पर राजी करना चाहता था कि वह मुहम्मद (सल्ल0) से अपने सहयोग सन्धि को तोड ले। प्रारम्भ में कअब ने हुयय को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया परन्तु बाद में हुयय ने इतना अधिक आग्रह किया कि बनु कुरैजा का सरदार उसको सुनने के लिए पहले सन्तुष्ट हुआ फिर बाद में मदीना के मसलमानों से अपनी सन्धि पर विश्वासघात करने के लिए भी सन्तष्ट हो गया।

बनु कुरैजा के पाला बदलने का अर्थ यह था कि मदीना के लोगों की पु रणनीति धराशायी हो जाती क्योंकि बनु कुरैजा के शत्रु के साथ मिल जाने से अन्दर से एक रास्ता खुल जाता और शत्रु को शहर के अन्दर आने का अवसर मिल जाता. जिसका अर्थ निश्चित पराजय थी और मुसलमानों का नरसंहार भी निश्चित हो जाता।

बनु कुरैजा का यहूदी कबीला कुरैश और उनके सहयोगियों के साथ मिलने के लिए सहमत हो गया। इसी दौरान पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा शत्रु की उत्तर दिशा की गतिविधियों का निरीक्षण करने के बाद एक चाल मन में आयी। अतः आपने दक्षिण में

स्थिति बनु कुरैजा से अपने सहयोग सन्धि की विश्वसनीयता को जाँचने का निर्णय लिया क्योंकि वह जानते थे कि बनु कुरैजा उनके पक्ष में कम ही प्रवृत्त हैं।

इस दौरान आपने यह अफवाहें सुनीं कि बनु कुरैजा के सरदारों ने एक तरफा तौर पर सन्धि को तोड दिया है। यदि यह समाचार सही सिद्ध होता तो मात्र मुस्लिम सेना का उत्साह ही नहीं टूटता बल्कि युद्ध जीतने का अवसर भी उनके पास बहुत कम रह जाता। पैगम्बर (सल्ल0) ने दो गुप्तचरों को सूचनाएँ एकत्र करने के लिए भेजा और उनसे विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करने के लिए कहाः यदि अफवाह निराधार थी तो उन्हें इसे प्रबल रूप से इसकी घोषणा करना था और मुसलमानों को पुनः विश्वास में लाना और उनके साहस को पुनः वापस लाना था और यदि यह अफवाह सही होती तो इसे उन्हें गुप्त रूप से पहुँचाना था। गुप्तचरों ने बताया कि यह समाचार सही है और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को तुरन्त कदम उठाना था। आप (सल्ल0) ने दक्षिणी सीमा पर जैद (रजि0) को 300 सैनिकों के साथ भेजा. ताकि शत्र बन करैजा के सहयोग से शहर में आने का प्रयास न कर सके

यह घेराबंदी सहनशक्ति के लिए कठिन होती जा रही थी और मुसलमानों को निरन्तर सावधान रहना पड रहा था। एक दिन आक्रमण इतनी अधिक संख्या में हुए और अनेक दिशाओं से हुए. कि मुसलमान जुहर. और अस्र की नमाज अपने समय पर न पढ सके और उसके बाद मगरिब की नमाज भी न पढ सके। पैगम्बर (सल्ल0) निराश थे और घेराबंदी आपके साथियों के मनोबल को प्रभावित करने लगी थी। यह आयत उनकी भावनाओं का वर्णन करती है।

> *''जबकि वह तुम पर चढ आये. तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से। और जब आँखें पथरा गयीं और हृदय गले तक पहुँच गये और तुम अल्लाह के साथ भाँति-भाँति के गुमान (विचार) करने लगे। उस समय ईमान वाले परीक्षा में डाले गये और पूर्णतः हिला दिये गये''*। (कुरआन. 33:10-11)

यह परीक्षा की घडी बहुत कठिन थी और इससे कबीलों और व्यक्तियों की निष्ठा और वफादारी का भी पता चल रहा था। इस युद्ध ने न केवल बनु कुरैजा की दोहरी नीति को उजागर किया था बल्कि इसने एक बार फिर कपटाचारियों का पर्दाफाश कर दिया था

जो जल्दबाजी में अपनी वचनबद्धता पर पनर्विचार कर रहे थे अथवा समर्पण की सोच रहे थे।

करआन कहता है:

> *"और जब कपटाचारी और वह लोग जिनके दिलों में रोग है. वह कहते थे कि अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने जो वादा हमसे किया था। और फिर कहा: वह मात्र धोखा था"।* (करआन. 33:12)

और पुनः

> *"और जब उनमें से एक समह ने कहा कि हमारे घर असुरक्षित हैं. और वह असरक्षित नहीं।* (कुरआन. 33:13)

और उनमें से कुछ दूसरे लोग मात्र यह चाहते थे कि वह युद्ध से बच जायें और अपनी रक्षा करें क्योंकि उन्हें स्पष्ट महसूस हो रहा था कि मुसलमानों की सुरक्षा जल्द ही टट जायेगी और इस प्रकार कुछ दिनों तक प्रतिरोध करना संभव नहीं प्रतीत हो रहा था।

तथापि मुसलमान पैगम्बर (सल्ल0) और उनके आदर्श और उनके दृढविश्वास में उनके साथ रहे थे। यह संकट जिसने आस्था में निष्ठा और अल्लाह के प्रति वचनबद्धता को उजागर कर दिया था. उसी सम्बन्ध में पैगम्बर (सल्ल0) के आदर्श के सम्बन्ध में यह आयत अवतरित हुई:

> *"तुम्हारे लिए अल्लाह के सन्देष्टा में उत्तम आदर्श था. उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो और अधिकता से अल्लाह को याद करे".* (कुरआन. 33:21)

इस आयत का अर्थ युद्ध की परिस्थतियों से परे आगे की बात करता है। यह प्रत्येक मुस्लिम व्यक्ति के जीवन के लिए पैगम्बर (सल्ल0) की भूमिका बताता है. बल्कि यह और अधिक शक्तिशाली पहलू उजागर करता है जब कोई इसके अवतरण परिस्थितियों को याद करता है: एक घिरा हुआ समुदाय. हिला मारा हुआ. और मनुष्य की दृष्टि और बुद्धि के अनुसार इस दुर्भाग्य से बचने में असमर्थ. जिसका स्थान लापरवाही और वेवफाई की वजह से पतित हो गया है और जो पैगम्बर के आस-पास उसकी आस्था और उसके भरोसे पर एकत्र हुए हैं। यह आयत इसकी पुष्टि करती है कि:

जब ईमान वालों ने सहयोगी सेनाओं को देखा तो उन्होंने कहा.

> *''और जब ईमानवालों ने सेनाओं को देखा. वह बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने सच कहा। और उसने उनके ईमान और अज्ञापालन में वृद्धि कर दी''।*
>
> (करआन. 33:22)

एक प्रभावपर्ण चाल

मुसलमान गंभीर संकट में थे. लेकिन दिन बीतने के साथ साथ. कुरैश और उनकी सहयोगी सेनाएँ भी गंभीर संकटों का सामना कर रही थीं. उनके पास पर्याप्त रसद नहीं बचा था और रातें भी अत्यधिक ठंडी होने लगी थीं।

उसी समय. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के पास नुऐम बिन मसुद मिलने के लिए आये जो कि कुरैश के एक प्रसिद्ध बुजुर्ग थे और जिनका अरब प्रायद्वीप में सभी कबीले सम्मान करते थे। नुऐम बिन मसुद पैगम्बर से यह बताने आये थे कि वह इस्लाम धर्म में आ चुके हैं परन्तु अब तक इस बात को कोई नहीं जानता। उन्होंने अपने आप को पैगम्बर (सल्ल0) के हवाले कर दिया कि वह जो चाहें उनका प्रयोग कर सकते हैं

इब्ने हिशाम रिवायत करते हैं कि नुऐम बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे और मदीना का घेराव करने वाली शत्रु सेनाओं के बीच उनको सम्मान प्राप्त था। पैगम्बर (सल्ल0) उनकी इस स्थिति से परिचित थे और आपने नुऐम से फरमाया. *''उनके बीच मतभेद उत्पन्न करने के लिए जिस कार्य की आवश्यकता हो उसे करो!''. ''हमारे ऊपर उनकी पकड को कमजोर करने के लिए तुम जो भी कर सकते हो करो. युद्ध धोखे का नाम है!''*

नुऐम ने एक प्रभावपूर्ण चाल चली। सबसे पहले वह यहूदी कबीले बनू कुरैजा के पास गये। उन्होंने उनको परामर्श दिया कि वह कुरैश से यह माँग करें कि वह लोग अपने कुछ लोगों को उन्हें बन्धक के रूप में दे दें जो इस बात की गारण्टी हो कि वह लोग बन करैजा के साथ विश्वासघात नहीं करेंगे। बन करैजा के सरदारों ने इस विचार

को पसन्द किया और कुरैश के पास एक दत भेजने का निर्णय किया. ताकि इस अनरोध ा को उनके समक्ष स्पष्ट रखा जा सके।

इसके बाद नुऐम जल्द ही कुरैश सरदार अबू सुफियान के पास यह चेतावनी देने गये कि बनू कुरैजा उनको धोखा दे रहे हैं और वह वास्तव में मुहम्मद (सल्ल0) के सहयोगी हैं। उन्होंने घोषणा की कि वह लोग वफादारी के वचन के रूप में आप लोगों से कुछ आदमियों को बंधक के रूप में माँगना चाहते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि उनकी नीयत उन्हें मुहम्मद (सल्ल0) के हवाले कर देने की है ताकि वह उनके समक्ष उन्हें अपनी वफादारी के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करें।

जब बनू कुरैजा का दूत अबू सुफियान के पास आया और उसने बन्धक के रूप में कुछ व्यक्तियों की माँग की तो अबू सुफियान आश्वस्त हो गये कि नुऐम ने सही कहा है और वास्तव में बनू कुरैजा उनको धोखा दे रहे हैं। अबू सुफियान ने तुरन्त बनू नजीर के सरदार हुयैय को बुलाया और इस विश्वासघात के सम्बन्ध में उनसें पूछा। हुयैय हैरत में पड गया और पीछे हट गया. पहले तो उसके समझ में नहीं आया कि क्या उत्तर दें और अबू सुफियान को महसस हआ कि वह उसके व्यवहार में विश्वासघात का प्रमाण देख सकते हैं

सहयोगी सेनाओं और कुरैश के बीच फूट की प्रारम्भिक निशानियाँ दिखायी दे रही थीं। कुछ कबीलों में आपसी भरोसा कायम था जबकि अन्य कबीले एक-दूसरे के प्रति सतर्क थे। इस समाचार ने सहयोगी योद्धाओं और करैश के संघ को बरी तरह कमजोर कर दिया।

लगभग दो सप्ताह बीत गये थे और कोई सफलता प्राप्त न की जा सकी थी। उनकी सेनाओं के साजो-सामान समाप्त हो रहे थे और प्रतिदिन उनके घोडे भूख से मरते जा रहे थे और कुछ ऊँट भी मर गये थे। सहयोगी सेनाओं के शिविर में थकान और खाने की कमी के कारण उनके हतोत्साहित होने का वातावरण गंभीर होता जा रहा था। इसके बाद एक अत्यन्त तीव्र और कटु आँधी ने उनकी योजना को विफल कर दिया और वह आश्वस्त हो गये कि मदीना के सरक्षा कवच पर नियन्त्रण प्राप्त करना अब उनके लिए असंभव हो गया है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को शत्रु सेनाओं के टूटते मनोबल के सम्बन्ध सूचित किया गया अतः आपने हजरत हुजैफा (रजि0) को रात के समय अभिसूचना एकत्र करने के लिए भेजा। हजरत हुजैफा (रजि0) शत्रु सेनाओं के बीच व्याप्त अव्यवस्था और अफरा-तफरी की सूचना के साथ वापस आये और उन्होंने बताया कि ठण्डी हवाओं ने शत्रु को कमजोर कर दिया है। लोग अपना शिविर उखाड रहे हैं और अनेक योद्धा पहले ही शिविर छोड चुके हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फज्र की नमाज के बाद इस शुभ सूचना को अपने साथियों को सुनाया और दिन की रोशनी में इसकी पुष्टि हो गयी कि शत्रु सेना जा चुकी है। यह घेराबंदी हिजरत के चौथे वर्ष (627 हि0) में की गयी थी और पच्चीस दिनों तक जारी थी और सहयोगी सेनाएँ बिना यद्ध किये वास्तविक और सांकेतिक पराजय का बोझ ढोते हुए वापस जा रही थीं।

पूरे अरब प्रायद्वीप में मुसलमानों की दोतरफा विजय का समाचार फैल गया और मुसलमानों के सम्बन्ध में लोगों के विचार और शक्ति सन्तुलन पूर्णतः परिवर्तित हो गया। मुसलमानों ने मात्र दस हजार की सेना से अपने आप की सुरक्षा ही नहीं की थी बल्कि उन्होंने अपने अटल दढविश्वास का प्रदर्शन भी किया था।

✲

मसलमानों की दानशीलता

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की बेटी जैनब (रजि0) का विवाह अबुल-आस से हुआ थ जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था। प्रारम्भ में वह उनके साथ मक्का में रहीं जब तक पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको मदीना में अपनी छोटी बेटी उमामा के साथ आने के लिए नहीं कहा था। जैनब अपने पति से गहरा प्रेम रखती थीं परन्तु उनकी जीवन शैली की भिन्नता ने अन्ततः उन्हें अलग कर दिया। तथापि दोनों ने पुनः विवाह नहीं किया।

खन्दक की विजय के कुछ महीनों बाद पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर से आते हुए एक सम्पन्न कुरैश काँरवा को रोकने के लिए एक सैनिक दस्ता भेजा। जैद (रजि0) जो मुस्लिम घुडसवारों का नेतृत्व कर रहे थे. ने काँरवा के सामान को लूट लिया और अधिकतर लोगों को बन्धक बना लिया. जबकि अन्य कुरैश भाग निकले। जो लोग बच गये थे उनमें अबुल आस भी थे। जिन्होंने निर्णय लिया था कि मक्का वापस होते समय मदीना में रूकेंगे और अपनी पत्नी और बेटी से गुप्त रूप से मिलेंगे। यह अपने आप में मूर्खता थी. लेकिन अपनी पत्नी और बच्चों को देखने की उनकी अभिलाषा. उत्पन्न होने वाले खतरों की जानकारी से भी अधिक थी। उन्होंने अपनी पत्नी के दरवाजे को रात के अन्धकार में खटखटाया और जैनब ने अन्दर आने दिया और वह उनके साथ रहे।

फज्र (भोर) की नमाज का समय निकट हुआ और सदैव की भाँति जैनब (रजि0) नमाज के लिए मस्जिद चली गयीं। वह मस्जिद में गयीं और पुरुषों के पीछे महिलाओं की पहली पंक्ति में खडी हो गयीं। जब पैगम्बर (सल्ल0) ने तक्बीर तहरीमा (अल्लाहु अक्बर कहकर नमाज के लिए एकाग्रचित होना) कहा तो छोटे अन्तराल का अवसर पाकर उन्होंने

तीव्र ध्वनि में कहाः ''ऐ लोगों. मैं रबीअ के बेटे अबुल आस को शरण देती हूँ''। जब नमाज समाप्त हो गयी तो पैगम्बर (सल्ल0) को यह ज्ञान नहीं था कि उनकी बेटी और उनके पति के बीच क्या हुआ है। आपके साथियों ने पुष्टि की कि उन्होंने यह घोषणा सुनी है। आपने बल देकर कहा कि शरण चाहे उनकी बेटी द्वारा अथवा किसी साम मसलमान द्वारा किया गया हो उसका सम्मान किया जाना चाहिए।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपनी बेटी के पास गये और जैनब (रजि0) ने अबुल आस जिन परिस्थितियों का सामना कर रहे थे. उसके सम्बन्ध में बताया. उनका सामान पिछले अभियान में ले लिया गया था और इस प्रकार वह कर्जदार हो गये थे। क्योंकि लुटा हुआ सामान उन्हें मक्का के लोगों ने धरोहर के रूप में दिया था। पैगम्बर (सल्ल0) ने परामर्श दिया कि जिन लोगों ने वह सामान अपने पास रखा है वह यदि चाहें तो अबुल आस को लौटा दें। सभी लोगों ने यह बात मान ली। कुछ साथियों ने अबुल आस को परामर्श दिया कि वह इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें और यह सारा सामान अपने पास रख लें। उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि लोगों की धरोहर में विश्वासघात कर मुसलमान होना उपयुक्त नहीं है। उन्होंने सारा सामान ले लिया. मक्का वापस गये और प्रत्येक व्यक्ति को उसका सामान वापस कर दिया। फिर वह मदीना आये. इस्लाम धर्म स्वीकार किया और फिर वह जैनब (रजि0) और अपनी बेटी उमामा के साथ रहने लगे।

इस प्रकार. पहले मुसलमानों की उदारता. फिर मुसलमानों का हाथ खुला रखना. सबके लिए समान दिखायी दे रहा था। पैगम्बर (सल्ल0) की तरह उन्हें भी अबुल आस से कुछ लेना देना नहीं था। वह मुसलमान नहीं थे। उनका सम्बन्ध शत्रु परिवार से था और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था. परन्तु मुसलमानों ने उन्हें जाने दिया। उन्हें विकल्प चुनने की स्वतन्त्रता दी। उनके आध्यात्मिक विकास के लिए समय की आवश्यकता थी। उन्होंने पारिवारिक सम्बन्धों के कारण संकट के समय मे मस्लिम समदाय की सरक्षा भी प्राप्त की थी।

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता

हजरत जैनब (रजि0) ने अपने पति की ओर से सार्वजनिक रूप से और बलपूर्वक बात की। यहाँ तक कि वह मस्जिद गयीं जो महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए खुला स्थान था। वहाँ पुरुषों में से किसी ने कोई वक्तव्य देने से मना नहीं किया। वास्तव में मस्लिम महिलाओं में इस प्रकार सार्वजनिक रूप से बोलना असामान्य नहीं था।

मस्जिद के अन्दर महिलाएँ पुरुषों की पंक्तिओं के पीछे नमाज के लिए खडी होती थीं। मस्जिद में नमाज के लिए खडे होने की जो व्यवस्था थी उसमें शालीनता और सम्मान था। उस स्थान पर महिलाएँ नमाज पढती. अध्ययन करतीं और अपने विचार व्यक्त करतीं थीं। इसके अतिरिक्त वह पैगम्बर (सल्ल0) में शिष्ट और सम्मान देने वाला हृदय पातीं। पैगम्बर (सल्ल0) ने पुरुषों से कहा था कि वह बैठे रहें ताकि महिलाएँ पहले चली जाएँ और उन्हें कोई व्यवधान न हो। महिलाओं के प्रति आपके व्यवहार में सदैव सज्जनता और शिष्टाचार होता था। आप उनके विचार सुनते. उनको अपने विचार प्रकट करने का अवसर देते और उनके विचारों और तर्कों को मानते. उनकी रक्षा करते और उन्हें विकसित करते।

बाद में इस तरह के अन्य उदाहरण में जो विशेष रूप से मुस्लिम इतिहास में प्रसिद्ध है. जब मदीना मे मुसलमानों के अन्दर आर्थिक सम्पन्नता बढी तो वह अपनी बेटियों के लिए भारी महर की रकम तय करने लगे। हजरत उमर (रजि0) ने पैगम्ब महम्मद (सल्ल0) के भौतिक एवं आध्यात्मिक खलीफा के रूप में यह आदेश दिया कि

कोई भी व्यक्ति चार सौ दिरहम से अधिक महर न तो माँगेगा और न अदा करेगा और इस रकम से अतिरिक्त रकम जो दी जायेगी उसे जब्त कर लिया जायेगा और उ बैतलमाल (सरकारी कोष) में डाल दिया जायेगा।

इस अध्यादेश की घोषणा के बाद जब उमर (रजि0) मिम्बर से नीचे उतरे तो एक लम्बी और बढ़ी महिला खडी हो गयीं और विश्वासपूर्वक कहाः

''क़ुरआन ने इस सम्बन्ध में कोई सीमा निर्धारित नहीं की है अतः उमर को महर की ऊपरी सीमा निर्धारित करने का कोई अधिकार नहीं है''।

अपने दृष्टिकोण के प्रमाण के रूप में महिला ने करआन की इस आयत का उच्चारण तीव्र आवाज में कियाः

''और यदि तुम एक पत्नी के स्थान पर दूसरी पत्नी बदलना चाहो और तुम उसको बहुत अधिक सम्पत्ति दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तम उसको लाँछन लगाकर और स्पष्ट अत्याचार करके वापस लोगे''।

(क़ुरआन. 4:20)

हजरत उमर (रजि0) ने इस निर्णय में अपनी भूल तुरन्त स्वीकार कर ली और कहाः ''अल्लाह मझे क्षमा करे. हर कोई उमर से बेहतर जानता है यहाँ तक कि यह बढी महिला भी''।

मानवता की सेवा

प्रारम्भ से ही मौलिक आस्था के अतिरिक्त कुरआन दो चीजों पर बल देता हैः प्रथम यह कि मनुष्य का अल्लाह के साथ सम्बन्ध दृढ होना चाहिए। उसे मात्र अल्लाह की ई उपासना करनी चाहिए और उसे कभी अपना सिर किसी दूसरे के सामने नहीं झुकाना चाहिए। दूसरे यह कि मनुष्य को अन्य लोगों के साथ अत्यन्त सम्मानपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उसे हकदार लोगों के अधिकारों को स्वीकार करना चाहिए। उसे माता-पिता. सगे-सम्बन्धियों. पडोसियों. अनाथों और वंचितों के प्रति उत्तरदायित्व को पूरा करना चाहिए। यदि वह बलवान है तो उसे कमजोर पर हाथ नहीं उठाना चाहिए बल्कि उसे उनके लिए ताकत का स्रोत होना चाहिए। उसे दूसरों की जान. सम्मान और सम्पत्ति का रक्षक होना चाहिए जिस प्रकार वह अपने सम्मान. सम्पत्ति और जान की रक्षा करता है। उसे कभी धोखा नहीं देना चाहिए। बल्कि उसे अपने लेन-देन में सदैव पारदर्शी होना चाहिए। उसका अस्तित्व समाज के लिए परेशानी का कारण नहीं बनना चाहिए बल्कि उसे आराम और शान्ति सुनिश्चित करने वाला होना चाहिए। पवित्र कुरआन ने इन शिक्षाओं को इतना अधिक महत्व दिया है कि इनका वर्णन बार-बार किया गया है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण करआन की सरः बनी ईस्राइल (अध्याय 17) है।

अल्लाह के उपकार

इस संसार में कुछ लोगों को जीवन के सम्पूर्ण विलासितापूर्ण साधन प्रदान किये गये हैं. जबकि कुछ लोग इनसे वंचित हैं। पवित्र करआन कहता है कि सम्पन्न लोगों को वंचितों की सहायता करनी चाहिए।

जिस व्यक्ति को जीवन में अधिक सम्पन्नता प्रदान की गयी है उसे अल्लाह का कृपापात्र होना चाहिए और उसको आभार प्रकट करने का सर्वोत्तम माध्यम उन लोगों की सहायता है. जो वंचित हैं। अल्लाह ने हमें जो कुछ प्रदान किया है अन्य मनुष्यों के उसमें अधिकार हैं। इस भागीदारी के बिना हमारी अल्लाह के प्रति कृतज्ञता सदैव अधूरी रहेगी। इतना अधिक उपकृत होने के बाद यदि हम वंचितों की सहायता नहीं करते तो इसका अर्थ यह है कि हमारे हृदय मूर्छित हैं

इस्लाम में मानवता की सेवा को अल्लाह की सेवा बताया गया है। आवश्यकता पडने पर लोगों की सेवा करना अल्लाह की सेवा करना है। किसी व्यक्ति को खाली हाथ वापस करना अल्लाह की सहायता करने से इन्कार करना है। अल्लाह को प्रसन्न करने की सर्वश्रेष्ठ विधि उसकी रचनाओं को प्रसन्न करना है। आसमान धरती के प्रति दयालु नहीं होगा यदि धरती के लोग आपस में एक दूसरे के प्रति दयालु न रह जायें। पैगम्बर (सल्ल0) की एक हदीस इस हकीकत को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है।

पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा हैः "अल्लाह तआला कयामत के दिन फरमायेगा. ऐ आदम की सन्तान! मैं रोगी था तो मुझे कोई देखने नहीं आया। अनेक लोग निवेदन करेंगेः ऐ मेरे अल्लाह! आप समस्त संसार के पालनहार हैं। आप कब बीमार हुए और हम कैसे आपको देखने आते? फिर अल्लाह कहेगाः क्या तुम उस अमुक व्यक्ति को नहीं जानते जो बीमार था परन्तु तुम उसको देखने नहीं गये। यदि तुम वहाँ जाते तो मुझे उसके पास पाते। फिर अल्लाह तआला फरमायेगाः ऐ आदम की सन्तान! मैंने तुझसे खाना माँगा. परन्त तमने मझे खाना नहीं दिया! मनष्य निवेदन करेगाः ऐ संसार के पालनहार! आप

कब भूखे थे? अल्लाह तआला फरमायेगाः क्या तुम्हें याद नहीं कि एक व्यक्ति ने तुझसे खाना माँगा था। परन्तु तुमने उसे नहीं खिलाया। यदि तुम उसकी आवश्यकता पूरी करते तो तुम उसका बदला यहाँ पाते। अल्लाह फिर फरमायेगाः ऐ आदम की सन्तान! मैंने तुझसे पानी माँगा था परन्तु तुमने मुझे पानी नहीं दिया। मनुष्य कहेगाः ऐ संसार के पालनहार! आप कब प्यासे थे कि हम आपको पानी देते? अल्लाह फरमायेगाः उस दिन एक व्यक्ति ने तुझसे पानी माँगा था परन्तु तमने मना कर दिया। यदि तम उसकी प्यास बझाते तो तुम उसका बदला यहाँ पाते''।

''मानवता की सेवा अल्लाह की सेवा के समान है''। इस तथ्य के महत्व को उजागर करने के लिए यह हदीस पर्याप्त है और इस सम्बन्ध में कोई असावधानी एक गम्भीर भल होगी।

सेवा सबके लिए होनी चाहिए

इस्लाम अपने अनुयायियों को मात्र मुसलमानों के प्रति ही नहीं बल्कि इस धरती पर रहने वाले समस्त व्यक्तियों के सम्बन्ध में चिंता करना सिखाता है। अवज्ञा घृणा और शत्रुता की शिक्षा देती है। जो व्यक्ति राष्टवाद में अन्धा हो गया हो वह कभी अन्य राष्टों के लिए सहनशील और सहानुभूतिपूर्ण नहीं हो सकता। इस्लाम इसका विरोधी है। यह अल्लाह की सम्पूर्ण रचनाओं को एक परिवार मानता है। हजरत अनस (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

''समस्त रचनाएँ अल्लाह का परिवार हैं। अतः उनमें उसके परिवार की सेवा जो सर्वाधिक करता है वह अल्लाह के लिए सर्वाधिक प्रिय है''।

पवित्र कुरआन में एक साथ वंचितों. निर्धनों. विकलांगों. अनाथों और अभागों की सेवा करने का आदेश दिया गया है। इसमें कभी नहीं कहा गया कि मात्र मुसलमानों अथवा एक विशेष वर्ग की सेवा करो। यह चाहता है कि सम्पर्ण मानवता की सेवा की

जाये. चाहे वह हमसे सम्बन्धित हों अथवा नहीं. हमसे सहमत हों अथवा नहीं. वह हमारी भाषा बोलते हों अथवा नहीं। प्रत्येक व्यक्ति सेवा का अधिकारी है। इसमें कोई अन्तर और कोई भेदभाव नहीं। धरती पर कष्ट में पडा हुआ कोई भी व्यक्ति देखभाल से वंचित नहीं रखा जायेगा। उसकी सहायता की जायेगी ताकि वह अपनी विपन्नता पर नियन्त्रण प्राप्त कर सके। क्योंकि रंग. राष्टीयता और क्षेत्र की भिन्नता के बावजुद सम्पुर्ण क्षेत्र की मानवता एक-दुसरे का अंग है क्योंकि वह एक ही सार-तत्व से पैदा की गयी है। यह वास्तविकता पैगम्बर (सल्ल0) की कुछ हदीसों से प्रकट होती है

1. जाबिर बिन अब्दल्लाह (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

"अल्लाह उस व्यक्ति के प्रति दयालु नहीं जो दुसरों के प्रति दयालु नहीं"।

2. अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

"रहमान (अत्यन्त दयावान). अपनी दयालुता की वर्षा उन लोगों पर करता है जो दयालु होते हैं। इस धरती के लोगों के लिए दयाल रहो. आसमान तम्हारे लिए दयालु रहेगा"।

3. अब्दुल्लाह बिन मसद (रजि0) रिवायत करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने फरमायाः

"तुम कभी आस्थावान नहीं हो सकते जब तक तुम दयालु न बनो"।

पैगम्बर (सल्ल0) के साथियों ने निवदेन किया. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर! हममें से प्रत्येक दयाल है"।

फिर उन्होंने कहाः

"इसका तात्पर्य उस दयालुता से नहीं जो तुम अपने परिवार और सम्बन्धियों के प्रति करते हो. दया सम्पुर्ण मानवता के लिए होनी चाहिए"

4. अबु हुरैरा (रजि0) कहते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) के कुछ साथी बैठे हुए थे और पैगम्बर (सल्ल0) उनके पास आये। उन्होंने पछा कि क्या मैं तम लोगों

को बताऊँ कि कौन व्यक्ति अच्छा है और कौन व्यक्ति बुरा है। इस प्रश्न पर सभी लोग खामोश थे। जब आपने यह प्रश्न तीन बार दोहराया तो एक साथी ने कहाः 'ऐ अल्लाह के पैगम्बर! कृपाया हमारा मार्गदर्शन कीजिए कि हममें से कौन अच्छा है और कौन बुरा है''। उन्होंने कहाः

''तुम लोगों में से सबसे अच्छा वह व्यक्ति है जिससे लोग मात्र भलाई की आशा रखते हों और लोग उसकी शरारतों से सुरक्षित हों। तुममें से बुरा व्यक्ति वह है जिससे कोई भलाई की आशा नहीं की जाती और जिसकी शरारतों से लोग सरक्षित नहीं रहते''।

ये हदीसें बिना किसी भेदवभाव के अल्लाह की सम्पूर्ण रचनाओं की सेवा करने की शिक्षा देती हैं। इस्लाम का दृष्टिकोण यह है कि हमें हर ऐसे व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए जिसको हमारी सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता हो। सामाजिक सेवा के मामले में मानवता को गिरोहों और दलों में इस प्रकार बाँटना कि कोई हमारा है. कोई दूसरा है. कोई जान-पहिचान का है. कोई अजनबी है. कोई अपने धर्म का मानने वाला है अथवा दसरे धर्म का अनयायी है. इस्लाम की शिक्षाओं और उसकी प्रकति के विरुद्ध है।

सेवा भी इबादत है

करआन इबादत को जीवन का एक मात्र उद्देश्य मानता है।

इबादत इसलिए की जाती है कि अल्लाह से निकट हुआ जाये और वह हमें स्वीकार कर ले। इबादत शारीरिक भी होती है और आर्थिक भी होती है। शारीरिक इबादत में मौखिक स्तुति और शारीरिक संचलन है. परन्तु इन सबको कर्म-काण्ड समझा जाता है। मानवता की सेवा के लिए अपनी पूँजी खर्च करना भी इबादत है। किसी व्यक्ति कं सहायता करते समय अल्लाह से निकट होने का विचार मन में होना चाहिए इस प्रकार मनष्य आर्थिक कल्याणकारी कार्यों में इबादत का परम आनन्द प्राप्त कर सकता है।

इस्लाम में मनुष्य की सेवा एक सांसारिक कर्म है परन्तु यह वास्तव में इबादत है। इस वास्तविकता को समझने के लिए हमें इबादत की सम्पूर्ण व्यवस्था पर विचार करना चाहिए।

नमाज की प्रासंगिकता और जकात

नमाज इबादत का शारीरिक रूप है और जकात इबादत का आर्थिक रूप। (जकात का अर्थः शुद्धिकरण करने वाला सामाजिक कर अथवा अपनी पूँजी को अल्लाह की कृपा प्राप्त करने के लिए शुद्ध करना ताकि यह भलाई में वृद्धि करे): नमाज अल्लाह की विशाल और उपकारक के रूप में मनुष्य की ओर से प्रतिष्ठा की घोषणा और उसकी दासता की घोषणा भी है। जकात मनुष्य के अन्दर दयालुता की दौलत का प्रकटीकरण है और इससे पता चलता है कि वह दूसरों के लिए अपना धन खर्च करने के लिए सदैव तत्पर है। कुरआन ने सामान्य रूप से नमाज और जकात का एक साथ उल्लेख किया है. और नमाज और जकात दोनों पर बल दिया है। दोनों का महत्व समान है। यह आर्थिक इबादत को उतना ही महत्वपूर्ण मानता है जितनी महत्वपूर्ण शारीरिक इबादत को मानता है। इस्लाम मात्र मनुष्य से यह माँग नहीं करता कि वह अल्लाह के दरबार में विनम्रतापूर्वक झुके बल्कि यह माँग भी करता है कि मनुष्य उसकी रचनाओं को अपनी कमायी हुई पँजी में भागीदार बनाये और इसे वंचितों पर खर्च करे।

> *"हालाँकि उनको यही आदेश दिया गया था कि वह अल्लाह की उपासना करें। उसके लिए दीन (धर्म) को शुद्ध कर दें. एकाग्र होकर. और नमाज स्थापित करें और जकात (अनिवार्य दान) दें. और यही उपयुक्त दीन (धर्म) है"।*
>
> (कुरआन. 98:5)

16
हुदैबिया
शान्ति ने यद्ध जीत लिया

कुरैश और सहयोगी सेनाओं के विरुद्ध विजय ने अरब प्रायद्वीप में परिस्थितियों व परिवर्तित कर दिया और इसके फलस्वरूप पैगम्बर (सल्ल0) और आपके साथियों की ताकत को मान्यता दी जाने लगी। यहाँ तक कि ईरानी और रोमन साम्राज्य के लोग यह भी कहने लगे कि पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) अरबों के एक शक्तिशाली सम्राट के रूप में उभर रहे हैं क्योंकि वह उनको निर्विरोध क्षेत्रीय शक्ति के रूप में देख रहे थे।

रमजान एवं एक स्वप्न

रमजान का महीना प्रारम्भ हो गया था. और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने सदैव की तरह रात की इबादत को बढा दिया था और निर्धनों और वंचितों की भलाई पर अधिक ध्यान देने लगे थे। यह तीव्र आध्यात्म का महीना था जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने फरिश्ते जिब्रील (अलै0) को वह सब कुछ सुनाया जो कुरआन में से अवतरित हुआ था। और उस दौरान आप अपनी नमाजों को लम्बी पढते और एक अतिरिक्त नमाज तरावीह की नमाज

(यह नमाज विभिन्न रिवायतों के अनुसार और विभिन्न मसलकों में आठ से बीस रकअत इशा की नमाज के बाद रमाजन में पढी जाती है और उसमें पूरा कुरआन पढा जाता था) पढते। निरन्तर दुवाएँ भी की जातीं जबकि स्त्रियों और पुरुषों को दिन के समय मानवीय प्रवृत्तियों से परोक्ष रूप से अपने आप को स्वतन्त्र कर लेते अर्थात खाने. पीने और लैंगिक आवश्यकताओं से अलग हो जाते। अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं पर नियन्त्रण प्राप्त करके मुसलमान दैवीय विशेषताओं और स्तति के माध्यम से अल्लाह की उपस्थिति का अनभव करते।

शारीरिक व्रत के अतिरिक्त मुसलमानों से अपनी भाषा (झूठ. असभ्यता. अश्लील बातों से परहेज) का व्रत और अपने दिलों (बुरी भावनाओं और बुरे विचारों से परहेज) के व्रत की आशा की जाती है। आध्यात्मिक अनुशासन के साथ-साथ. जैसा कि बताया गया. उनसे एक अतिरिक्त आशा यह की जाती थी कि मुसलमान निर्धनों और वंचितों पर अधि ाक ध्यान दें: रमाजन का महीना कुरआन का महीना भी था और उदारता. दानशीलता और एकता का महीना भी। मुसलमान चाहे वह स्त्री. पुरुष अथवा बच्चे हों उन्हें परामर्श दिया गया था कि रमजान के महीने के अन्त में विशेष दान दें ताकि समुदाय के समस्त सदस्यों को ईद के समारोह मनाने से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सर्वशक्तिमान अल्लाह से सामिप्य की तलाश उसी समय पूरी हो सकती है जब निर्धनों से निकटता प्राप्त की जाये. उनका सम्मान किया जाये. उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाये।

रमजान के उस महीने में पैगम्बर (सल्ल0) ने एक आश्चर्यजनक स्वप्न देखा जो चिन्ताजनक भी था और वरदान भी। आपने देखा कि आप काबा में प्रवेश कर रहे हैं और आपका सिर मुडा हुआ है और वह अपने दाहिने हाथ में काबे की चाबी लिए हुए हैं। यह स्वप्न प्रभावशाली था और पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने सदैव की भाँति इसे एक सन्देश के रूप में लिया।

अगले दिन आपने अपने साथियों को इसके सम्बन्ध में सूचित किया और उन्हें उमरा करने के लिए मक्का जाने की तैयारी करने के लिए आमन्त्रित किया। उमरा एक

कम स्तर का हज होता है (उमरा वर्ष के किसी भी दिन किया जा सकता है जबकि हज मात्र जिलहिज्ज के महीने में दस तारीख को ही किया जा सकता है)।

1200 से लेकर 1400 निष्ठावान साथियों ने यात्रा की। खतरा वास्तविक रूप से मौजुद था लेकिन पैगम्बर (सल्ल0) ने यात्रियों को हथियार लेकर चलने की अनुमति नहीं दी और अपने साथ अपनी पत्नियों में से एक पत्नी उम्मे सलमा (रजि0) को साथ लिया। उन लोगों ने कुच किया और सबसे पहले पैगम्बर (सल्ल0) ने स्वयं अपने उस ऊँट का संस्कारीकरण किया उमरा में जिसकी कुर्बानी करनी थी। जहाँ तक मक्के वालों का सम्बन्ध है उनको शीघ्र ही पता चल गया कि मुसलमानों का एक दल मक्का के लिए चल पडा है और उसका उद्देश्य काबा की परिक्रमा करना है। काबे की परिक्रमा अनेक दशकों से अरब प्रायद्वीप के कबीलों का सर्वाधिक वैध अधिकार था।

करैश का असमंजस

कुरैश के लोगों को एक असम्भव असमंजस की स्थिति का सामना था। वह समझ नहीं पा रहे थे कि उन्हें काबा के क्षेत्र में प्रवेश करने से रोकने को किस तरह सही सिद्ध करें अथवा दुसरी तरफ अपने शत्रु को शहर में प्रवेश की अनुमति कैसे दें. जिसके परिणामस्वरूप मुसलमानों को अस्वीकार्य प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। कुरैश ने अपने सरदार खालिद बिन वलीद को दो सौ व्यक्तियों के साथ मक्का की तीर्थ यात्रा करने वाले मसलमानों को मक्का के निकट रोकने के लिए भेजा।

मुसलमानों का एक दल उनको वास्तविकता से सुचित करने आया और उन्होंने अपना मार्ग बदलने का निर्णय किया ताकि ऐसी स्थिति से बचा जाए जिससे टकराव निश्चित हो जाए। उन्होंने ऐसा मार्ग अपनाया जिसे वह मक्का के दक्षिण में पवित्र क्षेत्र के किनारे और मदीना से 310 किमी0 दुर दक्षिण हुदैबिया के मैदान में पहुँचे जो मक्का से 18 किमी0 उत्तर में है। उस स्थान पर आकर पैगम्बर (सल्ल0) का ऊँट जिसका नाम कस्वा था रुक गया और उसने आगे जाने से इन्कार कर दिया। जैसा कि उस समय हआ

था जब सात वर्ष पहले पैगम्बर (सल्ल0) मदीना आये थे. पैगम्बर (सल्ल0) ने इसे एक बार फिर होते देखा। आपको वहाँ रुकना पडा और वहाँ तीर्थयात्रियों को मक्का में प्रवेश के लिए क़ुरैश से वार्त्ता करनी पडी।

क़ुरैश के लोग एक बार फिर पूर्णतः पैगम्बर (सल्ल0) के व्यवहार से चकित रह गये जो धार्मिक. सांस्कृतिक अथवा युद्ध की प्रचलित रीतियों से मेल नहीं खाता था। अपनी शक्ति के नये शिखर पर आप निहत्थे मक्का आये थे और इस प्रकार वास्तव में आप किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का शिकार हो सकते थे यद्यपि परिस्थितियाँ उनके शत्रुओं पर और अधिक सर्वोच्चता प्राप्त करने की क्षमता प्रदान कर सकती थीं।

यद्यपि आप लोगों को नये धर्म की ओर आमन्त्रित कर रहे थे परन्तु आप अरब रीतियों के नियमों के सम्मान पर भरोसा करने में अपने आप को उनके आक्रमण से बचाने में संकोच नहीं करते थे। और ऐसा करके आपने क़ुरैश के लोगों को असमंजस में डाल दिया था क्योंकि उन्हें उनके सम्मान और अपनी प्रतिष्ठा की हानि (मुसलमानों को मक्का में प्रवेश की अनमति देकर) को भी बचाना था इस प्रकार महम्मद (सल्ल0) के रणनीतिक विकल्प लाभकारी सिद्ध हए।

सन्धि वार्त्ताएँ

क़ुरैश मुसलमानों को तीर्थ यात्रा की अनुमति न देने का निश्चय कर चुके थे क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण सांकेतिक दाव सम्मलित थे परन्तु यह भी वास्तविकता थी कि वह नहीं जानते थे कि मुहम्मद (सल्ल0) की वास्तविक नीयत क्या थी। उन्होंने एक दूत बुदैल. जिसका सम्बन्ध बनू खुजाअः कबीले से था और जिसका किसी भी कबीले से कोई झगडा नहीं था. अतः वह मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता था. वह पैगम्बर (सल्ल0) के पास गया जिन्होंने उसे आश्वस्त किया कि उनकी युद्ध करने की कोई नीयत नहीं है बल्कि वह मात्र अपने साथियों के साथ उमरः करना चाहते हैं. तथापि उन्होंने यह जोडते हुए कहा कि जो कोई पवित्र स्थल में प्रवेश के अधिकार का विरोध करेगा जो सभी कबीलों और परिवारों

को प्राप्त है तो वह उससे लडने के लिए तैयार हैं। यदि तीर्थयात्रियों को प्रवेश देने के लिए कुरैश को समय की आवश्यकता है तो वह हुदैबिया के स्थान पर उस वक्त तक प्रतीक्षा करेंगे जब तक कुरैश के लोग अपनी तैयारियाँ पूरी कर लें। बुदैल मक्का लौटे और उन्होंने परामर्श दिया कि कुरैश को चाहिए कि वह मुसलमानों को अन्दर आने दें परन्तु बुदैल का प्रस्ताव नीरसता से लिया गया। इसे करैश के सरदार अब जहल के बेटे इकरिमा ने सीधे ठकरा दिया।

उस समय तक वार्त्ता के चार प्रयास असफल हो चुके थे और कुरैश के लोग पहले से कहीं अधिक अटल दिखायी दे रहे थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने निर्णय लिया कि उनको अन्तिम प्रयास एक ऐसे व्यक्ति को भेजकर करना चाहिए जिसको मक्का में पर्याप्त सम्मान और सुरक्षा प्राप्त है।

अतः उन्होंने अपने दामाद उस्मान (रजि0) को चुना जिनके मक्का में ठोर कबायली सम्बन्ध थे और कोई व्यक्ति उन पर हमला करने की हिम्मत नहीं कर सकता था। उस्मान (रजि0) वहाँ गये और वास्तव में उनका भली-भाँति स्वागत हुआ। परन्तु उनको भी उसी इन्कार का सामना करना पडाः कि कुरैश मुसलमानों को उमरा नहीं करने देंगे। वह स्वयं यदि चाहें तो काबा की परिक्रमा कर सकते हैं परन्तु मुहम्मद (सल्ल0) और उनके लोगों को यहाँ अन्दर आने की अनुमति देने का प्रश्न ही नहीं उठता। उस्मान (रजि0) ने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उनके मिशन को आशा से अधिक समय लगा और तीन दिनों से पैगम्बर (सल्ल0) को उनके सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं मिला था।

यह अफवाह फैल गयी कि उस्मान (रजि0) की हत्या कर दी गयी। इस पैगम्बर (सल्ल0) को गहरा दुख पहुँचा। इस तरह से कुरैश की ओर से- पवित्र महीने के दौरान एक दूत की हत्या करना और अन्य कबीलों की तरह काबा की परिक्रमा के वैध ा अधिकार से रोकना- मसलमान इसे मात्र यद्ध की घोषणा के रूप में देख सकते थे। इससे आगे उन्हें इससे अधिक बरी स्थिति के लिए तैयार होना था।

वफादारी की प्रतिज्ञा

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने सभी साथियों को उपस्थित होने का आदेश दिया. और वह लोग तुरन्त आपकी तरफ आये। आप एक बबुल के पेड की जड पर बैठ गये और मुसलमानों को वफादारी और कृतज्ञता की प्रतिज्ञा लेने का आदेश दिया। इस संकेत के द्वारा उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रण किया कि वह लोग पैगम्बर (सल्ल0) के साथ ही रहेंगे परिणाम जो भी हों। वह लोग एक तीर्थयात्रा के लिए आये थे. निहत्थे थे. और अब उन्हें टकराव की अत्यधिक संभावना का सामना था जिसके लिए वह तैयार नहीं थे। पैगम्बर (सल्ल0) के साथ उनकी वफादारी की प्रतिज्ञा का अर्थ यह था कि उन्होंने फरार न होने और मृत्यु को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा ली थी। क्योंकि शक्ति का सन्तुलन पूर्ण रूप से उनके विरुद्ध था। पैगम्बर (सल्ल0) ने स्वयं अपने बायें हाथ को दायें हाथ में पकडा और उपस्थित मुसलमानों से कहा कि यह उस्मान (रजि0) के प्रण का प्रतिनिधित्व करता है. क्योंकि वह वापस नहीं आये हैं और पैगम्बर (सल्ल0) उनको मृतक समझ रहे थे।

हालाँकि. जैसे ही अन्तिम साथी ने अपना वचन पूरा किया था उस्मान (रजि0) अचानक प्रकट हो गये। पैगम्बर (सल्ल0) इस पर प्रसन्न हो गये. कुरैश कभी इतने कठोर नहीं रहे थे कि वह पवित्र महीनों के दौरान अहिंसा की रीति का सम्मान न करते। इस प्रकार कुरैश के साथ टकराव की संभावना कम हो गयी और पैगम्बर (सल्ल0) को सूचित किया गया कि कुरैश सरदारों ने अन्ततः एक नया दूत सुहैल को भेजा है ताकि व मुसलमानों से औपचारिक सन्धि को अन्तिम रूप दें। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनका स्वागत करने और उनके प्रस्ताव की जाँच करने का निर्णय लिया।

अब परिस्थितियाँ पूर्णतः भिन्न थीं. मुहम्मद (सल्ल0) अब अपने समुदाय और कुरैश के बीच शान्ति की शर्तो पर वार्त्ता प्रारम्भ करने वाले थे। उन्होंने यह समझकर वफादारी की प्रतिज्ञा की थी कि वह टकराव की स्थिति में पैगम्बर के साथ रहेंगे हालाँकि वह कमजोर स्थिति में थे। अब उनकी वफादारी की परीक्षा इसके लागू होने के माध्यम

से होने जा रही थी और उस सन्धि की शर्तें तय हो रही थीं जिसमें वह अपने आप को सशक्त स्थिति में देख रहे थे। कुरआन की आयत इस प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में यह है:

"अल्लाह ईमान वालों से प्रसन्न हो गया जबकि वह तुमसे वृक्ष के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे. अल्लाह ने जान लिया जो कछ उनके दिलों में था"।

(कुरआन. 48:18)

मसलमान अपने अधिकार की माँग कर रहे थे। उन्होंने पिछले यद्ध में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी अतः दब कर रहने का प्रश्न ही नहीं था।

रचयिता और रचनाएँ

पैगम्बर (सल्ल0) की मृत्यु के कई वर्षों बाद वह स्थान और बबूल का पेड जहाँ पैगम्बर (सल्ल0) बैठे थे और प्रत्येक मुस्लिम साथी से आपने कसम लेकर कृतज्ञता और वफादारी का प्रण लिया था. लोगों के लिए महत्वपूर्ण हो गया। कुछ लोग बबूल के पेड को पवित्र समझने लगे। मरीज उस पेड के नीचे निरोग होने के लिए बैठा करते थे। जब इस वृक्ष के नीचे बैठकर स्वस्थ्य होने की प्रथा प्रचलित हो रही थी और लोग लगभग इसकी पूजा करने लगे थे. हालाँकि इसकी शिक्षा न तो पैगम्बर ने दी थी और न पैगम्बर ने ऐसा किया था। यह प्रथा इस्लामी एकेश्वरवाद के प्रतिकूल थी क्योंकि इस प्रकार का कर्म पेड को अल्लाह का साझीदार बनाना था। इस्लामी एकेश्वरवाद की रक्षा करने और एकेश्वरवाद से विचलित न होने के लिए हजरत उमर (रजि0) ने उस पेड को उखाड दिया और कहा. "लोगों को चाहिए कि वह रचयिता की इबादत करें और रचनाओं की इबादत न करें"। हजरत उमर (रजि0) का यह कदम स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि इस्लाम में पैगम्बर (सल्ल0) की किसी विरासत और किसी निशानी को अल्लाह का साझीदार बनाने की गंजाइश नहीं है।

हुदैबिया की सन्धि

यह सन्धि मदीना राज्य और मक्का के कुरैश कबीले के बीच मार्च 628 ई0 तदनुसार छठी हिजरी में हुई थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कुरैश के दूत सुहैल का स्वागत किय जिनके साथ दो व्यक्ति मिकरज और हुवैडज थे। पैगम्बर (सल्ल0) के साथियों से कुछ दूर हटकर वार्त्ताएँ प्रारम्भ हुई और सन्धि की प्रत्येक धारा पर बहसें हुई। कभी कभी तीखी बहसें भी हुईं। जब सन्धि की शर्तें या धाराएँ अन्ततः तय हो गयीं तो पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने चचेरे भाई अली (रजि0) से उनको लिखने के लिए कहा। हजरत अली (रजि0) प्राकृतिक रूप से उस समझौते को प्रचलित इस्लामी दुआ बिस्मिल्लाह अल-रहम अल-रहीम (अल्लाह के नाम से जो दयावान और कृपाशील है) से प्रारम्भ किया। परन्तु सुहैल ने इस दुआ पर विरोध किया और कहा कि वह अल-रहमान को नहीं जानते और उन्हें यह दुआ लिखना चाहिए 'बिस्मिक अल्लाहुम्मा' (आपके नाम से ऐ अल्लाह) यही दुआ सभी अरब जानते थे (यहाँ तक कि मूर्तिपूजक भी अपने वास्तविक पूज्य को इसी प्रकार सम्बोधित करते थे)। पैगम्बर (सल्ल0) के कुछ साथियों ने तुरन्त हस्तक्षेप किया कि इस दुआ को परिवर्तन करने का प्रश्न ही नहीं उठता. परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) हस्तक्षेप किया और हजरत अली (रजि0) से कहा कि इस प्रकार लिखो ''बिस्मि अल्लाहम्मा''।

फिर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अली (रजि0) को लिखने का निर्देश दिया. ''यह सन्धि की शर्तें हैं जो अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और सुहैल बिन अम्र के बीच तय की जा रही हैं''। सुहैल ने फिर विरोध किया. ''यदि हम आपको अल्लाह का पैगम्बर जानते तो आपसे हम न लडते। इसकी बजाए इस तरह लिखिए ''मुहम्मद बिन अब्दल्लाह''। अली (रजि0) प्रचलित दआ पहले ही लिख चके थे। उन्होंने मानने से

इन्कार कर दिया और कहा कि वह ऐसा नहीं लिख सकते। पैगम्बर (सल्ल0) ने अली से कहा कि दिखाओं कहाँ वह वाक्याँश लिखा हुआ है मैं उसे स्वयं मिटा दूँ। फिर आपने वह लिखने के लिए कहा जिसका अनुरोध सुहैल ने लिखने के लिए किया था. जिसका अर्थ था अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद। इस पर हजरत अली (रजि0) और आपके अन्‍ साथियों को आघात लगा क्योंकि वह महम्मद (सल्ल0) के व्यवहार को समझ नहीं पा रहे थे।

इस सन्धि की शर्तों ने मुसलमानों को और अधिक चकित कर दिया क्योंकि वह इन शर्तों को दब कर किये हए समझौते की तरह देख रहे थे जो मसलमानों के लिए अत्यन्त प्रतिकूल थे।

यह सन्धि पॉच महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर की गयी थीः

1. मुसलमान इस वर्ष उमरा (तीर्थ यात्रा) नहीं करेंगे. इसके बजाए उनको अगले वर्ष हज यात्रा की अनुमति दी जायेगी और मसलमानों को वहाँ मात्र तीन दिनों के लिए ठहरने की अनुमति होगी।

2. दस वर्ष के लिए की गयी इस सन्धि को दोनों पक्ष मानेंगे और दोनों पक्षों के सदस्य सरक्षित रूप से इस क्षेत्र में यात्रा करने के लिए स्वतन्त्र होंगे।

3. जो कबीला अथवा परिवार दोनों में से किसी भी पक्ष के साथ सन्धि करेगा तो इस सन्धि की शर्तें तुरन्त उस पर लागू हो जायेंगी।

4. कोई भी मुसलमान यदि मक्का छोडकर मदीना जायेगा तो उसे तुरन्त मक्का के सरदारों के हवाले कर दिया जायेगा जबकि कोई व्यक्ति मदीना से फरार होकर मक्का में शरण लेगा तो उसे शरण दी जायेगी।

5. हथियार अपनी म्यानों से नहीं निकाले जायेंगे और न ही कोई किसी को धोखा देगा।

इसमें कुछ ऐसे प्रस्ताव थे जो स्पष्ट रूप से मुसलमानों के लिए अपमानजनक और उनके विरुद्ध प्रतीत हो रहे थे। परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें स्वीकार किया आपने कहा कि वह शान्तिपर्ण नीयत से आये हैं अतः मक्का वालों की माँगों को मानने के लिए तैयार हैं।

मदीना
दो शत्रओं के बीच

प्रसिद्ध इस्लामी कानूनविद् सरखशी एक महत्वपूर्ण बिन्दु की ओर संकेत करते हैं। वह कहते हैं कि खैबर मदीना के उत्तर में स्थित है जबकि मक्का दक्षिण में स्थित है। इस प्रकार मदीना दो शत्रुओं के मध्य घिरा हुआ था। खैबर के यहूदी और मक्का के कुरैश दोनों मदीना से युद्ध की स्थिति में थे। दोनों आपस में सहयोगी थे। दोनों में से किसी पर मुसलमानों द्वारा आक्रमण की स्थिति में वे एक-दूसरे की सहायता के लिए प्रतिबद्ध थे। उस स्थिति में दूसरा पक्ष मदीना पर आक्रमण करने के लिए विवश होता। यदि पैगम्बर (सल्ल0) खैबर पर चढाई करते तो मक्का वाले मदीना की ओर बढते। यदि पैगम्ब (सल्ल0) मक्का की ओर बढते तो मदीना के लोग खैबर से आक्रमण के लिए आशंकित होते।

इन परिस्थितियों में. एक चतुर सेनापति और एक सक्षम राजनीतिज्ञ एक पक्ष के साथ शान्ति रखने और दूसरे पक्ष को निष्क्रिय रखने का विवेकपूर्ण निर्णय लेता। इस स्थिति में खतरे से मुकाबला करना आसान होता। कुरैश की शर्तों के प्रति उदारतापूर्ण सहमति की यही मजबूरी थी जो ऐसा महसूस होती थी कि उनके ऊपर थोप दी गयी है। यह महत्वपूर्ण चुनाव करना था कि किस पक्ष के साथ शान्ति स्थापित करने का निर्णय लिया जाये। खैबर वालों के साथ शान्ति समझौता किया जाये अथवा मक्का वालों के साथ? खैबर के साथ शान्ति समझौते का प्रश्न नहीं था। बनू नजीर के यहूदी मदीना से निकाले गये थे। उनकी पहली माँग यह होती कि उन्हें मदीना शहर में वापसी की अनुमति दी जाये। वह पर्याप्त रूप से धनी थे। उनके लिए वित्तीय मुआवजा में कोई आकर्षण नहीं होता।

दूसरी तरफ मक्का के लोग पैगम्बर (सल्ल0) के निकट सम्बन्धी थे और अन्य प्रवासी जिन्होंने मदीना हिजरत की थी उनके भाई. चाचा. भतीजे आदि थे। इनके ऊपर आक्रमण करने की बजाए इनकी रक्षा करना और यहूदियों को अकेले छोड देना अधिक

उपयुक्त था। इसके अतिरिक्त मक्का वाले बद्र. उहद एवं खन्दक के युद्धों में तीन बार लगातार पराजयों से कमजोर हो चके थे। उनकी आर्थिक दशा बिगड गयी थी और उनका व्यापार प्रभावित हो चुका था।

अतः मुसलमानों के साथ शान्ति समझौता करने के लिए उन्हें सरलतापूर्वक राजी किया जा सकता था। अनेकों कारणों से मक्का के लोग मुसलमानों के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए निष्ठापूर्वक इच्छुक थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने अकाल के दौरान उनका दिल जीतने का प्रयास किया था।

फिर एक शर्त के अतिरिक्त जिसका उददेश्य प्रतिष्ठा और सम्मान की स्थापना करना था पैगम्बर (सल्ल0) ने हुदैबिया में अन्य सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया। इसमें एक धारा ऐसी थी जो आधी पंक्ति लिखी गयी थी: *''ला इस्लाल व ला इगलाल''* यह महत्वपूर्ण धारा थी इसका शाब्दिक अर्थ यह था कि *''हथियार म्यान से बाहर नहीं निकाले जायेंगे और धोखा नहीं दिया जायेगा''।*

मक्का और मदीना के लोगों ने वचन दिया था कि वह एक-दूसरे पर न आक्रमण करेंगे और न एक-दूसरे से लडेगे और न तो ये लोग किसी षडयन्त्र या धोखेबाजी से इस सन्धि के प्रति विश्वासघात करेंगे। दूसरे शब्दों में मक्का वालों ने यह वचन दिया कि अगर मुसलमान किसी तीसरे पक्ष से समझौता करते हैं तो वह तटस्थ रहेंगे। न कोई धोखा दिया जायेगा और न विश्वासघात होगा।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने इस एक मात्र प्रस्ताव के लिए मक्का वालों पर दबाव डालने में सफल रहे और इसके बदले आपने मक्का वालों द्वारा प्रस्तावित सभी शर्तों को उदारतापूर्वक मान लिया। आप दस वर्षों के लिए शान्ति समझौते पर सहमत हो गये। आपने मक्का वालों के व्यापारिक कारवाँ के लिए मदीना के रास्ते पारगमन की सुविधा प्रदान की। इसके बदले आपने भविष्य में मुसलमानों से किसी तीसरे पक्ष के साथ युद्ध में तटस्थ रहने की माँग की। मक्का की ओर बढने की बजाए आपने दुखी साथियों को हुदैबिया तक ही अपनी तीर्थ यात्रा सीमित रखने का आदेश दिया। वह लोग अत्यन्त निराश हो चके थे परन्त उन्होंने आपके आदेश का पालन किया।

बैचेनी

मुसलमान साथियों ने यह महसूस करना शुरु कर दिया कि इस सन्धि पर हस्ताक्षर से उन्हें ठगे होने का आभास हो रहा है और उन्हें काबा की परिक्रमा किये बिना वापस होना पडेगा।

उमर (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पास दौडे और उन्होंने प्रश्नों की ऐसी झडी लगायी मानो वह पूर्ण रूप से असन्तुष्ट थेः ''क्या आप अल्लाह के पैगम्बर नहीं? क्या हम सच्चाई पर नहीं? और क्या हमारे शत्रु गलत नहीं? हम इतने निर्लज्जतापूर्वक अपने धर्म के सम्मान के विरुद्ध झुक जाएँ?''। प्रत्येक प्रश्न का पैगम्बर (सल्ल0) ने शान्त भाव से उत्तर दिया। परन्तु यह उमर (रजि0) को सन्तुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं था. जो अत्यन्त क्रोध के कारण अब भयानक हो चुके थे. वह अबू बक्र (रजि0) की ओर सहायता के लिए मुडे। अबू बक्र (रजि0) ने उन्हें शान्त रहने का परामर्श दिया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि पैगम्बर (सल्ल0) का निर्णय सही था। उमर (रजि0) ने अपने आप को नियन्त्रित किया और खामोश रहे यद्यपि वह स्पष्ट रूप से आश्वस्त थे कि यह सन्धि अपमानजनक है।

मुसलमान यह दृश्य देखकर अत्यन्त दुख का अनुभव कर रहे थे। वह लोग इस कदम के पीछे पैगम्बर (सल्ल0) का विवेक नहीं समझ पा रहे थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने मुसलमानों को साहस और प्रतिष्ठापूर्ण व्यवहार की शिक्षा दी थी। और अब वह एक पक्षपातपर्ण समझौता स्वीकार कर रहे थे जिसे वह असहाय होकर देखने के लिए विवश थे।

जब पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से ऊँटों की कुर्बानी का आदेश दिया जो तीर्थ यात्रा के लिए एक पवित्र कर्म था तो प्रारम्भ में कोई भी साथी आपके आदेशपालन के लिए अपने आप को तैयार न कर सका. क्योंकि उनको गहरा आघात लगा था। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपना आदेश तीन बार दोहराया परन्त किसी ने प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

ऐसा पहली बार हुआ था जब पैगम्बर (सल्ल0) अपने मुसलमान साथियों की सामूहिक रूप से स्पष्ट अवज्ञा का सामना कर रहे थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) दुखी. निराश और अचम्भित हुए. आप अपने तम्बू में चले गये और अपनी पत्नी उम्मे सलमा (रजि0) को ताजा घटनाक्रम और ऊँटों की कर्बानी के सम्बन्ध में साथियों की अनिच्छा के बारे में बताया।

उन्होंने आपको सुना और फिर परामर्श दिया कि आप बुद्धिमानी और विवेक से काम लें। उन्होंने आपको बाहर जाकर बिना कुछ बोले अपने ऊँट की कुर्बानी क परामर्श दिया ताकि मात्र एक उदाहरण प्रस्तुत कर दें। ''ऐ अल्लाह के पैगम्बर. आप इन पन्द्रह सौ व्यक्तियों से ऐसा नहीं करवा सकते जिसे वह नहीं करना चाहते हैं। मात्र आप वह कर्त्तव्य पूरा करिये जो अल्लाह ने आपको सौंपा है। आप आगे बढिये और अपने अनुष्ठान को स्वयं पूरा करिये- एक खुले स्थान पर ताकि उनमें से प्रत्येक आपको देख सके। यह पर्याप्त होगा''। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनके परामर्श को सुना जो पूर्णतः सोचा-समझा निर्णय प्रतीत हो रहा था। आप अपने ऊँट के पास गये और दुआ पढी और उसकी कुर्बानी की। जब साथियों ने यह देखा. तो सभी उठे और एक के बाद एक ने ऐसा ही किया। तब पैगम्बर (सल्ल0) ने अपना सिर मडवाया और साथियों ने भी ऐसा ही किया।

उत्साहपर्ण आज्ञापालन व प्रतिभा

मुसलमान साथियों को शीघ्र ही मससुस होने लगा कि सन्धि के सम्बन्ध में उनका पहला दृष्टिकोण (प्रतिक्रिया) पूर्णतः अनुचित था और उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) के गहन आध यात्म. सटीक विवेकपूर्ण तर्क. असाधारण बुद्धिमानी और रणनीतिक प्रतिभा को पर्याप्त रूप से नहीं समझा था। आपने निशानियों पर ध्यान दिया और जब आपका ऊँट हुदैबिया नामक स्थान पर रुक गया और आगे बढने से इन्कार कर दिया तो आपको यह ज्ञान हुआ कि मुसलमान हुदैबिया के मैदान से उस वर्ष आगे यात्रा नहीं करेंगे। पहली चार वार्त्ताओं के असफल होने और कुरैश के अडियल रवैये ने आपको आश्वस्त कर दिया कि आपको धैर्य रखना चाहिए। आपको अपने स्वप्न पर गहरा विश्वास था। आपने काबा के परिसर में स्वयं प्रवेश करने का स्वप्न देखा था और यह घटित होने से नहीं रह सकता. यद्यपि उस क्षण आप यह नहीं कह सकते थे कि ऐसा कब होगा।

वफादारी की प्रतिज्ञा जो प्रारम्भ में मुसलमानों को संगठित रखने और शत्रु के विरुद्ध थी। उसे हमने देखा कि वह वफादारी की एक ऐसी प्रतिज्ञा बन गयी जो एक सन्धि ा की शर्तों को सम्मान और धैर्य के साथ मानने की माँग कर रही थी।

इसके अतिरिक्त जब कुरैश के दुत सुहैल ने मुसलमानों की दो दुआओं जिसका सम्बन्ध अल्लाह से और मुहम्मद (सल्ल0) के अल्लाह के पैगम्बर के रूप में स्थान से था. मानने से इन्कार कर दिया तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उसके दृष्टिकोण को सुना और उस विशेष क्षण में आपने अपने परिप्रेक्ष्य को बदलने और मामलों को मध्यस्थ के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया। जो कुछ सुहैल कह रहे थे. वह उनके दृष्टिकोण के अनुसार पूर्णतः उपयुक्त था। वास्तव में यह स्पष्ट था कि यदि कुरैश अल्लाह के पैगम्बर के रूप में आपकी हैसियत को स्वीकार कर लेते तो वह उनके विरुद्ध युद्ध न लडते। अतः समानता के आधार पर एक सन्धि. एक ऐसे तत्व का वर्णन संभावित रूप से नहीं कर सकती थी जिसको एक पक्ष सही समझता हो और विरोधी पक्ष के लिए वह प्रतिकल हो। पैगम्बर

(सल्ल0) के साथी जिनका पैगम्बर के प्रति सम्मान इतना गहरा था कि वह दुसरे पक्ष की सच्चाई को तुरन्त समझने में असमर्थ रहे। परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) का व्यवहार और सन्धि ा की शर्तों के प्रति आपका तर्कसंगत दष्टिकोण आध्यात्मिक और बौद्धिक शिक्षाओं से परिपर्ण था।

महत्वपुर्ण बिन्दु यह था कि हृदय की सच्चाई के साथ सम्बन्ध को- गहन आध यात्म- कभी भावनात्मक और उत्साहपुर्ण अंधेपन में परिवर्तित नहीं होने देना चाहिए। परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए सदैव तर्क का आह्वान किया जाना चाहिए. व्यक्ति को अपनी प्रतिक्रिया को नियन्त्रित रखना चाहिए और दुसरों के दुष्टिकोण से ध्यानपुर्ण और तर्कसंगत सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करना चाहिए। जो मुस्लिम आस्था के एक मात्र दुष्टिकोण से अस्वीकार्य समझौता प्रतीत हो रहा था वह शान्ति समझौता की रूपरेखा तैयार करने वाले दोनों पक्षों के पारस्परिक दष्टिकोणों के अनसार तर्कसंगत और समानता के दुष्टिकोण से उपयुक्त था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मुसलमानों के सम्मान और प्रतिष्ठा को बचाने वं लिए कुरैश का अपमान नहीं कर सकते थे. अथवा वह खन्दक की विजय से उत्पन्न नयी राजनैतिक परिस्थितियों का लाभ उठाने का प्रयास नहीं कर सकते थे। उस वर्ष मक्का में प्रवेश न होने की सहमति देने में कुरैश की दुर्बलता को ध्यान में रखा गया था और इससे उनकी प्रतिष्ठा को बचाया गया था और इसके द्वारा दीर्घ अवधि के लिए शान्ति की स्थापना में मदद मिली। ऐसी शान्ति जिसमें दोनों पक्षों के सामान्य हितों को ध्यान में रखा गया था। यह शान्ति शीघ्र ही मुसलमानों के हित में परिवर्तित होने जा रही थी।

सन्धि की जिन धाराओं में यह बात कही गयी थी कि मदीना की ओर प्रवास करने वालों को वापस कर दिया जायेगा और जो मुसलमान मदीना छोडकर मक्का जायेंगे उनको शरण दी जायेगी। इसने मुसलमानों के हितों को बहुत कम प्रभावित किया। कोई आस्था न रखने वाला जो मदीना छोडता वह मुस्लिम समुदाय के लिए अनुपयोगी था और जिस मक्कावासी को अपने परिवार की ओर वापस भेज दिया गया हो उसकी आस्था- कठिनाईयों के बावजद- इस बलात निर्वासन से विचलित नहीं हो सकती थी।

एक स्पष्ट विजय

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) का अल्लाह पर भरोसा. सच्चाई पर उत्साहपर्वक अटल रहना और आपकी असाधारण रूप से तीव्र बुद्धि ने आपको मक्के वालों के साथ दस वर्षीय शान्ति समझौता करने के लिए योग्य बनाया जिससे अगले वर्ष काबा जाकर हज करने की आशा की किरण दिखाई दे रही थी। आपके अधिकतर साथी विशेष रूप से हजरत उमर (रजि0) मात्र अल्पकालिक परिणाम पर ध्यान दे रहे थे और यह महसस कर रहे थे कि इसका अर्थ अपमान और पराजय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अन्य साथियों की तरह वह पैगम्बर (सल्ल0) के विरुद्ध अपनी कठोर प्रतिक्रिया पर दुखी थे परन्तु वह इस विचार पर आश्वस्त रहे कि यह समझौता कुरैश के समक्ष आत्मसमर्पण जैसा है। मदीना वापस होते समय उनसे बताया गया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनको बुलाया है तो वह डरे हुए थे वि पैगम्बर (सल्ल0) उनके अनुपयुक्त दृष्टिकोण पर आरोप लगायेंगे अथवा इससे भी बुरा यह हो सकता है कि उनके व्यवहार की आलोचना करते हुए अल्लाह की ओर से कोई आयत अवतरित हुई हो।

हजरत उमर (रजि0) ने पैगम्बर (सल्ल0) को इस दशा में पाया कि आपका चेहरा दमक रहा था और आपने बाद में बताया कि एक आयत अवतरित हुई है जो उमर (रजि0) की आशा से पूर्णतः भिन्न है।

> आसमानी शब्दों में घोषणा की गयी *"निस्सन्देह हमने तुमको प्रत्यक्ष विजय प्रदान कर दी"* (कुरआन. 48:1)

फिर इस सन्देश में उस वफादारी की प्रतिज्ञा का उल्लेख इस प्रकार किया गया।

> *"अल्लाह ईमान वालों से प्रसन्न हो गया जबकि वह तुमसे वृक्ष के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे. अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। अतः उसने उन पर सकीनत (प्रशान्ति) अवतरित की और उनको पुरस्कार में एक शीघ्र प्राप्त होने वाली विजय प्रदान कर दी"*। (कुरआन. 48:18)

यह सब कुछ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के प्रारम्भिक स्वप्न की रोशनी में स्मरण कराया जा रहा था। जिसकी सत्यता की पुष्टि हो रही थी।

''निस्सन्देह अल्लाह ने अपने सन्देष्टा को सच्चा स्वप्न दिखाया जो वास्तविकता के अनुरूप था। निस्सन्देह अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिद-ए हराम में अवय प्रवेश करोगे. शान्ति के साथ. बाल मुँडवाते हुए अपने सिरों पर और कतरवाते हुए. तुमको कोई डर न होगा। अतः अल्लाह ने वह बात जान ली जो तुमने नहीं जानी. अतः इससे पहले उसने एक विजय दे दी''। (कुरआन. 48:27)

पिछली घटनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया जो पैगम्बर (सल्ल0) व साथियों के अपने दृष्टिकोण से पूर्णतः विपरीत थाः युद्ध के लिए तैयार होने के लिए वफादारी की प्रतिज्ञा. वास्तव में शान्ति के लिए विश्वसनीयता की प्रतिज्ञा थी। जो चीज पराजय दिखायी दे रही थी उसे *'स्पष्ट विजय'* के रूप में प्रस्तुत किया गया और जिस स्वप्न को भुलाया जा चुका था उसे भविष्य में निश्चित रूप से सत्य सिद्ध होने वाला घोषित किया गया था. *'तुम अवश्य उस पवित्र मस्जिद में प्रवेश करोगे'!* मुसलमानों की बहुत बडी संख्या ने यह सन्धि जो आशाएँ प्रदान कर रही थी उसे न तो समझा और न देखा और उसका अनमान लगाने में असफल रहे थे।

इस सन्धि पर हस्ताक्षर एक बार फिर आध्यात्मिकता का विशेषाधिकार सिद्ध हो रहा था जिसमें विशेष रूप से बुद्धि और विवेक के मूल्य की शिक्षा दी गयी थी। जो विशेषताएँ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के व्यक्तित्व को आदर्श बना रही थीं वह दृष्टिकोणों को सनना. अपने दष्टिकोण को बदलना. दसरों के सम्मान के प्रति संवेदनशील होना और दरदर्शी होना थीं।

उम्मे सलमा का समाधान

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने जीवन के एक अन्य क्षेत्र में भी एक आदर्श थे। जब उनके साथियों ने ऊँटों की कुर्बानी से इन्कार कर दिया. वह अपनी पत्नी उम्मे सलमा (रजि0) के पास गये. जिन्होंने उनकी बात सुनी और साँत्वना दी। उन्होंने उनको भरोसा दिलाया और उनकी समस्या का समाधान सुझाया। यह वार्त्ता और यह समझ पैगम्बर (सल्ल0) के अपनी पत्नियों के प्रति व्यवहार के तत्वों को प्रकट करती है। जैसा कि कई वर्षों पहले उन्होंने अपने आस-पास की औरतों के समक्ष समस्याओं को प्रकट करने. उनसे परामर्श करने. उनके साथ टहलने और उनके विचारों को अपनाने में कभी संकोच नहीं किया। ऐसे समय में जब पूरे समुदाय का भविष्य सपनों. वफादारी की प्रतिज्ञाओं. शान्ति संन्धियों के बीच झूल रहा था वह एक साधारण मनुष्य की भाँति अपनी पत्नी की ओर गये और उन्हें उनके प्यार. भरोसा और परामर्श की आवश्यकता बतायी- यह सम्पर्ण मानवता के लिए एक आदर्श है

उम्मे सलमा (रजि0) एक पवित्र. उघमी प्रवृत्ति और विशेष रूप से सुन्दर थीं और आपको पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन में पर्याप्त प्रतिष्ठा और भूमिका प्राप्त थी। और हजरत आयशा (रजि0) ने स्वीकार किया है कि वह उम्मे सलमा (रजि0) से ईर्ष्या रखती थीं। जिसका कारण यह प्रतीत होता है कि पैगम्बर (सल्ल0) संभवतः उनके परामर्शों को सनते और उनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित होते थे।

मुसलमान मदीना लौट आये और दैनिक जीवन अपनी पटरी पर वापस आ गया. जो पहले से बहुत कम तनावपूर्ण वातावरण में प्रारम्भ हुआ। इस सन्धि ने मुसलमानों को बाहरी सुरक्षा व्यवस्था को घटाने का अवसर दिया और उन्हें मुस्लिम समुदाय के आन्तरिक मामलों. प्रगति और इस्लाम को ऐसे क्षेत्रों में फैलाने का अवसर प्रदान किया जहाँ इस्लाम अभी तक नहीं पहँचा था।

✵

इस्लाम स्वीकार करने वालों का सैलाब

इस्लाम का सन्देश अरब प्रायद्वीप के चारों कोनों में फैल चुका था। प्रत्येक कबीले के लोगों के हृदय में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के धर्म ने स्थान बना लिया था। पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व का ऐसा ही आकर्षण था।

इस्लाम की ओर जो बौछार आ रही थी उसे स्वीकार करने से रोकने में अनेक रुकावटें काम कर रही थीं। बहुत से कबीले और परिवार जिन्होंने इस्लाम की सच्चाई को समझ लिया था लेकिन वह इस्लाम धर्म स्वीकार करने में संकोच कर रहे थे. क्योंकि उन्हें डर था कि इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा करने का अर्थ प्रबल कुरैश सरदारों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने जैसा था। अतः वह लोग ऐसा कोई भी कदम उठाने में संकोच कर रहे थे जिससे कुरैश क्रोधित होते हों। उन्हें यह भी भय था कि कुरैश से मित्रवत सम्बन्धों के कारण जो उन्हें व्यापारिक लाभ प्राप्त हो रहे हैं. वह समाप्त हो जायेंगे।

हुदैबिया की सन्धि ने ऐसे सभी परिवारों और कबीलों में स्फुर्ति उत्पन्न कर दी। इस सन्धि ने सम्पूर्ण प्रायद्वीप में युद्ध को समाप्त करके शान्ति का एक नया युग प्रदान किया था। अब दोनों पक्ष सक्रिय मतभेदों को समाप्त करने और दस वर्षों के लिए आपस में शान्ति स्थापित करने के लिए वचनबद्ध थे। इस स्थिति ने विरोध के भय को दूर कर दिया। अब कुरैश के लोग इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों के विरुद्ध कोई कदम उठाने योग्य न रहे। अब इस्लाम स्वीकार करने वालों को रोकने वाली कोई चीज शेष न रही। यह ऐसी स्थिति थी मानो किसी दुर्ग के द्वार पर एक बडी भीड एकत्र है जिसने अपने

द्वार को बन्द कर रखा है। अब वह द्वार अचानक खल गया और लोग अन्दर जाने के लिए दौड पडे

मुसलमानों ने अपने किसी अभियान की तुलना में हुदैबिया की इस सन्धि से अधिक लाभ उठाया। इस सन्धि पर हस्ताक्षर होने के दो वर्षों के अन्दर ही हजारों लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और जो लोग बाड के किनारे बैठे थे वह भी इस्लाम की बढती स्वीकार्यता में सम्मिलित हो गये. क्योंकि इस्लाम अपने आप को समाज की सबसे बडी संगठन शक्ति सिद्ध कर रहा था। यह इससे भी प्रमाणित होता है कि पैगम्बर (सल्ल0) मात्र 1.400 लोगों के साथ हुदैबिया गये थे परन्तु जब दो वर्ष के बाद मक्का को स्वतन्त्र करने के लिए गये तो आपके साथ 10.000 व्यक्ति निकले थे

जो नये लोग इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहे थे. उनको नये धर्म के सिद्धान्तों की शिक्षा देने की आवश्यकता थी और उनका इस्लामी समाज में समावेश करना और इस्लामी शिक्षा को सुनियोजित और संगठित करना था। अरब प्रायद्वीप के अत्यन्त प्रभावशाली और शक्तिशाली व्यक्ति इस्लाम स्वीकार करने वाले हजारों लोगों में सम्मिलित थे जिनको पहिचाना नहीं जा सकता था वह मदीना आये अथवा वह इस शहर में बसने के लिए आये।

महान शिक्षा

हुदैबिया की सबसे बडी शिक्षा यह है कि व्यक्ति को धैर्य खोने से बचना चाहिए और घटनाओं और मामलों का निर्णय उनके प्रत्यक्ष पहलु से ही नहीं करना चाहिए। हुदैबिया की प्रतिकुल सन्धि मुसलमानों के लिए महान अवसर प्रदान कर रही थी जिसे गहर सुझ-बुझ वाले व्यक्ति ही समझ सकते थे। इस सन्धि ने कुटनीति में एक नयी शिक्षा प्रस्तुत की। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसे अपने साथियों और अनयायियों को धैर्य की दीक्षा देने के लिए साधन के रूप में प्रयोग किया

हुदैबिया के सम्बन्ध में इब्ने असाकिर ने हजरत अबु बक्र (रजि0) की कु टिप्पणीयों को दर्ज किया है। उन्होंने कहा, ''यह सबसे महान इस्लामी विजय थी''। और उन्होंने कहा, ''यद्यपि उस दिन लोग इतने अल्पदृष्टि थे कि वह मुहम्मद (सल्ल0) और उनके स्वामी के बीच रहस्यों को नहीं समझ सकते थे। लोग धैर्यहीन थे परन्तु अल्लाह धैर्यहीन नहीं। वह मामलों को उनके प्राकृतिक परिणाम की ओर उस समय तक ले जाता है जब तक वह उस चरण में न पहुँच जायें जहाँ वह चाहता है''। यह स्पष्ट है कि लोग इस दुनिया में क्षणिक सफलता चाहते हैं, परन्तु यथार्थवाद ही इस संसार में सफलता की कंजी है। लोग क्षणिक सफलता चाहते हैं, लोग इसे प्राप्त करने के लिए लम्बे चरणों से गजरना नहीं चाहते।

अरब सीमा के पार अन्य शासकों तक

सन्धि होने के बाद वाले वर्ष में मुसलमानों की संख्या दुगनी हो गयी थी। शान्ति समझौतों के उन महीनों में पैगम्बर (सल्ल0) ने पडोसी साम्राज्यों. राज्यों और राष्टों को इस्लाम की ओर बुलाने के लिए पत्र लिखे। अपनी पैगम्बरी की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए एक चाँदी की महर बनायी गयी थी जिस पर ''अल्लाह के पैगम्बर महम्मद'' उकेरा हआ था।

इस प्रकार. इस्लाम स्वीकार करने से पहले हब्शा के (रजि0) नेगस ने पैगम्बर (सल्ल0) का एक नया पत्र प्राप्त किया। (और उसने उम्मे हबीबा (रजि0) के साथ पैगम्बर (सल्ल0) के विवाह में प्रतिनिधित्व करने के लिए सहमति भी दी।) मुहम्मद (सल्ल0) ने फारस के (रजि0) खुसरो. हिरक्ल. रोमन सम्राट. मिस्र के (रजि0) मुकोकिस. सवा के बेटे मुंजिर. बहरैन के (रजि0) . अल हारिस. जो अबी शिम्र अल-गस्सानी का बेटा था जिसने सीरिया के बाहरी क्षेत्रों में स्थित कछ भाग पर शासन किया था. के पास इस्लाम का आह्वान करते हुए पत्र लिखे।

इन पत्रों की सामग्री लगभग एक ही थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने स्वयं को अल्लाह के पैगम्बर के रूप में परिचित कराया. उन्हें अल्लाह की एकता को याद दिलाया और उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया। अगर वह इसे अस्वीकार करते तो वह उन्हें अल्लाह के सामने अपनी समस्त प्रजा को भटकाने का जिम्मेदार ठहराते।

राजाओं और शासकों ने इन पत्रों पर अलग-अलग प्रकृत्ति की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कीं। कछ लोगों (नेगस. सवा के बेटे मजिंर) ने सन्देश को स्वीकार किया। जबकि अन्य

शासकों (मुकोकिस. हिरक्ल) ने सम्मान व्यक्त किया और इस्लाम स्वीकार करने अथवा मुसलमानों से युद्ध करने की इच्छा व्यक्त नहीं की। और अन्य (अबी शिम्र अल-गस्सानी के बेटे ने) सन्देश को ठुकरा दिया और आक्रमण की धमकी दी। तथापि सन्देश सभी लोगों तक पहुँच गया और मुस्लिम समुदाय मदीना में बसा रहा और उसे एक धार्मिक पहिचान प्राप्त हो गयी। इसे एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में सम्मान भी प्राप्त हो गया। इस समुदाय के नायक मुहम्मद बिन अब्दल्लाह एक पैगम्बर थे। जिनके शासन की रूपरेखा अल्लाह ने प्रदान की थी।

हुदैबिया की सन्धि वास्तव में एक विजय थी और यह संसारवालों के लिए एक द्वार खोल रही थीः युद्धों ने मुस्लिम समुदाय की सम्पूर्ण ऊर्जा को शोषित कर लिया था। वह समाज अपनी रक्षा करना चाहता था और अपना जीवन बचाना चाहता था।

अब परिस्थितियाँ बदल गयी थीं और पैगम्बर (सल्ल0) इस शान्तिपूर्ण स्थिति में अन्ततः इस्लाम के सन्देश का प्रसार करने का अवसर प्राप्त कर चुके थे। यह सन्देश अल्लाह की एकता का सिद्धान्त था जो मानवता को संभावित सांसारिक हितों अथवा शक्तियों से स्वतन्त्र करता था. ताकि उन्हें आध्यात्मिक शिक्षाओं. नैतिकता और मूल्यों की ओर ले जाए जिनके लिए उन्हें निष्ठावान होना चाहिए। अरब प्रायद्वीप पर अब जो शान्ति फैल चुकी थी उसने परिस्थितियों को बदल दिया था और अब अधिक से अधिक परिवार इस्लाम के सन्देश के तत्व को आत्मसात् कर सकते थे। कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया. कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किये बिना इसका सम्मान किया और कुछ लोगों ने इससे युद्ध किया। परन्तु जो कुछ उन्होंने किया वह पूर्ण चेतना के साथ किया और उन्होंने मात्र स्वामित्व. सम्पत्ति और सत्ता के लिए कोई कदम नहीं उठाया।

पैग़म्बर (सल्ल0) के यग में भारतीयों पर प्रभाव

बाज़न

बलचिस्तान तट के निकट एक भारतीय मल का शासक था जिसका शासन अरब सागर के द्वीपों तक फैला हआ था और जिसे फारसी या ईरानी (रजि0) के आदेशों का पालन करना पडता था। जब उसे सन 628 ई0 में सचना मिली कि ईरानी (रजि0) की हत्या हो चकी है तो उसने तरन्त इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। हदीसों और अन्य रिवायतों से पता चलता है कि उसकी परी सेना जो कि अधिकतर भारतीय थे. ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। प्रबल सम्भावना यह है कि बाजन पलकिसन के राजकमारों में से एक थे।

कन्नौज के राजा सर्बातिक

अब सईद मजफ्फर के अनसार. हाफिज बिन हज्म ''सर्बातिक'' जिनके बारे में कहा जाता है कि वह कन्नौज के (रजि0) थे और उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) से तीन बार भेंट की। दो बार मक्का में और एक बार मदीना में। उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उनका कहना था कि पैगम्बर (सल्ल0) अत्यन्त सन्दर थे।

बाबा रत्न

वह पंजाब के भंटिडा नामक स्थान के एक सन्त थे। उन्होंने भी पैगम्बर (सल्ल0) को देखने का दावा किया था और पैगम्बर (सल्ल0) के जीवनकाल में ही उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था।

मालाबार के राजा समरी

मालाबार के राजा समरी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) द्वारा चाँद के दो टकडे करने की घटना को देखा था। इस घटना ने उनको पैगम्बर के सम्बन्ध में जानने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने अरब की यात्रा की और पैगम्बर (सल्ल0) के हाथ पर इस्लाम धर्म स्वीकार किया और भारत वापस आते समय उनका देहान्त हो गया। उन्होंने अपने उत्तराधिकारियों को मसलमानों की सहायता करने की वसीयत की थी जिससे पश्चिमी तट पर हजारों लोगों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने में सहायता मिली।

17

पैगम्बर (सल्ल0) गैर मस्लिमों के साथ

इस्लाम मानव समाज में सहयोग मेल-जोल. वार्त्ता और सहनशीलता का अनुमोदन करता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने गैर मुस्लिमों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक. आर्थिक और राजनैतिक सहयोग स्थापित रखा: उन्होंने उनके साथ राष्टीय. सामुदायिक और सांस्कृतिक मामलों में सहयोग जारी रखा। पैगम्बर (सल्ल0) का दयालुता का उत्कृष्ट व्यव मुसलमानों और गैर मुस्लिमों के साथ समान था। मानव समाज के प्रति इस्लामी व्यवहार का वर्णन करने के लिए इनमें से कछ महत्वपर्ण बिन्दओं को यहाँ प्रस्तत किया जा रहा है।

मक्का के ग़ैर मुस्लिमों के साथ सम्बन्ध

गैर मुस्लिम व्यापारिक साझीदार

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) युवाअवस्था से ही साझेदारी के आधार पर व्यापार में लगे हुए थे। आप मक्का के व्यापारियों के सामान लेकर सीरिया और यमन जाया करते थे और लाभ में हिस्सा लिया करते थे। एक धनवान विधवा खदीजा (रजि0) से आपके विवाह के बाद पति-पत्नी संयुक्त रूप से व्यापार करते थे। पैगम्बरी का दायित्व प्राप्त करने के बाद आपने अपना समय पूर्ण रूप से इस्लाम के उद्देश्य के लिए न्यौछावर कर दिया। आपके पास व्यापार जारी रखने के लिए समय न था। अतः आप अपने सामान बडे कुरै व्यापारियों और गैर करैश दलालों के द्वारा बाजार भेजा करते थे। इससे आपकी आर्थिक

स्थिति बेहतर हो गयी। अपनी व्यापारिक गतिविधि के अंग के रूप में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने सामान एक गैर मुस्लिम अबू सुफियान के साथ सीरिया भेजते और अच्छे लाभ प्राप्त करते। आप व्यापारी के रूप में अबू सुफियान की ईमानदारी और व्यापारिक समझदारी पर भरोसा करते थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के इस्लामी मिशन की जानकारी होने के बाद भी अबू सुफियान ने पैगम्बर (सल्ल0) के साथ व्यापार और सामाजिक सम्बन्ध ाों को नहीं तोडा था।

इब्ने कसीर ने रिवायत किया है कि: एक बार अबू सुफियान अपने मित्र उमैय्या के साथ सीरिया और यमन की व्यापारिक यात्रा पर गये और पॉच महीने के बाद मक्का वापस आये। लोग अपने निवेशों के सम्बन्ध में पूछने के लिए उनसे मिले. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) भी उनके पास गये. उस समय अबू सुफियान की पत्नी हिन्दः अपने बच्चों के साथ खेल रही थीं। पैगम्बर (सल्ल0) ने अबू सुफियान को अभिवादन किया और यात्रा से सुरक्षित वापसी पर मुबारकबाद दी। आप (सल्ल0) ने उनकी यात्रा और वहाँ ठहरने के सम्बन्ध में उनसे वार्त्ता की परन्तु अपने लाभ के सम्बन्ध में कोई प्रश्न नहीं पूछा। जब वह वापस आये तो अबू सुफियान ने हिन्दः से कहा. ''मैं इस व्यक्ति की उत्कृष्टता पर चकित हूँ। मैं इसे पसन्द करता हूँ। प्रत्येक कुरैश जिसने मुझे सामान दिया था उसने उनके सम्बन्ध में पूछा। परन्तु मुहम्मद ने मुझसे ऐसा कोई प्रश्न नहीं पूछा'' . थोड़ी ही देर बाद अबू सुफ़ियान काबा गये और वहाँ पैग़म्बर (सल्ल0) से मिले। उन्होंने पैग़म्बर (सल्ल0) के लाभांश के सम्बन्ध में बताया और कहा कि उ वह प्राप्त कर लें। अबू सुफ़ियान सामान्य रूप से जो कमीशन लिया करते वह लेने से इन्कार कर दिया। पैग़म्बर (सल्ल0) ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अबू सुफ़ियान अपना निर्धारित कमीशन लेने के लिए विवश हो गये.

बाद में उस समय जब पैग़म्बर (सल्ल0) व्यक्तिगत रूप से इस्लाम का प्रचार करने में व्यस्त थे। अबू सुफ़ियान सीरिया की व्यापारिक यात्रा से वापस आये। वह वहाँ पैग़म्बर (सल्ल0) और अन्य व्यक्तियों के सामान ले गये थे. जब पैगम्बर (सल्ल0) को इस सम्बन्ध में मालूम हुआ तो आपने कहा कि अब सफियान ने व्यापारिक मामलों में ईमानदारी से काम किया होग

व्यापारिक सम्बन्ध

अर्थव्यवस्था किसी समाज के सामाजिक जीवन का मूल आधार है। धन सम्पूर्ण समाज के लिए रक्त संचार जैसा है कि उसपर सम्पूर्ण समुदाय का जीवन निर्भर होता है। यदि लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हैं अथवा दूसरों पर निर्भर हैं तो उनका जीवन कठिनाई के निकट हो जाता है। मुहम्मद (सल्ल0) और मक्का के कुछ मुसलमान मौलिक रूप व्यापारी थे। और आर्थिक. सामाजिक और सामदायिक जीवन में धन के महत्व भली-भाँति अवगत थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और आपके व्यापारी साथियों ने अपने पैरों पर खडे होने और आर्थिक जीवन को बेहतर बनाने का संकल्प लिया था। उन्होंने अपनी व्यापारिक गतिविधियों के लिए एक योजना बनायी और इस पर व्यवस्थित ढंग से कार्यरत थे।

अपने व्यापारिक साझीदार अबू सुफियान के अतिरिक्त पैगम्बर (सल्ल0) के अन्य कुरैश और अरब कबीलों के व्यापारियों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। गैर मुस्लिमों में उनके मुख्य व्यापारिक सहयोगी हकीम. अब्दुल्लाह (अबू हमसा के बेटे). अल-तैमी अल-साइब और कैस थे। अल-बगदादी और पैगम्बर की अन्य जीवनी लिखने वालों ने कुरैश के व्यापारिक साझीदारों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक लिखा है। अल-बगदादी 58 मस्लिम और गैर मुस्लिम व्यापारिक साझीदारों का उल्लेख करते हैं।

पैगम्बर (सल्ल0) के साथियों में अब्दुल रहमान बिन औफ के गैर मुस्ति व्यापारिक साझीदार थे। उनके घनिष्ठ मित्र और साझीदार उमय्या बिन खल्फ थे जो मक्का के बडे व्यापारी थे और इस्लाम विरोधी थे। कुरैश सरदार उत्बा का बेटा अल-वलीद. अब्बास (रजि0) का मित्र और व्यापारिक साझीदार था। उस्मान और रबीआः बिन हारिस मित्र और व्यापारिक साझीदार थे। अब्बास और अबू सुफियान अच्छे व्यापारिक साझीदार थे। वह लोग अपनी मृत्यु तक घनिष्ठ मित्र. साझीदार और सहयोगी रहे। युद्धों ने उनके सम्बन्ध ों को प्रभावित नहीं किया। न ही धार्मिक मतभेदों ने उन्हें प्रभावित किया।

वैवाहिक सम्बन्ध

मक्की दौर में मस्लिम और गैर मस्लिम करैश के बीच असाधारण वैवाहिक सम्बन्ध के उदाहरण मिलते हैं। पैगम्बर (सल्ल0) की सबसे बडी बेटी जैनब (रजि0) का विवाह अबल आस से हआ था. अबल आस खदीजा (रजि0) का प्यारा भतीजा था। इब्ने हिशाम के अनसार अज्ञानताकाल में यह रिश्ता हजरत खदीजा (रजि0) ने तय किया था और पैगम्बर (सल्ल0) को भी पसन्द था।

इब्ने सअद एक रुचिकर और महत्वपर्ण रिवायत करते हैं कि प्रारम्भ में हजरत आयशा (रजि0) का विवाह मक्का के एक सरदार जबैर बिन मतइम से तय था। अब तालिब की मत्य के बाद वह मतईम ही थे जिन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) को सरक्षा कवच प्रदान किया। तथापि बाद में मतईम और उनके परिवार ने अपनी पत्रवध के रूप में अपने परिवार में एक मस्लिम लडकी को लाने से मना कर दिया क्योंकि वह उनके परिवार में इस्लाम का प्रचार कर सकती थीं। यह घटना एक बार फिर दोनों समदायों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध ों की ओर संकेत करती है।

कुरैश बहुसंख्यकों और मुस्लिम अल्पसंख्यकों की साझा सरकार

जिस समय पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का उदय हुआ. कुरैश कबीले के पास बारह महत्वपूर्ण राजनैतिक और सामाजिक पद थे और यह बारह महत्वपूर्ण कुरैश परिवारों को पैतिक विरासत के रूप से प्राप्त हुए थे। उनमें से कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। उदाहरण के रूप में अबु बक्र (रजि0) सबसे पहले मुसलमान थे। फिर उमर (रजि0) ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया. अब्बास (रजि0) प्रारम्भ में मुसमान हुए. जबकि उस्मान (रजि0) और खालिद (रजि0) भी इस्लाम की परिधि में प्रवेश कर गये। इन कुरैश सरदारों में से लगभग आधे लोगों ने अपनी पैतिक आस्था को छोड दिया था और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। इसके बाद भी उन्होंने अपना पद न्हीं छोडा था। दसरे शब्दों में

मक्का के कट्टर सरदारों ने उनको पदच्युत नहीं किया था। मुसलमान होने के बावजूद वह लोग अपने कबीले के मामलों की देख-भाल करते रहे और मदीना प्रवास तक वह मक्का के सरदारों के साथ सहयोग करते रहे। इस प्रकार मक्का की राजनीति मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों पदाधिकारियों पर आधारित एक साझा सरकार थी। यह व बहसंख्यकों और मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की मिली-जुली सरकार थी। ।

मुहम्मद (सल्ल0) सदैव अपने गैर मुस्लिम भाईयों के साथ राजनैतिक. सामाजिक. सांस्कृतिक और आर्थिक मामलों में मैत्रीपर्ण और सौहार्दपर्ण सम्बन्ध बनाने का माग अपनाते थे। करैश भी अपने हितों को ध्यान में रखते हुए यही मार्ग अपनाते थे।

सामाजिक सम्बन्ध

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के भोज

इस्लाम का सार्वजनिक रूप से प्रचार-प्रसार करने का आदेश प्राप्त करने के बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने बहुसंख्यक कुरैश के गैर मुस्लिमों के लिए सामाजिक सम्बन्धों को बेहतर बनाने और इस्लाम का प्रसार करने के लिए भोज का आयोजन किया। यह अरब की सामाजिक परम्पराओं और पैगम्बर (सल्ल0) के नियमित व्यवहार का प्रकटीकरण था। इस्लाम की शिक्षा के साथ यह प्रबल सामाजिक परम्परा बन गयी। हजरत अबू बक्र (रजि0) ने हजरत उस्मान (रजि0). जबैर (रजि0). तलहा (रजि0). अब्दल रहमान (रजि0). सअद (रजि0) को इनके इस्लाम धर्म स्वीकार करने से पहले आमन्त्रित किया था।

दासों को खरीदना और मुक्त करन

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) गैर मुस्लिम दासों को उनके अत्याचारी स्वामियों से खरीद कर मुक्त कराते और उन्हें स्वतन्त्र कर देते। वह स्वतन्त्र दासों को समान प्रतिष्ठा प्रदान करते। पैगम्बर (सल्ल0) का सज्जनतापूर्ण व्यवहार उनके दर्द के लिए मरहम का काम करता। यह सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता था कि कुछ सम्पन्न मुसलमान साथियों ने अपने दासों को स्वतन्त्र कर दिया था। निस्सन्देह यह उनकी ओर से एक शुभ संकेत था। तथापि गहन अध्ययन से यह बात मालम होती है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की यह रणनीति

थी कि उन्हें उनके अत्याचारी स्वामियों से खरीद कर मुक्त किया जाना चाहिए ताकि उन्हें शोषण से बचाया जा सके। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने ही सम्पन्न मसलमानों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने दासों को खरीदने और मुक्त करने के नियम को लागु किया। मुस्लिम समुदाय के समस्त सम्पन्न सदस्यों ने इस आदेश का पालन किया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की पहली पत्नी और मुसलमानों की माँ हजरत खदीजा (रजि0) ने उनके पास जो कुछ था उसे इस उद्देश्य के लिए दान कर दिया था। पैगम्बर (सल्ल0) की मान्यता के अनुसार हजरत अबु बक्र (रजि0) ने बडी संख्या में दासों को मुक्त कराया। इससे अत्याचारियों के अत्याचार के विरुद्ध कमजोरों की सुरक्षा में मदद मिली। मक्का आवास के दौरान अबु बक्र (रजि0) के पास सामान और सम्पत्ति के अतिरिक्त चालीस हजार दिरहम नकदी मौजुद थी। उन्होंने इस पुरी नकदी को दासों की मुक्ति के लिए खर्च कर दिया। मक्का प्रवास के समय आपके पास केवल पॉच हजार दिरहम बचे थे और यह भी मुस्लिम समुदाय के हितों के लिए थे। उमर (रजि0). अब्दुल रहमान बिन औफ (रजि0) और मक्का के अन्य अनेक सम्पन्न मुसलमानों ने दासों को खरीदने और स्वतन्त्र करने के लिए अपनी सम्पत्ति को उदारतापुर्वक खर्च किया। अब्दुल्लाह अल-हहाम ने मक्का के अनेक गैर मुस्लिम निर्धन दासों की मुक्ति को प्रायोजित किया। यहाँ तक कि मक्का के कट्टर कुरैश सरदार भी उनकी दानशीलता से इतने प्रभावित थे कि वह उन्हें मदीना प्रवास नहीं करने देना चाहते थे क्योंकि उन्हें डर था कि इनके प्रवास के बाद मक्का के अनाथ और निर्धन व्यक्ति जिनका वह खर्च परा करते थे उनकी सहायता के लिए कोई न बचता। वह दान तथा निर्धनों की सहायता के इस्लामी आदेश का सक्रियतापर्वक पालन करते थे।

अत्यन्त सम्मान

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) सदैव विभिन्न कबीलों के सदस्यों के साथ प्रगाढ सम्बन्ध कायम रखते थे जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया. इन लोगों में उनके चाचा अब तालिब

भी थे. यह उन्हीं की कृपा थी कि पैगम्बर (सल्ल0) को कुरैश के बीच सुरक्षा प्राप्त थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके जीवन के अन्तिम क्षणों में उनसे भेंट की। अबू तालिब ने इस बात की पुष्टि की कि वह अपने भतीजे की रक्षा करने में प्रसन्नता महसूस करते थे वह सदैव उनके प्रति न्यायप्रिय और सन्तुलित रहे। अबू तालिब की मृत्यु उस समय हुई जब पैगम्बर (सल्ल0) उनके पास थे। वह व्यक्ति जिसने सम्मान और साहस के साथ पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को सुरक्षा तथा प्यार और सम्मान प्रदान किया था. इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया। महम्मद (सल्ल0) उनसे प्यार करते और उनका सम्मान करते और उनके लिए अत्यन्त दखी रहते।

अत्यधिक भरोसा

एक और चाचा. अब्बास (रजि0) पैगम्बर के पक्ष में रहे हालाँकि उन्होंने अभी तक इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था। मुहम्मद (सल्ल0) उनके ऊपर अत्यधिक भरोसा करते थे और आप उनको अपना रहस्य बताने और मुस्लिम समुदाय के भविष्य से सम्बन्धित निजी बैठकों में उनको भाग लेने की अनुमति देने में संकोच नहीं करते थे। बाद में अब्बास (रजि0) उस समय मौजूद थे. जब द्वितीय अल-अक्बा समझौते को अन्तिम रूप दिया जा रहा था। पैगम्बर (सल्ल0) मदीना प्रवास के लिए अपनी अत्यधिक रहस्यपूर्ण तैयारियों से उनको अवगत रखते थे। बहुदेववादी रहते हुए भी अब्बास (रजि0) जब उनका जीवन ही दाव पर लगा हुआ हो पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के प्रति अपने अत्यन्त सम्मान और गहरे भरोसे को प्रकट होने से नहीं रोक पाते थे।

ईमानदारी

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उन लोगों के प्रति भी समता का आदर्श थे जो उनकी आस्था को नहीं मानते थे। मुहम्मद (सल्ल0) के मिशन के मक्की दौर में भी उनको गैर मुस्लिम व्यापारियों के महत्वपूर्ण धरोहरें प्राप्त होती रहीं. जो उनके साथ लेन-देन करना जारी रखे हुए थे और उनके ऊपर पूर्ण रूप से विश्वास करते थे। अपने मक्का प्रवास के अवसर

पर मुहम्मद (सल्ल0) ने अली (रजि0) से कहा था कि उनके पास मक्का के लोगों की जो धरोहरें थीं उन्हें उनके स्वामियों को दे दें। आपने ईमानदारी और न्याय के सिद्धान्त को सावधानीपूर्वक लागू किया जिसे इस्लाम ने सिखाया था कि मुसलमानों को चाहिए कि वह सबके सम्बन्ध में उसका पालन करें चाहे धर्म के अनसार वह कोई भी हों. चाहे वह मसलमान हो अथवा गैर मस्लिम हों।

विश्वसनीयता

पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथी अबू बक्र (रजि0) ने मदीना प्रवास का निर्णय लिया और उन्होंने अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दिया। इसके बावजूद उन्होंने एक गैर मुस्लिम मार्गदर्शक से सहायता प्राप्त करने में संकोच नहीं किया जिसकी आस्था आपके शत्रुओं की आस्था थी परन्तु वह अपनी विश्वसनीयता और योग्यता के लिए प्रसिद्ध था। कुरैश से बचने के लिए आप जिस मुख्य मार्ग के अतिरिक्त अनजाने मार्ग को अपनाना चाहते थे उसके सम्बन्ध में वह किसी भी व्यक्ति से अधिक जानकार मार्गदर्शक था। उस समय कुरैश ने घोषणा कर दी थी कि जो व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल0) को उनके पास लायेगा उसे सौ लाल रंग के ऊँट पुरस्कार के रूप में दिये जायेंगे। यह गैर मुस्लिम मार्गदर्शक पूर्ण रूप से उस पुरस्कार से अवगत था जिसे पैगम्बर (सल्ल0) से विश्वासघात करके वह बहदेववादी करैश से प्राप्त कर सकता था परन्त वह अपने वचन का सच्चा था और उसने सरक्षित रूप से मदीना पहँचने में पैगम्बर (सल्ल0) की सहायता की।

सज्जनता

जब पैगम्बर (सल्ल0) काबा जाने के लिए अपने घर से निकलते तो एक बूढ़ी महिला आपका अपमान करने के लिए रास्ते में प्रतिदिन कूड़ा-करकट फेंक दिया करतीं क्योंकि वह उस सन्देश को पसन्द नहीं करती थीं जिसका प्रचार पैगम्बर (सल्ल0) कर रहे थे। एक दिन जब पैगम्बर ने देखा कि रास्ते में कोई कूड़ा-करकट नहीं तो आप उनसे मिलने गये। जब बढी महिला ने पैगम्बर (सल्ल0) को अपने घर देखा तो वह चकित रह गयीं।

जब उन्होंने पूछा कि आप क्यों आये हैं तो पैगम्बर (सल्ल0) ने यह कहकर उत्तर दिया कि उन्हें रास्ते में कूड़ा नहीं मिला था तो उन्होंने सोचा कि वह संभवतः बीमार होंगी और इसीलिए मैं देखने के लिए आया। आपके व्यवहार से उन्होंने अपने अपराध को महसूस किया और वह भाव-विभोर हो गयीं। पैगम्बर (सल्ल0) के इस व्यवहार ने इस गैर मुस्लिम महिला के हृदय को द्रवित कर दिया और वह आश्वस्त हो गयीं कि पैगम्बर वास्तव में अल्लाह के पैगम्बर हैं और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

दयालुता

मक्का की महान विजय के बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मक्का में गश्त कर रहे थे और मक्का के लोगों की देखभाल कर रहे थे। उन्होंने एक बूढ़ी महिला को देखा कि वह अपना सामान ढोने के लिए संघर्ष कर रहीं हैं और वह मक्का छोड रही हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनका सामान अपने कन्धे पर लिया और मक्का की सीमा पार करने में उनकी सहायता की। उस बूढ़ी महिला के साथ चलते हुए पैगम्बर (सल्ल0) ने पूछा कि वह रात में मक्का क्यों छोड रहीं हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि मक्का पर मुहम्मद ने विजय प्राप्त कर ली है: ''मैं मुसलमान नहीं हूँ: मैंने सोचा कि मुहम्मद की सेना मुझे पकड सकती है और मुझे हानि पहुँचा सकती है। वह विजेता हैं। वह मक्का को नष्ट कर सकते हैं। मैं उस दृश्य को नहीं देखना चाहती''। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) को इस दशा पर लाने के लिए बुरा भला कहा और साथ-साथ उसने उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और प्रशंसा की जिसने सामान ढोने में उसकी सहायता की थी। उसने पैगम्बर (सल्ल0) से रास्ते में पूछा कि तुम कौन हो और यह आशंका व्यक्त की कि मुसलमान उसे पकड सकते हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. ''मैं मुहम्मद हूँ'' महिला आश्चर्यचकित रह गयीं. वह इस पर विश्वास न कर सकीं और पूछा कि क्या तुम वही पैगम्बर हो जिसने मक्का पर विजय प्राप्त की है और इसके बाद इतने दयालु हो कि मक्का में गश्त करके लोगों की रक्षा कर रहे हो। पैगम्बर (सल्ल0) की प्रतिक्रिया और उसके प्रति आपके व्यवहार का ऐसा प्रभाव पडा. कि उसने तरन्त उनसे क्षमा माँगी और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

मदीना के गैर मस्लिमों के साथ सम्बन्ध

'सहनशीलता और शान्तिपर्ण सह-अस्तित्व'

मदीना प्रवास के तुरन्त बाद और यह सुनिश्चित कर लेने के बाद कि नये इस्लामी समुदाय के स्तम्भ प्रशासनिक. राजनैतिक और वैचारिक एकता के ठोस आधार पर स्थापित हो चुके हैं. पैगम्बर (सल्ल0) ने गैर मुस्लिमों के साथ स्पष्ट और परिभाषित रूप से सम्बन्ध स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। यह सम्पूर्ण प्रयास इसलिए किये गये थे कि मानवता को व्यापक रूप से शान्ति. सुरक्षा और सम्पन्नता उपलब्ध कराया जाये. और आपसी समझ की भावना और सदभावना पैदा हो सके।

भौगोलिक रूप से मदीना और उसके आस-पास मुसलमानों के सबसे निकटवर्ती लोग यहूदी थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके साथ एक समझौता करने का निर्णय लिया जिसमें ऐसी शर्तें हों जो आस्था और सम्पत्ति के सम्बन्ध में पूरी स्वतन्त्रता प्रदान करती हों। पैगम्बर (सल्ल0) ने किसी को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए विवश नहीं किया। आपने स्पष्ट किया कि वह सम्बन्धों को नये समाज में समानता के आधार पर रखना चाहते हैं। वह व्यक्तियों और उनके विश्वासों के प्रति अत्यन्त सम्मान का प्रदर्शन करते थे। अनेक वर्षों तक एक युवा यहूदी उनका साथी रहा और हर जगह उनके साथ जाता था क्योंकि उसे पैगम्बर (सल्ल0) के साथ रहना पसन्द था। पैगम्बर (सल्ल0) ने उससे कभी अपना धर्म छोडने के लिए नहीं कहा। एक दिन वह युवक गम्भीर रूप से बीमार हो गया और जब वह अपने मृत्यु शैया पर था तो उसने अपने पिता से कहा कि वह उसे इस्लाम ध ार्म स्वीकार करने की अनुमति दें। अपने पिता की अनुमति से वह युवक मुसलमान हो गया परन्तु जितने समय तक वह पैगम्बर के साथ-साथ रहा वह अपने पुराने विश्वासों के साथ रहा और वह पैगम्बर (सल्ल0) का स्नेह और सम्मान प्राप्त करता रहा।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के युग में अधिकतर मुसलमानों और ईसाईयों वं सम्बन्ध सौहार्दपर्ण रहे। पैगम्बर (सल्ल0) की पत्नी आयशा (रजि0) से रिवायत है कि

उन्होंने अपने भतीजे उर्वा से कहा. "पैगम्बर (सल्ल0) के कुछ ईसाई पडोसी थे जिनके पास दुधारु मवेशी थे। वह अधिकतर उपहार के रूप में उनके पास दध भेजा करते थे और हम आपस में इसका उपभोग करते थे"।

परस्पर विश्वास

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) गैर मुस्लिमों के प्रति अत्यधिक विश्वास और भरोसा करते थे. आपने मुसलमानों के लिए हब्शा प्रवास करना संभव बनाया जिस देश पर एक ऐसे (रजि0) का शासन था जो मुसलमान नहीं था। यह व्यवहार पैगम्बर (सल्ल0) के पूरे जीवन में पाया जाता हैः आप अपने सम्बन्धों को विश्वास और सिद्धान्तों के सम्मान पर आधारित करते थे और इन्हें आप विशेष रूप से धार्मिक वफादारी पर आधारित नहीं करते थे। आपके इस व्यवहार को आपके साथियों ने भी अच्छी तरह समझ लिया था और उन्होंने गैर मुस्लिमों के साथ सम्बन्ध रखने अथवा मित्रता को ठोस आधार पर विकसित करने में संकोच नहीं किया। और वह लोग इसे परस्पर सम्मान और विश्वास पर आधारित रखते थे चाह परिस्थितियाँ विनाशकारी हों। इस व्यवहार के बहुत से उदाहरण हैं। कुरआन ने इर पारस्परिक सम्मान और विश्वास पर आधारित सम्बन्धों की सत्यता की पुष्टि गम्भीर परिस्थितियों में भी की है। इसी प्रकार उम्मे सलमा (रजि0) जो अपने पति से भटक कर अलग हो गयी थीं अकेले अपने बेटे के साथ उन्होंने अपने आप को मदीना के रास्ते पर पाया. उस्मान बिन तलहा ने जो कि गैर मुस्लिम थे उन्हें अपने पति तक पहुँचाने तक उनकी रक्षा करने का प्रस्ताव किया। उन्होंने उनपर विश्वास करने में संकोच नहीं किया। वह उनके साथ अपने बेटे को लेकर अपनी मंजिल तक गयीं और फिर उससे अत्यन्त सम्मानपूर्वक उनसे विदायी ली। उम्मे सलमा (रजि0) अक्सर इस कहानी को सनाती और सदैव उस्मान के अच्छे चरित्र की प्रशंसा करतीं।

आपकी इस प्रकृति के उदाहरण असंख्य हैं और न तो पैगम्बर (सल्ल0) ने और न ही अन्य मसलमानों ने अपने सामाजिक और मानवीय सम्बन्धों को अपने सहधर्मियों

तक ही सीमित रखा। बाद में कुरआन ने ऐसे सम्बन्धों जो परस्पर विश्वासों पर आधारित हों के सिद्धान्त की सत्यता को पुष्ट कियाः

"अल्लाह तुमको उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन (धर्म) के मामले में तुमसे युद्ध नहीं किया। और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ न्याय करो। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। अल्लाह मात्र उन लोगों से तुमको रोकता है जो दीन (धर्म) के मामले में तुमसे लडे और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में सहायता की। कि तुम इनसे मित्रता करो. और जो उनसे मित्रता करे तो वही लोग अत्याचारी हैं"। (कुरआन. 60:8-9)

यह शिक्षा कठिन परिस्थितियों. विश्वासघात और युद्धों में भी यथावत रही। किसी व्यक्ति ने धर्म परिवर्तन के लिए विवश नहीं किया. मत भिन्नताओं को सहन किया जाता था और सबके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था। यह कुरआन की आयत का मौलिक सन्देश और पैगम्बर (सल्ल0) के व्यवहार का सार हैः कुरआन की उन समस्त आयतों को जो टकराव. हत्या और युद्ध की ओर संकेत करती हैं उनको उनके अवतरण के संदर्भ में ही देखना चाहिए (जब मुसलमान युद्ध स्थिति में होते हैं और उन्हें अपना बचाव करने की आवश्यकता होती है)। और किसी भी तरह इस सम्पर्ण संदेश के अनिवार्य मौलिक शिक्षाओं को परिवर्तित नहीं करते।

दयालुता

धर्म के आधार पर गैर मुस्लिमों के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। अपने यहूदी पडोसियों के साथ पैगम्बर (सल्ल0) का व्यवहार दयालुता और सौहार्दपूर्ण था। आप सदैव मरीजों का हाल-चाल पूछने के लिए उनके घरों को जाया करते थे। मदीना में एक यहूदी कबीला बनू आरिज था. पैगम्बर (सल्ल0) उनसे बहत प्रसन्न हो गये थे और उनके लिए वार्षिक राशि निर्धारित कर दी थी।

समावेश करने की प्रवत्ति

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की समावेश करने की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति उनके ज्ञान के सम्बन्ध में दृष्टिकोण से होती है तथा यह अभिव्यक्ति अन्य धर्मों के सांस्कृतिक विरासत को अपनाने में होती है। पैगम्बर (सल्ल0) से यह कहते हुए रिवायत किया गया *"विवेक किसी मुसलमान के खोये हुए मवेशी की तरह है: जहाँ भी वह उसके पाता है वह उसे पकड लेता है"।* पैगम्बर (सल्ल0) कभी-कभी रुमी और ईरानी परिधान पहनते और भारतीय औषधियों का प्रयोग करने का परामर्श देते। हब्शा के सम्राट नेगस ने उनके लिए चमडे के मोजे भेजे जिसे उन्होंने पहने। एक बार पैगम्बर (सल्ल0) के एक साथी सअद बिन अबी वक्कास (रजि0) ने सीने के दर्द की शिकायत की। जब पैगम्बर (सल्ल0) को इसकी सूचना दी गयी तो आपने परामर्श दिया कि मरीज को हारिश बिन कल्दः के पास ले जाया जाये जो मदीना के एक ईसाई चिकित्सक थें।

भरोसा और वफ़ादारी

- अपने गैर मुस्लिम देशवासियों के प्रति मुसलमानों का दयालुता. संवेदना और अत्यन्त सहनशीलता का था। गैर मुस्लिम सलमानों के इस उदारतापूर्ण व्यवहार का उत्तर विश्वास और वफादारी से देते थे। स 2 हि0 में बद्र के युद्ध में विजय के बाद मक्का के सरदारों ने (रजि0) नेग के पास एक अन्य प्रतिनिधिमण्डल इस उद्देश्य से भेजा कि मुसलमानों को हब्शा देश से निकाल दिया जाए ताकि उन्हें अपने देश में लाकर प्रताडित किया ज सके। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप पैगम्बर (सल्ल0) ने एक गैर मुस्लिम उमैय्या बेटे अम्र को (रजि0) नेगस के दरबार में अपने दूत के रूप में भेजा। इस द ने मुसलमानों के विरुद्ध करैश सरदारों की बरी नीयत को सफलतापर्वक विफल कर दिया

गैर मस्लिमों ने यद्ध में पैगम्बर (सल्ल0) की सहायता की

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अत्यन्त यथार्थतावादी थे. अतः आप युद्ध की तैयारियों की अनदेखी अथवा अपने प्रयासों में ढील नहीं बरतते थे। आपने आध्यात्मिक और भौतिक शक्ति के मध्य अद्भुत सन्तुलन स्थापित किया था। आप अपनी सेना में अत्यन्त उच्च मनोबल पैदा करने के लिए भौतिक शक्ति का उपयोग अत्यन्त कुशलतापूर्वक करते थे. जिसका उदाहरण मानव इतिहास में नहीं मिलता। इसके साथ-साथ अपनी सेनाओं को तैयार करने के लिए उस समय उपलब्ध सैनिक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए हर संभव कदम उठाते। आप किसी चीज को भाग्य पर नहीं छोडते बल्कि पूरी तैयारियाँ करते और इसके लिए प्रत्येक उपलब्ध संसाधन का उपयोग करते। हुनैन के युद्ध में यद्यपि आपके पास 12000 सैनिकों की एक विशाल सेना थी। इसके बावजूद आपने एक गैर मुस्लिम जिनका नाम सफवान विन उमय्या था. उनसे सौ हथियार और कवच उधार लिया ताकि आप अपना बचाव करने और आक्रमण करने की शक्ति को और अधिक बढा सकें। इस प्रकार एक गैर मुस्लिम सफवान ने हुनैन के यद्ध में इस्लाम के शत्रओं के विरुद्ध यद्ध करने में पैगम्बर (सल्ल0) की सहायता की।

हुनैन के युद्ध में दो गैर मुस्लिमों सफवान और सुहैल ने बहादुरी के साथ इस्लाम के शत्रुओं के विरुद्ध यद्ध किया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें मान्यता दी और उनका सम्मान किया। जब पैगम्बर

- उहद के युद्ध के लिए तैयारी करते समय मुस्लिम सेना को असामान्य मार्ग अपनाना था ताकि मुस्लिम सेना को उस मार्ग से युद्ध स्थल पर ले जाया जाये जिससे कुरैश शत्रु उन्हें देख न सकें अथवा कोई सूचना न पा सकें। इस उद्देश्य के लिए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एक गैर मस्लिम मार्गदर्शक पर विश्वास किया जिसकी योग्यता व्यापक रूप से मान्य थी। वह मस्लिम सेना को उसकी मंजिल पर ले गया।

शिष्टता और सहनशीलता

शिष्टता और सहनशीलता पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षाओं का सार हैं। आप कहा करते थेः *''अल्लाह शिष्ट है और वह हर चीज में शिष्टता को पसन्द करता है''*। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों में से एक साथी से कहाः ''तुम्हारे अन्दर दो गण हैं जिन्हें अल्लाह पसन्द करता हैः दया और धैर्य *''शिष्टता''. ''सहनशीलता''*।

स्वयं पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने धार्मिक सहनशीलता का प्रदर्शन विभिन्न अवसरों पर किया। एक बार एक बद्दु ने मस्जिद में पेशाब कर दिया. और मुस्लिम साथी उसे मारने के लिए दौडे. पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें आदेश दिया कि वह उसे छोड दें पैगम्बर (सल्ल0) ने उस स्थान पर पानी डाला जहाँ बदद ने पेशाब किया था। फिर उन्होंने बदद से शान्तिपुर्वक कहा.

''यह उपासना स्थल है यहाँ अल्लाह की इबादत की जाती है और करआन पढा जाता है''।

जब बद्दु चला गया तो पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से कहा. *''तुम्हें चीजों को लोगों के लिए सरल बनाने के लिए भेजा गया है और तम्हें उनके लिए चीजों को कठिन बनाने के लिए नहीं भेजा गया''*।

धर्म में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं

कुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि *''धर्म में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए''* (कुरआन. 2:256) पैगम्बर (सल्ल0) को लालच और दबाव से नहीं. बल्कि विनम्रता और सज्जनतापूर्वक सन्मार्ग और नेकी के रास्ते की ओर बुलाने का परामर्श दिया गया था। अतः कुरआन कहता है: *''अपने पालनहार के मार्ग की ओर विवेक और अच्छे उपदेश के साथ बलाओ और उनसे अच्छे ढंग से वार्त्ता करो''।* (कुरआन. 16:125)

चौदह ईसाई धार्मिक नेताओं का एक प्रतिनिधि मण्डल नजरान (यमन) रं पैगम्बर (सल्ल0) से मिलने आया ताकि वह नये धर्म. उनकी आस्था और इसके अतिरिक्त इस्लाम धर्म में पैगम्बर ईसा (अलै0) के स्थान के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया और इस्लाम और ईसाई धर्म की परम्पराओं में सम्बन्धों की ओर संकेत किया और बताया कि इस्लाम पैगम्बर ईसा (अलै0) के सन्देश का ही तारतम्य है। परन्त आपने त्रिमूर्ति के विश्वास को पूर्णतः रदद कर दिया

मुहम्मद (सल्ल0) ने उनको एक स्वामी अल्लाह की इबादत का आह्वान किया और इस्लाम को एक धर्म के रूप में और कुरआन को अन्तिम अवतरित सन्देश के रूप में स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया। इससे अल्लाह की पूर्व पुस्तकों की स्वीकार्यता की पुष्टि होती है कि वह हजरत मूसा (अलै0) और हजरत ईसा (अलै0) के द्वारा मानवता को पहँची थीं और करआन भी उसी एकत्ववादी परम्परा का अंग है।

ईसाईयों के प्रतिनिधिमण्डल ने नये धर्म की बातों को सुना और अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। यद्यपि उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। जाने से पहले वह लोग मस्जिद के अन्दर इबादत करना चाहते थे। वहाँ पर मौजूद आपके साथियों ने इसका विरोध करना उपयुक्त समझा परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने हस्तक्षेप किया और फरमायाः ''उन्हें इबादत कर लेने दो''। ईसाइयों ने मस्जिद के अन्दर पूर्व की ओर अपना चेहरा करते हुए इबादत की।

वापस जाने से पहले ईसाई प्रतिमण्डल ने पैगम्बर (सल्ल0) को इस बात के लिए आमन्त्रित किया कि वह उनके साथ अपना दूत भेज दें जो उनके प्रश्नों का उत्तर दे और यदि आवश्यक हो तो उनके वादों का निपटारा करे। पैगम्बर (सल्ल0) ने इस उददेश्य के लिए अब उबैदा को उनके साथ भेज दिया।

ईसाई प्रतिनिधिमण्डल अपने घर गया। ईसाई लोग मदीना आये. उन्होंने नये सन्देश के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे और नये धर्म के विश्वासों को सुना. अपने तर्कों को प्रस्तुत किया. मस्जिद के अन्दर इबादत की और बिना किसी क्षति के पूर्णत ईसाई रहते हुए और स्वतन्त्र रहते हुए वापस गया। पैगम्बर (सल्ल0) के पहले साथी आपके व्यवहार को नहीं भूले। उन्होंने उस व्यवहार से वह सम्मान सीखा जिसकी इस्लाम मुसलमानों से माँग करता है और जिनको वह सहनशीलता से आगे जाने. सीखने. सनने और दसरों की प्रतिष्ठा को स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित करता है।

कुरआन का आदेश कि *''धर्म में कोई जोर जबरदस्ती नहीं''* इस्लाम का अनेकता के प्रति सम्मानपर्ण दष्टिकोण अपनाते हए ही दिया गया है

अन्य धर्मों के प्रति सहनशीलता

करआन में सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

> *''और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको ये लोग पुकारते हैं. उनको गाली न दो अन्यथा ये लोग सीमा से गुजर कर अज्ञानता के कारण अल्लाह को गालियाँ देने लगेंगे''।* (कुरआन. 6:108)

अन्य धर्मों के सम्बन्ध में सुसंस्कृत भाषा का प्रयोग करने के लिए पैगम्ब मुहम्मद (सल्ल0) का सन्देश प्रबल रूप से स्पष्ट था। आप सदैव फरमाते थे कि अन्य धर्मों के कर्मकाण्डों और उनकी धार्मिक पुस्तकों का अपमान नहीं किया जाना चाहिए। आपने यह भी कहा कि दूसरे धर्मों के उपास्यों को बुरे नामों से नहीं पुकारना चाहिए क्योंकि वह इसके बदले में सर्वशक्तिमान अल्लाह को भी बुरे नामों से पुकारेंगे।

दूसरे धर्मों के सम्बन्ध में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के व्यवहार और सम्मान का एक अन्य उदाहरण उस घटना से सामने आया जो उस समय घटित हुई जब आप और आपके अनुयायी मदीना जाने के लिए खैबर छोड रहे थे। एक यहूदी पुजारी ने महसूस किया कि कुछ मुसलमानों ने गनीमत के माल के रूप में अपने साथ तौरात की प्रतियाँ भी ले ली हैं। उस पुजारी ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के समक्ष इस पर आपत्ति की: पैगम्बर (सल्ल0) इसपर बहुत विचलित हुए और मुसलमानों को आदेश दिया कि पवित्र पुस्तक की प्रत्येक प्रति वापस कर दें। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों के दुर्व्यहा व्यक्तिगत रूप से क्षमा माँगी। इस पर टिप्पणी करते हुए एक प्रसिद्ध यहूदी विद्वान डा0

इसराईल वेलफेन्सन लिखते हैं कि इससे पता चलता है कि पैगम्बर (सल्ल0) उनकी धार्मिक पुस्तक का कितना अधिक सम्मान करते थे। इस सहनशील और सम्मानजनक व्यवहार ने उन यहूदियों को प्रभावित किया जो यह कभी नहीं भूल सकते कि पैगम्बर (सल्ल0) ने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे उनके पवित्र ग्रन्थों का अपमान होता हो। यहूदी जानते थे कि उनके साथ उस समय रोमन सेनाओं ने क्या किया था जब उन्होंने सन् 70 ईसा पूर्व में येरुसलम पर अधिकार प्राप्त किया था। उन्होंने उनके पवित्र ग्रन्थों को जलाया था और पैरों तले रौंदा था। उन्मादी ईसाई जब स्पेन के यहूदियों का दमन कर रहे थे तो इसी तरह उन्होंने उनके धर्म ग्रन्थों को आग के हवाले किया था। अन्य विजेताओं और इस्लाम के पैगम्बर के बीच हम यह बडा अन्तर पाते हैं

महम्मद से वफा......

18
खैबर

मदीना से 150 किमी0 उत्तर में स्थित खैबर नामक शहर यहूदियों की एक क्षेत्रीय शक्ति था जिससे सभी डरते थे और इस पर आक्रमण करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि इनके पास किले. हथियार और सम्पत्ति उनके शत्रुओं की तुलना में बहुत विकसित थे। इस सम्बन्ध में मदीना भी इससे लडने और इस पर नियन्त्रण करने की आशा नहीं कर सकता था। खैबर के सरदारों को बनु कैनकाअ. बनु नजीर और बनु कुरैज कबीलों के सदस्यों से परामर्श मिलता था और ये कबीले मदीना में पैगम्बर मुहम्म (सल्ल0) की मौजूदगी के विरुद्ध थे और वह अपने इस विरोध प्रदर्शन में कभी संकोच नहीं करते थे और यदि उनको अवसर मिलता तो पैगम्बर (सल्ल0) के मस्लिम समदाय को और अन्य व्यक्तियों के हितों को हानि पहुँचाते।

खैबर के सरदारों ने मक्का के कुरैश के पास और अन्य इस्लाम विरोधी कबीलों के पास जैसे गतफान और हवाजिन के पास. विशेष दूत भेजे और उन्हें आर्थिक सहायता दी ताकि वह मदीना पर आक्रमण के लिए अपने आप को तैयार कर सकें। उनके षड्यन्त्रों के फलस्वरूप मदीना के अनेक शत्रु खन्दक के युद्ध में सम्मिलित हुए थे और उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पर घातक हमला भी किया था। अतः हुदैबिया से लौटने के पन्द्रह दिनों बाद ही पैगम्बर (सल्ल0) ने सबसे पहले खैबर वालों से मामला करना तय किया। हुदैबिया सन्धि के बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मक्का वालों से शान्ति समझौता कर चुके थे और अब वह मक्का के कुरैश की ओर से मदीना पर किसी हमले के भय के बिना खैबर वालों से बदला ले सकते थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने खैबर के लोगों के पास शान्तिपूर्ण समाधान के लिए बार-बार दूत भेजे. परन्तु ये सभी प्रयास असफल रहे। अन्ततः पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने खैबर के विरुद्ध एक अभियान भेजने का निर्णय लिया। परन्तु उसे आप अन्तिम क्षण तक रहस्य के रूप में रखना चाहते थे. ताकि शत्रु सचेत न हो सके। यद्यपि खैबर के लोग और उनके सहयोगी चौदह हजार लोगों को युद्ध के लिए एकत्र कर सकते थे। मुहम्मद (सल्ल0) ने मात्र चौदह सौ व्यक्तियों पर आधारित सेना के साथ जाने का निर्णय लिया. यद्यपि वह इससे अधिक सेना भी तैयार कर सकते थे। रात में शहर के निकट उन्होंने एक मार्गदर्शक को बुलाया. जो उस क्षेत्र को भली-भाँति जानता था और खैबर के दो दुर्गों के बीच अपना शिविर लगाया। इस प्रकार वह खैबर के लोगों और उनके गतफान के सहयोगियों के बीच सूचना के आदान-प्रदान को रोक सकते थे। जब सूरज निकला तो दोनों किलों में रहने वाले लोग आश्चर्यचकित रह गये और उनके बीच तुरन्त भय की लहर दौड गयी। यह घेराव कई दिनों तक रहा। जिसके दौरान मुहम्मद (सल्ल0) और उनके लोगों ने ऐसी सूचनाएँ एकत्र कीं जिससे शत्रु को हथियार डालने के लिए विवश करने की सर्वाधि ाक उपयुक्त रणनीति बनायी जा सके। वह दुर्गों पर एक-एक करके आक्रमण करना चाहते थे और सबसे अधिक खुले हुए और कमजोर दुर्ग से प्रारम्भ करना चाहते थे। यह रणनीति सफल सिद्ध हुई और अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ कि पहले दुर्ग पर विजय प्राप्त हो गयी। प्रत्येक व्यक्ति से आत्मसमर्पण की शर्तें तय की गयीं। लेकिन अधिकतर लोगों को अपने सामान और औरतों और बच्चों के साथ खैबर छोडने के लिए राजी किया गया।

बडा दुर्ग कामूस. चौदह दिनों तक युद्ध करता रहा परन्तु अंततः उसने [१] आत्मसमर्पण कर दिया. क्योंकि मुसलमानों की ओर से यह घेराबंदी पूर्णतः अवरोध उत्पन्न कर रही थी और उनके लिए विजय की कोई आशा न रही। फिर अन्तिम दो दुर्गों ने भी आत्मसमर्पण कर दिया और उन्होंने आत्मसमर्पण के लिए शर्तों पर वार्त्ता की। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके साथ सहमति व्यक्त की और उनके वासियों को वहाँ ठहरने और अपने खेतों और बागों की देखभाल करने की अनमति इस शर्त पर दी कि वह मसलमानों को इसके उत्पाद पर निरन्तर कर देते रहेंगे

विष और सन्धि

यहूदियों ने सन्धि की शर्तों पर सहमति व्यक्त की और उन्होंने मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथियों को इस अवसर पर भोज का निमन्त्रण दिया। जब एक भेड का अगला दस्त लाया गया और मुहम्मद (सल्ल0) को परोसा गया. तो आपने इसे मुँह भर कर लिया और गोश्त का अजीब स्वाद देखकर तुरन्त थूक दिया। उन्होंने अपने साथियों में से एक बिशर को चेतावनी देने की कोशिश की. जिन्होंने खाना प्रारम्भ कर दिया था. परन्तु काफी देर हो चुकी थी। उन साथी की मृत्यु हो गयी। जिस महिला ने उस भेड को पकाया था. उसे बुलाया गया और उसने स्वीकार किया कि गोश्त में विष मिलाया गया था। उसने अपने कृत्य के लिए यह बहाना बनाया कि यदि इसके खाने वाले (रजि0) होंगे तो वह उनसे छुटकारा पा लेगी. लेकिन वह पैगम्बर होंगे तो वह इसे समझ ही जायेंगे। तथापि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उसके षडयन्त्रपूर्ण प्रयास की अनदेखी की परन्तु बाद में जब आपके एक साथी बिशर की उस विष से मृत्यु हो गयी तो आपने उसकी हत्या किये जाने का आदेश दिया। मुसलमान आक्रोश में थे। वह सन्धि को तोडकर युद्ध करना चाहते थे परन्तु पैगम्बर ने यहूदियों को क्षमा कर दिया और सन्धि की शर्तों का सम्मान किया।

सफीया (रजि0) अल्लाह और उसके पैगम्बर को चुनती हैं

युद्ध में जो लोग कैद हुए थे उनमें हुयैय की बेटी सफीया भी थीं (हुयैय यहूदी कबीलों बनू नजीर और बनू कुरैजा के सरदार थे)। सफीया किसी भी तरह अपने पिता की तरह नहीं थीं और लम्बे समय से वह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के सन्देश को समझने का प्रयास

कर रही थीं। वह पवित्र महिला थीं और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के प्रति अपने लोगों की शत्रुता में भागीदार नहीं थीं। पैगम्बर (सल्ल0) ने उस महिला और उसके आध्यात्म के सम्बन्ध में सुना था और उन्होंने अपने एक स्वप्न के सम्बन्ध में उनको बताने में संकोच नहीं किया था। वह स्वप्न उनके भाग्य को मदीना के मुसलमानों से सम्बन्धित करने वाला था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उनकी बात सुनी और उनको एक विकल्प दिया। वह यहुदी बनी रहें और अपने लोगों में वापस चली जाएँ अथवा वह मसलमान हो जाएँ। उन्होंने कहा. "मैं अल्लाह और उसके पैगम्बर को चुनती हूँ"।

पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको स्वतन्त्र कर दिया और फिर कुछ ही दिनों के बाद महान विजेताओं के उदाहरण का अनुकरण करते हुए. जो जिन (रजि0) ओं को जीतते थे उनकी बेटियों और पत्नियों से विवाह कर लेते थे। आंशिक रूप से इसका कारण यह होता कि उनके दुख को कम कर दें और उनके सम्मान की रक्षा की जा सके। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0)ने भी उसी तरह हजरत सफीया (रजि0) से शादी कर ली।

हिजरत के सातवें वर्ष एक नया महत्वपुर्ण चरण पुरा हो गया और सभी दुर्गों पर विजय प्राप्त हो गयी। इस तरह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने क्षेत्र की सबसे बडी शक्ति को निष्क्रिय कर दिया। अब पुरे अरब प्रायद्वीप में शान्ति स्थापित हो गयी और अब मुसलमानों को उत्तर दिशा से आक्रमण का भय नहीं था। कबीलों से सन्धियों औ पारिवारिक सम्बन्धों के कारण सामान्य व्यापार ने मस्लिम समदाय को अधिकतम सरक्षा के साथ जीवन व्यतीत करने का अवसर दिया।

पैगम्बर मुहम्मद के विवाहों ने भी परिस्थिति को प्रभावित किया थाः आपकी कुछ पत्नियाँ उन परिवारों से आयी थीं जो वास्तव में मुहम्मद (सल्ल0) का परिवार बन गये और इस तरह वह आपके प्राकुतिक सहयोगी समझे जाते थे। इस प्रकार मुस्लिम समुदाय स्वयं अपने आप को अब कमजोर नहीं समझता था और इसके विपरीत वह अपने आप को अजेय समझने लगा था। आठ वर्षों के दौरान यह समुदाय मदीना में मात्र स्थायी ही नहीं हो गया था बल्कि उसने अपनी ऐसी स्थिति बना ली थी कि उनके बराबर कोई नहीं था. और इस समदाय ने क्षेत्रीय प्रतिष्ठा स्थापित कर ली।

दयालता का संकेत

इस बार मक्का में भुखमरी फैल गयी और इससे वहाँ के लोग बुरी तरह प्रभावित हुए। चुँकि शहर में कोई खेती नहीं होती थी अतः उन्हें अनाज बाहर से आयात करना होता था परन्त जिन स्थानों से मक्का के लिए अनाज आता था वह भी अकाल से प्रभावित थे।

मात्र नज्द ही अरब प्रायद्वीप का ऐसा क्षेत्र था जो अकाल से अप्रभावित रहा और केवल वह क्षेत्र ही मक्का को अनाज निर्यात करने की स्थिति में था।

एक दिन तीस सदस्यीय मुस्लिम गश्ती दल इब्ने मुस्लिमा (रजि0) के नेतृत्व में गश्त कर रहा था कि उसने एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया जिसकी गतिविधियाँ संदिग्ध समझी जा रही थीं और उसे मदीना लाया गया। वह नज्द के क्षेत्र का सरदार था जिसका नाम सुमामा था और उसने हिजरत से पहले मक्का की यात्रा की थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने सदैव की तरह उसको इस्लाम की शिक्षा दी थी। परन्तु उसने इसके बदले में जान से मारने की धमकी दी थी। वही व्यक्ति उनके सामने एक कैदी के रूप में इस समय प्रस्तुत किया गया था। पैगम्बर (सल्ल0) ने उससे पूछा कि क्या अब समय नहीं आ गया कि मूर्ति पूजा को छोडकर एक अल्लाह के समक्ष समर्पित हुआ जाये। उसने उत्तर दियाः ''ऐ मुहम्मद! यदि आप मेरी हत्या कर देते हैं तो आप एक हत्यारे की हत्या करेंगे और यदि आप दयालुता और कृपा करते हैं तो आपकी कृपा एक कृतज्ञ व्यक्ति पर होगी। यदि आप कोई भौतिक अर्थदण्ड माँगते हैं तो मैं इसे भी आपको दूँगा''। यह सन कर पैगम्बर (सल्ल0) खामोश रहे।

यह एक अस्पष्ट अरबी संकेत था जिसका अर्थ यह भी हो सकता था कि उसके हाथ खुन से सने हुए हैं और उसके कारण वह मृत्यु का अधिकारी है। संभवतः उसने कुछ मुसलमानों की हत्या की थी। इसी पर वार्त्ता समाप्त हो गयी. परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने आदेश दिया कि इसके साथ अतिथि कैदी का सा व्यवहार किया जाए ताकि वह मस्जिद में सामान्य मुसलमानों के दैनिक जीवन का अवलोकन कर सके। दुसरे दिन वही बात उससे दुहरायी गयी और फिर तीसरे दिन भी इस आह्वान का उसने पुर्ववत उत्तर दिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उसे छोडने का आदेश दिया और कहा: ''सुमामा अब तुम स्वतन्त्र हो. जहाँ चाहो वहाँ जाओ''। पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा इस प्रकार का दयालुतापुर्ण व्यवहार उसकी प्रत्याशा के विरुद्ध था। वह पैगम्बर (सल्ल0) के दयालुतापुर्ण व्यवहार से अत्यधि प्रभावित हुआ। वह मस्जिद से बाहर गया. एक निकटवर्ती कुएँ के पास पहुँचा। वहाँ स्नान किया और मस्जिद वापस आ गया। अपने आप को पैगम्बर (सल्ल0) के समक्ष प्रस्तुत करते हुए घोषणा कीः ''मैं गवाही देता हुँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मैं गवाही देता हुँ कि मुहम्मद (सल्ल0) उसके पैगम्बर हैं''। इसके साथ उसने एक वाक्य और जोडाः ''कुछ क्षणों पहले आप मेरे लिए संसार के सर्वाधिक घृणित व्यक्ति थे परन्तु अब आप मेरे लिए संसार में सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति हैं। कोई भी धर्म आपके धर्म से अधि ाक बुरा नहीं था और अब वही धर्म मेरे लिए सभी धर्मों से अधिक प्यारा है। कोई नगर मदीना की तुलना में मेरे लिए अधिक अप्रिय नहीं था और अब मेरे लिए यह सर्वाधिक प्रिय नगर है''

सुमामा द्वारा इस्लाम स्वीकार करने की घटना ने राजनीतिक रूप से महत्वपर्ण क्षेत्र नज्द में इस्लाम के प्रसार का द्वार खोल दिया।

इसके आगे की वार्त्ता में उसने प्रस्ताव किया कि वह नज्द से मक्का को अनाज की आपुर्ति बन्द कर देगा और यह वचन दिया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के स्पष्ट अनुमोदन के बिना एक दाना भी निर्यात नहीं किया जायेगा। इससे मक्का की गंभीर खादय परिस्थितियाँ और विकट हो गयीं जो पहले ही अकाल से त्रस्त था। मक्का के लोग अन्त

में एक प्रतिनिधि मण्डल मदीना भेजने और पैगम्बर (सल्ल0) से यह अनुरोध करने के लिए विवश हो गये कि वह अपने देश के लोगों पर दया करें जो भूखों मर रहे हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने तुरन्त सुमामा के पास सन्देश भेजा कि वह प्रतिबन्ध हटा लें और कहाः ''वह अल्लाह ही है जो सबको जीविका देता है यहाँ तक कि अपने शत्रुओं को भी जो आप पहले कर रहे थे वह फिर करिये (अनाज की आपूर्ति) परन्तु थोडा बढा कर''।

यही नहीं पैगम्बर (सल्ल0) ने मक्का सरदार अबू सुफियान के पास पॉच सौ सोने की अशर्फियाँ भेजी। जो उन दिनों पर्याप्त रकम थी ताकि उन्हें मक्का के निर्धनों और वंचितों में बाँट दिया जाए।

इस्लाम का कट्टर शत्रु अबू सुफियान अत्यन्त दुखी और क्रोधित हुए इतिहास ने उसकी प्रतिक्रिया को दर्ज किया हैः ''मुहम्मद हमारे नौजवानों को भटकाना चाहता है''। परन्त वह किसी भी तरह इस स्थिति में नहीं था कि उस रकम को वापस कर सके

कुरैश ने मक्का में पैगम्बर (सल्ल0) के व्यक्तित्व. परिवार और अनुयायियों को इतना आघात और हानि पहुँचाया था कि उसकी गम्भीरता और कठोरता का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) और उनके परिवार के विरुद्ध तीन वर्ष तक सामाजिक वहिष्कार लागू किया था। इस अमानवीय व्यवहार के बदले में पैगम्बर (सल्ल0) ने मक्कावालों को अकाल और भुखमरी से बचाने के लिए यमामा से मक्का के लिए अनाज आपूर्ति की अनुमति प्रदान की और उन्हें भुखमरी से बचाया।

बाद में. इसी प्रकार की अन्य घटनाएँ घटित हुयीं। इनका सामूहिक प्रभाव यह पडा कि मक्का के लोग पैगम्बर (सल्ल0) के अन्दर अपना शत्रु देखने की बजाए उनके ऊपर गर्व करने लगे कि वह उनके भाई हैं जो दिन-प्रतिदिन अधिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं। वह लोग इस भावना को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाते थे परन्तु व प्राकतिक रूप से स्वयं को महम्मद (सल्ल0) और उनके धर्म की ओर झका हआ महसस करने लगे।

मनोरंजन और विश्राम

किसी व्यक्ति के जीवन में ऊर्जा एवं स्फुर्ति पैदा करने और नीरसता को दुर करने के लिए मनोरंजन और कुछ उत्सव मुलभुत आवश्यकताएँ हैं। यही कारण है कि लोग हँसी-मजाक और मनोरंजन की तलाश करते हैं।

पैगम्बर (सल्ल0) अपने अनुयायियों को हानि रहित. निर्दोष और साफ-सुथरे मनोरंजन की अनुमति निर्धारित सीमाओं के अन्दर देते थे। वह कभी-कभी अकेले और कभी-कभी अपने साथियों के साथ बाग में जाना पसन्द करते और उनके साथ विभिन्न विषयों पर पेडों की छाया में वार्त्तालाप में व्यतीत करते। कभी-कभी अपने साथियों के मध य तैराकी की प्रतियोगिता की व्यवस्था करते। एक ऐसे अवसर पर हजरत अबु बक्र (रजि0) आपके साथ थे जब लम्बे समय के बाद वर्षा हई तो परे कपडे पहनकर पैगम्बर (सल्ल0) ने वर्षा के पानी में स्नान किया।

आप दौड. तीरंदाजी और कश्ती के खेलों में भी भाग लेते और अन्य लोगों के साथ खलकर हँसते।

खुशी के अवसरों पर आप ऐसा ढोल पसन्द करते जो एक ओर से खुला रहता है। एक बार ईद के दिन दो लडकियाँ हजरत आयशा (रजि0) के पास बैठी गा रही थीं। यह देखकर अबु बक्र (रजि0) क्रोधित हो गये और उनको फटकार लगायी। पैगम्ब (सल्ल0) ने हस्तक्षेप किया और उनको गाना जारी रखने की अनमति दी।

आप विवाह के अवसरों पर ढोल बजाने की भी अनुमति देते। जब हजरत आयशा के साथ रहने वाली एक अन्सारी लडकी का विवाह हुआ तो उसके आस-पास बैठकर लडकियाँ गा रही थीं। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको गाने और संगीत की अनुमति दी। उन्होंने कहा कि अंसार लोग संगीत के रसिया हैं अतः दल्हन के साथ एक गाने वाली लडकी को भेजा जाना चाहिए।

ऐसे ही एक अवसर पर जब कुछ लडकियाँ गा रही थीं तो आमिर (रजि0) आये और उनको फटकार लगायी जिसपर पैगम्बर के कुछ साथियों ने कहा जो वहाँ बैठे हुए थे. ''यदि आप गाने का आनन्द लेना चाहते हैं तो बैठ जाईये अन्यथा चले जाइये। हमने इसके लिए पैगम्बर (सल्ल0) से अनुमति ले ली है''

एक बार ईद के दिन हब्शा से एक प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न खेल और लोक नत्य पैगम्बर (सल्ल0) के आँगन में दिखाने के लिए आया। आयशा (रजि0) इन करतबों को देखना चाहती थीं। पैगम्बर (सल्ल0) अपने कमरे के दरवाजे पर खडे हो गये और हजरत आयशा को अपने कंधे के पीछे छिपकर देखने की अनुमति दी।

एक अन्य अवसर पर. उनके बीच दौड की स्पर्धा हुई। हजरत आयशा (रजि0) ने रिवायत किया है कि वह पैगम्बर (सल्ल0) के साथ यात्रा पर थीं। उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) के साथ दौड लगायी और उनको हरा दिया। परन्त जब उन्होंने कछ बोझ अपने साथ ले लिया और फिर उनके साथ दौड लगायी तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको हरा दिया।

महम्मद से वफा......

19

उमरा

छोटा हज

अल-हुदैबिया की सन्धि को एक वर्ष बीत चुका था. और समझौते के अनुसार अब मक्का यात्रा की तैयारी करने का समय आ गया था। उसी के अनुसार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथ दो हजार मुसलमान उमरा करने की नीयत से मदीना से निकले। उनमें एक निर्धन व्यक्ति थे जो मक्का से आये थे और सुफ्फा वालों के साथ रहने लगे थे। वह निर्धन और विनम्र व्यक्ति थे और पैगम्बर (सल्ल0) उनको अबू हुरैरा (बिल्लियों के बाप) कहा करते थे क्योंकि वह बिल्लियों से अधिक प्यार करते थे। यही अबू हुरैरा जिन्होंने देर से इस्लाम धर्म स्वीकार किया और वह बाद में पैगम्बर (सल्ल0) की हदीसों के सम्मानित और भरोसेमंद रिवायत करने वाले बने।

यात्री मक्का पहुँचे और हरम (सम्मानित क्षेत्र) के किनारे रुके ताकि उस क्षेत्र से कुरैश के लोगों के हट जाने की प्रतीक्षा करें और कुरैश के लोग मुसलमानों को स्वतन्त्र रूप से अपने कर्म-काण्ड अदा करने का अवसर दें। मुसलमानों ने विनम्र परिधान पहन रखे थे जो उमरा के लिए पवित्र होता है। वह लोग मक्का में प्रवेश हुए जबकि कुरैश के लोग उन्हें आस-पास की पहाडियों से देख रहे थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने काबा की सात बार परिक्रमा की. और सात ही बार आपने सफा और मरवा की पहाडियों के मध्य दौड लगायी। इसके बाद आपने एक ऊँट की कुर्बानी की और अपने सिर का मुण्डन कराया। इस प्रकार

आपने उमरा के कर्म-काण्डों को पुरा किया. और इसी प्रकार आपके अन्य सह-यात्रियों ने भी किया। आप काबा के अन्दर भी प्रवेश करना चाहते थे परन्तु कुरैश ने इस तर्क पर मना कर दिया कि यह समझौते का हिस्सा नहीं है। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके दावे को कोई चुनौती नहीं दी और वह वहाँ ठहरने के दौरान अल्लाह के घर के निकट रहे और वहीं से हजरत बिलाल (रजि0) सुरीली और आकर्षक अवाज में पॉच बार अजान देते थे। पहाडियों से वह मुसलमानों को देख रहे थे उन्होंने बाद में स्वीकार किया कि वह मुसलमानों की धार्मिक रीतियों और व्यवहार की सादगी और प्रतिष्ठा से प्रभावित हुए थे।

इसी दौरान पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा अब्बास (रजि0) ने सार्वजनिक रूप से अपने इस्लाम धर्म स्वीकार करने की घोषणा की।

हृदय प्रज्जलित हुए

जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मदीना वापस आये और आपने पुर्व की तरह दैनिक जीवन प्रारम्भ किया तो आपने अप्रत्याशित रूप से तीन व्यक्तियों के आने की सुचना प्राप्त की जो लोग रास्ते में मिले थे और वह उनसे मिलने के लिए एक साथ मदीना आये थे। उस्मान बिन तलहा (रजि0). खालिद बिन वलीद (रजि0) और अम्र बिन आस (रजि0) ये तीनों इस्लाम धर्म स्वीकार करने और पैगम्बर (सल्ल0) से वफादारी की प्रतीज्ञा करने आये थे। यह तीनों वह लोग थे जिन्होंने अनेक वर्षों तक पैगम्बर (सल्ल0) के विरुद्ध कठोरता पुर्वक युद्ध किया था। पैगम्बर (सल्ल0) उनके इस्लाम स्वीकार करने से अत्यन्त प्रसन्न थे और इसी प्रकार उनके साथी भी: जो इन तीन लोगों के गुणों से भिज्ञ थेः उनकी इस्लाम के प्रति वचनबद्धता पवित्र और निसंकोच थी। हजरत अबु हुरैरा के इस्लाम स्वीकार करने की तरह. इस्लाम स्वीकार करने की ये घटनाएँ शिक्षाओं से परिपुर्ण थीं। इसका कारण मात्र यह ही नहीं था कि इस्लाम के कठोरतम शत्रुओं के अतीत को एक अल्लाह को स्वीकार करते ही भुला दिया गया था बल्कि इसलिए भी कि उन्हें अल्लाह के मार्ग का अनुसरण करने के लिए समय की आवश्यकता थी. उनकी निष्ठा. उनके नैतिक गुणों और मुस्लिम समुदाय में भविष्य में उनकी प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया।

लगभग बीस वर्षों तक पैगम्बर (सल्ल0) और उनके सन्देश के विरोधी रहने के बाद उन्होंने अपने अन्दर एक बडा परिवर्तन किया इस प्रकार परिवर्तन और दिलों को बदलने वाली इस विश्वास की तीव्रता और क्षमता को- समय और तर्क के आधार पर नहीं नापा जा सकता। बल्कि इसकी शुद्धता और तीव्रता ही इसकी प्रकृति का प्रमाण होती है और यही कारण है कि अभी जल्दी इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाला व्यक्ति उन लोगों की तुलना में अधिक गहन और परिपूर्ण प्रकाश प्राप्त कर सकता है जिन लोगों ने वर्षों तक धार्मिक कर्म करने के बाद प्राप्त किया हो। इसका विपरीत भी सत्य होता है और इसी कारण से दसरों के हृदय की स्थिति के सम्बन्ध में अनमान लगाने से बचने के लिए कहा गया है।

सीरिया से टकराव

कुछ महीनों के बाद. पैगम्बर (सल्ल0) ने मौजूदा गठबन्धनों को दृढता प्रदान करने और व्यापार के लिए मुसलमानों की सीरिया यात्रा की सम्भावना को सुनिश्चित करने के लिए उत्तर की ओर प्रतिनिधि मण्डल भेजने का निश्चय किया। पन्द्रह लोगों को भेजा गया था परन्तु उनमें से चौदह की हत्या कर दी गयी: उसी समय एक और प्रतिनिधिमण्डल जिसे बसरा भेजा गया था उसे भी रोक दिया गया और गस्सान कबीले के सरदार ने उसकी हत्या कर दी थी। सीरिया की ओर से खतरा स्पष्ट रूप से बढ रहा था और शान्तिपूर्ण प्रतिनिधिमण्डलों की हत्याओं का बदला भी लेना था। दूतों और सन्देशवाहकों की हत्या को घृणित अपराध माना जाता था और यह युद्ध छेडने जैसा कृत्य था। पैगम्बर (सल्ल0) को यह सूचना सुनकर झटका लगा और आपने तीन हजार लोगों पर आधारित एक सेना भेजने का निश्चय किया और आपने अपने पूर्व दास जैद बिन हारिसाः को सेनापति नियुक्त कियाः इस पर आपके अनेक साथियों को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। आप (सल्ल0) ने यह भी कहा कि यदि जैद (रजि0) मारे जाते है तो हब्शा से जल्दी ही वापस आने वाले जअफर (रजि0) सेनापति होंगे और यदि जअफर (रजि0) भी मारे गये तो उनके स्थान पर अब्दल्लाह बिन रवाहा (रजि0) सेनापति होंगे।

सीरिया का युद्ध पैगम्बर (सल्ल0) के जीवनकाल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और भीषण युद्ध था. यह ईसाइयों द्वारा शासित भूभाग पर महान विजय का प्रारम्भ था। यह फिलीस्तीन के निकट वहत्तर सीरिया की सीमा के एक गाँव मुताह में 8 हि0/629 ई0 पू0 हुआ।

मुस्लिम सेना ने कूच किया और जब वे सीरिया के निकट पहुँचे तो उन्होंने सुना कि इस्लाम विरोधी अरब कबीले एकजुट हो गये हैं और उन्होंने रोमन साम्राज्य के शाही सैनिकों का समर्थन भी प्राप्त कर लिया है जिससे उनकी क्षमता एक लाख से अधिक हो गयी है। चूँकि मुसलमानों के पास मात्र तीन हजार की सेना थी. उनके विजय की कोई सम्भावना न थी। यह निर्णय लेने के लिए एक बैठक हुई कि वह मदीना वापस हों. अधिक सैनिकों को बुलाने के लिए मदीना संदेश भेजें अथवा दोनों सेनाओं के बीच व्यापक अन्तर के बावजूद आगे बढें और युद्ध करें। (अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रजि0) सहित जिन्होंने रास्ते में बताया था कि वह महसूस कर रहे हैं कि वह इस युद्ध में एक शहीद के रूप में मरने जा रहे हैं) कुछ साथियों के उत्साह और आत्मविश्वास से प्रभावित होकर उन्होंने निर्णय लिया कि प्रारम्भिक योजना के अनुसार वह आगे बढेंगे और युद्ध करेंगे और पैगम्बर (सल्ल0) को इसकी सूचना नहीं देंगे। वह शत्रु के निकट पहुँचे। कुछ देर तक उनव निरीक्षण किया फिर अचानक उन्होंने मुताह की ओर अपना मार्ग बदल लिया: अरब और रोमन सेनाओं ने यह सोचकर उनका पीछा किया कि वह भाग रहे हैं। जब वह लोग मुताह नामक स्थान पर पहुँचे जहाँ की स्थिति मुसलमानों के पक्ष में बेहतर थी तो सेनापति जैद (रजि0) ने अचानक शत्रु को चकित करने के लिए हमला करने का आदेश दिया। इस रणनीति ने क्षण भर के लिए शत्रु को लडखडा दिया परन्तु यह स्थिति को मुसलमानों के पक्ष में करने के लिए पर्याप्त नहीं था जो कि संख्या में अत्यधिक कम थे। जैद (रजि0) शहीद हो गये. फिर जअफर (रजि0) और फिर अब्दुल्लाह (रजि0)। मुस्लिम से· अव्यस्थित हो गयीं तो खालिद बिन वलीद ने कमान सँभालीं। मुस्लिम सेना को एकत्र किया और नये आक्रमण से बचाने के लिए उन्हें योग्य बनाया। मुसलमानों को मात्र नौ सैनिकों की हानि हुई थी परन्तु उन्हें पीछे हटना पडा और यह साधारण रूप से एक पराजय थी तथापि खालिद (रजि0) उस टकराव को टालने में सफल रहे जिसका अन्त नरसंहार के रूप में हो सकता था।

अपने प्रिय साथियों के लिए विलाप

इस अवसर पर जो साथी पैगम्बर (सल्ल0) के साथ मदीना में रुके हुए थे उनको एक अत्यन्त विचित्र अनुभव हुआ। उनको ज्ञात था कि पैगम्बर (सल्ल0) ऐसे स्वप्न देखतें हैं जो अधिकतर सच्चे सिद्ध होते हैं: वह जानते थे कि पैगम्बर (सल्ल0) को अल्लाह की ओर से संदेश आता है और यह संदेश जैसे-जैसे आता है. वैसे-वैसे वह उसका पालन करते आये हैं। अतः वह लोग अपने अन्दर पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन के विचित्र और उत्कष्ट अनभव के आदी थे।

एक दिन पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उनके पास आये. यद्यपि युद्ध क्षेत्र से कोई दुत नहीं आया था और इस अभियान के सम्बन्ध में कोई अन्य सन्देश भी नहीं आया था. आपने युद्ध का वर्णन प्रारम्भ कर दिया. मानो आप युद्ध स्थल पर अपने योद्धाओं के साथ मौजुद हों। भावावेश में आँखों में आँसुओं के साथ आपने जैद (रजि0). जअफर (रजि0) और अब्दुल्लाह (रजि0) की मृत्यु की सुचना दी। आपने खालिद (रजि0) के कुशल नेतृत्व की सराहना की और उन्हें सैफुल इस्लाम (इस्लाम की तलवार) की उपाधि दी परन्तु अपने प्रिय शहीद साथियों के नाम का उल्लेख करते हुए आप अपने गहरे दुख को नहीं छुपा सके। आप जअफर (रजि0) की पत्नी अस्मा (रजि0) और उनके बच्चों के पास गये और उन्हें सुचित किया और साँत्वना दी: बोलने से पहले आप रोने लगे और अस्मा अपने पति की मत्य की सुचना पाकर फुट-फुट कर रोने लगी

फिर पैगम्बर (सल्ल0) उम्मे ऐमन (रजि0) और ओसामा के पास गये और उन्हें जैद (रजि0) की मृत्यु की सुचना दी। उनकी आँखे आसुँओं से भरी थीं: वह उनको बेटे के समान प्यार करते थे और विशेष रूप से उनका परिवार पैगम्बर (सल्ल0) के लिए प्रिय था। ज्यों ही आपने उनके घर को छोडा. जैद (रजि0) की सबसे छोटी बेटी अपने घर से दौडते हुए आयी और आपकी बाँहों में दुबक गयीः आप उसको साँत्वना देने का प्रयास कर रहे थे और उनके आँस उनके चेहरों से बह रहे थे और वह सिसक रहे थे।

आपके एक साथी सअद बिन उबादा जो वहाँ से गुजर रहे थे: इस दृश्य को देखकर और विशेष रूप से पैगम्बर (सल्ल0) के आँसुओं को देखकर चकित रह गये और उनसे इसका कारण पूँछा। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया कि यह ऐसा मामला है कि ''कोई व्यक्ति अपने प्रिय लोगों के लिए विलाप कर रहा है''। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों को प्रेम और सहानुभुति प्रकट करना सिखाया था. और उस क्षण जब मृत्यु पूर्ण रूप से लोगों को हमसे अलग कर देती है. उन्होंने मानव क्षणभंगुरता और अपने प्रिय लोगों के प्रति प्यार और सहानुभुति प्रकट करने में आँसू बहाने की शिक्षा दी थी।

खालिद (रजि0) के नेतृत्व में मुस्लिम सेना सीरिया से वापस आयी और पैगम्बर ने जो कुछ स्वप्न के रूप में देखा था उसकी उन्होंने पुष्टि की। घटनाएँ पूर्ण रूप से उसी तरह घटित हुईं थीं जैसा कि आपने उन्हें बताया था और आपके तीन साथियों ने लडते हुए प्राण न्यौछावार किये थे। पूरे समुदाय के लिए वह स्वप्न और वह ज्ञान मुहम्म (सल्ल0) की पैगम्बरी के लिए अतिरिक्त निशानियाँ थीं। वह असाधारण थे. आपके कार्य विचित्र थे. आपकी बुद्धि और आपकी विशेषताएँ अतुल्य थीं। इसके बावजद आप विनम्र और कोमल रहे और उन्हीं की तरह वह रोते भी थे।

उत्तर में परिस्थितियाँ कठोर रहीं और अरब कबीले निश्चित रूप से यह समझ गये थे कि सीरिया के मुताह नामक स्थान पर मुसलमानों की पराजय को वह अपने पक्ष में प्रयोग कर सकते हैं। मुहम्मद (सल्ल0) को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि कुछ कबीले मदीना के विरुद्ध व्यापक अभियान छेडने की तैयारी कर रहे हैं। आपने अम्र (रजि0) के नेतत्व में तीन सौ लोगों को एकत्र करने का निर्णय लिया जिनके उत्तरी कबीलों के र पारिवारिक सम्बन्ध थेः पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे कहा कि वह परिस्थितियों का अध्ययन करें और फिर उनकी सूचना पैगम्बर को दें और उनको आदेश दिया कि जितने अधिक परिवारों से सम्भव हो. गठबन्धन करें। उन्होंने उनके साथ दो सौ व्यक्ति अतिरिक्त भेजे क्योंकि विरोध संभावना से अधिक प्रतीत हो रहा थाः तथापि ऐसा नहीं था और मुस्लिम सेना सीरिया शासित क्षेत्र में आगे बढने. मौजूदा गठबन्धनों को सुदृढ करने. नये गठबंधन बनाने में सक्षम रही जिसके कारण जो सीमा अब तक असरक्षित थी। उसे सरक्षित बनाना संभव हो गया।

संन्धि भंग हो गयी

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है. हुदैबिया की सन्धि मात्र मदीना के समुदाय और कुरैश पर ही लागू नहीं होती थी बल्कि उनके सम्पूर्ण सहयोगियों पर भी लागू होती थी। खुजाअः मुहम्मद (सल्ल0) के सहयोगी थे और उनके एक परिवार बनू काफ पर एक रात्रि बनू बक्र ने धोखे में आक्रमण कर दिया जो कि कुरैश के सहयोगी थे जिसमें एक व्यक्ति की उन्होंने हत्या कर दी। बनू काफ कबीले ने बनू बक्र के इस विश्वासघात की सूचना पैगम्बर (सल्ल0) को पहुँचाने के लिए एक दूत भेजा। यह सन्धि भंग करने के समान था और पैगम्बर (सल्ल0) ने निर्णय लिया कि इस अपराध को दण्डित किये बिना नहीं छोडना चाहिए। अतः आपको अपने सहयोगी खुजाअः की सहायता करना ही था।

जहाँ तक कुरैश का मामला था वह परिस्थिति की गम्भीरता को समझ गये और उन्होंने अपने सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति को पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को आश्वस्त करने के लिए भेजने का निर्णय लिया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) किर्स इक्का-दुक्का घटना पर प्रतिक्रिया स्वरूप कार्यवाही न करें। हालाँकि जब से इस सन्धि पर हस्ताक्षर हुए थे तब से कुरैश के लोग इस सन्धि की शर्तों और सीमाओं का उल्लघंन करते आये थे और वह अन्य परिवारों को मुस्लिम समुदाय को कमजोर करने और उनपर आक्रमण करने पर उकसाने में कोई संकोच नहीं करते थे। इस बार घटनाएँ काफी आगे बढ गयी थीं और इसी कारण कुरैश सरदार अबू सुफियान पैगम्बर (सल्ल0) से बात करने के लिए स्वयं मदीना आये थे। सबसे पहले अबू सुफियान ने अपनी बेटी और पैगम्बर (सल्ल0) की पत्नी उम्मे हबीबा (रजि0) से सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया. फिर हजरत अली (रजि0) का. परन्तु उनको वार्त्ता का कोई साधन न मिल सका। पैगम्बर (सल्ल0) खामोश रहे और आपके साथी भी और अबू सुफियान की समझ में नहीं आ रहा था कि इस परिस्थिति पर किस प्रकार विचार करें। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने को

समझौता करने से मना कर दिया और अब् सुफियान खाली हाथ मक्का लौट गये. इन प्रयासों से अन्ततः निश्चित हो गया कि मक्का पर विजय प्राप्त करने के लिए अब समय आ चका है।

मक्का विजय

अगले सप्ताहों में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने साथियों को अभियान के लिए तैयार होने के लिए कहा हालाँकि आपने अपना उद्देश्य रहस्य में रखा। मात्र कुछ निकटतम साथी जानते थे कि अगले दिनों में क्या होने वाला है। अफवाहें उड रही थीं कि सेना सीरिया की ओर कुच करेगी अथवा तायफ की ओर अथवा हवाजिन के विरुद्ध ताकि परे अरब प्रायद्वीप में अनिश्चितता का वातावरण फैल जाए।

यह अभियान रमजान के महीने में निकला और पैगम्बर (सल्ल0) ने सबसे पहले मुसलमानों को निर्णय करने की छुट दी कि वह तय करें कि उन्हें रोजा रखना है अथवा नहीं। आपने स्वयं मर्र-अज्जहरान पहुँचने तक रोजा रखा। जब आपने वहाँ शिविर लगाया तो आपने मुसलमानों से रोजा तोडने के लिए कहा. क्योंकि उन्हें अपनी सम्पर्ण ऊर्जा की आवश्यकता थी।

मर्र-अज्जहरान शिविर एक चौराहे पर स्थित था: उनका लक्ष्य पुर्व में नज्द हो सकता था अथवा तायफ अथवा मक्का। हजरत अब्बास जिन्होंने मदीना में आवास करने के लिए मक्का छोडा था उन्होंने मुसलमानों की गतिविधि के सम्बन्ध में सुना और उनसे जा मिले। जब पैगम्बर (सल्ल0) ने अपना शिविर लगाया तो आपने प्रत्येक सैनिक से आग जलाने के लिए कहा ताकि शत्रु पर उसका प्रभाव डालें: दस हजार स्थानों पर आग जलायी गयी जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि एक विशाल सेना कुच कर रही है क्योंकि ऐसा समझा जाता था कि एक स्थान पर आग जल रही हो तो उसके साथ पॉच से दस सैनिक होते हैं।

करैश और अन्य कबीले आक्रमण की आशंका महसस कर रहे थे अतः उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) की नीयत मालम करने के लिए दत भेजे।

अब सफियान को अपना सम्मान पसन्द था

एक बार फिर कुरैश की ओर से दो अन्य दुतों हाकिम और बुदैल के साथ स्वयं अब सुफियान ही पैगम्बर (सल्ल0) को मक्का पर आक्रमण न करने के लिए सहमत करने के लिए आये। उन्होंने लम्बे समय तक वार्त्ताएँ कीं. परन्तु अंततः वह समझ गये कि पैगम्बर (सल्ल0) का संकल्प दृढ था। उन्होंने आपके साथियों और उनके व्यवहार और शिविर से शान्त वातावरण प्रकट होते देखा।

हाकिम और बुदैल ने इस्लाम धर्म स्वीकार करने का निर्णय लिया और अबु सुफियान ने घोषणा की कि वह कलिमे के आधे भाग को मानते हैं अर्थात "अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है" परन्तु वह मुहम्मद (सल्ल0) के पैगम्बर के रूप में उनके स्थान के सम्बन्ध में कुछ आशंकाएँ रखते हैं: और उन्हें मुहम्मद (सल्ल0) को पैगम्बर मानने और कलिमे के दुसरे भाग पर अपनी आस्था की घोषणा करने के लिए कुछ समय की आवश्यकता है। वह रात भर शिविर में रहे और फज्र की नमाज के बाद. पैगम्बर (सल्ल0) के प्रति मुसलमानों के प्यार और व्यवहार को देखकर उन्होंने हजरत अब्बास (रजि0) द्वारा परे कलमे को मान लेने के परामर्श को स्वीकार करने की घोषणा करने का निर्णय लिया।

पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि हृदय का यह परिवर्तन कमजोर था और आपने अब्बास (रजि0) से अबु सुफियान के साथ घाटी के किनारे तक जाने का आदेश दिया ताकि अबु सुफियान मुस्लिम सेना को कुच करते हुए देख लें। इसका प्रत्याशित प्रभाव पडा क्योंकि अबु सुफियान अत्यधिक प्रभावित हुए। इससे पहले अब्बास (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के कान में यह याद दिलाया था कि अबु सुफियान को सम्मान कराना पसन्द है और पैगम्बर को यह परामर्श दिया कि वह उनकी इस प्रवृत्ति को न भुलें। मुहम्मद (सल्ल0) एक अच्छे मनोवैज्ञानिक थे. आप उस परामर्श को नहीं भुले और मक्का में आपने यह सुचना भेज दी कि जो व्यक्ति अबु सुफियान के घर में. अथवा काबा के परिसर में अथवा अपने घर में ही शरण लेगा उसे डरने की आवश्यकता नहीं है और उसे कोई हानि नहीं पहँचायी जायेगी। अब सफियान जल्द ही मस्लिम सेना के पहँचने से पहले मक्का

लौट आये। (उन पर उनकी अपनी पत्नी हिन्दः ने उपहास किया और उन्हें पागल और कायर घोषित किया और अन्य सरदारों अबु जहल के बेटे इकरिमा ने उनका अपमान किया) और प्रत्येक व्यक्ति को परामर्श दिया कि पैगम्बर (सल्ल0) की असाध ारण सेना का प्रतिरोध न किया जाये और प्रत्येक व्यक्ति आत्मसमर्पण कर दे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अबु सुफियान को एक सहयोगी बना लिया था. मात्र इसलिए नहीं कि वह इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुके थे. बल्कि इसलिए भी कि पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके चरित्र और व्यक्तित्व को पहिचान लिया था। अब सुफियान (रजि0) ने अल्लाह को पहिचान लिया था परन्तु एक ऐसे व्यक्ति को विशेष स्थान और प्रतिष्ठा प्रदान करने में उन्हें कठिनाई महसूस हो रही थी जिससे उन्होंने युद्ध किया था और जिन्हें वह अपने बराबर समझते थे: पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इसे समझ लिया था और आपने जल्दी नहीं की. आपने उन्हें समय देकर उनको स्वयं अवलोकन करने और समझने का अवसर दिया। अबु सुफियान के इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद भी पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि उनके अन्दर सत्ता और कीर्ति का आकर्षण मौजूद है और जब आपने उनको अपनी सेना की क्षमता को दिखा दिया तो उनकी इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए टकराव के संभावित समाधान में उनको एक विशेष भूमिका प्रदान की।

यद्यपि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) समान सिद्धान्तों पर अटल रहने व आग्रह करते थे परन्तु आप विशेष प्रवृत्तियों को ध्यान में रखने की भी योग्यता रखते थे। आपका मिशन दूसरे के माध्यम से पहले को सुधारने का था। परन्तु आपने चरित्र. उमंगों और उन विशेष बातों की कभी अनदेखी नहीं की जिनसे किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व बनता है। उनका सन्देश न्याय में सबके साथ समानता के सिद्धान्त पर बल देता था. परन्तु इसके साथ-साथ आप भिन्नताओं के मनोविज्ञान और प्रत्येक व्यक्ति की विशेष प्रवत्तियों और आस्था के प्रभावशाली परिणामों को भी ध्यान में रखते थे।

20

'शानदार विजय'

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जनवरी 630 ई0 तदनुसार 10 रमजान सन् 8 हि0 को मक्का पर विजय प्राप्त की। इसे फत्हे मुबीन (स्पष्ट विजय) कहा जाता है। पैगम्बर मुहम्म (सल्ल0) ने मक्का की ओर कूच किया. मदीना के 3.000 मुसलमानों और दूसरे कबीलों के जो अन्य मुसलमान आपकी सेना में सम्मिलित हुए उनको मिलाकर आपकी सेना की कुल संख्या 10.000 हो गयी थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी सेना को विभिन्न टुकडियों में बाँट दिया था जिन्होंने शहर को घेर लिया था और एक साथ मिलकर उन्होंने केन्द्र की ओर कूच किया था।

जब सेना ने 'कदा' होते हुए मक्का में प्रवेश करने के लिए कूच किया. त पैगम्बर (सल्ल0) के इशारे पर अब्बास (रजि0) अबू सुफियान को एक ऐसे स्थान पर ले गये जहाँ से आप इस्लामी सेना की क्षमता को देख सकते थे कि एक कबीले के बाद दूसरा कबीला अपने सरदार के साथ अपना झण्डा लिये हुए गुजर रहा है और अबू सुफियान ने प्रत्येक दस्ते के सम्बन्ध में पूछा। जब सअद (रजि0) अबू सुफियान के पास से गुजरे तो उनकी आँखों के सामने से कुरैश का लम्बे समय तक चलने वाला दमन घूम गया और वह चीख उठे ''आज महान अभियान का दिन है। आज काबा की पवित्रता हमारे साथ होगी''। जब पैगम्बर (सल्ल0) ने इस पुकार को सुना तो क्रोध से आपके चेहरे का रंग बदल गया और आप बहत संवेदनशील हो गये। इस पर आपने कठोर असहमति व्यक्ति

की और आपने तुरन्त आदेश दिया कि झण्डा सअद के हाथों से ले लिया जाए और उसी समय पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. *''आज काबा की महानता. नेकी और उदारता का दिन है''.*

कुरैश के कुछ गुटों ने सुहैल. इकरिमा और सफवान के नेतृत्व में पहाडियों पर निशाना साध लिया. परन्तु पहले टकराव के बाद ही वह समझ गये कि प्रतिरोध करना व्यर्थ है। सुहैल ने अपने घर में शरण ली और इकरिमा और सफवान भाग निकले।

पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा कि इस दिन कोई यद्ध नहीं होगा जिसे आपने *'दया का दिन'* घोषित किया।

आठ वर्ष पहले पैगम्बर (सल्ल0) ने गुप्त रूप से सम्मानपूर्वक सिर उठाव मक्का छोडा था। पैगम्बर (सल्ल0) अब दिन के उजाले में एक विजेता के रूप में वापस आये थे परन्तु इस बार वह अपनी पहाडी पर अल्लाह की कृपा और उसका आभार प्रकट करते हुए आये थे और आपने सूरः अल-फतह (विजय) की इन आयतों को पढा था।

> *''निस्सन्देह हमने तुमको प्रत्यक्ष विजय प्रदान कर दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली भूलें क्षमा कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपने उपकारों की पूर्ति कर दे। और तुमको सीधा मार्ग दिखाये। और तुमको अपार सहायता प्रदान करे. वही है जिसने तुम्हारे दिलों में सन्तुष्टि अवतरित की ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ जाये।''* (कुरआन. 48:1-4)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अत्यन्त विनम्रता प्रकट करते हुए मक्का में प्रवेश हुए और आप मुसलमानों के पूर्व शत्रुओं के साथ महानतम दयालुता का प्रदर्शन करना चाहते थे। आपने कुछ घंटे विश्राम करने से पहले स्नान किया और आठ रकअत नमाज पढी। उसके बाद अपने ऊँट कस्वा पर सवार हुए और काबा गये जहाँ आपने सात बार परिक्रमा की। फिर आपने अपनी छडी से मर्तियों को हटाया और यह आयत पढते रहे और घोषणा करते रहे:

> *''सत्य आ गया और असत्य मिट गया. असत्य तो मिट जाने वाला ही होता है''.* (करआन 17:81)

पैगम्बर (सल्ल0) ने काबा की चाबी लाने को कहा और आग्रह किया कि सभी मूर्तियों को निकाल दिया जाए ताकि अल्लाह का घर अपनी प्रकृति के अनुसार हो जाए जिसे अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया था। अतः इसमें किसी मूर्ति का प्रतिनिधित्व नहीं होना चाहिए और किसी मूर्ति को इसमें साझीदार नहीं होना चाहिएः

''उसके सदश कोई चीज नहीं. वही सबकछ सनता. देखता है''।

(कुरआन 42:11)

पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा मूर्तियों को हटाने का यह संकेत जो दिखायी दे रहा था वह उससे बिल्कुल विपरीत था जो आप मक्का छोडने के बाद करते आये थे. क्योंकि आपने ऐसी मस्जिदें बनवायी थीं जो एक अल्लाह की इबादत करने का पवित्र स्थान थीं। आध्यात्मिक संदेश के स्तर पर यह संकेत वही भावना थी क्योंकि काबा में जो मूर्तिया थीं उन्हें हटाकर वह उन चीजों को हटा रहे थे जिन्होंने सच्चाई के सन्देश को सदियों के दौरान दूषित किया था। इस प्रकार मुहम्मद (सल्ल0) ने काबा को एक वास्तविक मस्जिद मे परिवर्तित कर दिया जिसमें सिर्फ एक मालिक सर्वशक्तिमान अल्लाह की ही इबादत भविष्य में की जा सकेगी।

कुरैश के लोग धीरे-धीरे अपने घरों से बाहर आकर काबा के परिसर में एकत्र होने लगे। काबा से मूर्तियों को हटाने के बाद पैगम्बर (सल्ल0) ने घोषणा कीः

''अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं जिसका कोई साझीदार नहीं उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दी है. उसने अपने बन्दे की सहायता की और शत्रु परिवारों को निकाल बाहर किया है. मात्र उसी ने यह काम सम्पन्न किया है''।

फिर आपने करैश को सम्बोधित किया. उन्हें इस्लाम के नियम बताये और इस आयत को पढाः

''ताकि तुम उनकी पीठ पर जम कर बैठो। फिर तुम अपने पालनहार की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पवित्र है वह जिसने इन चीजों को हमारे वश में कर दिया। और हम ऐसे न थे कि इनको नियन्त्रण में करते''। (करआन. 49:13)

इसके बाद आपने उनसे पुछा. ''उन्होंने क्या सोचा था कि वह उनके साथ क्या करने वाले हैं''। उन्होंने उत्तर दिया कि एक सज्जन भाई की तरह जो एक सज्जन भाई का बेटा है''. वह निश्चित रूप से उनके साथ दया का व्यवहार करेगा। उस अवसर पर आपने वह आयत पढी जिसमें युसुफ (अलै0) की कहानी का वर्णन है कि जब वह अपने भाईयों से पुनः मिले. जो भाई उनकी हत्या करना चाहते थेः

''युसुफ ने कहा. आज तुम पर कोई आरोप नहीं. अल्लाह तुमको क्षमा करे और वह सब कृपालुओं से बडा कृपालु है''। (कुरआन. 12:92)

फिर आपने घोषणा कीः *''जाओ तुम सब स्वतन्त्र हो!''* पैगम्बर (सल्ल0) ने सभी औरतों और मर्दों को जो उनके पास आये क्षमा कर दिया।

"दया का दिन"

• पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) विजेता के रूप में मक्का में प्रवेश हुए. जहाँ बिन किसी उत्सव अथवा ढोल बजाने. पटाखे छोडने के बल्कि अल्लाह का आभार व्यक्त करते हुए और नमाज में अपना सिर झकाये हुए। सामान्य आदेश था कि "दरवाजे के अन्दर सिर झकाये हुए प्रवेश करो"।

• पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथी बिलाल (रजि0) को काबे की छत पर खडे होने और अजान देने का आदेश दिया। मुहम्मद (सल्ल0) के कटु शत्रु अत्ताब बिन असीद ने अपने पास बैठे हुए अपने मित्र के कान में कहा कि यदि उसका बाप जीवित होता और Braying) देते हुए एक काले गधे को देखता तो उसे अत्यधिक आघात पहुँचता।

• पैगम्बर (सल्ल0) ने नमाज पढाई और फिर आपने मक्का के लोगों को सम्बोधित किया और उन्होंने पिछले बीस वर्षों के दौरान उनके साथ जो व्यवहार किया था उसे याद दिलाया और पूछा कि उन्हें उनसे क्या आशा है। अगर पैगम्बर (सल्ल0) चाहते तो मक्का के सम्पूर्ण लोगों की हत्या करवा देते और वह लोग इसके हकदार भी थे। उनके पास सैनिक शक्ति थी और उन्होंने उस शहर पर विजय प्राप्त की थी। उन्होंने उनकी सम्पत्ति को जब्त करने का आदेश दे दिया होता क्योंकि उन्होंने मुसलमानों की सम्पत्ति को लूटा था। उनको दास बनाने का आदेश दे दिया गया होता। ऐसा आदेश संभव भी था और वैध भी था और वह लोग इसके अधिकारी भी थे। परन्तु अल्लाह के अन्तिम पैगम्बर ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। आपने मात्र एक वाक्य कहाः

''आज तुम्हारे ऊपर कोई आक्षेप नहीं और तुम्हें कोई दण्ड नहीं दिया जायेगा: जाओ तुम सब स्वतन्त्र हो''!

- उन्होंने जिस उदारता का प्रदर्शन किया उसने आपके अत्यन्त हिंसक विरोधियों को भी चकित कर दिया जबकि अनेक लोगों ने उनका अपमान किया था. उनके विरुद्ध युद्ध किया था और उनके परिवार के सदस्य और उनके प्रियतम साथी की हत्या भी की थी. उन्होंने उन सबको क्षमा कर दिया और उन्हें सुरक्षा प्रदान की।
- जो व्यक्ति थोडी देर पहले बिलाल (रजि0) को बुरा-भला कह रहा था। वही व्यक्ति पैगम्बर (सल्ल0) की घोषणा सुनते ही अचानक उठा और अपने आप को पैगम्बर (सल्ल0) के समक्ष प्रस्तुत किया। आपको सम्बोधित करते हुए उसने कहा: ''मैं अत्ताब बिन असीद हूँ. आपका जाना-पहचाना शत्रु। मैं घोषणा करता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद (सल्ल0) उसके पैगम्बर हैं''!
- क्षमादान की घोषणा का प्रभाव तुरन्त पडा था। अत्ताब ही नहीं मक्का की सम्पूर्ण आबादी ने रातों-रात इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। जब पैगम्बर के शत्रु अत्ताब ने इस्लाम धर्म स्वीकार करने की घोषणा की तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उसको मक्का का गर्वनर नामित कर दिया और उसका दैनिक वेतन एक दिरहम निर्धारित कर दिया।
- जिस वहशी ने पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा हजरत हमजा (रजि0) की हत्या की थी उसे भी क्षमा कर दिया गया परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने उससे कहा कि भविष्य में वह उनके समक्ष आने से परहेज करे। ''मेरे सामने न आओ क्योंकि तुम्हारे मेरे सामने आने पर अपने चाचा की याद मुझे आयेगी''।
- मक्का का एक सरदार और इस्लाम का दुश्मन सफवान जिसने उमीर को इस प्रतिज्ञा पर पैगम्बर (सल्ल0) की हत्या करने के लिए भेजा था कि वह उसे पुरस्कार देगा। वह उस दिन जिददा भाग गया और उसने समुद्री मार्ग से यमन जाने का संकल्प किया।
- उमीर पैगम्बर (सल्ल0) के पास आये और यह निवेदन किया कि: ''ऐ अल्लाह के पैगम्बर! सफवान अपने कबीले का सरदार है और आपके डर से वह भाग गया है और संभवतः वह समुद्र में कूद जायेगा। यह जानकर पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. ''उसे सुरक्षा

प्रदान की गयी"। उसने कहा. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर मुझे सुरक्षा का कोई प्रतीक दे दीजिए ताकि उसे देखकर वह मेरे ऊपर भरोसा कर सके"। पैगम्बर (सल्ल0) ने उसे अपनी पगडी दे दी जिसे वह सफवान के पास ले गये। सफवान ने कहा कि मक्का वापस जाने में मुझे अपने प्राणों का भय लग रहा है। उमीर ने उत्तर दिया. "सफवान. अब तक तुम पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की विनम्रता और क्षमाशीलता से अनभिज्ञ हो"। यह सुनकर वह पैगम्बर (सल्ल0) के पास गया और कहा. "उमीर कहता है कि आपने मुझे सुरक्षा प्रदान कर दी है"। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. "यह सही है"। सफवान ने कहा कि "उसे सोचने के लिए दो महीने का समय दिया जाना चाहिए"। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. "दो नहीं बल्कि तम्हें चार महीने का समय दिया गया"।

- इस्लाम के एक अन्य शत्रु हबर ने मुहम्मद (सल्ल0) की बेटी जैनब (रजि0) को बडा आघात पहुँचाया था। जब वह मक्का से मदीना प्रवास कर रही थीं और वह गर्भवती थीं. तो हबर ने जान-बूझकर उन्हें ऊँट से खींचकर नीचे गिरा दिया था। उनको गम्भीर चोट लगी थी और उनका गर्भ नष्ट हो गया था। वह पैगम्बर (सल्ल0) की क्षमाशीलता के स्तर से प्रभावित था. वह उनके पास आया और कहा. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर! मैं ईरान की ओर भागना चाहता था परन्तु फिर मैं आपकी क्षमाशीलता से भाव-भिवोर हो गया। मैं अपनी अज्ञानता और अपराध को स्वीकार करता हूँ. अब मैं इस्लाम धर्म स्वीकार करने आया हूँ। कछ ही क्षणों में दया की भावनाएँ सब पर भारी हो गयीं।

- बद्र के युद्ध से लेकर अब तक अबू सुफियान की भूमिका किसी से छिपी न थी। पैगम्बर (सल्ल0) के विरुद्ध सम्पूर्ण हत्याएँ और युद्ध इन्हीं के द्वारा प्रारम्भ किये गये. नियोजित किये गये और लडे गये. परन्तु जब विजय के दिन उन्हें अब्बास (रजि0) लाये तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके साथ प्रेम और दयालुता का व्यवहार किया। हजरत उमर (रजि0) अबू सुफियान (रजि0) की पूर्व अपराधों के कारण हत्या करना चाहते थे परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको क्षमा कर दिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने मात्र अबू सुफियान के अपराधों को क्षमा ही नहीं किया बल्कि आपने उनके घर को इन शब्दों में शान्ति का परिसर घोषित किया. "जो व्यक्ति अबू सुफियान के घर में प्रवेश हो गया वह सरक्षित है और उसके अपराध क्षमा कर दिये गये"।

- अब् सुफियान की पत्नी हिन्दः थीः इस्लाम के प्रति उनकी घृणा इतनी अधिक थी कि उहद के युद्ध में उन्होंने हजरत हमजा (रजि0) का कलेजा निकाला और उरं चबाया। वह पैगम्बर (सल्ल0) के समक्ष आयीं. क्षमा-याचना की और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया जब पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें क्षमा कर दिया और इस्लाम की परिधि सम्मिलित कर लिया तो वह घर गयीं और अपने घर में मौजूद सभी मर्तियों को तोड दिया यह कहते हुए कि. ''वास्तव में तुमने हमे पथभ्रष्ट किया था''।
- एक प्रसिद्ध कवि कअब बिन जुहैर जो पैगम्बर (सल्ल0) को बुरा-भला कहते हुए कविताएँ लिखा करते थेः जब मक्का पर विजय प्राप्त हुयी तो वह फरार हो गये। फिर वह मदीना आये. क्षमा-याचना की और पैगम्बर (सल्ल0) से अपनी वफादारी की घोषणा की। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें क्षमा कर दिया और उसी समय कअब को अपनी चादर ओढायी।

एक अन्य कवि अब्दुल्लाह बिन जिबारी भी शायरी में पैगम्बर (सल्ल0) के प्रति अपना विरोध व्यक्त किया करते थेः वह नजरान भाग गये। बाद में वह पैगम्बर (सल्ल0) के पास आये. तौबा की और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें क्षमा कर दिया।

इकरिमा बिन अब् जहल अपने पिता के पदचिन्हों का अनुसरण करते हु इस्लाम के कट्टर शत्रु थेः यह देखकर कि मक्का मे उनकी मृत्यु निश्चित है वह यमन भाग निकले। उनकी पत्नी उम्मे हकीम जो इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुकी थींः उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) से अपने पति के लिए शरण की याचना की। उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया। फिर वह अपने पति को वापस लाने के लिए यमन गयीं और पैगम्बर (सल्ल0) के पास वापस आईं। इकरिमा को अपनी ओर आते हुए देखकर आपने अपने सम्मानित साथियों से कहा.

> ''इकरिमा बिन अब् जहल इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए आ रहा है। उसके पिता का अपमान न करना. क्योंकि मरे हुए लोगों का अपमान करने से जीवित लोगों को आघात पहँचता है और यह अपमान मतकों तक नहीं पहँचता''।

पैगम्बर (सल्ल0) उत्साह और प्रसन्न्ता में खडे हो गये और उसकी ओर इतनी तेजी से गये कि आपकी चादर आपके कंधे से गिर गयी और आपने कहा. ''ऐ प्रवास करने वाले घडसवार तुम्हारी वापसी का स्वागत है''।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस प्रकार अपने साथियों को क्षमाशीलता ही नहीं सिखायी बल्कि यह भी सिखाया कि कोई भी व्यक्ति किसी और के अपराधों के लिए जिम्मेदार नहीं होगा. यहाँ तक कि कुरआन की आयत के भावार्थ के अनसार वह अपने पिता के अपराधों का भी उत्तरदायी नहीं होगा।

''और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठायेगा''। (कुरआन. 17:15)

कुरआन ने पहले ही घोषणा कर दी थी जब प्रताडित लोग (पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथी) विजयी होंगे तो वह मानव सम्मान के सिद्धान्त और शिष्ट व्यवहार पर कायम रहेंगे. क्योंकि वहः

> ''ये वह लोग हैं जिनको यदि हम धरती पर प्रभुत्व प्रदान करें तो वह नमाज कायम करेंगे और जकात (अनिवार्य कर) अदा करेंगे और भलाई का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे''। (कुरआन. 22:41)

पैगम्बर (सल्ल0) ऐसी सज्जनता का जीवन्त उदाहरण थे कि आपने बदला लेने. सम्पत्ति अथवा सत्ता में रुचि नहीं दिखायी। आप सजदा करते हुए मक्का में प्रवेश हुए. काबा के परिसर में नमाज पढने और सजदा करने के लिए गये। आपने एक अल्लाह पर भरोसा और उसका आभार व्यक्त करते हुए अनेक दुआएँ कीं और फिर अन्त में आपने मक्का शहर में शान्ति स्थापित की।

इस्लाम के नेतत्व के लिए दिलों का सधार

विजेताओं का क्रूर होना स्वभाविक होता है। लेकिन पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने लिए इससे अलग व्यवहार का चनाव किया। वह अपने अभिभत शत्रओं के प्रति उदार थे।

कुरैश के लोगों ने पैगम्बर और उनके मिशन का दो दशकों तक विरोध किया था। पैगम्बर (सल्ल0) का मजाक उडाया गया था. उनके साथियों को प्रताडित किया गया था और उनकी हत्या के प्रयास किये गये थे। उनके परिवार और साथियों को कैद किया गया था और उनपर तीन वर्षों के लिए सामाजिक वहिष्कार थोप दिया गया था। उनका एक ही अपराध था कि उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को अपना नायक स्वीकार किया था और इस्लाम की परिधि में सम्मिलित हुए थे। कुरैश ने कोई रणनीति और कोई चाल इस्लाम को परास्त और नष्ट करने के लिए नहीं छोडी थी। परन्तु तीन युद्धों और मक्का के विजय के बाद कुरैश एक परास्त समुदाय थे और उनका मनोबल टूट चुका था। अब पैगम्बर (सल्ल0) की उनके विरुद्ध और मुसलमानों के विरुद्ध किये गये अत्याचारों का बदला लेने की बारी थी। परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने यह घोषणा करते हुए उन्हें क्षमा कर दिया कि वह उनको जो क्षति पहुँचायी गयी है उसका बदला नहीं लेना चाहते। आपने घोषणा कीः ''ला तस्रीब अलैकुम अलयौम'' (आज तुम्हें कोई दण्ड नहीं दिया जायेगा)। आपने करैश को उन सम्पत्तियों को भी अपने पास रखने की अनमति दी जिसपर उन्होंने

मुसलमानों के मदीना प्रवास के बाद अधिकार कर लिया था। यहाँ तक कि आपने उन्हें हज के स्थानों के प्रबंधक और मक्का के प्रशासनिक और मन्त्री के पारम्परिक पदों पर बने रहने की अनुमति दी।

मक्का विजय के बाद पैगम्बर (सल्ल0) शान्ति और क्षमाशीलता की नीति का अनुसरण करते हुए पर्याप्त रूप से विवेकशील थे। वह जानते थे कि उदारता और विशाल हृदयता व्यापक इस्लामी राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिए अधिक लाभकारी है और सुधार के लिए उनके दिलों को खोलने वाला है। दण्ड और बदला लेने की नीति मात्र बदला लेने के चक्र ही उत्पन्न करेगी। आपने वास्तविक हृदय परिवर्तन की आशा की थी। यह उसी समय संभव था जब उदार व्यवहार किया जाता और उन्हें अपने अतीत के अपराध ों की तौबा करने का अवसर दिया जाता।

कुरैश के समस्त लोग जाने-पहिचाने व्यक्तित्व थे और मक्का के प्रशासन में उन्हें उच्च स्तर की दक्षता प्राप्त थी। वह महानतम बुद्धिजीवी थे और उनके अन्दर व्यवहारिक योग्यताएँ सम्मान और प्रभाव. शासन करने और नेतृत्व करने का अनुभव था। दूसरों पर प्रभावी होने के लिए उनके अन्दर कौशल और योग्यता थी। वह मानव मनोविज्ञान को समझ सकते थे और इससे बढकर वह ऐसे लोग थे जिनकी सर्वोच्चता समाज में पहले से ही स्थापित थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसको समझा था कि उनके अन्दर महान प्रतिभाएँ हैं। उनको इतिहास के कूड़े में भरने की बजाये. सुधार के महान कार्य में उनसे सहयोग लिया जा सकता था। पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि वह लोग अरब के नेतृत्व के लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं और वह इस्लाम के सार-तत्व को एक संस्कृति का रूप दे सकने की क्षमता रखते हैं। कुरैश के लोग अज्ञानताकाल की व्यवस्था. जिसके लिए वह वचनबद्ध थे. उसकी सुरक्षा के लिए बहादुरी के साथ युद्ध किया था। उनसे आशा की जा सकती थी कि यदि उनके सम्मान को बचाये रखा जाये तो वह इस्लाम के प्रति उसी स्तर की वचनबद्धता का प्रदर्शन करेंगे। पैगम्बर (सल्ल0) को यह भी दृढ विश्वास था कि यद्यपि आस्था और नेकी इस्लाम का लंगर हैं परन्तु इस्लामी नेतृत्व के लिए बौद्धिक योग्यताओं. आत्म सम्मान. प्रभावशीलता. शासन का अनुभव. राज-कौशल और जनता के बडे समुदाय के नेतृत्व के लिए आवश्यक है। कुरैश को यदि ताकत से कुचल दिया जाता और उनको

अपमानित किया जाता तो उनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती। एक विजयी सेना के सेनापति के रूप में मक्का में प्रवेश करते समय पैगम्बर (सल्ल0) की दृष्टि और विनम्रता यह सुनिश्चित कर रही थी कि मक्का के लोग उनकी यातना की आशा करने की बजाए उनसे क्षमा यातना करते हुए आयें।

यह आत्मा की महान उदारता ही थी जिसने अरब प्रायद्वीप में व्यापक परिवर्तन किया और इस्लाम के सबसे कटटर शत्रुओं को इस्लामी आस्था के लिए भविष्य का ध्वजावाहक बना दिया।

✲

"ऐ अल्लाह मैं निर्दोष हूँ"

मक्का की महान विजय के पश्चात. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मक्का में उन्नीस दिनों तक ठहरे. और परिस्थितियाँ स्थायित्व की ओर बढने लगीं। मदीना लौटने से पहले आपने यह सुनिश्चित करने के लिए कि निकटवर्ती कबीलों के साथ उनकी सहयोग सन्धियाँ दृढ हों और जिन लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया है वह प्रत्येक प्रकार की मूर्ति-पूजा को छोड दें. अनेक दस्ते भेजे। खालिद (रजि0) को बनू जजिमा कबीले में ऐसे मिशन का दायित्व सौंपा गया जिसने अन्ततः आत्मसपर्मण कर दिया परन्तु खालिद (रजि0) ने अब्दुल रहमान बिन औफ के परामर्श के विरुद्ध युद्धबंदियों की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया जिनवं विरुद्ध उन्हें विशेष आक्रोश था। कुछ बंदियों की हत्या के बाद अब्दुल रहमान (रजि0) के आग्रह पर उन्होंने हत्या करना बन्द कर दिया. हजरत अब्दुल रहमान ने उन्हें स्पष्ट किया कि उनका यह व्यवहार अल्लाह और न्याय में आस्था के बजाय दूसरे कारणों से प्रेरित है।

जब पैगम्बर (सल्ल0) ने खालिद (रजि0) के व्यवहार के सम्बन्ध में सुना तो आप बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने सभी मृतकों के लिए खून बहा (अर्थदण्ड) देने का निश्चय किया और तेज आवाज में यह दुआ पढते रहेः *"ऐ अल्लाह खालिद ने जो कुछ किया है मैं उससे बरी हूँ"!* पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति. समूह अथवा कोई राज्य मानव जीवन पर अत्याचार करता है और निर्दोषों की हत्या करता है और

धर्म के नाम पर आतंक फैलाता है अथवा उसे पैगम्बर (सल्ल0) से सम्बद्ध करता है और यदि वह कर्म इस्लामी भावनाओं के विरुद्ध हैं तो उन्हें इस्लामी कर्म नहीं समझा जायेगा।

मक्का और मदीना के मुसलमानों के दिलों की. और चेतना की शिक्षा का मार्ग अब भी बहुत लम्बा था। उनके अन्दर गहराई में बसी हुई आदतें और अतीत की भावनाएँ निरन्तर सिर उठातीं और ऐसे व्यवहार के रूप में प्रकट होतीं जो इस्लामी सिद्धान्तों के विपरीत था। इससे बढकर मक्का के लोग जो एक साथ बडी संख्या में इस्लाम में आये थे. उनकी धार्मिक शिक्षा के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने मअज बिन जबल (रजि0) को इसे वरीयता देने को कहाः इस्लाम धर्म में नये आने वालों को शिक्षित करने और नये धर्म के सिद्धान्तों को सिखाने की आवश्यकता थी। अब तक जो कठिन परिस्थितियों में एकता का प्रदर्शन होता आया था. उसको प्राप्त करना उसकी तलना में आसान था जो एकता आस्था. प्रेम और सम्मान में स्थापित होनी थी।

जीवन के भौतिक मार्ग से बढकर. यह एक हृदय और चेतना की प्रारम्भिक यात्रा थी जो महान जेहाद के चरणों से गुजर रही थी जो लोगों को भावनाओं के प्राकतिक तनाव से आध्यात्मिक शिक्षा की शान्ति की ओर ले जा रही थी।

21
हनैन

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने महसूस किया कि अब भी उनके मुस्लिम समुदाय को अनेक खतरों का सामना है। सभी कबीलों ने पैगम्बर (सल्ल0) की सत्ता को स्वीकार नहीं किया था और कुछ सोचते थे कि उनको उखाड फेकने का समय आ चुका है। निरन्तर उडने वाली अफवाहें यह संकेत कर रही थीं कि हवाजिन कबीले और उसके सहयोगी बीस हजार से अधिक लोगों को लेकर मक्का के पूर्व में लामबंद हो रहे हैं और वे मुस्लिमों पर आक्रमण के लिए तैयार हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने गुप्तचर भेजे जिन्होंने अफवाहों की पुष्टि की मुसलमानों को अपने आप को शीघ्रतापूर्वक तैयार करना था। जो मुसलमान मदीना से आये थे उन्हें लामबंद किया गया और उन्होंने कुरैश में से दो हजार लोगों को सम्मिलित किया। (मक्का के अधिकतर कुरैश ने जल्द ही इस्लाम स्वीकार कर किया था परन्तु अन्य. जैसे सहैल अथवा सुफियान मुसलमान हुए बिना मुसलमानों की ओर से हुनैन में लडे)।

हुनैन के युद्ध में हिंसक कबीले हवाजिन और सकीफ भी सम्मलित हुए। 630 ई0/9 हि0 में मक्का से 16 कि0मी0 दूर हुनैन नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) 12.000 लोगों की एक सेना के साथ निकले। अब तक जिन सेनाओं का आपने नेतृत्व किया था उनमें यह सबसे बडी थी। उनमें से कुछ लोग जैसे अबू बक्र ने गर्वपूर्वक यह आत्मविश्वास व्यक्त किया कि उनकी संख्या अधिक है. विजय संभावित है जिससे पैगम्बर (सल्ल0) अप्रसन्न हुए।

हवाजिन सेना का नेतृत्व मलिक बिन औफ नाम का एक नौजवान योद्धा कर रहा था जिसने प्रायद्वीप में एक ठोस ख्याति प्राप्त कर ली थी। उसने शत्रु सेना को प्रभावित करने और सेना को उत्साहित करने और संख्या अधिक प्रदर्शित करने के लिए अपने सैनिकों के साथ अपने बच्चों को अपने साथ लाने का आदेश दिया। वह मक्का से 16 कि0मी0 पूर्व में स्थित हुनैन घाटी में गये जो तायफ के मार्ग पर स्थित था. जिससे मक्का से आने वाले मुसलमानों को आवश्यक रूप से गुजरना था और उसने रात के अँधेरे में घाटी के दोनों ओर के जंगलों में बडी संख्या में सैनिकों को तैनात कर दिया था। वह लोग घाटी से दिखायी नहीं देते थे और उसने अपनी शेष सेना को घाटी की दूसरी ओर तैनात कर दिया ताकि वह घाटी की तली से आने वाली मुस्लिम सेना को स्पष्ट देख सकें। मुसलमान सुबह के उजाले में आगे बढ रहे थे कि मलिक ने अपनी सेनाओं को पैगम्बर (सल्ल0) की सेना पर दोनों जंगलों से आक्रमण करने का आदेश दिया। मुसलमान पूर्णतः स्तब्ध थे और खालिद (रजि0) जो आगे चल रहे थे. आकस्मिक आक्रमण का विरोध न कर सके। मुस्लिम योद्धाओं ने अपने आप को बचाने का प्रयास किया। तंग घाटी के संकरे भाग में फँस कर मुस्लिम सेना आतंकित हो गयी।

पैगम्बर (सल्ल0) जो कुछ दूर पीछे अधिक खुले स्थान पर थे घटनाओं को देख रहे थे: आपने तुरन्त हजरत अब्बास (रजि0) की सहायता से अपने निकटवर्ती मुसलमानों को पुकारना प्रारम्भ कर दिया. क्योंकि हजरत अब्बास की आवाज आपकी आवाज से अधिक तेज थी। अधिक से अधिक मसलमान आकर जवाबी आक्रमण करने के लिए पनः संगठित हो गये।

फिर मुस्लिम सेना ऐसे जोश के साथ शत्रु की ओर आगे बढना प्रारम्भ हुई कि मलिक के हवाजिन सैनिक पूर्णतः अचम्भित रह गये। उन्हें ऐसे अचानक और बडे जवाबी आक्रमण की आशा नहीं थी।

मुसलमानों में एक महिला उम्मे सुलैम (रजि0) थीं जिन्होंने अपने पति के साथ युद्ध में भाग लिया। जिन्होंने ऐसी दृढता का प्रदर्शन किया. जिसको सबने स्वीकार किया। अब उनके शत्रुओं की पीछे हटने की बारी थी और फिर वे भागने लगे और मुस्लिम दस्ते उनका पीछा कर रहे थे। अन्त में मलिक ने तायफ शहर में बन सकीफ के पास शरण

पायी जबकि अन्य को पहाडों में छिपना पडा। उन्हें अपने अनेक पुरुषों को खोना पडा और अत्यन्त अप्रत्याशित और असाधारण रूप से उल्टे उन्हें कठोर पराजय का सामना करना पडा। बाद में कुरआन में अवतरित सन्देश ने मुस्लिम आस्थावानों को युद्ध की भिन्न वास्तविकताओं. भावनाओं और आध्यात्मिक पहलुओं का स्मरण कराया गयाः

> *''निस्सन्देह अल्लाह ने बहुत से अवसरों पर तुम्हारी सहायता की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी बहुसंख्या ने तुमको घमण्ड में ग्रसित कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आयी। और पृथ्वी अपने फैलाव के बाद भी तुम पर संकुचित हो गयी. फिर तुम पीठ फेर कर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने सन्देष्टा और मोमिनों (आस्थावानों) पर अपनी सकीनत (स्थिरता) अवतरित की और ऐसी सेना अवतरित की जिनको तुमने नहीं देखा और अल्लाह अवज्ञाकारियो को दण्डित किया और यही अवज्ञाकारियों का बदला है''।*
>
> (करआन. 9:25-26)

गनीमत का माल

हवाजिन की महिलाओं और बच्चों को जिन्हें कैद कर लिया गया था. एक व्यापक स्थान पर रखा गया। धूप से छाया प्रदान की गयी और मुहम्मद (सल्ल0) के वापस आने तक उन्हें उपयुक्त ढंग से खिलाया गया। जब वह वापस आये तो आपने देखा कि अधिकतर कैदी फटे-पुराने कपडों में हैं. आपने आदेश दिया कि गनीमत में जो धन मिला है उससे प्रत्येक कैदी के लिए बाजार से नये कपडे खरीदे जाएँ। फिर आपने निर्णय लिया कि युद्ध में गनीमत के रूप में प्राप्त चालीस हजार आउन्स चाँदी. चौबीस हजार ऊँट और चालीस हजार बकरियों को बाँटा जाये परन्तु आपने छः हजार कैदियों को हवाले नहीं किया जो युद्धबंदी बन गये थे क्योंकि आप समझ रहे थे कि हवाजिन के लोग अवश्य ही इनको माँगने के लिए प्रतिनिधिमण्डल भेजेंगे। पैगम्बर (सल्ल0) ने सामान को बाँटना प्रारम्भ किया. और अंसार (मदीना के मसलमानों) को आश्चर्य हआ कि आपने करैश को और

विशेष रूप से अबू सुफियान और हाकिम (खदीजा (रजि0) के भतीजे जिन्होंने शीघ्र ही इस्लाम स्वीकार किया था) को गनीमत के माल का महत्वपूर्ण भाग दे दिया। आपः सफवान और सुहैल को भी इसी प्रकार दिया जिनमें से दोनों ने हुनैन में युद्ध किया था. परन्तु वह अब भी इस्लाम धर्म स्वीकार करने में संकोच कर रहे थे। कुरआन में अवतरित सन्देश ने पैगम्बर (सल्ल0) को आदेश दिया कि वह गनीमत का कछ भाग उन लोगों के लिए रखें:

''जिनके दिलों को (आस्था के लिए) जीतना है''। (कुरआन 9:60)

यह लोगों को धर्म में लाने का साधन नहीं था बल्कि इसका उद्देश्य भौतिक उपहार के द्वारा उस आस्था को प्रबल बनाना था जो कम अथवा अधिक अपने आप को प्रकट कर चुकी थी परन्तु अभी वह कमजोर थी। पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि सफवान और सुहैल इस्लामी आस्था के लिए संवेदनशील थे और उन्होंने मुसलमानों के साथ बहादुरी से युद्ध किया था। अतः आपने उनको बडी मात्रा में सामान दिया और उन्हें धर्म स्वीकार करने के लिए नहीं कहा। मक्का विजय के अवसर पर मुहम्मद (सल्ल0) का क्षमाशील व्यवहार. फिर उनका युद्ध के दौरान साहस और दृढ निश्चय. और अन्त में युद्ध के बाद आपकी उदारता ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि वास्तव में वह एक पैगम्बर हैं। जहाँ तक अबू सुफियान का सम्बन्ध था. पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि उनके लिए सामाजिक स्वीकति और सम्मान कितना महत्वपर्ण है और पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने उनको वह स्थान देकर पष्टि कर दी।

'ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर होता है'।

जब हकीम को गनीमत के माल से अपना हिस्सा मिला तो उन्होंने अपनी ओर से कुछ गर्व प्रकट कियाः यह समझ में आने वाली बात थी. और ऐसा महसूस हो रहा था कि हकीम किसी भी चीज से. अधिक भौतिक लाभ प्राप्त करके प्रसन्न थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस उपहार के साथ एक आवश्यक आध्यात्मिक शिक्षा दी. आपने हकीम को स्मरण कराया कि सम्पत्ति पर अपने गर्व को नियन्त्रित करें और यह भी कहाः ''कि ऊपर वाला

हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर होता है''। इस तरह पैगम्बर (सल्ल0) ने हकीम को बताया कि जो लोग अपनी सम्पत्ति से उदारता प्रकट करते हैं और निर्धनों की देखभाल करते हैं और जो अपने प्राण और अपनी सम्पत्ति से उपहार देते हैं वह उन लोगों की तुलना में उच्च स्थान रखते हैं जो धन प्राप्त करते हैं अथवा माँगते हैं। आपने हकीम को यह परामर्श भी दिया कि उनके पास जो कुछ है वह उसमें से अपने परिवार को दें और उन लोगों को दें जो उनके ऊपर आधारित हैं। फिर आपने हकीम को सिखाया कि वह सम्पत्ति को अधि ाक शालीनतापर्वक लें ताकि वह उसे अधिक विनम्रता से दे सकें।

वफादारी की निशानियाँ

मदीना के मुसलमान (अंसार) मुहम्मद (सल्ल0) के व्यवहार को आश्चर्यजनक ढंग से देख रहे थे। क्योंकि अन्त में लगभग पुरा गनीमत का माल मक्के के लोगों में बँट गया। कुछ लोग सार्वजनिक रूप से अपनी निराशा अथवा नापसन्दीदगी व्यक्त करने लगे. क्योंकि उन्हें ऐसा लग रहा था कि मुहम्मद (सल्ल0) अपने निकटवर्ती लोगों को वरीयता प्रदान कर रहे हैं. हालाँकि जब पैगम्बर (सल्ल0) को उनकी आवश्यकता थी तो मदीना के लोगों ने उनके लिए सब कुछ किया। जब अन्सार के प्रतिनिधि के रूप में सअद (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पास आये और उनकी शिकायतों को प्रकट किया तो आपने उनको ध्यान से सुना और मदीना के मुसलमानों को एकत्र करने के लिए कहा. ताकि वह उनको सम्बोधित कर सकें। उन्होंने उनसे परस्पर ऋणों के सम्बन्ध में बात किया क्योंकि आपने कहा कि वह उनके द्वारा मार्गदर्शन के ऋणी हैं और यह भी कहा कि मदीना के लोगों ने अत्याचार से उन्हें सुरक्षा प्रदान की। मुहम्मद (सल्ल0) ने घोषणा की कि उन्होंने उनमें से किसी चीज को भुलाया नहीं है और जिस प्रकार उन्होंने गनीमत का बँटवारा किया है उससे उन्हें परेशान नहीं होना चाहिए. इसका उद्देश्य कुछ लोगों की आस्था को प्रबल करना था। इसका उद्देश्य न तो इससे अधिक था न इससे कम। निश्चित रूप से उन्हें उनके प्यार की तुलना गनीमत की प्राप्त हई सम्पत्ति से नहीं करना चाहिए। इस संसार की सम्पत्ति से प्रेम ने. सम्पत्ति

और इस संसार के जीवन से परे. अल्लाह से सच्चे प्रेम के अर्थ को भुला दिया था। कुरैश के लोग यहाँ से भेड और ऊँट लेकर जा रहे हैं जबकि अन्सार के लोग अपने साथ पैगम्बर को लेकर जायेंगे. जिन्होंने उनके साथ मदीना में आवास करने का निश्चय किया है और उसे अपना शहर बना लिया है।

फिर आपने आगे कहाः *''सभी लोग एक रास्ता अपनायें और अन्सार एक दूसरा रास्ता अपनायें. मैं अन्सार के रास्ते पर चलूँगा'' ''अल्लाह मेरी सहायता करने वाले अन्सार पर दया करे फिर उनके बच्चों पर और बेटों के बेटों पर''।* अंसार के समूह में भावनाएँ उमड रही थीं और अन्सार में से कुछ लोग रोने लगे। क्योंकि वह समझ गये थे कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के व्यवहार और आपकी वफादारी की निशानियों को समझने में वह कितनी गलती कर रहे थे। उनकी मौजूदगी उनके प्यार की निशानी थी जबकि जिस सामान को उन्होंने बाँट दिया था वह साधारण रूप से इस बात का प्रमाण था कि कछ लोगों के हृदय आज भी सांसारिक मोह से जडे हए हैं।

✵

आदर्श समाज सधारक

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथियों. महिलाओं और पुरुषों को समान रूप से स्वतन्त्र रहने के लिए साधन और आत्मविश्वास प्रदान करते थे. उन्हें स्वयं उनको सम्बोधित करने का साहस प्रदान करते और इसे अपने सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी न समझते। इस व्यवहार के द्वारा पैगम्बर (सल्ल0) अपने साथियों को उनकी प्रतिभा और उनके दिलों के प्रति गहरा सम्मान प्रकट करते और जहाँ तक उनका सम्बन्ध है अपने पैगम्बर. अपने नायक से इस ध्यान. इस उपलब्धता और अपनी योग्यताओं और अपने विचारों को प्रकट करने की स्वतन्त्रता उपलब्ध कराकर पर्ण रूप से उन्हे प्रयोग करने की माँग के कारण प्यार करते।

पैगम्बर (सल्ल0) का मिशन मानवता का सुधार. शिष्टता के उच्चतम स्तर पर करना था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस कार्य को सम्पन्न किया और आप सब के लिए अनुकरणीय आदर्श बन गये। वह अपने साथियों का सुधार जीवन के सभी क्षेत्रों में उच्चतम स्तर तक करने में सफल रहे और उनको चमकते हुए सितारे बना दिया। इस प्रकार मुहम्मद (सल्ल0) की शैली अनोखी. अनकरणीय और मानव मनोविज्ञान के पर्णतः अनकल थी।

यहाँ प्रस्तत कछ उदाहरण लोगों का सधार करने में आपके विवेक का प्रदर्शन करते हैं:

राजा और प्रजा के साथ समान व्यवहार

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की दया और कृपा सम्पूर्ण मानवता के लिए उदारतापू प्रवाहित थी. और वे सभी समान रूप से उनकी बैठकों में सम्मिलित होते थे। सभी लोग चाहे वह ईरानी हों. रुमी हों. युनानी हों. मिस्री हों. सुडानी हों अथवा हब्शी हों. पैगम्बर (सल्ल0) सबके साथ समान व्यवहार करते थे। सलमान फारसी. सुहैब रुमी और उस्माः नज्दी. जन्दल के (रजि0) . हामिर के सम्राट और यमन के मुख्य पुजारी धुमद. और अन्य शासक आपके साथ. साधारण लोगों के साथ समानतापुर्वक बैठते थे। एक व्यक्ति और दुसरे व्यक्ति के बीच कोई भेद उसके सामाजिक. राजनीतिक अथवा आर्थिक स्तर अथवा समाज में उसकी प्रतिष्ठा के आधार पर कोई भेद नहीं किया जाता था। जो भी उनके पास आता. उसे दया और कपापर्वक समान रूप से व्यवहार प्राप्त होता।

सन्तलन और यर्थाथ

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) स्वयं ऐसा जीवन व्यतीत करते थे जिसका आपके अनुयायी पालन कर सकें। एक हदीस के अनुसार आपके कुछ साथियों ने पवित्र जीवन व्यतीत करने का प्रण लिया। पहले साथी ने कहा कि वह विवाह नहीं करेंगे: दुसरे ने कहा कि वह गोश्त नहीं खायेंगे: तीसरे ने कहा कि वह बिना बिछौना के सोयेंगे और चौथे साथी ने कहा कि वह सदैव रोजा रखेंगे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे कहा. 'अल्लाह की कृपा है! मैं विवाहित हूँ और मैं पवित्र जीवन व्यतीत करता हँ. मैं माँस खाता हँ और रोजा भी रखता हँ। और सोता हँ और जागता भी हूँ'।

इस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) ने एक सन्तुलन स्थापित किया और इस बात पर बल दिया कि धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ सांसारिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखना चाहिए। आपने न तो भौतिक साधनों को अत्यधिक महत्व दिया और न आध्यात्मिक आनन्द के महत्व को कम किया। आपने सम्पत्ति एकत्र करने और सांसारिक आनन्द की

निन्दा की। परन्तु आपने कठोरता और संसार त्याग का पक्ष नहीं लिया। आपने जीवन को खुदा और कैसर के बीच नहीं बाँटा। इस्लाम मानवीय व्यवहार में चरमपंथ को प्रोत्साहित नहीं करता: इस्लाम न तो शारीरिक दमन का पक्षधर है और न शारीरिक वासना का: यह एकल विवाह को वरीयता देता है परन्तु इस पर हठ नहीं करता: यह कुछ परिस्थितियों में युद्ध की अनुमति देता है. परन्तु इसका मूल सन्देश अल्लाह के प्रति समर्पण और शान्ति है। संक्षेप में यह मानव चरित्र को मनुष्य की क्षमता और आवश्यकता के अनुसार व्यवस्थित करना चाहता है परन्तु यह मानव प्रकृति को पूर्णत बदलने से इन्कार करता है क्योंकि न तो यह भौतिक रूप से व्यवहारिक है और न आध्यात्मिक रूप से श्रेयष्कर है।

शासक

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की सभा का सामान्य तरीका और शान यह थी कि जब कोई प्रश्न पूछता तो आप उसका उत्तर उस समय तक देते जब तक उसकी समस्या हल न हो जाए और उसके प्रश्न का पूरा उत्तर न दे दिया जाये। इस विधि से अनभिज्ञ होने के कारण एक बद्दू आपके पास आया और अचानक पैगम्बर (सल्ल0) से पूछा. ''कयामत का दिन कब आयेगा?'' जब उसने अपनी बात पूरी की तो आपने पूछा. ''प्रश्नकर्त्ता कहाँ है?'' बद्दू ने कहा. ''मैं हूँ''। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. '' कयामत उस समय आयेगी जब लोग दायित्व छोड देंगे'' उसने पूछा. ''दायित्व किस प्रकार नष्ट होगा?'' पैगम्ब (सल्ल0) ने कहा. ''जब शासन का दायित्व अयोग्य शासकों के हाथों में आ जायेगा''। और पैगम्बर (सल्ल0) ने जोर देकर कहा कि ''और तुम्हें किस तरह के शासक मिलते हैं यह लोगों के अपने चरित्र पर निर्भर करता है''।

धनवान और निर्धन

सभा को सम्बोधित करते समय. पैगम्बर (सल्ल0) अपने साथियों. विशेष रूप से निर्धनों को उनके जीविकोपार्जन के लिए मुर्गी पालन प्रारम्भ करने के लिए उत्साहित करते थे.

क्योंकि इस तरह का व्यवसाय न्यूनतम स्रोतों के साथ आसानी से प्रारम्भ किया जा सकता था। उन्होंने धनवान साथियों को भेड. बकरी व ऊँट के पालन और गरीबों को मुर्गी पालन केन्द्र प्रारम्भ करने के लिए कहा। वास्तव में यह धनवानों के लिए एक प्रकार की चेतावनी थी कि वह अपने आप को उद्योग और व्यापार तक सीमित रखें जिसमें तुलनात्मक रूप से अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है और छोटे उद्योग और व्यापार को निर्धनों के लिए छोड दें ताकि उनके माध्यम से वह अपना जीविकोपार्जन कर सकें।

यह समाज के स्वस्थ्य विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि विभिन्न समूहों के बीच उचित और न्याय पर आधारित सन्तुलन बनाये रखा जाए. कि अगर बडे पूँजीपति छोटे उद्योगों को खरीद कर बडा उद्योग स्थापित कर लें और उद्योग धन्धों पर एकाधिकार स्थापित कर लें और वह खेती प्रारम्भ कर दें तो इस तरह से अपने सभी विरोधियों को समाप्त कर दें. तो इससे मात्र छोटे व्यापारियों की जीविका के साधन ही बन्द नहीं होंगे. बल्कि उन्हें अत्यधिक कठिन परिस्थितियों से गुजरना पडेगा। इससे समुदाय के अन्दर और मानवता के बीच वर्ग संघर्ष भी प्रारम्भ हो जायेगा और इस प्रकार स्थायी रूप से उनकी शान्ति और एकता नष्ट हो जायेगी।

लालच

सन्तोष सफलता और सम्पन्नता की कुंजी है और लालच पूर्ण रूप से इसके विपरीत है।

हममें से अधिकतर लोगों का विश्वास है कि सम्पत्ति हमारे लिए सम्पन्नता लायेगी। यह हमारे लिए विलासिता के साधन प्रदान कर सकती है परन्तु सुख नहीं दे सकती जो हमारी प्रकृति की आन्तरिक अनुभूति है और भौतिक सम्पन्नता को पागलों की तरह तलाश के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। वास्तव में वह सन्तोषी है जो हमें सुख के संसार में ले जाता है जिसमें हृदय स्वयं अपने आप के साथ शान्ति में रहता है और शरीर और आत्मा लालच के चंगुल से मुक्त हो जाते हैं। लालच और लोलुपता का कोई अन्त नहीं है। कोई जितना इसको सन्तुष्ट करता है उतनी ही यह गुणोत्तर समानपात में

बढती है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की निम्नलिखित हदीस मनष्य की प्राकतिक प्रवत्ति पर पर्याप्त प्रकाश डालती है:

> *''यदि आदम की सन्तान को सोने से भरी एक घाटी भी दे दी जाये तो वह इस तरह की दो घाटियों की इच्छा करेगा. क्योंकि उसके मुँह को धूल के अतिरिक्त कोई चीज नहीं भरती। और अल्लाह उस व्यक्ति को क्षमा करता है जो उससे तौबा करता है''।*

मनुष्य सदैव धन और भौतिक सम्पन्नता की खोज में रहता है। और अधिक के लिए संघर्ष करना उसकी प्रकृति में बसा हुआ है। वह सदैव धनवान बनने के अवसर ढूँढता रहता है। धनवान बनने. अपने जीवन स्तर को विकसित करने. अपनी जीवन शैली में और साधन जोडने. तीव्र गति से चलने वाली कारों का सपना देखने और प्राकृतिक वातावरण में भव्य महलों की अभिलाषा रखता है। संक्षेप में. किसी व्यक्ति की अभिलाषाओं की सूची अन्तहीन होती है। वह अपने सपनों को साकार करने और महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए कोई कसर नहीं छोडता। हम भौतिक साधनों की खोज में इतने वशीभत हो जाते हैं कि हम खेल के नैतिक मूल्यों को अक्सर भूल जाते हैं

अपने सम्पूर्ण विलासितापूर्ण साधनों के साथ इस संसार से प्रेम हमें परलोक की तलाश से दूर कर सकता है। हमें सदैव याद रखना चाहिए कि हमारे अस्तित्व का मख्य उद्देश्य अल्लाह की इबादत करना है।

हमारा पालनहार भौतिक विलासिताओं की अन्धी खोज से हमें हतोत्साहित करता है और वैभव की क्षणभंगुर चमक को सांसारिक लुभावनापन. बताकर उसका उपहास करता है जो हमें अल्लाह की स्तुति करने के मुख्य उद्देश्य से दर कर देता है। करआन की आयत इसी वास्तविकता को स्पष्ट कर रही है:

> *''और तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान वह चीज नहीं जो तुमको हमारा निकटवर्ती बना दे. हाँ जो ईमान लाया और उसने अच्छा कर्म किया. ऐसे लोगों के लिए उनके कर्म का दो गना बदला है। और वह ऊँचे घरों (स्वर्ग में) में सन्तोषपर्वक रहेंगे''।* (करआन. 34:37)

भ्रष्टाचार

अब तक हमने अपना ध्यान लालच के कारणों पर केन्द्रित किया था। अब यह बताने की आवश्यकता है कि भौतिक लोलुपता ही हमें आर्थिक केक में से दुसरों का हिस्सा झपटने के लिए प्रेरित करती है। अवैध साधनों द्वारा भौतिक लालच की पुर्ति का कोई प्रयास समाज को न्याय और समता से वंचित कर देता है। सामान्य भाषा में इसे घस कहा जाता है जो हमारे समाज में प्रचलित है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने अनुयायियों और साथियों को सम्पन्न बनने के लिए अवैध साधनों को अपनाने के विरुद्ध सचेत किया। एक अवसर पर कर संग्राहक (तहसीलदार) अपने कर संग्रह करके वापस आये तो उन्होंने एकत्र सामान को पैगम्बर (सल्ल0) के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि यह सरकारी कर है और यह मुझे उपहार के रूप में दिया है: जो सामान उन्होंने दिखाया था उसमें से कुछ को कर के रूप में एकत्र किया हुआ बताया गया जबकि एक अन्य भाग को अपने लिए उपहार के रूप में बताया। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसमें भष्टाचार की बु महसुस की। आपने तुरन्त सभा में अप साथियों को सम्बोधित किया और कहा इस संग्राहक को देखो जो कहता है. 'यह जकात का हिस्सा है और यह मेरा है जो उपहार के रूप में मिला है'। अब इसे अपने घर पर ठहरने दो और फिर देखो कि क्या कोई अब भी उपहार देने के लिए आता है।

आतंकवाद

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा: *''अल्लाह शिष्टाचार के कारण वह कछ देता है जो वह हिंसा अथवा अन्य चीज के लिए नहीं देता''।*

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने यह भी कहा: ''कयामत के निकट असंख्य हत्याएँ सामान्य हो जायेंगी जब हत्यारा अपने शिकार को नहीं जानेगा और शिकार यह नहीं जानेगा कि उसकी हत्या क्यों की गयी और उसकी हत्या किसने की''।

1400 वर्ष पहले पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने उस दखद परिस्थि भविष्यवाणी की थी जिसका आज हम सामना कर रहे हैं और आतंकवादी हमलों में लाखों लोग मारे जा रहे हैं। शत्र देश सैनिक छापे मार रहे हैं और विभिन्न देशों के विरुद्ध प्रतिबन्ध ा और बहिष्कार किये जा रहे हैं और विभिन्न देशों में पलिस और सैनिक कारवाई द्वारा अपने नागरिकों की हत्याएँ की जा रही हैं।

निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं उन्हें पता नहीं है कि उन्हें किसने मारा और क्यों मारा? और हत्यारे नहीं जानते कि वह किसको मार रहे हैं और इसी प्रकार ऐसे लोगों को मारा जा रहा है जिनकी हत्यारों से कोई शत्रता नहीं है।

शराब और जआ पर प्रतिबन्ध

मानवता की भलाई के लिए पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) का दरदर्शतापर्ण योगदान यह है कि आपने शराब और नशीले पदार्थों जैसे अल्कोहल. नशीली दवाईयों और प्रत्येक प्रकार के जआ पर प्रतिबन्ध लगाया। करआन कहता है कि शराब और जआ के सीमित लाभों की तलना में उसके हानिकारक प्रभाव अत्यधिक हैं। जआ की आदत व्यापक समाज के लिए खतरनाक है और इसके परिणाम बर हैं। यह लोगों को उत्यापदक गतिविधियों से दर रखता है और उन्हें अवैध माध्यमों से धन अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अधिकतर मामलों में यह परिवारों को आर्थिक रूप से नष्ट कर देता है जिससे वह कर्जदार हो जाते हैं ओर बेसहारा हो जाते हें। इससे बढकर यह समाज के नैतिक ताने-बाने को कमजोर कर देता है।

प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार अर्नाल्ड जे. टायनबी ने एक बार टिप्पणी की थी कि इस्लाम का मानवता पर सर्वाधिक मल्यवान और प्रभावी योगदान शराब प्रतिबन्ध लगाना है।

मानव एकता

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जिस विश्व बन्धुत्व का सिद्धान्त और मानव समाज कं समानता की जिस धारणा की घोषणा की वह आपका मानवता के सामाजिक उत्थान के लिए एक महान योगदान है। सभी धर्मों ने इसी सिद्धान्त की शिक्षा दी परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने इस सिद्धान्त को वास्तविक रूप से व्यवहारिक बनाया और इसके मूल्य को पूर्ण रूप से भविष्य में कभी उस समय मान्यता प्रदान की जायेगी जब अन्तर्राष्टीय समुदाय जागृत होगा. नस्लवादी भेद-भाव समाप्त हो जायेंगे और मानव-बन्धत्व की प्रबल धारणा अस्तित्व में आ जायेगी।

अल्लाह के समक्ष प्रजा और राजा बराबर हैं

भारत की महान कवयित्री सरोजिनी नायडू इस्लाम के पहलू पर बोलते हुए कहती हैं. ''यह पहला धर्म था जिसने लोकतन्त्र का प्रचार किया और उसे व्यवहार रूप दिया: क्योंकि मस्जिद में जब *अजान* की आवाज आती है और नमाज पढने वाले एकत्र होते हैं तो दिन में पॉच बार इस्लाम का लोकतन्त्र व्यवहारिक रूप से दिखायी देता है और (रजि0) और प्रजा एक साथ झुकते हैं और घोषणा करते हैं कि 'केवल अल्लाह ही महान है''' । भारत की महान कवयित्री आगे कहती हैं. ''मैं इस्लाम की इस अविभाज्य एकता से बार-बार

प्रभावित हुई जो मनुष्य को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार भाई बनाती है। जब आप किसी मिस्री. किसी अल्जीरियाई. किसी भारतीय और किसी तुर्क से लन्दन में मिलते हैं तो इस बात का कोई प्रभाव नहीं पडता कि एक व्यक्ति की मातभमि मिस्र है और दसरे व्यक्ति की मातभमि भारत है''।

हज यात्रा. एक जीवन्त प्रमाण

हज के मौसम में प्रतिवर्ष सम्पूर्ण विश्व नस्ल रंग और प्रतिष्ठा के भेदों को मिटाते हुए बन्धुत्व के अदभुत प्रदर्शन का अवलोकन करता है। वहाँ युरोपीय. अमेरिकी. अफ्रीकी. ईरानी. रुसी. आस्टेलियाई. भारतीय. चीनी. जापानी और अन्य राष्टों के लोग मक्का में एक आसमानी परिवार के रूप में मात्र मिलते ही नहीं बल्कि वह एक जैसे परिधान पहने हुए मिलते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दो बिना सिले हुए कपडों के टुकडों में लिपटा होता है। एक टुकडा कमर पर लपेटकर. दुसरा टुकडा कन्धे पर. नंगे पैर बिना किसी दिखावे के. और यह स्तुति करते हुए ''ऐ अल्लाह मैं उपस्थित हूँ: तेरे आदेश पर: तु एक है और तु एक मात्र है. मैं उपस्थित हूँ''। इस प्रकार वहाँ कोई चीज ऐसी नहीं जो उच्च प्रतिष्ठा वाले को निम्न प्रतिष्ठा वाले से अलग करे और प्रत्येक हज यात्री हज के अन्तर्राष्टीय महत्व की भावना अपने घर ले जाता है।

प्रोफेसर हरग्रोन्ज के शब्दों में ''पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने राष्टों के जिस संघ की स्थापना की. अन्तर्राष्टीय एकता और मानव बन्धुत्व के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया और जिस विश्व-बन्धुत्व को ऐसे सार्वभौमिक आधार पर कायम किया वह अन्य राष्टों के लिए आदर्श है''। वह आगे कहते हैं ''वास्तविकता यह है कि इस्लाम ने राष्टों के जिस संघ की विचारधारा को व्यवहार रूप देने के लिए काम किया. संसार का कोई राज्य ऐसा उदाहरण प्रस्तत नहीं कर सकता''।

नस्लवाद

गोरे काले से श्रेष्ठ नहीं

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने यह भी घोषणा की 'यदि किसी हब्शी काले को भी मुसलमानों पर शासक बना दिया जाए तो उसका आज्ञापालन किया जाना चाहिए'। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने नस्लवाद अथवा रंगभेद की समस्या का उन्मलन इतनी ही सफलतापर्वक किया. उदाहरणस्वरूप:

- इस्लामी राज्य के दूसरे खलीफा हजरत उमर (रजि0) जो इतिहास में प्रसिद्ध हैं. जब भी वह हजरत बिलाल (रजि0) को देखते जो हब्शी दास थे तो वह उनके सम्मान में खडे हो जाते और यह कहते हुए उनका स्वागत करते. ''हमारे स्वामी आ गये. हमारे स्वामी आ गये''। कुरआन और पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने अरबों के अन्दर किस सीमा तक आमल परिवर्तन किया।
- जैद बिन हारिसाः एक काले दास थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जब रोमन साम्राज्य के विरुद्ध मुस्लिम सेना को भेजा तो आपने इन्हें उसका सेनापति नियुक्त किया।
- ओसामा एक काले दास थे. पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने उनको मस्लिम सेना का सेनापति नियुक्त किया।
- एक दिन अबू जर अल-गिफारी (रजि0) एक मुसलमान के पास बैठे हुए थे जो काले थे। अबू जर (रजि0) ने उहें ''काला'' कहकर सम्बोधित किया। यह सुनकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अत्यन्त अप्रसन्न हुए और अबू जर (रजि0) से सुधार लाने के लिए कहा और आपने कहा. ''गोरे लोग कालों की तुलना में श्रेष्ठ नहीं हैं''। ज्यों ही पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको डाँटा. अब जर अपनी गलती पर सचेत हो गये। और वह लज्जा से जमीन पर

लेट गये और जिस व्यक्ति को उन्होंने कष्ट पहँचाया था उससे कहाः खडे हो जाइये और अपना पैर मेरे चेहरे पर रगड दीजिए''।

- आज भी हम सभी जानते हैं कि काले हब्शियों और पिछडे वर्गों के साथ ससंस्कृत गोरी नस्लें और उच्च जाति के लोग कैसा व्यवहार करते हैं। लगभग चौदह सदी पहले इस्लाम के पैगम्बर (सल्ल0) के जमाने में हजरत बिलाल (रजि0). जो काले दास थे. की दशा पर विचार कीजिए। इस्लाम के प्रारम्भिक दिनों में नमाज के लिए अजान देने की भमिका को एक सम्मान समझा जाता था और यह भमिका इन्हीं काले दास को प्रदान की गयी थी। मक्का विजय के बाद पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें अजान देने का आदेश दिया। और यह काले दास काबा की छत पर चढ गये जो कि सर्वाधिक ऐतिहासिक और मस्लिम संसार का सर्वाधिक पवित्र स्थान है।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने एक बार देखा कि एक धनवान मसलमान साथी अपने पास में बैठे एक निर्धन मसलमान से दरी बनाये रखने के लिए अपने ढीले कपडे समेट रहा है। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने इस पर कहा. *''क्या तम्हें डर है कि उसकी निर्धनता तमसे चिपक जायेगी''।*

- इस प्रकार पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने ऐसा प्रबल परिवर्तन किया कि अरबों में से जन्म के आधार पर सबसे सज्जन और शद्ध लोगों ने अपनी बेटियाँ हब्शी दासों के लिए प्रस्तत कीं।

यही कारण है कि जर्मन कवियों में से सबसे बडे कवि गोएथ ने करआन के सम्बन्ध में बोलते हए कहा. *''यह पस्तक समस्त यगों में सर्वाधिक प्रबल प्रभाव डालती रहेगी''।* और यही कारण है कि जार्ज बर्नार्ड शॉ कहते हैं. *''यदि इग्लैण्ड ही नहीं. बल्कि यरोप पर राज करने का अवसर किसी धर्म को मिलना है तो अगले सौ वर्षों में यह धर्म इस्लाम होगा''।*

महम्मद से वफा......

22

पैगम्बर (सल्ल0) का मदीना प्रेम

मक्का में दो सप्ताह ठहरने के बाद. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने मदीना लौटने का निश्चय किया। उन्होंने मदीना लौटने से पूर्व छोटी तीर्थयात्रा (उमरा) की। आप मदीना में एक शरणार्थी के रूप में आये थे परन्तु अब वह उसे अपना घर समझ रहे थे. हालाँकि. वहाँ की संस्कृति और रीति-रिवाज मक्का से इतने भिन्न थे जिसे छोडने से लिए विवश होने से पहले आप आधी शताब्दी से अधिक वहाँ रह चुके थे। आप मदीना के वासियों के रीति-रिवाज. उनकी मनोवैज्ञानिक संरचना और उनकी उमंगों को देखकर मदीना के नये वातावरण में अपने व्यक्तित्व के अन्दर धीरे-धीरे इसके बहुत से पहलुओं को आत्मसात करते हुए बस गये। आप मदीना के लोगों से ऐसा गहरा और आध्यात्मिक प्यार रखते थे जो कबीयली खानदानी अथवा सांस्कृतिक बन्धनों से मुक्त था।

दैनिक दिनचर्या चलती रही और मुसलमानों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही थी. जिसके कारण पैगम्बर (सल्ल0) उनकी शिक्षा पर अधिक ध्यान देने के लिए विवश हो रहे थे और उस दायित्व को अपने अत्यन्त वफादार और भरोसेमन्द साथियों को सौंप रहे थे।

यहाँ और वहाँ शत्रुता प्रकट हो रही थी और मुहम्मद (सल्ल0) अभी भी उनको नियन्त्रित करने के लिए छोटे-छोटे सैनिक दस्ते भेज रहे थे। परन्तु कभी-कभी कबीलों से युद्ध करना भी आवश्यक हो जाता था जो अब भी मदीना की सर्वोच्चता को चनौती देने का संकल्प रखते थे।

दिलों का रहस्य

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उत्तरी बद्दु कबीलों विशेष रूप से बनू मुर्रा के लिए एक अभियान भेजा जो कि फदक नखलिस्तान में काम करने वाले यहूदी किसानों पर आक्रमण जारी रखे हुए थे जो पैगम्बर (सल्ल0) के अधिकार में था। मुस्लिम सेना को कडे प्रतिरोध ा का सामना करना पडा और इस अभियान में सम्मिलित सभी तीस मुस्लिम सैनिक मारे गये। पैगम्बर (सल्ल0) ने दो सौ मुस्लिम सैनिकों का एक अन्य अभियान भेजने क निश्चय किया. जिसमें 17 वर्ष के ओसामा (रजि0) भी सम्मिलित थे जो कि उस जैद (रजि0) इब्ने हारिसाः के बेटे थे. जिन्हें पैगम्बर (सल्ल0) अपना दत्तक पुत्र मानते थे।

युद्ध कठिन था क्योंकि मुस्लिम सेना को हराने के लिए तथा फदक नखलिस्तान और उसकी सम्पत्ति को अधिकार में लेने के लिए बहुत से कबीले एक साथ मिल गये थे। परिस्थितियाँ तथापि मुसलमानों के पक्ष में परिवर्तित हो गयीं। बनू मुर्रा कबीले के एक सदस्य ने ओसामा(रजि0) और उनकी कम आयु होने पर उपहास किया। अपने आप पर काबू पाने में असमर्थ. ओसामा (रजि0) ने उस व्यक्ति से तुरन्त युद्ध करने का निर्णय किया जिसने उनका अपमान किया था। कमजोर पडने के कारण बद्दु ने भागना बेहतर समझा। क्रोध में ओसामा (रजि0) ने अभियान के सेनापति के सदैव एकजुट रहने के आदेश की अनदेखी करते हुए उसका पीछा किया. अपने शत्रु को किसी तरह पकड लिया उसको पटक दिया और घायल कर दिया। बद्दु चिल्लायाः ''मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं!'' परन्तु ओसामा (रजि0) ने इसकी अनदेखी की और उस व्यक्ति की हत्या कर दी। जब वह अपने शिविर में वापस आये और यह कहानी बतायी तो दस्ते के सेनापति और अन्य सैनिकों को उनके व्यवहार पर आघात लगा और वह अपनी गम्भीर गलती को समझ गये।

मदीना लौटने पर ओसामा (रजि0) शीघ्र ही पैगम्बर (सल्ल0) से मिलने गये जिन्होंने सबसे पहले गर्मजोशी से अभियान में विजय प्राप्त करने की सचना से प्रसन्न

होकर अभिवादन किया। जब उन्होंने द्वन्द युद्ध के सम्बन्ध में बताया तो पैगम्बर (सल्ल0) ने इस पर कठोर अप्रसन्न्ता व्यक्त की और कहाः "ओसामा. क्या तुमने उसकी हत्या इस स्थिति में कर दी कि उसने कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं? ओसामा (रजि0) ने उत्तर दिया कि बद्दू ने ये शब्द मात्र अपनी जान बचाने के लिए कहे थे और पैगम्बर (सल्ल0) ने क्रोधित होकर उत्तर दियाः "क्या तुमने उसका हृदय चीर कर देखा था कि वह सच बोल रहा था अथवा झूठ?" ओसामा (रजि0) भयभीत थे और आशंकित थे कि उनका यह पाप कभी क्षमा नहीं होगा। तथापि पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें यह शिक्षा देते हुए क्षमा कर दिया कि किसी व्यक्ति के साथ और उसके दिलों के रहस्य के साथ युद्ध और शान्ति दोनों परिस्थितियों में किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए।

उस बद्दू के इस्लाम का मूल मन्त्र "अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं" पढने के बाद ओसामा (रजि0) को उसकी हत्या नहीं करनी चाहिए थी। यदि वह सच्चा था तो उसकी जान स्पष्ट रूप से बख्श दी जानी चाहिए थी। यदि वह सच्चा नहीं था तो उसकी घोषणा शान्ति और दया की अपील के रूप में थी। ऐसे मामले में कुरआन की आयत में मुसलमानों को पहले ही आदेश दिया जा चुका था कि न्याय किया जाए. कुशाग्रता का प्रदर्शन किया जाए. और शान्ति प्राप्त करने के लिए आत्म नियन्त्रण रखा जाएः

> *"ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के मार्ग में यात्रा करो तो अच्छी तरह जाँच लिया करो और जो व्यक्ति तुमको सलाम (शान्ति की कामना) करे उसको यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम सांसारिक जीवन का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुत अधिक परिहार (युद्ध में प्राप्त सामान) प्राप्त है। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुमपर कृपा की. तो जाँच कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे भिज्ञ है"।* (कुरआन. 4:94)

जब उस बद्दू ने मृत्यु को आते देखा तो उसने शान्ति की अपील की. परन्तु ओसामा (रजि0) इस संसार में अपने सम्मान की रक्षा के लिए दृढ संकल्प थे (चूँकि उनका उपहास किया गया था). वह कबायली रिवाज की ओर लौट गये थे हाँलाकि इस्लाम की समझ के कारण उस व्यवहार में सुधार आ जाना चाहिए था। उनके शत्रु द्वारा इस्लाम का कलिमा पढने के पीछे उसकी नीयत के सम्बन्ध में उनकी जो भी व्याख्या हो. परन्त उनके

कर्म और उनके व्यवहार को ऐसी कोई चीज उचित सिद्ध नहीं कर सकती। ओसामा (रजि0) ने स्वयं संकल्प किया कि कभी वह भविष्य में इस प्रकार भावनाओं से विचलित नहीं होंगे और अब से वह कुशाग्रता. न्यायप्रियता और सम्मानपूर्वक काम करेंगे। तीन वर्ष बाद जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) इस संसार को छोडने वाले थे तो हम आगे देखेंगे कि वह ओसामा (रजि0) ही थे जिन्हें उन्होंने उन शिक्षाओं को सौंपा जो इस्लाम की युद्ध नैतिकता का अंग हैं।

लोगों के दिलों में क्या है वह मनुष्य की जानकारी की सीमाओं से परे है और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) स्वयं भी इस बात के उदाहरण हैं कि जब आपको ऐसे लोगों के बारे में निर्णय लेना पडा जिनकी नीयत और सच्चाई संदिग्ध थी आपने सावधानी और विनम्रता का व्यवहार किया। पैगम्बर (सल्ल0) अपने आस-पास अनेक कपटाचारियों से अवगत थे परन्त आपने उनके ऊपर कोई विशेष कारवाई नहीं की। आप सदैव सावधान रहे. कभी-कभी चौकन्ना हो जाते परन्त अन्तिम निर्णय लेने से परहेज करते रहे।

तबक

उत्तर दिशा से आने वाला समाचार पर्याप्त रूप से चेतावनीपूर्ण था। परिस्थितियों से अनुमान हो रहा था कि हरक्युलस की रोमन सेनाएँ रोम समर्थक अरब कबीलों से गठबन्धन कर चुकी हैं और यह दोनों मिलकर ''अरबों के नये सम्राट'' पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विरुद्ध व्यापक युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं। तुरन्त कारवाई की आवश्यकता थी और यह बाजी इतनी महत्वपूर्ण थी और यह अभियान इतना खतरनाक था कि पैगम्बर (सल्ल0) ने पहली बार अपने सभी साथियों को अपनी मंजिल की सूचना दी। उन्हें बचाव के लिए उत्तर की दिशा में कूच करना था क्योंकि शत्रु सेनाओं के आगे बढने की शंका थी और आवश्यकता पडने पर उनके अपने मैदान में उन्हें अचम्भे में डालना था। मौसम अनुकूल नहीं था और उत्तर दिशा में पहँचने के लिए वह तीव्र गर्मी का सामना करने जा रहे थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से पर्ण सहयोग करने के लिए कहा. ताकि

अभियान के खर्च पूरे किये जा सकें। हजरत उमर ने अपनी सम्पत्ति का आधा भाग दिया और वह समझ रहे थे कि अपनी आवश्यकताओं को महत्व न देने का यह एक उदाहरण है। हजरत अबु बक्र (रजि0) ने उनके पास जो कुछ था. उसे पैगम्बर (सल्ल0) की इच्छा पर छोड दिया। इसी प्रकार उस्मान (रजि0) ने आधी सेना के लिए सामान उपलब्ध कराने की घोषणा की। क्षेत्र के सभी ऊँटों व घोडों को अधिकार में लिया गया परन्तु सभी सैनिकों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ये पर्याप्त नहीं थे। परिणामस्वरूप पैगम्बर (सल्ल0) को कुछ साथियों को इस अभियान में भाग लेने के अनुरोध को ठुकराना पडा। और उसमें से कुछ लोग रोने लगे क्योंकि वह इस अभियान के महत्व से अवगत थे। शत्रु की जिस क्षमता से मुकाबले की आशा थी वह ऐसी थी कि स्पष्ट रूप से मस्लिम समदाय का भविष्य दॉव पर था।

सन 630 ई0 के अन्त 9 हि0 में मुस्लिम सेना ने सीरिया के मार्ग पर मदीना से 500 किमी0 दूर स्थित तबूक की भूरी और पथरीली पहाडियों की ओर कूच किया। रोम के विरुद्ध मुस्लिम सेना के 30.000 सैनिक कूच कर रहे थे जो कि अरब प्रायद्वीप के इस भाग की अब तक की सबसे विशाल सेना थी और इसका नेतृत्व पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) कर रहे थे। रोम एक विशाल शक्ति था और उसने इस्लामी राज्य की सीमा पर एक लाख सैनिकों की व्यवस्था कर रखी थी। यह इस्लामी राज्य के लिए पहला अवसर था कि उसे एक विशाल विदेशी शक्ति के विरुद्ध सैनिक शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ा।

परन्तु अब भी रोम की सैनिक शक्ति की तुलना में संख्या के अनुसार मुस्लिम सेना कम थी, तथापि शत्रु पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) के आत्मविश्वा और दृढ़ संकल्प से इतना प्रभावित था कि उसे उनका मुकाबला युद्ध क्षेत्र करने का साहस न रहा। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) के इस साहसिक निर्भीक अभियान ने राजनैतिक रूप से अनेक सफलताएँ प्रदान कीं और पड़ोसी क्षेत्रों के शासकों के साथ बन्धुत्वपूर्ण सन्धियाँ हुईं। और इसके परिणामस्वरू अरब क़बीलों और इस्लाम के अन्य प्रबल शत्रओं के उत्साह और षडयन्त्रों को दबाने में सफलता प्राप्त हई

यद्यपि यह अभियान अत्यन्त थका देने वाला था। परन्तु यह अनुपयोगी नहीं रहा। मुस्लिम सैनिकों की बडी संख्या ने सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप को प्रभावित किया और उत्तरी कबीलों को यह मानने के लिए विवश किया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के अन्दर इतनी बडी सैनिक संख्या जुटाने की क्षमता है और उनकी सेनाओं के अन्दर अतुल्य गतिशीलता की क्षमता है। परिणामस्वरूप पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की प्रतिष्ठा में पर्याप्त वृद्धि हुई और यमन और दूर-दराज क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले दल आये और उन्होंने पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के प्रति श्रृद्धा प्रकट की और इस्लाम धर्म स्वीकार किया।

तबुक से पैगम्बर (सल्ल0) ने एक ईसाई कबीले और एक यहूदी कबीले र सहयोग सन्धि स्थापित करने में सफलता प्राप्त कीः वह अपने-अपने धर्मों का पालन करने और किसी आक्रमण के विरुद्ध मुस्लिम समुदाय द्वारा सुरक्षा के बदले जिजिया कर अदा करने पर सहमत हो गये। इस प्रकार जिजिया उन लोगों पर एक सामुहिक सैनिक कर था जो मस्लिम सेना में भाग नहीं लेना चाहते थे और इसके बदले में मस्लिम शासन उनके लिए सरक्षा और आवश्यकता पडने पर उनकी प्राण रक्षा सुनिश्चित करता था।

पैगम्बर (सल्ल0) ने तबुक से खालिद (रजि0) को ईराक और सीरिया जाने वाले मार्ग को सुरक्षित करने के लिए कबीलों से सहयोग सन्धि करने के लिए उत्तर की ओर भेजा। यह सभी अभियान सफल रहे और पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) अपनी मस्लिम सेना के साथ मदीना वापस आ गये।

✲

विभिन्न प्रतिनिधिमण्डल

हिजरत के नौवें वर्ष को प्रतिनिधिमण्डलों के वर्ष का नाम दिया गया हैः अब मुस्लिम समुदाय को ऐसी क्षमता और मान्यता प्राप्त थी कि सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप से सहयोग सन्धि ायों पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रतिनिधिमण्ल आने लगे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के पास आने वालों में सबसे पहले बनु सकीफ थे क्योंकि हवाजिन कबीले के सरदार मलिक (रजि0) ने उनके शहर को इस प्रकार घेर रखा था कि उनके लिए पडोसी कबीलों से सहयोग सन्धि करना असंभव था (उनमें से अधिकतर या तो इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुके थे या उन्होंने मुहम्मद (सल्ल0) से सन्धि कर ली थी)। बनु सकीफ ने घोषणा की कि व मुसलमान होना चाहते हैं परन्तु वह विश्वास और कर्म-काण्ड के तत्वों के सम्बन्ध में बात करना चाहते हैंः वह चाहते थे कि अपनी मुर्ति ''लात'' के धर्म को कायम रखें और उन्हें नमाज न पढने की छुट दी जाए। पैगम्बर (सल्ल0) ने इन बिन्दुओं पर वार्त्ता करने से मना कर दिया जैसा कि इस प्रकार के प्रश्न पुछने पर आप मना कर दिया करते थे क्योंवि इस्लाम धर्म स्वीकार करने का अर्थ अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना न करना और करआन के सन्देश और पैगम्बर के आदर्श के अनुसार नमाज पढना था।

यहुदी अथवा ईसाई कबीलों से अन्य प्रतिनिधिमण्डल भी पैगम्बर मुहम्म (सल्ल0) के पास आये और आपने उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए विवश नहीं किया। उनके लिए आपने दो उत्तरी कबीलों की तरह सहायता सन्धि स्थापित कीः यह

कि वह सामूहिक सैनिक कर (जिजिया) अदा करेंगे और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) इसके बदले उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रायद्वीप में सन्देश स्पष्ट थाः जिन कबीलों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया उन्हें विभिन्न विश्वासों की व्यवस्था के विचार को छोडना था। पैगम्बर (सल्ल0) ने आस्था के मौलिक सिद्धान्तों पर समझौता नहीं किया। जैसे ही इस्लाम का मूल वाक्य ''अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं'' की घोषणा की जाती. पहले की धार्मिक प्रतिष्ठाओं को नष्ट करना होता और इस्लामी कर्म काण्ड पूर्ण रूप से लागू हो जाते: नमाज से रोजे तक और जकात से हज यात्रा तक। जब कबीले अपने रीति-रिवाजों के प्रति आस्थावान रहना चाहते तो वह स्पष्ट शब्दों में यह समझौता करते कि वह जिजिया देंगे और उसके बदले सुरक्षा प्राप्त करेंगे। पैगम्बर (सल्ल0) कबीलों और उनके सरदारों को इन दो विकल्पों में से किसी एक को स्वतन्त्रतापर्वक चनने देते और तबक से वापसी के बाद आने वाले महीनों में उन कबीलों में से अनेक ने ऐसा ही किया।

मानावधिकार

पश्चिमी जगत अत्यधिक बलपूर्वक दावा करता है कि संसार जिस मानवाधिकार परिचित है उसकी मौलिक धारणा सर्वप्रथम ब्रिटिश मैग्ना कार्टा में प्रस्तुत में की गई थी। परन्तु वह आसानी से भल जाते हैं कि मैग्ना कार्टा इस्लाम के उदय के छः सौ वर्ष बाद अस्तित्व में आया।

वास्तविकता यह है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने नस्ल. रंग कबीला ध आदि पर आधारित भेदभाव से परे मानवाधिकारों की सम्पूर्ण धारणा और उसकी रूप रेखा प्रस्तुत की। आपने सिद्ध किया कि किसी व्यक्ति का मूल्य अथवा प्रतिष्ठा उसके चरित्र और योग्यता के आधार पर होनी चाहिए. जैसा कि पवित्र कुरआन में कहा गया है।

''ऐ लोगों. हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया। और तुमको कौमों और परिवारों में बाँट दिया. ताकि तुम एक दूसरे को पहिचानो। निस्सन्दे अल्लाह के निकट तुम में से अधिक सम्मान वाला वह है जो सबसे अधिक परहेजगार है। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला. सचना रखने वाला है''।

(कुरआन. 49:13)

कुरआन की यह आयत सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित करती है। यह मात्र मुसलमानों को ही सम्बोधित नहीं करती। यह मनुष्यों की समानता पर बल देती है और यह स्पष्ट करती है कि सम्पर्ण मानवता एक ही माता-पिता की सन्तान है और खानदान.

कबीला. नस्ल और देश की भिन्नताएँ मात्र पहिचान के उद्देश्य से रखी गयी हैं। अथवा संसार के विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोगों को जानने के लिए रखी गयी हैं।

मानवता की यह जैविक एकता एक वास्तविकता है जिसके सम्बन्ध में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा "ऐ अल्लाह. मैं गवाही देता हूँ कि सभी मनुष्य भाई-भाई हैं"। हम इस एकता का व्यवहारिक उदाहरण पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन में पाते हैं। एक बार पैगम्बर (सल्ल0) अपने साथियों के साथ थे और एक शव-यात्रा गुजर रही थी। पैगम्बर (सल्ल0) मृतक के सम्मान में खडे हो गये। मुसलमान आश्चर्यचकित हो गये और पैगम्बर (सल्ल0) से कहा कि यह यहूदी का शव है। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे स्पष्ट और गम्भीर रूप से कहाः "क्या यह मानव आत्मा नहीं थी?"

इस्लाम मानव जीवन को इतना अधिक महत्व देता है कि कुरआन आदेश देता हैः

> *"जो व्यक्ति किसी की हत्या करे बिना इसके कि उसने किसी की हत्या की हो अथवा पृथ्वी पर उपद्रव किया हो तो जैसे कि उसने सारी मानवता की हत्या कर डाली और जिसने एक जान को बचाया. तो उसने सारी मानवता को बचा लियां"।* (कुरआन. 5:32)

यह कथन कुरआन में पैगम्बर आदम (अलै0) के बेटे हाबिल की हत्या उसके बडे भाई काबिल द्वारा किये जाने के सन्दर्भ में आया है। यह पहला अपराध था और मानव इतिहास में मानवाधिकार का पहला हनन था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने सम्पूर्ण संसार के समक्ष प्रथम और मानवाधिकारों का वास्तविक अन्तराष्टीय चार्टर प्रस्तत किया। इसमें एक अन्यय और मौलिक अधिकारों की सम्पर्ण व्यवस्था दी गयी है जो इस्लामी राजनीति के विधान का अनिवार्य अंग हैं।

निम्नलिखित नियम इस्लाम के अनिवार्य अंग हैं और यह इस्लाम द्वारा प्रदत्त मानवाधिकारों का एक सामान्य विवरण प्रस्तुत करता हैः

1. नस्ल. रंग. जाति अथवा वर्ग पर आधारित भिन्नताओं से परे मानवता की एकता. समता और बन्धुत्व की भावना। यह इस्लाम के मौलिक विश्वास हैं। यह विश्वास मानवाधिकारों के इस्लामी चार्टर का एक मख्य अंग है।

2. इस्लामी जीवन मानव-प्रेम की गहन भावना से अत्यधिक प्रभावित है। इसकी अभिव्यक्ति मनुष्य के जीवित रहने के मौलिक अधिकार पर बल देने के नियम में होती है। पैगम्बर (सल्ल0) ने इस सम्बन्ध में दासों को मुक्त करके और उन्हें मानवीय व्यवहार प्रदान करके एक आदर्श प्रस्तुत किया। आपने कन्या भ्रूण हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया और आपने पारस्परिक सम्बन्धों सच्चाई. परोपकार और सहानुभुति पर बल दिया। आपने यद्ध में भी मानवाधि ाकारों और मानवीय नैतिकता का प्रदर्शन किया।

3. मानवाधिकारों के इस्लामी चार्टर में न्याय को एक दिशा-निर्देशक सिद्धान्त के रूप में सम्मिलित किया गया है। एक इस्लामी राज्य में सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। प्रत्येक नागरिक चाहे वह मुस्लिम ह अथवा गैर मुस्लिम नागरिक अधिकार. जीविका के साधन और राजनीतिक प्रक्रिया में अपनी भुमिका के अनुसार वह न्याय का समान अधिकार रखता है। इस्लामी राज्य का अनोखापन ऐसा है कि इस्लामी कानुन इस्लामी राज्य के मुखिया के लिए कोई विशेषाधिकार की अनुमति नहीं देता। इस्लामी राज्य के खलीफा अथवा शासक और सामान्य मनष्य दोनों कानन की दष्टि में समान हैं।

4. सहनशीलता और बहुसंस्कृतिवाद के विचारों को पश्चिमी जगत सामाजिक विज्ञान में पिछले दो दशकों से ही कुछ स्थान प्राप्त हो सका है। परन्तु पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और आपके साथियों ने सहनशीलता और शान्तिपुर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों की घोषणा और प्रदर्शन 1400 से अधिक वर्ष पहले ही कर दिया था। इस्लामी राज्य में मात्र मुसलमान ही नहीं बल्कि यहुदी. नजरान के ईसाई और मुर्तिपुजक अरब भी निवास करते थे। उन सभी को धार्मिक सांस्कृतिक और न्यायिक स्वराज्य प्राप्त था। इस्लामी राज्य यहुदी और ईसाई पहिचान को बनाये रखने के लिए उत्तरदायी था और इसके साथ-साथ वह उनकी सरक्षा की भमिका का भी निर्वाह करता था।

5. इस्लामी शासन के अन्तर्गत अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा और उनकी गारण्टी का संस्कृतियों के इतिहास में कोई अन्य उदाहरण नहीं है।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने बलपूर्वक कहा

"जो व्यक्ति इस्लामी राज्य की किसी गैर मुस्लिम प्रजा का दमन करता है मैं कयामत के दिन उस (गैर मुस्लिम) का वकील बनूँगा"।

6. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने नजरान की ईसाई आबादी के लिए अधिकारों का एक चार्टर जारी किया। इसमें निम्नलिखित आश्वासन दिये गये थेः

- अल्लाह और उसके पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की ओर से नजरान के लोगों को यह आश्वासन दिया जाता है कि उनका जीवन. धर्म. भमि और सम्पत्ति की रक्षा की जायेगी।
- उनकी मौजूदा दशा में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा. अधिकारों की रक्षा की जायेगी और उनके किसी अधिकार का हनन नहीं किया जायेगा।
- उनके व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल और कारवाँ की रक्षा की जायेगी। कोई पादरी अपने पद से पदच्युक्त नहीं किया जायेगा और किसी ईसाई भिक्ष को उसकी जीवन व्यवस्था के अधिकार से वंचित नहीं किया जायेगा।
- चर्चों के सरंक्षकों को परेशान नहीं किया जायेगा। वह बिना किसी हस्तक्षेप के अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकते हैं
- मुस्लिम सेना उनके क्षेत्रों में प्रवेश नहीं करेगी।
- ईसाईयों को कृषि उत्पाद पर दसवाँ भाग कर के रूप में देने के लिए विवश नहीं किया जायेगा।

7. मानवाधिकारों का इस्लामी चार्टर महिलाओं को सम्मानित और प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करता है और उनकी शिक्षा. वैवाहिक सम्बन्ध. सम्पत्ति के स्वामित्व और पैतक सम्पत्ति से सम्बन्धित वैधानिक अधिकारों को उचित महत्व देता है।

✵

यवकों का उत्साहवर्धन

अपने मदीना लौटने के कुछ महीनों बाद 11वीं हिजरी में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने सीरिया और फिलीस्तीन के निकट उत्तर की ओर एक अभियान भेजने का निर्णय लिया जहाँ कुछ ही वर्षों पहले आपके साथी जअफर (रजि0). अब्दुल्लाह (रजि0). और जै (रजि0). मारे गये थे। सबको इस बात पर आश्चर्य था कि पैगम्बर (सल्ल0) ने इ अभियान का नेतृत्व युवक ओसामा बिन जैद (रजि0) को सौपा जो अभी मात्र बीस वर्ष के थे। हालाँकि इस विशाल सेना में हजरत उमर (रजि0). अबु बक्र (रजि0). अली (रजि0). उस्मान (रजि0) और अन्य अनुभवी साथी सम्मिलित थे। हजरत ओसामा के इस चुनाव पर आलोचनाएँ होने लगीं. परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने तुरन्त कदम उठाकर यह कहते हुए सभी दलीलों को रदद कर दिया किः ''तुम ओसामा का सेनापति के रूप में चुनाव करने की आलोचना करते हो जिस प्रकार तुमने पहले इसके पिता जैद के सेनापतित्व व आलोचना की थी। वास्तव में ओसामा इस नेतृत्व का हकदार है। मैंने इसे यह दायित्व सौंपा है जैसा कि पहले इसका पिता था और मैने उसे दायित्व सौंपा था''। अतीत में कुछ मुसलमानों ने जैद के सेनापति के रूप में चुनाव पर प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। क्योंकि वह लोग अब भी उन्हें दास समझते थे। हालाँकि वह स्वतन्त्र कर दिये गये थे: अब कुछ लोग उनके बेटे के चुनाव का विरोध कर रहे थे। संभवतः उनके पिता के कारण. लेकिन अधिकतर उनका विरोध उनकी कम आय के कारण था। अपने चनाव को अन्तिम रूप देते

हुए पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों को सूचित किया कि किसी व्यक्ति को अधिकार और सत्ता देने में उसका सामाजिक अतीत रुकावट नहीं बनने चाहिए और न उसकी आयु। यदि उसके अन्दर आवश्यक आध्यात्मिक. बौद्धिक और नैतिक योग्यताएँ मौजूद हैं। हमें समाज के सर्वाधिक निर्धन को समानता का वास्तविक अवसर देकर न्याय का प्रदर्शन करना चाहिए और एक युवक पर भरोसा करना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति अप दक्षताओं और बौद्धिक क्षमताओं का प्रदर्शन कर सके। अधिक उच्च स्तर पर यह उनसे बडे साथियों के लिए विनम्रता की शिक्षा थीः इस प्रकार उनको बडे जिहाद का आन्तरिक अनुभव करना था क्योंकि उन्हें ऐसे व्यक्ति का आज्ञापालन करना था जो उनका बेटा हो सकता था और ऐसा करके वह याद कर सकते थे कि उनका समय सीमित है। इस चुनाव के द्वारा पैगम्बर ने उन्हें सिखाया कि समय के साथ व्यक्ति की ऊर्जा क्षीण हो जाती है और उसे इतना समझदार होना चाहिए कि वह ही दूसरों को अधिकार देने के लिए स्वयं पीछे हट जायें जो लोग पर्याप्त रूप से यवा हैं और सशक्त हैं और उनके अन्दर नवनिर्माण की क्षमता होती है।

यद्ध की नैतिकता

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने युवा ओसामा (रजि0) को युद्ध के सम्बन्ध में नैतिक मूल्यों से अवगत कराया और आदेश दिया कि वह तुरन्त कूच करें। तथापि पैगम्बर (सल्ल0) की अचानक बीमारी के कारण इस प्रस्थान में देरी करनी पडी और सेना ने कूच करने के लिए मदीना के निकट प्रतीक्षा की। कुछ ही सप्ताह बाद पैगम्बर (सल्ल0) की इच्छा के अनुसार ओसामा (रजि0) को आदेश दिया गया कि उस अभियान को पूरा करें। हजरत अबू बक्र (रजि0) ने युद्ध नैतिकता के सम्बन्ध में पैगम्बर (सल्ल0) की शिक्षाओं व ओसामा (रजि0) को याद दिलाया. क्योंकि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) निरन्तर मुसलमानों से यह आग्रह करते थे कि उन्हें अपने शत्रुओं के साथ मुकाबला करते समय इन मूल्यों का सम्मान करना चाहिए। अबू बक्र (रजि0) ने उन्हें आदेश दिया. ''महिलाओं. बच्चों और बूढ़ों की हत्या न करो''. ''इस्लाम के विरुद्ध कोई काम न करो''। सन्मार्ग से न हटो और वस्तुओं को कभी नष्ट न करो. वृक्षों को नष्ट न करो. घरों और खेतियों को न जलाओ. फलदार वृक्षों को न काटो. पशुओं का वध न करो सिवाय इसके कि तुम उन्हें खाने के लिए विवश हो जाओ। जब तुम आगे बढोगे तो तुम ऐसे सन्तों को पाओगे जो मठो में रहते हैं और तन्हाई में अल्लाह की स्तुति करते हैं। उन्हें उनकी दशा पर छोड दो: उनकी हत्या न करो और उनके मठों को नष्ट न करो''। यह शिक्षाएँ अनिवार्य थीं और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने युद्ध नैतिकता. प्राकृतिक सम्पदा का सम्मान अथवा पशुओं के प्रति व्यवहार के सम्बन्ध में विभिन्न अवसरों पर जो कछ कहा था उसकी रोशनी में उन्हें ओसामा (रजि0) तक पहँचा दिया गया।

महम्मद से वफा......

23

पैगम्बर (सल्ल0) की यद्ध धारणा

इस्लाम से पहले और गैर इस्लामी युद्धों का उद्देश्य लूट. हत्या. विनाश और अत्याचार के अतिरिक्त कुछ नहीं था। इन युद्धों में योद्धाओं का ध्यान विजय प्राप्त करने. निर्बलों का दमन करने और घरों. सम्पत्तियों. फसलों. कृषि-भूमि. यहाँ तक कि सम्पूर्ण गाँव एवं नगरों को नष्ट करने पर केन्द्रित था। युद्ध ऐसे साधन थे जिनसे वह महिलाओं के साथ बलात्कार और उन्हें बेपर्दा करते. बूढ़ों. बच्चों और पशुओं के साथ निर्दयतापूर्ण व्यवहार करते और पृथ्वी पर भ्रष्टाचार फैलाते। पराजित लोगों के धर्मस्थलों और ऐतिहासिक भवनों को नष्ट कर दिया जाता था। नैतिक सिद्धान्तों की सीमाओं के अन्तर्गत यद्ध करने की धारणा जो पहले कभी थी वह मानव चेतना से मिट चुकी थी।

इस्लामी युद्ध गैर इस्लामी युद्धों से भिन्न हैं। इस्लाम में युद्ध एक प्रतिष्ठित और पवित्र युद्ध है जो ऐसे समाज के विकास के लिए किया जाता है जो मनुष्य को क्रूरता. दमन और अत्याचार से मुक्त कराये। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने गैर इस्लामी युद्धों के मानकों और उद्देश्यों को बदल दिया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) कोलाहलपूर्ण युद्ध द दौरान विभिन्न महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धान्तों का पालन करने पर बल देते थे। सबसे पहले आपने मौलिक रूप से यद्ध की धारणा की बनियादी समझ को पनः परिभाषित किया।

जिहाद-फी-सबीलिल्लाह
अल्लाह के मार्ग में संघर्ष

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने यद्ध के लिए पर्णतः एक नयी शब्द 'जिहाद-फी-सबीलिल्लाह' (अल्लाह के मार्ग में संघर्ष)- प्रस्तुत करके पूर्ण रूप से भौतिक अथवा स्वार्थी उद्देश्यों से इसे शुद्ध कर दिया। ''अल्लाह के मार्ग में'' जोडकर आपने यह शिक्षा दी की युद्ध स्वार्थ. सम्पत्ति लूटने. गर्व. प्रतिष्ठा. लोगों को दास बनाने अथवा उनका दमन करने के लिए नहीं लडा जाना चाहिए। इस आस्था ने यद्ध के सिद्धान्तों को एक साथ मजबूती से जोडने का काम किया।

युद्ध की इस नयी धारणा के अन्तर्गत पैगम्बर (सल्ल0) ने नियमों की एक पूर्ण और संक्षिप्त व्यवस्था प्रस्तुत की जिसमें युद्ध की आचार-संहिता सम्मिलित थीः इसकी नैतिक सीमाएँ उसके घटकों. अधिकारों और कर्त्तव्यों. लडाकों और गैर लडाकों में अन्तर और उनके अधिकार. तथा दूतों. युद्धबंदियों और पराजित लोगों के अधिकार। पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) द्वारा इन सिद्धान्तों की स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी गयी थी।

पैगम्बर (सल्ल0) ने मानव-जीवन की पवित्रता और उसका हनन न करने के सम्बन्ध में भी शिक्षाओं को रेखाकिंत कर दिया था। चाहे वह जीवन मसलमान का हो अथवा गैर मुस्लिम का।

इस्लाम मानव जीवन को इतना अधिक महत्व देता है कि कुरआन आदेश देता हैः

''किसी एक मनुष्य की अन्यायपूर्ण हत्या सम्पूर्ण मानवता की हत्या के समान है। और एक जान की रक्षा सम्पर्ण मानवता की रक्षा के बराबर है''।

(देखिये करआन. 5:27-32)

इस आसमानी आदेश के द्वारा पैगम्बर (सल्ल0) ने यद्ध को सभी स्वार्थी और निहित उद्देश्यों से पवित्र कर दिया।

प्रत्येक पैगम्बर का अपना एक अलग दृष्टिकोण और अलग कार्यवधि होती थी: प्रत्येक पैगम्बर अलग-अलग समय में आये और उन्होंने भिन्न-भिन्न लोगों के बीच काम किया। एक पैगम्बर की तुलना दूसरे से करना निरर्थक है और वास्तव में कुरआन विशेष रूप से इससे रोकता है। यह सच्चाई है कि पैगम्बर ईसा (अलै0) ने कोई युद्ध नहीं किया परन्तु उन्हें ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। परन्तु जैसा कि हमने देखा. पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) को अपने आप को बचाने के लिए युद्ध करना पडा

जब मुहम्मद (सल्ल0) को पैगम्बरी के दायित्व पर प्रतिष्ठित किया गया त आपने लोगों को शान्ति के मार्ग की ओर आमन्त्रित किया. परन्तु मक्का के कुरैश सरदारों ने आपका विरोध किया. आपको बुरा-भला कहा और वर्षों तक आपको और आपके साथियों को दमन का निशाना बनाया. उनकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया और उन्हें मक्का से बाहर निकाल दिया। उन्होंने मुसलमानों का पीछा उस समय भी किया जब वह प्रवास करके मदीना चले गये थे और उन्होंने मदीना के लोगों से आग्रह किया कि वह उनके शत्रु मुहम्मद (सल्ल0) को अपने शहर से निकाल दें अथवा उन्हें पूर्णतः मिटा दें। जब मदीना वालों ने उनकी माँगों को नहीं माना तो मदीना के लोगों को गम्भीर परिणामों की चेतावनी दी गयी। मक्का के सरदार ने एक कपटाचारी मुसलमान अब्दुल्लाह बिन उबई को यह सन्देश भेजा कि उसने उनके अपराधी को शरण दे रखी है उसे हमारे अपराधी की हत्या कर देनी चाहिए अन्यथा हम मक्के के लोग मदीना पर आक्रमण करेंगे और मुहम्म (सल्ल0) के साथ-साथ उन्हें भी नष्ट कर देंगे। जब मुहम्मद (सल्ल0) के सामने मृत्‍ अथवा संगठित संघर्ष के माध्यम से अपनी आस्था की रक्षा करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा तो मुहम्मद (सल्ल0) ने संघर्ष का चुनाव किया।

इस प्रकार युद्ध उनके शत्रुओं द्वारा थोप दिये गये थे. जबकि आपकी युद्ध करने की नीयत नहीं थी। अतः आपके युद्धों को व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह युद्ध धार्मिक यद्ध थे क्योंकि वह उनका धर्म इस्लाम ही था जिस पर निरन्तर आक्रमण हो रहे थे।

सैनिक आक्रमण की चुनौती को पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) जैसे जिम्मेदार नायक हल्के से नहीं ले सकते थे जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक उदाहरण स्थापित करना था और आपको आने वाली नस्लों के शासकों और सेनापतियों के लिए अपने पीछे एक आदर्श छोडना था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने प्राकृतिक परिस्थितियों के नतीजे में युद्ध परामर्श नहीं दिया। परन्तु इसके साथ ही यह भी संभव नहीं कि साधारण रूप से युद्ध का उन्मूलन कर दिया जाए। कोई समाज सुधारक अथवा आध्यात्मिक नायक यदि कुछ कर सकता है तो यही कि उसकी क्रूरता कम से कम कर दे। पैगम्बर (सल्ल0) ने अल्लाह के इशारे पर युद्ध के नियमों को स्थापित करने का प्रयास किया जिससे युद्ध को जितना संभव हो सके मानवीय रूप दिया जाये. शान्ति को प्रोत्साहित किया जाये और मानव जीवन के विनाश को कम से कम किया जा सके

इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी छोटी सेनाओं के दक्षतापूर्ण प्रयोग द्वारा संख्या के अनुसार विशाल सेनाओं को पराजित करने में बडी-बडी सफलताएँ प्राप्त कीं। मात्र सात से आठ वर्षों की अवधि में आपने अपने सभी शत्रुओं को पूर्णतः समाप्त कर दिया अथवा उनकी सत्ता और उनकी दमन दक्षता को कमजोर कर दिया। अपने सभी 28 युद्धों और 38 युद्ध अभियानों में आपके कुल 255 व्यक्ति मारे गये जबकि शत्रु सेनाओं में से 759 व्यक्ति मारे गये। मुसलमानों ने युद्ध में जिन लोगों को गिरफ्तार किया उनकी संख्या 6.564 थी। परन्तु दो व्यक्तियों के अतिरिक्त जिन पर आपराधिक आरोप थे. उन सबको मुक्त कर दिया गया। आपके आठ वर्षों के सैनिक अभियानों में कुल 1.01 व्यक्तियों की हत्या के साथ आपने पूरे अरब प्रायद्वीप में शान्ति और व्यवस्था स्थापित कर दी। बुराई और अश्लीलता और दमन को शून्य कर दिया गया और इसके बदले भलाई. नेकी और उस क्षेत्र पर सबके लिए न्याय स्थापित हो गया। यह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का चमत्कार था कि आपने छोटी सेना का कौशलपर्ण उपयोग करके सर्वाधिक विजय प्राप्त कीं।

महान इतिहासकार एच0 लामेन्स कहते हैं. "मध्य युग में जब युद्ध दोनों पक्षों के हजारों लोगों को नष्ट कर देते थे. यह संख्या (1.014) संकेत करती है कि महम्मद

(सल्ल0) कितना आत्मनियन्त्रण. सहानुभूति और मानव जीवन को कितना महत्व देते थे। अतः आपको एक योद्धा की संज्ञा नहीं दी जा सकती। आप प्रत्येक जान को पवित्र समझते थे और आप न्यायिक उद्देश्यों के अतिरिक्त रक्तपात से घणा करते थे। आपका जीवन शान्ति के लिए समर्पित था।

इसकी तुलना उन दूसरी क्रान्तियों से कीजिए जो मात्र युद्धों द्वारा लायी गयी थीं- बडे युद्ध जो वर्षों तक जारी रहे- और इनमें लाखों निर्दोषों की हत्याएँ की गयीं। इन क्रान्तियों में मानव जीवन का अत्यधिक विनाश हुआ।

हिन्दू शिक्षाओं में युद्ध को अन्तिम विकल्प के रूप में मात्र उसी समय अपनाया जाता था जब सभी शान्तिपूर्ण प्रयास किये जा चुके हों। परन्तु जब इसका समय आता तो युद्ध को महान व्यक्तिगत और धार्मिक महत्व का मामला बताया जाता. उस समय प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना होता (यदि वह योद्धा जाति से सम्बन्ध ा रखता है). साहस और आत्मसम्मान को गौरवान्वित किया जाता और सभी विषम परिस्थितियों में निर्भीक युद्ध कौशल का प्रदर्शन करना होता. चाहे मानव जीवन की कितनी भी क्षति हो।

विकीपीडिया के अनुसार हिन्दू इतिहास के सर्वाधिक विनाशकारी युद्ध सत्य के असत्य पर विजय के मिशन के अन्तर्गत किये गये थे। कुरुक्षेत्र का युद्ध जीवन की क्षति के अनुसार अनोखा कीर्तिमान रखता है। 18 दिनों में चालीस लाख सैनिक नष्ट हो गये। इस प्रकार प्रतिदिन दो लाख बीस हजार लोग मारे गये और वह भी व्यापक विनाशकारी हथियारों. जैसे परमाणु बम अथवा रसायनिक गैसों के बिना। ये हत्याएँ मात्र धनुष. बाण और गदाओं से की गयी थीं।

20वीं शताब्दी- सर्वाधिक हिंसक शताब्दी

ऐसा लगता है कि अत्याचार और हिंसा मानव समाज में सर्वत्र व्याप्त हैं। मानव इतिहास में 20वीं शताब्दी सर्वाधिक हिंसक शताब्दी थी। सर्वाधिक भयानक नरसंहार में से कुछ 20वीं सदी में हुए। दो विश्वयुद्धों ने अप्रत्याशित रूप से बडी संख्या में लोगों की जान ली और इसके परिणामस्वरूप लाखों लोग बेसहारा और बेघर हो गये।

एक अनुमान से प्रथम विश्व युद्ध में लगभग 10 मिलियन लोग मारे गये. 21 मिलियन लोग घायल हुए और लगभग 7.7 मिलियन लोग या तो लापता हो गये या बन्दी बना लिये गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध 38 से 60 मिलियन के बीच लोग मारे गये और लाखों लोग घायल और बेघर कर दिये गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम चरणों में संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान में हिरोशिमा और नागासाकी पर दो परमाणु बम गिराये जिसमें दो लाख से अधि ाक निर्दोष लोग मारे गये और लाखों लोग घायल और बेघर हो गये।

रुसी क्रान्ति के दौरान 13 लाख लोग मारे गये।

फ्राँसीसी क्रान्ति में 2 लाख 40 हजार लोग मारे गये।

चीन में कम्युनिस्ट क्रान्ति के दौरान 14 से 20 लाख तक लोग मारे गये

इटली के मुसोलीनी ने उत्तरी अफ्रीका के मुस्लिम देशों जैसे. अल्जीरि टयुनिशिया. और लिबिया के विरुद्ध आक्रामक यद्ध छेडा और चार लाख से अधिक निर्दोष मुसलमानों की हत्या की।

सोवियत नेता स्टालिन द्वारा छेडे गये रुसी गहयद्ध में दो करोड लोग मारे गये जिसके शिकार अधिकतर मसलमान थे।

अडोल्फ हिटलर ने 11 से 17 मिलियन लोगों की हत्या की।

दसरे विश्व युद्ध के दौरान एक अनमान के अनसार 6 मिलियन यहदियों की निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी गयी।

बोस्निया और हर्जीगोविना के युद्ध में दो लाख से अधिक निर्दोष मुसलमानों की हत्या हुई। हेग में स्थित अन्तर्राष्टीय न्यायालय के अनुसार बोस्निया युद्ध के दौरान जो युद्ध अपराध किये गये वह ''मानवता के विरुद्ध अपराध थे''।

आतंकवाद के विरुद्ध यद्ध और भ-राजनैतिक निहित स्वार्थों के बहाने नरसंहारों का तारतम्य आज भी जारी है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा लडे गये युद्धों के दौरान दोनों पक्षों के कुल मृतकों की संख्या 1.014 से अधिक नहीं थी। इन युद्धों में भाग लेने वालों की संख्या में से मारे गये लोगों की संख्या लगभग 1.5 प्रतिशत थी। चूँकि पैगम्बर (सल्ल0) इनमें से अधिकतर युद्धों में विजयी रहे। मरने वालों की संख्या संकेत करती है कि उन्हें मानव इतिहास के निर्दयी और बर्बरतापूर्ण योद्धाओं. विजेताओं और सेना के जनरलों में नहीं गिना जाना चाहिए। वास्तविकता यह है कि आप (सल्ल0) इन योद्धाओं से पूर्णतः भिन्न थे।

मानव इतिहास के अन्य युद्धों से उपर्युक्त आँकडों की तुलना कीजिए। उदाहरण के लिए केवल द्वितीय विश्वयुद्ध में ही मारे जाने वालों की संख्या युद्ध में भाग लेने वाले लोगों की संख्या की 571 प्रतिशत थी। अर्थात उस यद्ध में 10600000 लोगों ने भाग लिया जबकि 54800000 लोग मारे गये

इस्लाम के शत्रु और भेदभाव रखने वाले लोग पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का चित्रण एक लडाके और रक्त-पिपासु के रूप में करते हैं। मानों. युद्ध लडना ही उनका मुख्य व्यवसाय हो. परन्तु वास्तव में मदीना में उनके दस वर्ष के जीवन में से मात्र 795 दिन युद्धों और युद्ध अभियानों में लगे। दस वर्षों में से शेष दिन (लगभग 2.865 दिन) उन्होंने लोगों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए खर्च किये और एक बद्दू समाज का आपने पूर्ण रूप से सुधार कर दिया। आपकी जीवनी लेखकों में से कुछ पक्षपाती लेखकों ने इस ऐतिहासिक तथ्य की अनदेखी की है और कछ इस्लाम विरोधी पश्चिमी लेखक हैं जो उनको लडाके के रूप में प्रस्तत करते हैं

अपनी युद्ध रणनीति और सैनिक कौशल में अपने विवेक और दक्षता के साथ विभिन्न कारकों का उपयोग करके पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने पेशेवर सैनिक सरदारों की पीढियों को चकित कर दिया। आपने लगभग प्रत्येक युद्ध में अपने संघर्ष को बेहतर ढंग से और अधिक सफलतापूर्वक संगठित किया और अपनी युद्ध सम्बन्धी योजनाओं को पूर्णतः रहस्य में रखा। आपने अपने अभियानों में आश्चर्य. गतिशीलता. लोचशीलता को इतनी सफलतापूर्वक प्रयोग किया कि शत्रु अधिकतर चकित रह जाता था। आप अपने शत्रुओं की तुलना में मनो-वैज्ञानिक कारक को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से प्रयोग करते थे और इस प्रकार करते थे कि शत्रु को इसका अनुमान न होता। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आपने गुप्तचरों की सेवाओं को संगठित किया और कमाण्डो यूनिटें स्थापित कीं।

पैगम्बर (सल्ल0) युद्ध कला और लडने का कौशल अपने साथियों को सिखाने में कोई कसर नहीं छोडते थे. और अपने शत्रुओं की तुलना में युद्ध के यन्त्रों को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से तैयार करते थे। अन्त में वह अपने साथियों को सच्चे उद्देश्य के लिए इस प्रकार प्रेरित करते कि इतिहास में उनसे पहले किसी ने नहीं किया था। वह उन्हें एक उद्देश्य प्रदान करते जो उन्हें आत्मविश्वास प्रदान करता। उनके साथी उनके आदेश पर आग में अथवा समुद्र में छँलाग लगाने के लिए तैयार थे और कोई भी बलिदान उनके लिए बहुत बडा नहीं था और किसी भी बलिदान का मूल्य उनके लिए बहुत अधिक न था। वह बहादुरी से लडते हुए आगे बढते. दुश्मन की पंक्तियों में घुस जाते और परिणामों की परवाह न करते। वह लोग अपने उद्देश्य की सच्चाई में दृढ विश्वास रखते थे।

कुछ इस्लाम विरोधी और अज्ञानी लोग मुसलमानों को रुढिवादी अथवा आतंकवादी समझते हैं। मुसलमानों के प्रति यह व्यवहार अतीत के पूर्वाग्रहों से उत्पन्न हुआ है। लम्बे समय तक साधारण रूप से यह माना जाता था कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने गै मुस्लिमों को केवल दो विकल्प दिये थेः कुरआन अथवा तलवार. और इसके साथ यह कि इस्लाम तलवार के माध्यम से फैला। प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार सर टॉमस अर्नाल्ड ने कष्टकर शोध के बाद अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रीचिंग ऑफ इस्लाम'' के लिए तथ्यों को एकत्र किया और सिद्ध किया कि इस्लाम उन पौराणिक व्यक्तियों- एक हाथ में करआन

और दूसरे हाथ में तलवार लिए हुए मुस्लिम योद्धा- के शोषण द्वारा नहीं फैला। परन्तु करआन की शिक्षाओं की प्रेरणा और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के चरित्र से फैला है।

क्या इतिहास में कोई ऐसा सेनापति है जिसने अपने सैनिक अभियान और युद्धों को इतनी उदारतापूर्वक चलाया हो? क्या कोई ऐसा सैनिक नेता हुआ है जो इतना दयालु. मानवीय व्यवहार करने वाला और विजय के बाद क्षमा करने वाला हुआ हो? क्या ऐसा कोई सेनापति है जिसने इतनी सफलताएँ प्राप्त की हों और इतनी कम जानों की क्षति हुई हो? क्या ऐसा कोई सेनापति इतिहास में हुआ है जिसने इतने विशाल भू-भाग पर नियम और कानून की स्थापना इतने कम समय में की हो? क्या ऐसा कोई सेनापति इतिहास में हुआ है जिसने इतना प्रतिष्ठित उत्तराधिकार छोडा हो जिसने मानव इतिहास की दिशा को बदल दिया हो और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव सभ्यता और गतिविधि ायों को प्रभावित किया हो।

यह दुखद तथ्य है कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को मात्र एक धर्म का संस्थापक समझा जाता है और वह भी इस शब्दावली के संकुचित और सीमित भावार्थ में। उनके द्वारा मानव सभ्यता के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रभाव डालने और उसमें उनकी संक्रिय भूमिका पर या तो ध्यान ही नहीं दिया गया अथवा बहुत कम ध्यान दिया गया। साधारण रूप से मानवता और विशेष रूप से मुसलमान एक शिक्षक और मानवता के वास्तविक हितैषी के रूप में उनके अत्यधिक ऋणी हैं। उनको जो सर्वाधिक उपयुक्त और समतुल्य श्रृद्धाजंली दी जा सकती है वह यह है कि मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर उनके गतिशील प्रभावों की गहराईयों को लोगों के लिए स्पष्ट किया जाये ताकि लोग उससे लाभान्वित हो सकें और मानवता उनके स्वस्थ्य. नेक. न्यायपूर्ण और शान्तिपूर्ण जीवन शैली से धन्य हो सके।

एक अमेरिकी जीवनी लेखक और इतिहासकार वाशिंगटन इर्विन अपनी पुस्तक *''लाइफ और मोहोमेट''* में टिप्पणी करते हैं: ''पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की सैनि सफलताओं ने उनके अन्दर कोई गर्व और अंहकार जागृत नहीं किया जैसा कि यदि वह स्वार्थी उद्देश्यों के लिए होते तो उनका प्रभाव होता। जिस समय आपके पास महान सत्ता आ चुकी थी। आपने रहन-सहन की वही सादगी अपनाये रखी जैसी सादगी आप अपने कठिन दिनों में अपनाते थे''।

प्रसिद्ध अमेरिकी इतिहासकार एच0 लामेन्स लिखते हैं: ''अपनी कीर्ति और सफलता के शिखर पर भी. जब आपने मक्का पर महान विजय प्राप्त की थी तो पैगम्बर (सल्ल0) अत्यधिक विनम्र आत्मा की तरह दिखायी देते और व्यवहार करते रहे। मक्का उनके कदमों में था और पराजित कुरैश एक के बाद एक आगे आते और वफादारी की शपथ लेते. आपने एक बढ़े व्यक्ति को कुछ संकोच के साथ लडखडाते कदमों से अपनी ओर आते हुए देखा। मक्का के विजेता मुहम्मद (सल्ल0) ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक उनको साँत्वना दी और कहा: ''मैं कोई (रजि0) नहीं हूँ; मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ. आप ही की तरह विनम्र। मैं भी वही खाता हूँ जो आप खाते हैं: जो सरज आपके ऊपर उदय होता है वही मेरे ऊपर भी उदय होता है''।

जब सर्वाधिक सफल प्रशासक महम्मद (सल्ल0) इस संसार से विदा हुए तो आप अरब प्रायद्वीप के तीस लाख वर्ग मील के क्षेत्र के शासक और संरक्षक थे। मदीना में अपने दस वर्ष के निवास के दौरान प्रतिदिन इस्लामी राज्य में औसतन 845 वर्ग मील क्षेत्र जुडता गया। जब यह मानवता का महानतम हितैषी इस संसार गया. तो उसके घर में चिराग जलाने के लिए तेल भी न १

24

विवाह

बहुविवाह और एकल विवाह

बहुविवाह का अर्थ स्पष्ट रूप से एक से अधिक पत्नियाँ होना हैं। और अधिक स्पष्ट शब्दों में यदि कोई पुरुष एक ही समय में एक से अधिक पत्नियाँ रखता है तो इसे बहुविवाह कहा जाता है। एकल विवाह एक समय में मात्र एक विवाहित जीवन साथी रखने की रीति का नाम है।

पश्चिमी हथियार

इस्लाम के शत्रु और अज्ञानी लोगों ने कई विवाहों को लेकर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की आलोचना की जबकि उन्होंने गम्भीरतापूर्वक उनकी प्रकृति. उनके रहन-सहन और इन विवाहों के उद्देश्य पर गम्भीर अध्ययन नहीं किया। सभी आलोचनाएँ बिना वि ऐतिहासिक प्रमाण के की गयीं। उनके लिए कोई तर्कपूर्ण दलील भी नहीं जिस पर विचार किया जा सके। यह आलोचना घोर अज्ञानता. धार्मिक पूर्वाग्रह अथवा इस्लाम के पैगम्बर से घृणा और उनके विचित्र जीवन दर्शन के कारण है जिससे आलोचक इसे समझे बिना लाभान्वित हो रहे हैं कि ऐसा विवाद कभी-कभी इसलिए उठाया जाता है कि पैगम्बर

(सल्ल0) द्वारा मानव सभ्यता और संस्कति पर किये गये सच्चे योगदान की अनदेखी की जा सके।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के आलोचकों की सूची लम्बी है। इसमें पश्चिम के कुछ बडे-बडे नाम सम्मिलित हैं तथापि मुहम्मद (सल्ल0) और उनका धर्म दोनों इ आक्रमण से बचे रहे: पिछले पन्द्रह वर्षों के दौरान इस्लाम ने प्रत्येक युग और प्रत्येक क्षेत्र में किसी भी धर्म की तुलना में अधिक लोगों को इस धर्म को स्वीकार करने के लिए आकर्षित किया। इतिहास दर्शाता है कि इस्लाम का जितना अधिक दमन किया जाता है उतना ही सशक्त होकर यह उठता है।

सबसे पहले हमें यह नहीं भूलना चाहिए नैतिकता लागू करने के लिए एकल विवाह एक पश्चिमी हथियार है और यह पिछले ही दिनों का परिदृश्य है: मध्य काल में संसार के अधिकतर भागों में बहुविवाह प्रचलित था। पुरुष सैकडों पत्नियाँ रखते थे क्योंकि यह सामाजिक प्रतिष्ठा का पैमाना था। पैगम्बर ईसा (अलै0) जिन्होंने विवाह नहीं किया था के अतिरिक्त अधिकतर पैगम्बरों ने कई विवाह किये थे. यहाँ तक कि सन्त लोग भी रखैल रखते थे। अरब में महिलाओं को व्यक्तिगत सम्पत्ति से भी कमतर समझा जाता था। पिता अपनी नवजात बेटियों को जीवित दफन कर देते थे। विवाह सामाजिक सुगमता के लिए किये जाते थे और तलाक सामान्य थे और इनको बुरा नहीं समझा जाता था: आज के पश्चिमी जगत में व्यभिचार. सामान्य हो गया है (आकस्मिक लैगिंक सम्बन्ध रखने में विभिन्न साथियों में अन्तर नहीं किया जाता)।

आज भी बहुविवाह मुसलमानों में. गैर मुस्लिमों में. पश्चिम में और पूर्व में वैध ा और कुछ अवैध और वह कपटाचार के साथ अपनाया जाता है। कुछ लोग गुप्त रूप से कहते हैं और कुछ सार्वजनिक रूप से। इस पर अधिक शोध करने की आवश्यकता नहीं कि यह मालूम किया जाए कि कहाँ और कैसे अधिक संख्या में विवाहित लोग निजी रखैले रखते हैं और अपनी प्रेमिकाओं के चक्कर लगाते हैं अथवा सामान्य रूप से अन्य महिलाओं के चक्कर लगाते हैं। नैतिकतावादी चाहे इसे पसन्द करें अथवा न करें। मामला यह है कि अवैध बहविवाह प्रचलित है और इसे हर जगह देखा जा सकता है।

यहदी

बाईबिल और तलमुद के युग दर्शाते हैं कि प्राचीन इस्राईली बहुविवाह करते थे और कुछ के पास सैकडों पत्नियाँ होती थीं। तलमुद का कानुन और मुसा का कानुन इसे प्रोत्साहित करता था और उनके अधिकतर पैगम्बर एक से अधिक पत्नियाँ रखते थे। विकीपीडिया के अनुसार पैगम्बर इब्राहीम (अलै0) के दो पत्नियाँ (सारा और हाजरा) थीं. पैगम्बर सुलेमान (अलै0) के सात सौ पत्नियाँ थीं और तीन सौ दासियाँ थीं। पैगम्बर याकुब (अलै0) के चार पत्नियाँ थीं। पैगम्बर दाऊद (अलै0) के आठ और पैगम्बर मुसा (अलै0) के चा॰ पत्नियाँ (सफिया. गिबशिया. बिन्त किनि. बिन्त हुबाब) थीं। इन्साइक्लोपीडिया बिबलिका के अनुसार. ''एक सामान्य यहदी चार पत्नियाँ रख सकता है और एक (रजि0) अठारह पत्नियाँ रख सकता है''।

बहुविवाह की प्रथा रब्बी जरसौन बिन यहुदा (960 ई0 से 1030 ई0) तक थी जिसने बहु-विवाह के विरुद्ध एक आदेश जारी किया। चरवाहे यहुदी सम्प्रदाय इस रीति पर 1950 तक कायम रहे जब इस्राईल के चीफ रब्बीनेट के एक कानन ने एक से अधि ाक विवाह करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

तथापि. यह सत्य नहीं कि यहुदी धर्म सदैव एकल विवाह वाला रहा अथवा पुर्णत बहुविवाह का विरोधी था और आज भी ऐसा नहीं है (यहुदी शोधकर्त्ता ग्वाटिन पुष्ट 184-185 ने बताया). की एक से अधिक विवाह करने वाले यहुदी प्रवासी इस्राईल की हाऊसिंग प्राधिकरणों के लिए अत्यधिक कठिनाईयाँ उत्पन्न कर रहे हैं और इस्राईल के लिए लज्जा का कारण भी बन रहे हैं।

ईसाई धर्म

बाईबिल के अवतरण के दौरान बहुविवाह को साधारण रूप से स्वीकार किया जाता था और यह प्रचलित भी था। ऐसा कुछ ज्ञात नहीं है कि ईसा मसीह ने बहुविवाह के विरुद्ध कुछ कहा हो। इसे धार्मिक सामाजिक और नैतिक रूप से स्वीकार किया जाता था और इसपर कोई आपत्ति नहीं की जाती थी। संभवतः यही कारण है कि स्वयं बाईबिल ने भी इस विषय पर कोई वार्त्ता नहीं की है। बाईबिल न तो इससे मना करती है न नियमित करती है और न इसकी सीमाएँ निर्धारित करती है। कुछ लोगों ने ''टेन वर्जिन'' (दस कुँवारियाँ) की कहानी की व्याख्या इस प्रकार की है मानो उस समय दस पत्नियाँ रखना वैध था। पैगम्बरों. (रजि0) ओं और नवाबों के सम्बन्ध में बाईबिल की कहानियाँ अविश्वसनीय हैं।

ईसाई (रजि0) ओं के एक से अधिक महिलाओं से विवाह के अनेक उदाहरण मिलते है। फ्रेडिक विलहेम द्वितीय और फिलिप और सेन्ट लुथर ने स्वयं चर्च के अनुमोदन से एक से अधिक विवाह किये। कम जनसंख्या की समस्या का समाधान करने के लिए न्युरेमबर्ग में 1650 में आयोजित सम्मेलन में लोगों को एक से अधिक विवाह करने की अनमति देने पर सहमति व्यक्त की गयी

अभी 17वीं शताब्दी तक ईसाई चर्च बहुविवाह के प्रचलन को मान्यता देता रहा है। मारमनो (बाद के सन्तों के चर्च ऑफ जेसस क्राइस्ट) ने बहविवाह के प्रचलन की अनमति दी थी।

इससे प्रर्दशित होता है कि बहुविवाह की रीति एक वैध रीति के रूप में सभी देशों और युगों में प्रचलित रही है। यहाँ तक कि यहूदियों के पैगम्बरों ने एक से अधि ाक विवाह किये और पैगम्बर ईसा (अलै0) ने भी इससे मना नहीं किया।

एक विवाह का प्रचलन पाल के जमाने में हुआ जब ईसाई धर्म में कई संसोध ान हो चके थे। एकल विवाह को चर्च ने इसलिए अपनाया कि ईसाई धर्म को ग्रीक और

रोमन सभ्यताओं के अनुसार बनाना था। और उनकी सभ्यता की पुष्टि करनी थी जहाँ के पुरुष एक ही विवाह करते थे परन्तु उनके पास उपयोग के लिए अनेक दासियाँ होती थीं दसरे शब्दों में उनके यहाँ बहुविवाह की कोई सीमा नहीं थी।

प्रारम्भिक ईसाईयों ने इस विचारधारा की खोज की थी कि महिलाएँ पाप से भरी हुई होती हैं और पुरुष के लिए यह श्रेष्यकर है कि वह कभी विवाह न करे। चूँकि ऐसा करने से मानवता समाप्त हो जायेगी अतः इन्हीं लोगों ने अपनी विचारधारा से समझौता कर लिया और कहा कि ''विवाह करो परन्त केवल एक''।

हिन्दः धर्म

प्राचीन काल से बहुविवाह मानव समाज की एक स्वीकुत संस्था रहा है और इतिहास में ज्ञात प्रत्येक संस्कृति का यह अंग रहा है। प्राचीन भारत में सामान्य परम्परा के अनुसार अनेक पत्नियाँ रखने की अनुमति ही नहीं थी अपितु इस रीति को साधारण रूप : अपनाया जाता था। वीकिपीडिया के अनुसार अनेक हिन्दः धार्मिक व्यक्ति. ऋगवेद और अन्य हिन्दः धार्मिक पुस्तकों में अनेक पत्नियों का उल्लेख मिलता है। राम के पि (रजि0) दशरथ के तीन से अधिक पत्नियाँ थीं जिनके नाम कौशल्या. सुमित्रा और कैकेयी थे। कृष्ण के पास 16.100 पत्नियाँ थी उनमें से प्रसिद्ध पत्नियाँ राधा. रुकमिणी. सत्यभामा. जम्बावती. सत्या. लक्ष्मणा. कालिन्दी. भद्रा और मित्रविन्दा थीं।

हिन्दः धर्म ग्रन्थों में चाहे वह वेद. रामायण. महाभारत. गीता कोई भी हों इनमें पत्नियों की संख्या पर किसी सीमा का उल्लेख नहीं है। इन धर्म ग्रन्थों के अनुसार कोई व्यक्ति चाहे जितनी भी महिलाओं से विवाह कर सकता है। अभी सन् 1955 में हिन्दः विवाह अधिनियम पारित हुआ जिसने हिन्दःओं के लिए एक से अधिक विवाह करना अवैध घोषित कर दिया। वर्तमान समय में वह भारतीय संविधान है जो हिन्दः पुरुष के लिए एक से अधिक विवाह करने पर प्रतिबन्ध लगाता है जबकि हिन्दः धर्म ग्रन्थ उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाते।

पश्चिमी समाज

पश्चिमी समाज में अधिकतर जब दाम्पत्य सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाते हैं तो पति साध ाारणतः अपनी पत्नी को छोड देता है। इसके बाद वह बिना विवाह किये अन्य महिलाओं के साथ रहता है। पश्चिमी समाज में तीन प्रकार के बहुविवाहों का प्रचलन है। (1) क्रमिक बहुविवाह अर्थात विवाह तलाक. विवाह तलाक और यह तारतम्य चलता रहता है। (2) एक पुरुष एक महिला से विवाह करता है परन्तु एक या एक से अधिक रखैलें रखता है। (3) एक अविवाहित पुरुष अनेक महिलाओं से सम्बन्ध रखता है।

पश्चिमी समाज बहुविवाह को स्वीकार नहीं करता परन्तु व्यवहारिक रूप से यह समाज बहुविवाह करने वाला समाज है। डा0 एनी बेसेन्ट के शब्दों में ''पश्चिम में एकल विवाह मात्र बहाना है बल्कि यहाँ वास्तव में ऐसा बहुविवाह होता है जिसमें उत्तरदायित्व नहीं। रखैलों को उस वक्त छोड दिया जाता है जब पुरुष का उनसे मन भर जाता है तो उसे धीरे-धीरे गली की महिला के रूप में पतित छोड देता हैं क्योंकि उसका पहला प्रेमी उसके भविष्य के सम्बन्ध में उत्तरदायी नहीं होता और वह बहुविवाह वाले घर में एक शरण प्राप्त पत्नी और माँ से 100 गुना दयनीय हो जाती है। जब हम पश्चिमी शहरों में रात के समय दयनीय महिलाओं की भीड देखते हैं तो हमें अवश्य यह एहसास होता है कि पश्चिम वालों के मुँह से यह शोभा नहीं देता कि वह बहुविवाह के लिए इस्लाम की आलोचना करें। महिलाओं के लिए पतित होकर गलियों में फेंक दिये जाने की तुलना में यह श्रेष्यकर और अधिक सम्मानपूर्ण है कि वह बहुविवाहित जीवन व्यतीत करें और वह मात्र एक पुरुष से जुडी रहें और उनकी गोद में वैध बच्चा हो और वह समाज में सम्मानित रहे- संभवत नियम कानून से बाहर एक अवैध बच्चे के साथ निराश्रित और बिना संरक्षक के. एक रात के बाद दुसरी रात किसी पथिक का शिकार होने और माँ बनने के अयोग्य हो जाने और सबके लिए घणित होने से सौतन बनना श्रेष्यकर है।

वर्तमान पश्चिमी समाज सहमति के साथ दो प्रौढ व्यक्तियों को लैंगिक सम्बन्ध ा स्थापित करने की अनुमति देकर गैर जिम्मेदाराना लैगिंक सम्बन्धों. बिना बाप के बच्चों की बहुतायत और अनेक अल्पायु और अविवाहित माँओं को बढावा दिया है जो पश्चिमी देशों की कल्याणकारी व्यवस्था के लिए बोझ बन रहे हैं।

कुछ पश्चिमी पुरुष यह दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं कि एक विवाह से महिलाओं के अधिकारों की रक्षा होती है। परन्तु क्या ये पुरुष वास्तव में महिलाओं के अधिकारों के सम्बन्ध में चिन्तित हैं? समाज में अनेक ऐसी रीतियाँ हैं जो महिलाओं का शोषण और दमन करती हैं जिसके कारण बीसवीं सदी के प्रारम्भ में महिला मताधिकार आन्दोलन से लेकर आज तक की महिला मुक्ति आन्दोलन की संस्थाएँ बनी हैं।

पश्चिमी समाज की सच्चाई यह है कि एकल विवाह पुरुषों की रक्षा करता है और उन्हें बिना किसी उत्तरदायित्व के हर जगह खेलने की अनुमति देता है। सरल गर्भ निरोधक और वैध गर्भपात ने महिलाओं के लिए अवैध लैगिंक सम्बन्धों के द्वार खोल दिये हैं और उसे तथाकथित लैंगिक क्रान्ति के लिए बहला-फुसला लिया गया है। परन्तु वही है जो गर्भपात का मानसिक आघात झेलती है और गर्भनिरोधक उपायों के बुरे प्रभावों का शिकार होती है। पुरुष यौन बीमारियों की महामारी हरपीज और एड्स की अनदेखी करते हुए निश्चिन्त होकर निरन्तर आनन्द ले रहा है। पुरुष ऐसे लोग हैं जिनकी रक्षा एकल विवाह व्यवस्था करती है जबकि महिलाएँ निरन्तर पुरुषों की कामुकता का शिकार हो रही हैं। पुरुष प्रधान समाज बहुविवाह का अत्यधिक विरोध करते हैं क्योंकि इसके कारण पुरुष उत्तरदायित्व और वफादारी के लिए विवश हो जायेंगे। अपनी बहुविवाह की प्रवृत्तियों के कारण उसको उत्तरदायित्व का सामना करना पडेगा और पत्नी और बच्चों का भरण-पोषण देना और उनकी रक्षा करनी पडेगी।

इस्लाम धर्म

अब इस्लाम के मामले की ओर लौटते हैं. हम पश्चिमी और पूर्वी देशों में बहुत से ऐसे लोगों को पाते हैं जो समझते हैं कि मुसलमान एक ऐसा व्यक्ति होता है जो भौतिव उत्तेजनाओं में ग्रस्त होता है और स्वयं वह अनेक महिलाओं से विवाह करता है चाहे उनकी संख्या सीमित हो अथवा असीमित हो। वह लोग सोचते हैं कि मुसलमान एक पत्नी से दूसरी पत्नी बदलने के लिए पूर्णतः स्वतन्त्र हैं और यह उतना ही सरल है जितना एक घर से बदलकर दूसरे घर में जाना है अथवा एक परिधान को बदलकर दूसरा परिधान ध ारण करना। मुसलमानों के बारे में यह विचारधारा भावुक फिल्मों. टी0वी सीरियलों. सस्ती पैपरबैक कहानियों मीडिया में मुसलमानों का गलत चित्रण और किसी सीमा तक मस्लिम व्यक्तियों के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार के कारण और अधिक बढ गयी है।

इस्लाम के लिए दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि कुरआन ने जो कुछ आदेश दिया और पैगम्बर (सल्ल0) ने उसके अनुसार जो व्यवहार किया अधिकतर मुस्लिम शासकों ने उसकी अवहेलना की और किसी दण्ड से बचकर उन्होंने अपनी चेतना को तसल्ली देने के लिए मुहम्मद (सल्ल0) के नाम से हदीसें गढीं जिनकी वजह से पैगम्बर (सल्ल0) की छवि ध ामिल हई और दोषारोपण के लिए उन्होंने रंगारंग सामग्री उपलब्ध करायी।

इस परिस्थिति का अपरिहार्य परिणाम यह हुआ कि ऐसे अस्थायी अवरोध पैदा कर दिये है कि लाखों लोग इस्लाम की ज्योति और इसके सामाजिक दर्शन को देखने से वंचित हो रहे हैं। और ऐसे ही लोगों के लिए इस प्रश्न पर निम्न में स्पष्ट वार्त्ता करने का प्रयास किया गया है जिसको पढने के बाद कोई भी व्यक्ति अपना निष्कर्ष निकालने के लिए स्वतन्त्र हैं।

जब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम धर्म को लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया तो बहुविवाह सामान्य रूप से प्रचलित था और वहाँ के सामाजिक जीवन में इसकी जडें गहरी थीं। करआन ने इस रीति की अनदेखी नहीं की अथवा इसे बन्द नहीं किया और

इसे असीमित रूप से जारी रहने की अनुमति भी नहीं दी। क़ुरआन बहुविवाह से सम्बन्धि ात अनियमितताओं और गैर जिम्मेदारियों से तटस्थ नहीं रह सकता था। जिस प्रकार क़ुरआन ने उस समय व्याप्त अन्य सामाजिक परम्पराओं और रीतियों के साथ किया था उसी तरह उसने बहुविवाह की संस्था को भी संगठित किया। इसे इस प्रकार परिष्कृत किया कि इसकी पारम्परिक बुराईयों का उन्मूलन हो सके और इसके लाभों को सुनिश्चित किया जा सके। क़ुरआन ने इसमें हस्तक्षेप इसलिए किया कि क़ुरआन को इसे व्यवहारिक बनाना था और क़ुरआन पारिवारिक ढाँचे में अव्यवस्था की अनमति नहीं दे सकता था जो किसी भी समाज की नींव होती है।

क़ुरआन एक मात्र धर्म-ग्रन्थ है जो कहता है कि **'मात्र एक विवाह करो'।**

इस अनुच्छेद 'मात्र एक विवाह करो' का सन्दर्भ करआन के चौथे अध्याय की सर अन-निसा है:

''जो महिलाएँ तुम्हें अच्छी प्रतीत हों उनसे दो अथवा तीन अथवा चार से विवाह कर लो और यदि तम्हें भय हो कि तम उनके बीच न्याय न कर सकोगे तो मात्र एक से विवाह करो''।

क़ुरआन के अवतरण से पहले बहुविवाह की कोई सीमा नहीं थी और पुरुष बहुत सारी पत्नियाँ रख सकता था और कुछ लोग सौ तक पत्नियाँ रखते थे। क़ुरआन किसी भी स्थिति में चार पत्नियों की सीमा निर्धारित करता है और वह भी अनेक शर्तों के साथ। एक पुरुष को अपनी सभी पत्नियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए यहाँ तक कि प्यार में भी और इसके साथ यह स्पष्ट निर्देश भी है और घोषणा भी कि ऐसा करना संभव नहीं है।

''और तुम कदापि औरतों को समान नहीं रख सकते यद्यपि तुम ऐसा करना चाहो। अतः पर्णतः एक की ओर न झक पडो कि दसरी को लटकी हुई की तरह छोड दो''। (क़ुरआन. 4:129)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से रिवायत है कि आपने कहा कि यदि एक पुरुष के पास दो पत्नियाँ हों और वह अनुपयुक्त रूप से एक की कीमत पर दूसरी की तरफ झक जाए तो कयामत के दिन उसका आधा शरीर अपंग होकर एक तरफ लटक जायेगा।

इस प्रकार इस्लाम एकल विवाह को एक नियम और बहुविवाह को एक अपवाद के रूप में कुछ असाधारण परिस्थितियों में अनुमति देता है। इस्लामी धर्मशास्त्री इमाम अबु हनीफा उल्लेख करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. ''एक व्यक्ति जिसके पास एक पत्नी हो वह सुखी और सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करता है जबकि एक व्यक्ति दो पत्नियाँ रखने के बाद परेशानियों और मुसीबतों का शिकार हो जाता है। साधारण रूप से समस्त संसार के मसलमानों में नियम के रूप में एकल विवाह प्रचलित है।

इस प्रकार इस्लाम धर्म में बहुविवाह कोई नियम नहीं बल्कि एक अपवाद है। यह एक सशर्त अनुमति है यह आस्था अथवा आवश्यकता का मामला नहीं है। कुछ लोग इस गलतफहमी में हैं कि मस्लिम परुष के लिए एक से अधिक विवाह करना अनिवार्य है।

कुरआन की उपरोक्त आयत उहद के युद्ध के अवसर पर अवतरित हुई जब अनेक मुसलमान मारे गये थे और इसके कारण अनेक विधवाओं और अनाथों का बचे हुए मुसलमानों के लिए पालन-पोषण करना अनिवार्य था। उन विधवाओं और अनाथ बच्चों की रक्षा का एक साधन विवाह भी था।

इस पुष्ठभूमि के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने बहुविवाह की खोज नहीं की है और इसके लिए ऐसे नियम बनाकर इसे एक नियम के रूप में प्रोत्साहित नहीं किया है। इस्लाम ने इसका उन्मूलन इसलिए नहीं किया क्योंकि यदि यह समाप्त हो जाता तो यह मात्र सिद्धान्त के रूप में समाप्त होता और लोग इस रीति को अपनाते रहते जैसा कि दूसरे लोग अपनाते हैं जिनके संविधान और सामाजिक मानक बहुविवाह अनुदमोदन नहीं करते। इस्लाम जीवित रहने के लिए आया है। व्यवहार में रहने के लिए आया है। यह निलम्बित रहने के लिए नहीं आया है और न मात्र एक सिद्धान्त रहने के लिए आया है। यह व्यवहारिक है और जीवन के प्रति इसका दुष्टिकोण अत्यन्त व्यवहारिक है। यही कारण है कि इस्लाम बहुविवाह की सशर्त अनुमति देता है। क्योंकि बहुविवाह के बिना जीवन व्यतीत करना सम्पूर्ण मानवता के हित में होता तो अल्लाह ने अवश्य इस संस्था को समाप्त करने का आदेश दिया होता। परन्त अल्लाह से बेहतर कौन जानता है।

इस्लाम में विधवाओं तलाकशदा महिलाओं का विवाह

इस्लाम धर्म बहुविवाह. विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं को पुनःविवाह की अनुमति अनेक कारणों से देता है। ऐसे कारणों के सम्बन्ध में किसी को कल्पना अथवा परिकल्पना नहीं करनी होती। ये कारण वास्तविक हैं और इन्हें प्रतिदिन हर जगह देखा जा सकता है इनमें से कुछ कारणों का हम विश्लेषण करते हैं।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार ''सामान्यतः. किसी दी हई आय में मत्य का जोखिम पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए कम होता है''।

अनेक सामाजिक और राजनैतिक कारणों से विधवाओं और बेसहारा लोगों की संख्या एक विशेष सीमा तक बढती रहेगी। इसके बडे कारण यद्ध. दर्घटनाएँ. प्राकतिक आपदाएँ. गिरफ्तारियाँ हैं।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में लगभग 8 मिलियन सैनिक मारे गये। इनमें अधिकतर आम नागरिक व सैनिक पुरुष ही थे।

द्वितीय विश्व यद्ध (1939-45) में लगभग 60 लाख लोग या तो मारे गये अथवा जीवन भर के लिए अपंग हो गये. इसमें से अधिकतर परुष थे।

केवल ईराक-ईरान यद्ध (1979-1988) में ही 82.000 ईरानी महिलाएँ औ लगभग 1.00.000 ईराकी महिलाएँ विधवा हो गयीं. यह सब दस वर्ष के अन्तराल में हआ।

ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ सडकों पर रोजाना दुर्घटनाएँ न होती हों। वर्ष 2009 में. सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में दुर्घटनाओं में कल 3.60.000 लोग मारे गये। इसमें 77 प्रतिशत पुरुष व 23 प्रतिशत महिलाएँ थीं।

समाज में पुरुषों की कमी का एक और कारण कारावास है। वर्ष 2009 ं यू0एस0 में 72.25.800 लोग दोषी ठहराकर जेल भेज दिये गये। इसमें से 97 प्रतिशत पुरुष थे. जो एक लम्बे कारावास की सजा काटने के लिए विवश हो गये। परुष कैदी महिलाएँ कैदियों से सामान्यत अधिक होते हैं।

कुछ दोषियों को लम्बी अवधि का कारावास जिसमें सजा-ए-मौत और आजीवन कारावास सम्मिलित है. मिलेगा। एक स्वस्थ्य समाज के लिए उपयुक्त और मानवीय समाध ाान आवश्यक है और यह केवल महिला समाज को उनके अधिकार उपलब्ध कराने से ही प्राप्त किया जा सकता है। इस विशेष परिस्थिति में इस्लाम विवाह सम्बन्धों के समापन का परामर्श देता है और कुछ अन्य कठोर सजाओं में तीन वर्ष से अधिक लम्बे कारावास के कारण विवाह सम्बन्ध टूट जाते हैं। इस प्रकार प्रभावित महिलाओं को अपना वैध जीवन साथी चुनने की अनुमति दी जायेगी। इस प्रकार बहुविवाह इन महिलाओं को बचा सकता है और इस गम्भीर समस्या का समाधान कर सकता है।

अब यदि कोई समाज इस संवर्ग में आता है और यदि वह बहुविवाह पर रोक लगाता है और वैध विवाहों को मात्र एक पत्नी तक सीमित कर देता है तो विधवा और तलाकशुदा महिलाएँ क्या करेंगी? वह प्राकृतिक रूप से ऐच्छिक जीवनसाथी कहाँ ः पायेंगी। वह सहानुभूति. समझ. सहयोग और सुरक्षा कहाँ से और कैसे प्राप्त करेंगी? इन समस्याओं के प्रभाव साधारण रूप से शारीरिक ही नहीं है बल्कि वह नैतिक. भावनात्मक. सामाजिक. भावात्मक और प्राकृतिक भी हैं। प्रत्येक सामान्य महिला चाहे वह व्यापारी हो चाहे विदेश सेवा में हो या गुप्तचर विभाग में हो। उसे एक घर और अपने एक परिवार की चाहत होती है। उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उसकी देख-रेख करे। यहाँ तक कि यदि हम इस समस्या पर पूर्णतः शारीरिक दृष्टिकोण से देखें तब भी इसके प्रभाव गम्भीर दिखायी देंगे और हम उनकी अनदेखी नहीं कर सकते अन्यः

मनोवैज्ञानिक हीन भावनाएँ. मनोबल का टटना. सामाजिक विक्षोभ और मानसि अस्थिरता उत्पन्न होगी।

इन प्राकृतिक इच्छाओं और भावनात्मक उमंगों को समझना चाहिए। इन्हें किसी से सम्बन्धित होने. देख-रेख करने. अपनी देख-रेख कराने जैसी इच्छाओं को किसी न किसी तरह सन्तुष्ट करना होगा। ऐसी परिस्थितियों में महिलाएँ साधारणतः अपनी प्रकृति को बदल नहीं पातीं अथवा वह दैवीय जीवन नहीं अपना पातीं। वह महसूस करती हैं कि उन्हें भी जीवन का आनन्द लेने का सम्पूर्ण अधिकार और अपना हिस्सा प्राप्त करने का अधि ाकार है। यदि वह इसे वैध और शालीनतापूर्वक नहीं पा सकती तो वह अन्य स्रोतों से प्राप्त करने में असफल नहीं होतीं. चाहें वह प्रयास जोखिम भरे हों अथवा क्षणिक हो। बहुत कम ऐसी महिलाएँ हैं जो स्थायी रूप से परुषों के स्थायी और सनिश्चित साथ के बिना कछ कर सकती हैं।

ऐसी परिस्थिति में कोई भी महिला एक मनोवैज्ञानिक रोगी हो जायेगी अथवा विद्रोही और नैतिकता नष्ट करने वाली हो जायेगी।

अतीत में भी जब किसी महिला का पति मर जाता था तो विरासत की सम्पत्ति की तरह या तो उसको पति के भाई अथवा सौतेले बेटे के हवाले कर दिया जाता था जो उसके साथ क्रूर व्यवहार करता था। भारतीय समाज में एक रीति यह थी कि विधवा को उसके पति की चिता पर जला दिया जाता था। यदि उसे जीवित रहना होता तो वह सांसारिक आकर्षणों से दूर रहती और पूरे जीवन विलाप करना पडता।

परन्तु इस्लाम ने विधवा महिलाओं अथवा तलाकशुदा महिलाओं के शोक को चार महीने और दस दिन तक सीमित कर दिया जिसे इद्दत की अवधि कहा जाता है। इसके बाद उसे प्रत्येक प्रकार के सौन्दर्य अपनाने की अनुमति दी जाती है और अब वह पनः विवाह कर सकती है और कुरआन इसे इसकी अनुमति देता है।

''उन महिलाओं से विवाह करो जो विवाह बन्धन से नहीं जडी हैं''।

(करआन. 24:32)

✵

महिलाओं की रजामन्दीः इस्लामी दष्टिाकोण

यह अनिवार्य है कि जो औरत पुरुष के चुनाव की वस्तु है वह विवाहित जीवन में प्रवेश करने के लिए इच्छुक हो। महिलाओं की अनुमति लेने के बाद ही विवाह सम्पन्न हो सकता है। किसी महिला का विवाह जबरदस्ती कर देना गैर-काननी है। इस्लाम के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है. कि किसी पुरुष को किसी महिला को विवाह करने के लिए विवश करने की अनुमति दी गयी हो।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का अपना दृष्टिकोण यह था कि ''किसी अविवाहित लडकी का विवाह उसकी अनुमति लिये बिना नहीं किया जा सकता था''। पैगम्ब (सल्ल0) के एक साथी और कुरआन के व्याख्याकार अब्दुल्लाह बिन अब्बास एक लडकी की कहानी रिवायत करते हैं जो पैगम्बर (सल्ल0) के पास यह शिकायत करने आयी थी कि उसके पिता ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कर दिया है। पैगम्बर (सल्ल0) ने उसे अनुमति दी कि वह स्वयं चनाव कर ले कि इस विवाह बन्धन में रहेगी अथवा अपने आप को अलग कर लेगी।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने एक अन्य ऐसी घटना की रिवायत की है जो एक महिला की है जिसका नाम बुरैरा था और उसके पति का नाम मुगीस था जो एक काले दास थे। ''अब्दुल्लाह बिन अब्बास इस काहनी को इस प्रकार वर्णन करते हैं मानों यह उनके आँखों के समक्ष घटित हुई होः ''मदीना के रास्तों पर मुगीस बुरैरा के पीछे भाग रहे हैं। वह चिल्ला रहे हैं और उनकी आँखों से आँस बहकर दाढी पर आ रहे हैं. उनको देखकर

पैगम्बर (सल्ल0) ने मुझसे कहा: 'ऐ अब्बास क्या तुम्हें मुगीस के बुरैरा से प्रेम और बुरैरा की मुगीस से घृणा पर आश्चर्य नहीं होता? फिर पैगम्बर (सल्ल0) ने बुरैरा से कहा. मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें पुनः अपना पति बना लो' बुरैरा ने पैगम्बर (सल्ल0) से पूछा. 'क्या यह अल्लाह का आदेश है' पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. 'नहीं. यह मात्र एक परामर्श है' तो बरैरा ने शालीनतापर्वक मना कर दिया कि 'मझे इस परामर्श की आवश्यकता नहीं है।'

हजरत उमर के शासनकाल काल में बहुविवाह का एक रोचक मामला सामने आया। एक विधवा जिनका नाम उम्मे अमान था और वह उत्बा की बेटी थीं. उनको चार लोगों ने विवाह का सन्देश दिया। इनमें से चारों- उमर (रजि0). अली (रजि0). ज़ुबैर (रजि0). और तलहा (रजि0)- पहले से ही विवाहित थे। उम्मे अमान ने तलहा (रजि0) के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और अन्य तीनों के प्रस्ताव को ठकरा दिया। फिर उनका विवाह तलहा (रजि0) से कर दिया गया।

यह घटना इस्लामी राज्य की राजधानी मदीना में घटित हुई. जिन प्रस्तावकों को ठुकरा गया था उनमें इस्लामी राज्य के शासक उमर (रजि0) भी थे परन्तु किसी ने न तो आश्चर्य प्रकट किया और न नापसन्द किया क्योंकि इस्लाम में महिला अपने फैसले स्वयं करने के लिए पूर्णत स्वतन्त्र है। यह ऐसा अधिकार है जो उससे कोई छीन नहीं सकता- यहाँ तक कि उस समय का शासक भी नहीं।

यह घटनाएँ दर्शाती हैं कि जो इस्लामी आदेश चार विवाहों तक ही अनुमति देते हैं उनका अर्थ यह नहीं कि उन्हें यह अधिकार है कि चार महिलाओं को पकड लें और उन्हें अपने घर में बन्द कर दें। विवाह परस्पर रजामंदी का मामला है। सिर्फ उसी महिला को दूसरी अथवा तीसरी पत्नी बनाया जा सकता है जो दूसरी अथवा तीसरी पत्नी बनना चाहे। और जब यह मामला पूर्णतः महिला की इच्छा पर आधारित है तो इस पर आपत्ति करने का कोई कारण नहीं है।

वर्तमान युग चुनाव की स्वतन्त्रता को अत्यधिक महत्व देता है। इस्लामी कानून इस मल्य का पर्ण रूप से समर्थन करता है। दसरी तरफ ''नारीवाद'' के समर्थक चनाव की स्वतन्त्रता को चनाव की सीमितता से बदलना चाहते हैं।

25

पैगम्बर (सल्ल0) के अनेक विवाह

जब भी पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का नाम आता है तो लोगों के मस्तिष्क में अनेक पत्नियों वाले एक व्यक्ति की छवि उभरती है। अक्सर यह छवि गैर मुस्लिमों के लिए मुहम्मद (सल्ल0) के व्यक्तित्व को समझने में रोडा बन जाती है। इसके कारण वह लोग ं जिम्मेदाराना और अपरिपक्व निष्कर्ष निकालते हैं। जिन निष्कर्षों का सम्बन्ध न तो इस्लाम से होता है और न पैगम्बर (सल्ल0) से। हम यहाँ कुछ तथ्य प्रस्तुत करेंगे

- इस्लाम में विवाह की संस्था को अत्यन्त उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त है। समाज के स्वस्थ्य अस्तित्व के लिए यह प्रशंसनीय और महत्वपूर्ण है।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने पच्चीस वर्ष की आयु से पहले महिलाओं को कभी नहीं छुआ। जब उनका पहली बार विवाह हुआ तो आपने मक्का के समाज में सर्वाधिक सच्चे और विश्वसनीय की प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी और एक ईमानदार और पारदर्शी व्यापारी के रूप में आपका सम्मान किया जाता था. आप सबसे स्नेह करने वाले मित्र थे और निर्धनों. अनाथों और विधवाओं के रक्षक थे।
- पैगम्बर (सल्ल0) का पहला विवाह खदीजा (रजि0) से हुआ था जो चालीस वर्ष की विधवा थीं और उनके साथ उच्च नैतिक पृष्ठभूमि जुडी हुई थी और वह आयु में पैगम्बर (सल्ल0) से 15 वर्ष बडी थीं। हजरत खदीजा (रजि0) ने स्वयं विवाह समझौते का प्रस्ताव

किया और पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके बढ़ी होने और विधवा होने के बावजद प्रस्ताव को स्वीकार किया। यदि आप शारीरिक रूप से कामक होते तो उस समय आपको अधिक सन्दर और अधिक जवान पत्नियाँ आसानी से मिल सकती थीं।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने खदीजा (रजि0) के साथ लगभग 25 वर्षों तक सखी और सन्तष्ट जीवन व्यतीत किया और आप (सल्ल0) के एक के अतिरिक्त सभी बच्चे हजरत खदीजा (रजि0) से पैदा हए। हजरत खदीजा (रजि0) से आपके प्रेम का प्रदर्शन उस घटना से होता है जब आपके मित्र ने हजरत खदीजा (रजि0) की मत्य के बाद आपका शोक और दख देखकर आपसे दसरे विवाह के लिए कहा। आपने कहा खदीजा (रजि0) के बाद विवाह की कौन सोच सकता है।

खदीजा (रजि0) बीमारी पडती हैं और उनकी मत्य हो जाती है

कटटर करैश सरदारों द्वारा तीन वर्ष के सामाजिक वहिष्कार की अवधि के दौरान पैगम्बर (सल्ल0) के साथी और उनके परिवार का अधिकांशतः बाहरी दनिया से सम्पर्क कटा रहा। यह अवधि अत्यन्त कष्टदायक थी। जिस दशा तक उन पर प्रतिबन्ध लगाये गये थे वह महिलाओं और बच्चों के सामान्य स्वास्थ्य की कहानी बताते हैं खदीजा (रजि0) जो पहले ही करैश के वहिष्कार के कारण आर्थिक कठिनाईयों से दर्बल हो गयी थीं. बीमार पड गयीं। तीन दिनों की संक्षिप्त बीमारी के बाद उन्होंने इस संसार को दिसम्बर 619 ई0 के लगभग छोड दिया। पैगम्बर (सल्ल0) अपनी सबसे अधिक प्यार करने वाली संगिनी की क्षति पर बहत दखी थे और आपको गहरा आघात लगा था।

कटटर करैश सरदारों द्वारा आपको डराया गया था और आपका दमन किया गया था और आपका पारिवारिक जीवन भी पर्णतः अस्त-व्यस्त हो गया था। बच्चे छोटे थे और

उनकी देखभाल करने वाला कोई न था। आपके दुख को देखकर आपके मित्रों ने यह सलाह दी कि उन्हें किसी विधवा से विवाह कर लेना चाहिए जो उनके बच्चों की देखभाल करे और एक कुँवारी से विवाह करना चाहिए जिससे उनको साँत्वना और प्यार मिल सके और उनका दुख हल्का हो जाए। इस प्रकार उन्होंने सौदा (रजि0) और आयशा (रजि0) से उसी वर्ष विवाह किया। इन विवाहों का आपके मित्रों ने प्रस्ताव किया था और उन्हें इस उद्देश्य से सम्पन्न कराया गया कि आपके बच्चों को अभिभावक मिल सके और आपके अपने लिए कोई जीवनसाथी। इस सम्बन्ध में कोई बात असामान्य अथवा वासनात्मक नहीं थी। इन्हें समय की माँगों के अन्तर्गत प्रस्तावित किया गया था और आपने इन्हें स्वीकार किया था।

- पैगम्बर (सल्ल0) की दूसरी पत्नी सौदा (रजि0) भी एक विधवा थीं। वह अपने पति की तरह मुहम्मद (सल्ल0) के प्रारम्भिक अनुयायियों में से एक थीं और उनके परामर्श पर हब्शा की हिजरत की थी। उनकी वहाँ से वापसी के बाद उनके पति का देहान्त हो गया। उनको एक शरण की आवश्यकता थी। उनके लिए प्राकृतिक प्रक्रिया थी कि वह पैगम्बर (सल्ल0) की ओर लौटतीं जिनके इस्लामी मिशन के लिए उनके पति का देहान्त हुआ था। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें अपनी शरण में ले लिया और उनसे विवाह कर लिया। जिस समय पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे अपनी छोटी बेटियों के देख-रेख के लिए विवाह किया उस समय वह चालीस वर्ष से अधिक उम्र की थीं। उनके पास उनके पहले पति से एक बेटा था परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) से कोई सन्तान न हुई।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की तीसरी पत्नी आयशा (रजि0) उनके घनिष्ठ मित्र. अबू बक्र की बेटी थीं। पैगम्बर (सल्ल0) का इस शादी का प्रमुख लक्ष्य अबू बक्र (रजि0) के साथ बन्धुत्व के बन्धन को मजबूत करना था जो कि शत्रुओं के विरुद्ध उनके प्रमुख संरक्षक थे। दूसरा. आयशा (रजि0) का वंश अपने सम्मान और बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध था। विवाह के समय हजरत आयशा (रजि0) की आयु के सम्बन्ध में मतभेद हैं परन्तु आधुनिक विश्लेषणों से पता चला है कि उस समय उनकी उम्र 11 वर्ष नहीं थी बल्कि पन्द्रह वर्ष थी।

पैगम्बर (सल्ल0) के आयशा (रजि0) से सम्बन्ध अन्य पत्नियों के सम्बन्ध से भिन्न थे। उनसे आपका सम्बन्ध शारीरिक से अधिक बौद्धिक था। आप उनसे अधिक इसलिए मिलते थे कि वह बात करना और अपने पति से तर्क-वितर्क करना पसन्द करती थीं और वह पैगम्बर (सल्ल0) की एक उत्सुक शिष्या थीं। हजरत आयशा (रजि0) को यह गर्व प्राप्त था कि अधिकतर कुरआन की सूरतें मदीना में उस समय अवतरित हुई जब वह पैगम्बर (सल्ल0) के साथ रहतीं। इसे हजरत आयशा (रजि0) अल्लाह के अपने ऊपर एक कृपा के रूप में देखतीं। पैगम्बर (सल्ल0) जानते थे कि वह उनके जीवन का महत्वपूर्ण ज्ञान मानवता तक पहुँचा कर उसे अत्यधिक लाभ पहुँचायेंगी। विशेष रूप से दाम्पत्य जीवन और व्यक्तिगत मामलों में जिन्हें दूसरे लोग नहीं जान सकते थे। वास्तव में पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने समुदाय को परामर्श दिया कि वह लोग इस्लाम धर्म का आधा ज्ञान हजरत आयशा (रजि0) से सीखें। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की दूरदृष्टि सफल सिद्ध हुई क्योंकि वह उनकी मृत्यु के बाद 45 वर्ष जीवित रहीं और इस प्रकार वह पैगम्बर (सल्ल0) के विवेक और ज्ञान के मुख्य स्रोतों में से एक थीं।

उन्होंने मुसलमानों को पैगम्बर (सल्ल0) की लगभग 2210 हदीसें हस्तान्तरित कीं। वह एक कुशल हदीस ज्ञानी थीं और उनसे धार्मिक और न्याय सम्बन्धी मामलों में अक्सर परामर्श किया जाता था।

- पैगम्बर (सल्ल0) अपनी दो पत्नियों. सौदा (रजि0) और आयशा (रजि0) के साथ अपनी 56 वर्ष की आयु तक पॉच वर्ष के लिये रहे और इस दौरान आपने किसी अन्य महिला से विवाह नहीं किया
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी उम्र के 56वें वर्ष से 60वें वर्ष के दौरान एक के बाद एक नौ विवाह विभिन्न कारणों से किये। अपने जीवन के तीन अन्तिम वर्षों में आपने कोई विवाह नहीं किया।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की चौथी पत्नी हफ्सा (रजि0) थीं जो आपके सबसे विश्वस्त मित्रों में से एक हजरत उमर (रजि0) की विधवा बेटी थीं। उनके पति बद्र के युद्ध शहीद हो गये थे। उमर (रजि0) अपनी बेटी से भावनात्मक रूप से अत्यधिक जुड़े

हुए थे और उन्होंने अपने मित्र उस्मान (रजि0) से इनका विवाह करने का प्रस्ताव किया परन्तु उन्होंने मना कर दिया। फिर उन्होंने अबू बक्र (रजि0) से कहा परन्तु उन्होंने भी मना कर दिया। संभवत उन्होंने हफ्सा (रजि0) की शीघ्र क्रोधित होने वाली प्रवृत्ति के सम्बन्ध में पहले ही सुन रखा था। हजरत उमर (रजि0) को परेशान देखकर पैगम्ब (सल्ल0) ने हफ्सा (रजि0) से विवाह कर लिया।

- हजरत हफ्सा (रजि0) अस्थिर स्वभाव की थीं और उन्हें जल्दी क्रोध आ जाता था। इस वास्तविकता को उनके पिता उमर (रजि0) ने स्वयं बताया है। हजरत उम (रजि0) के शब्दों में: ''एक बार मेरी पत्नी ने किसी मामले में मुझसे बहस की। मैंने उससे कहा. 'मुझे परामर्श देने वाली तुम कौन होती हो?' उसने उत्तर दिया. 'आप मुझे मामूली बात पर बहस करने की अनुमति नहीं देते जबकि आपकी बेटी हफ्सा (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) से सभी मामलों में बहस करती हैं'। मैं उठा और सीधे हफ्सा (रजि0) के पास गया और उससे पूछाः 'क्या यह सही है कि तुम पैगम्बर (सल्ल0) से क्रोध से बात करती हो' उसने उत्तर दिया. 'हाँ. मैं ऐसा ही करती हूँ। मैंने कहा कि मैं इसके विरुद्ध त चेतावनी देता हूँ और ऐसा करने पर अल्लाह तुम्हें सजा देगा।''

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की पॉचवी पत्नी जैनब बिन्ते खुजैमा (रजि0) क सम्बन्ध शक्तिशाली हवाजिन कबीले से था। यह एक अन्य विधवा थीं जिनसे पैगम्बर (सल्ल0) ने विवाह किया। जब आपने उनसे विवाह किया तो उनकी आयु 60 वर्ष थीं। वह बहुत उदार और दानशील थीं और निर्धनों और वंचितों को खिलाती थीं। उन्हें गरीबों की माँ कहा जाता था। तथापि अपने विवाह के तीन महीने के बाद उनका देहान्त हो गया।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की छठी पत्नी उम्मे सलमा (रजि0) भी एक विधवा थीं इनका सम्बन्ध बनू फिरास कबीले के एक प्रतिष्ठित परिवार से था। वह सबसे पहले इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों में से थीं। वह अपने पति के साथ मदीना नहीं जा सकी थीं क्योंकि कुरैश सरदार उन्हें अपने बच्चे के साथ जाने की अनुमति नहीं दे रहे थे। यह भी दमन का एक तरीका था जिसे पैगम्बर के शत्रु अपनाते थे। कुछ समय के बाद वह वहाँ से निकलने में सफल हो गयीं। परन्तु उनकी हिजरत के बाद ही उनके पति शहीद हो गये और चार अनाथ बच्चे छोड गये। उम्मे सलमा का एक और बच्चा गर्भ में था और

उनका दिल टूटा हुआ था। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके साथ अत्यधिक सहानुभूति व्यक्त की और विवाह के लिए हाथ बढाया। वह आत्म-सम्मान वाली महिला थीं। अतः उन्होंने प्रारम्भ में संकोच किया क्योंकि उनके पास उनके शहीद पति के बच्चे थे। पैग (सल्ल0) ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह उनके बच्चे की देख-रेख अपने बच्चे की तरह करेंगे। वह पैगम्बर (सल्ल0) के इस विचार से प्रभावित हुईं और उनसे विवाह कर लिया।

एक 56 वर्षीय व्यक्ति का चार अनाथ बच्चों के साथ किसी विधवा से विवाह करने का प्यार दया और सहानुभूति के अतिरिक्त और क्या उद्देश्य हो सकता है? इस विवाह का एक और महत्वपूर्ण कारण थाः उम्मे सलमा (रजि0) मक्का के एक शक्तिशाली कबीले बनू मखजूम से थीं जो उस समय इस्लाम का कट्टर दुश्मन था। एक बार फिर इस विवाह का उद्देश्य प्रभावशाली और शक्तिशाली कबीलों को इस्लाम के निकट लाना था।

उम्मे सलमा (रजि0) एक नेक महिला थीं वह महीने में तीन दिन रोजा रखतीं और अधिकतर पूरी रात नमाजें पढती थीं। वह पैगम्बर (सल्ल0) को अत्यन्त सम्मानपर्वक सनती और आज्ञापालन करती थीं।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की सातवीं पत्नी जैनब (रजि0) थीं। वह मदी· हिजरत के समय विधवा थीं और पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने मुँहबोले बेटे जैद बिन हारिसा के साथ उनका विवाह कर दिया था। जैद (रजि0) ने उन्हें तलाक दे दी तो पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे स्वयं विवाह कर लिया जो उस समय 38 वर्ष की थीं। इस विवाह से मुहम्मद (सल्ल0) के अधिकतर आलोचक चिढते हैं। क्योंकि वह इसे दो कारणों से नैतिक रूप से गलत समझते हैं। पहला तर्क यह दिया जाता है कि चूँकि जैनब (रजि0) पैगम्बर के मुँहबोले बेटे की पत्नी थीं इसलिए वह उनके लिए बेटी समान थीं। दूसरे यह दावा किया जाता है कि पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको तलाक दिलवाने की कोशिश की ताकि वह उनसे विवाह कर सकें। तथापि इसके गहन विश्लेषण से पता चलेगा कि यह आलोचनाएँ पर्णतः निराधार हैं।

जैद (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पास एक दास के रूप में आये थे आपने उन्हें स्वतन्त्र कर दिया था और मँहबोला बेटा घोषित कर दिया था। वह जैद से इतना प्यार करते थे कि उन्होंने अपनी फुफेरी बहिन जैनब से उनका विवाह कर दिया था जो कि आपके चाचा अबु तालिब की नातिन थीं। बाद में पता चला कि जैनब (रजि0) जैद (रजि0) के साथ विवाह से खश नहीं थीं क्योंकि उन दोनों के सामाजिक स्तर में अन्तर था।

यह आरोप कि मुहम्मद (सल्ल0) इस तलाक के लिए जिम्मेदार हैं. पूण अविश्वसनीय है। तथ्यों से ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं होता। जैनब (रजि0) मुहम (सल्ल0) के लिए अजनबी नहीं थीं: वह उनकी फुफेरी बहिन थीं और वह उन्हें बचपन से जानते थे। उनके पहले पति की मृत्यु के कारण ही पैगम्बर (सल्ल0) उनके पुर्नवास के लिए उत्सुक थे। यदि आप उनकी सुन्दरता से इतने अधिक आकर्षित होते तो उनका विवाह जैद (रजि0) से नहीं कराते। वास्तव में जैनब (रजि0) जैद से विवाह से प्रसन्न नहीं थीं। उनको यह क्षोभ था कि उनका विवाह एक दास से कर दिया गया है। वह उनको अपने से नीचा समझती थीं और उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थीं। जैद (रजि0) अक्सर उनके व्यवहार की शिकायत पैगम्बर (सल्ल0) से करते थे परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) सदैव उन्हें धैर्य रखने का परामर्श देते। जैद (रजि0) उनके ऊपर रौब जमाने की प्रवत्ति से इतने खिन्न हुए कि एक दिन क्रोध में आकर उन्हें तलाक दे दिया
इसी दौरान अल्लाह तआला ने सम्बोधित कियाः

> *''महम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं. परन्तु वह अल्लाह व सन्देष्टा और सन्देष्टाओं पर महर लगाने वाले (अन्तिम) हैं। और अल्लाह हर चीज का ज्ञान रखने वाला है''।* (कुरआन. 33:40)

जैनब (रजि0) के सम्बन्धियों ने पैगम्बर (सल्ल0) से उनसे विवाह करने का आग्रह किया। पैगम्बर (सल्ल0) यह कहकर मना कर दिया कि इस पर वह विचार नहीं व सकते। उन्होंने कहा कि वह उनके बेटे की पत्नी थीं क्योंकि अज्ञानता काल में लोग मँहबोले बेटे को प्राकतिक बेटे के समान समझते थे। इसी अवसर पर करआन की यह

आयत अवतरित हुई जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि मुँहबोला बेटा बेटा नहीं हो सकता। पैतृक सम्बन्ध सदैव प्राकृतिक होने चाहिए। इस प्रकार मुहम्मद (सल्ल0) को अल्लाह तआला ने जैनब (रजि0) से विवाह की अनुमति दे दी। उनका जैनब (रजि0) से विवाह का उद्देश्य उस प्राचीन काल से चली आ रही रीति को अवैध घोषित करना था जिसमें लोग मुँहबोले बेटे को वास्तविक बेटा समझते थे। इस विवाह को आसमानी अनमोदन प्राप्त हआ था जैसा कि कुरआन में कहा गया है:

"फिर जब जैद उससे अपनी इच्छापर्ति कर चका. हमने तमसे उसका विवाह कर दिया"। (कुरआन. 33:37)

फिर जैनब (रजि0) ने सजदे में जाकर दुआ की: "ऐ अल्लाह यदि मैं उनके योग्य हूँ तो मेरा उनसे विवाह कर दीजिए"। यह रिवायत किया गया है कि फिर उपरोक्त आयत उतरी और पैगम्बर (सल्ल0) जैनब (रजि0) को यह सन्देश भेजा कि अल्लाह ने उन्हें पैगम्बर के विवाह में दे दिया है। जब उन्होंने समाचार सुना तो उन्होंने अपने सारे आभूषण उतार दिये और उन्हें अपनी दासी सलमा को दे दिया जो यह शुभ सूचना लायी थी. फिर वह सजदे में गिर गयीं और दो महीने तक रोजा रखने का प्रण लिया।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जैनब के साथ अपने विवाह पर एक विशाल भोज आयोजित किया। लगभग तीन सौ सम्मानित साथियों और उनके परिवार के लोगों ने इस भोज का आन्नद लिया। पर्दे के सम्बन्ध में कुरआन की आयते इसी अवसर पर अवतरित हुई। कुछ लोग अनावश्यक रूप से पैगम्बर (सल्ल0) के घर में रुके हुए थे जिसके कारण पैगम्बर (सल्ल0) और उनके घरवालों को अत्यधिक असुविधा हो रही थी क्योंकि उनके पास एक ही कमरा था। कुरआन इसका उल्लेख इन शब्दों में करता है:

"ऐ ईमानवालो. सन्देष्टा के घरो में मत जाया करो परन्तु जिस समय तुमको खाने के लिए अनुमति दी जाये. ऐसे ढंग से कि इसकी तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। परन्तु जब तुमको बुलाया जाये तो प्रवेश करो। फिर जब तुम खा चुको तो उठ कर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से सन्देष्टा को नागवारी होती है। परन्त वह तम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह सच्ची

बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम सन्देष्टा की पत्नियों से कोई चीज माँगो तो पर्दे की ओट से माँगो। यह तरीका तुम्हारे दिलों के लिए अधिक पवित्र है और उनके दिलो के लिए भी''। (कुरआन. 33:53)

• पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की आठवीं पत्नी जुवैरिया (रजि0) शक्तिशाली कबीले बनु मुस्तलिक के सरदार हारिस की बेटी थीं। उनका विवाह उसी कबीले के सर्वाधिक प्रिय युवक से हुआ था और उनके पिता और पति दोनों पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के कट्टर शत्रु थे। जुवैरिया (रजि0) एक युद्ध बंदी थीं। हारिस संकोच के साथ मुहम्मद (सल्ल0) के पास गये और कहाः ''ऐ मुहम्मद मैं अपने कबीले का सरदार हूँ इसलिए यह शोभा नहीं देता कि मेरी बेटी दासी बने मैं आपसे निवदेन करता हूँ कि उसे मुक्त कर दीजिए। मैं इसके लिए मुआवजा राशि देने के लिए तैयार हूँ''। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. ''क्या यह बेहतर नहीं होगा कि निर्णय जुवैरिया(रजि0) पर छोड दिया जाए?'' हारिस ने अपनी बेटी जुवैरिया (रजि0) से कहा कि मुहम्मद (सल्ल0) ने सब कुछ तुम्हारे ऊपर छोड दिया है अतः वह उससे असहमत न हो। उन्होंने कहा कि मैं मुहम्मद (सल्ल0) की सेवा में रहना पसन्द करुँगी। पैगम्बर (सल्ल0) के लिए बेहतर यही होगा कि वह मुझसे विवाह कर लें। हारिस उनके उत्तर से प्रसन्न हुआ और मुक्त करने के लिए मआवजा की राशि तरन्त दे दी। फिर पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे विवाह कर लिया।

इस विवाह से मुसलमानों के दिलों में उनके कबीले के साथ सदव्यवहार का स्रोत उमड पडा और सभी युद्धबंदी मुक्त कर दिये गये फिर इस विवाह के परिणामस्वरूप उस कबीले के साथ शान्ति स्थापित हो गयी और उसके साथ मित्रवत सम्बन्ध हो गये। आयशा (रजि0) जुवैरिया (रजि0) को बहुत चाहने लगीं और इस्लाम की मौलिक शिक्षा प्राप्त करने में उनकी सहायता की। वह शीघ्र सीखने वाली थीं और जल्द ही उनको नये धर्म में अपार निष्ठा हो गयीं। उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में आयशा (रजि0) ने कहाः 'वह इतन आकर्षक थीं कि उनसे कोई अपने आप को नहीं रोक सकता था'।

• पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की नौवीं पत्नी उम्मे हबीबा (रजि0) थी। वह इस्लाम के कटटर शत्र अब सफियान जो मक्का के बहदेववादियों के सरदार थे और उनकी पत्नी

क्रूर हिन्दः थीं. की बेटी थीं। उम्मे हबीबा (रजि0) और उनके पति ने अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। उनके डर से दम्पत्ति ने हब्शा की हिजरत की। वहाँ उनके पति ईसाई हो गये परन्तु उम्मे हबीबा (रजि0) ने इस्लाम धर्म छोडने से मना कर दिया। इस दौरान उनके पति ने आसानी और आनन्द का जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया। वह अत्यधिक शराब पीने लगे। परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गयी। जब वह मक्का वापस आये तो पैगम्बर (सल्ल0) को उम्मे हबीबा (रजि0) की दशा पर दुख हुआ और आपने उनसे विवाह कर लिया। अन्य विवाहों की तरह उम्में हबीबा के साथ उनके विवाह के परिणामस्वरूप पैगम्बर (सल्ल0) ने मक्का के एक बडे कबीले बनू अब्दुस शम्स का दिल जीत लिया और वह लोग इस्लाम से निकट आ गये। उम्मे हबीबा (रजि0) के साथ पैगम्बर (सल्ल0) के विवाह के सुदूरवर्ती प्रभाव पडे। हजरत खालिद (रजि0) का धर्म परिवर्तन इसी विवाह के कारण हुआ था। इस विवाह से पैगम्बर (सल्ल0) के विरुद्ध अबू सुफियान का विरोध अत्यन्त क्षीण हो गया। कुरैश के लोगों ने इस तथ्य को स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उनके शत्रु नहीं हैं और जो सदैव उनके शुभ चिन्तक रहते हैं अतः अपने परिवार के एक ऐसे सम्मानित व्यक्ति से युद्ध करना एक गलती है। अपने विवाह के समय उम्मे हबीबा (रजि0) 38 वर्ष की थीं और आपने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण पैगम्बर (सल्ल0) की सेवा में न्यौछावर कर दिया था। वह आपके बाद दो दशकों तक जीवित रहीं और उनकी मृत्यु 73 वर्ष की उम्र में हुई। उनके पास अपने पहले पति से दो बेटे थे और पैगम्बर (सल्ल0) से कोई सन्तान न थी।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की दसवीं पत्नी सफीया थीं जिन्हें खैबर के युद्ध में गिरफ्तार किया गया था। उनके माता और पिता यहूदी थे जिनका सम्बन्ध दो प्रतिष्ठित यहूदी परिवारों से था। सफीया (रजि0) का विवाह प्रसिद्ध यहूदी कवि बिन मिश्कम से हुआ था। परन्तु वह एक साथ नहीं रह सके और उनके पति ने उन्हें तलाक दे दिया। सफिया (रजि0) का दूसरा विवाह एक प्रसिद्ध और महान यहूदी योद्धा से हुआ। उन्हें अपने इस पति से भी हाथ धोना पडा जब वह खैबर के युद्ध में मारे गये और उन्हीं के साथ सफीया (रजि0) के पिता और परिवार के अन्य पुरुष भी मारे गये। सफीया (रजि0) को युद्धबंदी

बना लिया गया और वह आपके एक साथी की दासी बन गयीं। कुछ साथियों ने इस पर इस आधार पर आपत्ति की कि वह एक कबीले के सरदार की बेटी थीं और उन्हें सिर्फ पैगम्बर को ही दिया जा सकता है। सफीया (रजि0) ने भी मुसलमान बनने और मुसलमानों के मुखिया से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। इसी के माध्यम से उनके लोगों में उनकी प्रतिष्ठा स्थापित करने में सहायता मिल सकती थी।

पैगम्बर (सल्ल0) सफीया (रजि0) के चेहरे पर उनकी आँख के पास एक हरा निशान देखा और पूछा कि यह क्या है? उन्होंने उत्तर दिया. ''एक दिन मैंने स्वप्न देखा कि मदीना से एक चाँद निकला और मेरी गोद में गिर गया। मैंने इस स्वप्न का उल्लेख अपने पति कनाना से किया। उन्होंने कहा. क्या तुम ऐसे (रजि0) से विवाह करना चाहती हो जिसका सम्बन्ध मदीना से है? और उन्होंने मेरे चेहरे पर थप्पड मारा जिससे यह निशान पड गया''।

सफीया (रजि0) पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के महान व्यक्तित्व: आपकी सच्चाई. आपके दयालु व्यवहार और आपके मिशन की सच्चाई से अनुकुल रूप से अत्यन्त प्रभावित हुईं। उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। वह इसके आदर्श मानवीय गुणों को पसन्द करती थीं। वह भावुक निष्ठावान हो गयीं। वह नियमित रूप से इस्लामी कर्म करती और इस्लामी परम्पराओं की प्रशंसा हार्दिक रूप से करतीं। उन्हे इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर गर्व था।

एक बार पैगम्बर (सल्ल0) के जीवन में उमर (रजि0) ने सफीया (रजि0) से पूछा कि क्या अब भी वह अपना यहूदी सम्बन्ध कायम रखती हैं। हजरत सफीया (रजि0) ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं शुक्रवार को मनाती हूँ शनिवार नहीं। परन्तु मुझे अब भी अपने यहूदी परिवारवालों से स्नेह है। इस्लाम इससे नहीं रोकता। उमर (रजि0) अवाक रह गये उनके पास सन्तान न थी और साठ वर्ष की आयु में उनका देहान्त हुआ।

- हजरत मारिया (रजि0) को सिकन्दरिया के आर्क बिशप ने पैगम्बर (सल्ल0) को दासी के रूप में प्रस्तुत किया था और पैगम्बर (सल्ल0) ने उसके बाद उनसे विवाह कर लिया। यदि पैगम्बर (सल्ल0) उन्हें दासी के रूप में रखते तो यह व्यवहार उनके शिष्टता

के विरुद्ध होता। खदीजा (रजि0) के बाद मारिया ही आपकी ऐसी पत्नी थीं जिनसे एक बेटे का जन्म हुआ जिनका नाम इब्राहीम था जो अपने जन्म के दो वर्षों के अन्दर ही मर गये। मारिया (रजि0) इस क्षति को सहन न कर सकीं और कछ ही वर्षों बाद उनकी मत्य हो गयी।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का अन्तिम विवाह एक अन्य तलाकशुदा महिल मैमुना (रजि0) के साथ हुआ था। उनके दो विवाह हो चुके थे और वह बहुत बूढी थीं। उनका पैगम्बर (सल्ल0) के साथ सत्तावन वर्ष की आयु में विवाह हुआ। विवाह का कारण यह था कि पैगम्बर (सल्ल0) के चाचा अब्बास (रजि0) ने हलालीन कबीले को इस्लाम में लाने के लिए ऐसा करने का परामर्श दिया था। ऐसा वास्तव में हुआ भी. उनके विवाह के पश्चात बडी संख्या में कबीले के लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया।

- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ये पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विवाह बन्धन आपके मन की इच्छाओं और भावनाएँ के कारण नहीं हुए थे बल्कि आपके विवाहों की योजना अल्लाह तआला ने रची थी। अल्लाह तआला ने अन्तिम विवाह (मैमुना से विवाह) के बाद आपको आदेश दिया किः "अब कोई विवाह न करो"। (कुरआन 33:52) क्योंकि उस समय तक उनके विवाह के उद्देश्य परे हो चके थे क्योंकि पैगम्बर का मिशन पर्णता के निकट पहुँच चुका था।

- जिन महिलाओं से मुहम्मद (सल्ल0) ने विवाह किये उनकी उम्र लगभग 40 या 50 वर्ष के आसपास रही। जबकि उनकी मुल आयु समाप्त हो चुकी थी और इनमें से कोई भी विशेष रूप से शारीरिक सौन्दर्य अथवा आकर्षण के लिए प्रसिद्ध नहीं थीं। वह महिलाएँ या तो विधवा हो गयी थीं या उनको तलाक दे दी गयी थी। और इनमें से अधिकतर के पास अपने पुर्व पतियों से बच्चें थे। इनमें से सभी ने या तो पैगम्बर (सल्ल0) की शरण माँगी थीं या उन्हें पैगम्बर को उपहारस्वरूप दिया गया था। परन्तु आपने उन्हें वैध पत्नी बनाया। हजरत खदीजा (रजि0) और मारिया (रजि0) के अतिरिक्त किसी पत्नी से आपके सन्तान पैदा नहीं हुई।

- ये तथ्य निर्णायक रूप से प्रमाणित करते हैं कि पैगम्बर (सल्ल0) के विवा सामाजिक अथवा राजनैतिक उद्देश्यों के अन्तर्गत अथवा मानवीय आधार पर उस मिशन को आगे बढाने के लिए हुए थे जो मिशन आपके हृदय से बहत निकट था

• यह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विवाहों की सामान्य पृष्ठभूमि हैं। ये उदाहरण संकेत करते हैं कि ये विवाह शारीरिक आवश्यकताओं अथवा जैविक दबाबों के अन्तर्गत नहीं हुए थे। यह बात समझ में नहीं आ सकती कि उन्होंने व्यक्तिगत इच्छाओं अथवा शरीरिक आवश्यकताओं के कारण अनेक पत्नियाँ रखीं। जिस व्यक्ति को चाहे वह मित्र हो अथवा शत्रु यदि वह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की नैतिकता अथवा आध्यात्मि महानता में इन विवाहों के कारण सन्देह हो तो उसे निम्नलिखित प्रश्नों की सन्तोषजनक व्याख्या प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिएः उन्होंने क्यों 25 वर्ष की आयु में विवाह किया जबकि उससे पहले आप किसी महिला के साथ नहीं रहे? आपने क्यों एक बूढ़ी विधवा को चुना जो उनसे पन्द्रह वर्ष बडी थी। वह क्यों उनके साथ मृत्यु तक जीवन व्यतीत करते रहे जब वह पचास वर्ष से अधिक की थीं? आपने क्यों उन सभी असहाय विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं को स्वीकार किया जिनके अन्दर कोई विशेष आकर्षक योग्यताएँ नहीं थीं? उन्होंने क्यों कठिन और सादा जीवन व्यतीत किया जबकि आप आसान अ आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे? आपने अपने अधिकतर विवाह क्यों अपने जीवन के सबसे व्यस्त पॉच वर्षों के दौरान किये जबकि आपका इस्लामी मिशन और आपका कैरियर दाँव पर था? यदि उनके लिए हरम का जीवन अथवा आप भावनाओं से अभिभूत होते तो जो कुछ आप थे वह कैसे बन सकते थे? जैसा कि कुछ आलोचक तर्क दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से प्रश्न हैं जो उठाये जा सकते हैं। मामला इतना साधारण नहीं है कि इसकी व्याख्या महिलाओं के आकर्षण की शब्दाबली में की जाए। आपका जीवन गम्भीर और सच्चाई के साथ विचार करने का आह्वान करता है।

• यहाँ प्रसिद्ध पश्चिमी बुद्धिजीवी कारिन आर्मस्टॉंग का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा जिन्होंने *"मुहम्मदः प्राफेट फॉर आवर टाइम"* (मुहम्मदः हमारे युग का पैगम्बर लिखा। पैगम्बर (सल्ल0) के विवाहों और इस्लाम में बहुविवाह के सम्बन्ध में वह लिखते हैं। बहुविवाह की कुरआनी संस्था सामाजिक कानून निर्माण का एक अंग था। इसे इसलिए नहीं बनाया गया था कि पुरुष की कामुक इच्छाओं को सन्तुष्ट किया जा सके बल्कि इसे विधवाओं. अनाथों और महिला आश्रितों के साथ अन्याय होने से बचाया जा सके जो विशेष

रूप से अन्याय का शिकार होती हैं। अक्सर अत्याचारी लोग महिलाओं से सबकुछ छीन लेते थे और परिवार के निर्बल सदस्य के पास कुछ नहीं छोडते थे......। बहुविवाह का नियम इसलिए रखा गया ताकि असुरक्षित महिलाओं का विवाह प्रतिष्ठापूर्वक किया जा सके और प्राचीन काल का ढीला गैर जिम्मेदाराना विलासतापूर्ण नियम समाप्त हो। पुरुष मात्र चार पत्नियाँ रख सके और उनके साथ समान व्यवहार करे। उनकी सम्पत्ति को निगल जाना एक शरारतपूर्ण कृत्य था। कुरआन महिलाओं को वैधानिक प्रतिष्ठा देने का प्रयास कर रहा था जिसे पश्चिमी महिलाएँ उन्नीसवीं सदी से पहले नहीं प्राप्त कर सकी थीं। महिलाओं की मक्ति एक ऐसी परियोजना थी जो महम्मद (सल्ल0) के लिए अत्यधिक प्रिय थी।

बहविवाह के कारण

यह स्थिति दयनीय है कि इस्लाम के कुछ आलोचक और शत्रु यह तर्क देते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विविध विवाह लैंगिक सन्तुष्टि के लिए सम्पन्न किये गये थे और पैगम्बर (सल्ल0) के मिशन के क्षेत्र और विवाह से पहले. फिर विवाह के बाद और बाद में मदीना में उनके जीवन स्तर की प्रकृति पर गंभीर विचार किये बिना वह निर्णय करते हैं।

मदीना में पैगम्बर (सल्ल0) ने विभिन्न कारणों और विचारों के अन्तर्गत अधिक पत्नियों से विवाह किया. ये कारण व्यक्तिगत भी थे. कबायली भी और राजनैतिक भी। जब उन्होंने अपने परिवार को बढाना शुरु किया तो आपकी आयु पचपन वर्ष थी और वह पत्नियाँ एक किस्म अथवा दूसरी किस्म की विधवाएँ थीं और दो पत्नियों के अतिरिक्त शेष सभी छत्तीस वर्ष से अधिक उम्र की थीं। क्या कोई यह विश्वास कर सकता है कि आपने महिलाओं से विवाह करना उस समय प्रारम्भ किया जब वह पचपन वर्ष के आसपास थे। अपने और अपने जीवन के मिशन के लिए सर्वाधिक भयानक संघर्ष किया वह सभी दिशाओं से दश्मनों से घिरे हुए थे और अन्दर से आपको कपटाचारियों और यहदियों का

खतरा था। कुरैश लगातार छापे मार रहे थे और मदीना शहर पर आक्रमण कर रहे थे। आपके आस-पास विरोधी कबीले मदीना की सुरक्षा के लिए निरन्तर खतरा बने हुए थे। रातों में शान्तिपूर्वक सोना भी कठिन था। महम्मद (सल्ल0) जैसे पवित्र व्यक्तित्व की बात तो अलग है। कोई और व्यक्ति भी ऐसी परिस्थितियों में वासनाओं और आनन्दमय जीवन में कैसे लिप्त हो सकता था। ये सब बुरी सोच के लोगों के कटाक्ष हैं जो अपने निम्न विचारों और इच्छाओं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु को देखते हैं। चूँकि उनके अन्दर स्वयं बुराई होती है वह प्रत्येक व्यक्ति को उसी की रोशनी में देखते हैं

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने अत्यन्त साधारण. विनम्र और निर्धनता का जीवन व्यतीत किया। आपका घरेलु सामान चटाइयों. जगों. कम्बल और इसी प्रकार की साधारण वस्तुओं पर आधारित था। दिन के समय वह अपने युग के सर्वाधिक व्यस्त व्यक्ति थे। क्योंकि आप अरब प्रायद्वीप के राज्याध्यक्ष और स्वामी की तरह थे। इसके साथ-साथ आप मुख्य न्यायाधीश. सेनापति और प्रशिक्षक भी थे। रात के समय आप सर्वाधिक इबादत करने वाले व्यक्ति थे। कुरआन कहता है: *''आप लगभग एक से दो तिहाई रात (नमाज के लिए) तक खडे रहते थे''।* (कुरआन. 73:20)

आपके जीवन के अन्तिम वर्षों में मदीना में धन सभी दिशाओं से आ रहा था। आपकी अधिकतर बीबियाँ अरब के प्रतिष्ठित और धनवान परिवारों से आयी थीं और अपने अभिभावकों के यहाँ सुख और वैभव से रही थीं। परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) के घर विलासिता की बात तो दूर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी मुश्किल से होती थी। पैगम्बर (सल्ल0) के दिन अक्सर भूख और उपवास में कटते थे और उनकी पत्नियों के लिए भरण-पोषण सन्तोष जनक नहीं होता था। अब यह देखकर कि बडी मात्रा में ध ान मदीना आ रहा है और लोगों के बीच बाँटा जा रहा था परन्तु उनको या तो थोडा दिया जाता था या नहीं दिया जाता था। अतः वह पैगम्बर (सल्ल0) से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक हिस्सा माँगने लगीं। इस सम्बन्ध में कुरआन कहता है: ''ऐ पैगम्बर अपनी पत्नियों से कह दो कि यदि तुम लोग इस संसार की अभिलाषाओं और इसके सौन्दर्य को चाहती हो तो आओ! मैं तम्हें तम्हारे आनन्द के लिए दँ और अच्छे ढंग से तम्हें विदा कर दँ''

इस तरह उन्हें विकल्प दिया गया कि यदि वह मुहम्मद (सल्ल0) के साथ रहना चाहती हैं तो उन्हें विनम्रता और निर्धनता का जीवन स्वीकार करना होगा अथवा जो कुछ वह चाहती हैं उसे लेकर उन्हें विदा होना होगा। उन्होंने स्वेच्छा से और सहृदय आपके साथ निर्धनता में रहना स्वीकार कर लिया। क्या ये आलोचक वास्तव में विश्वास कर सकते हैं कि ऐसा कामुक और आनन्द में लिप्त रहने वाला व्यक्ति इस स्तर के चरित्र का प्रदर्शन कर सकता है? ऐसे लोगों को चाहिए कि वह पहले अपने जीवन में झाँकें और देखें कि वह कहाँ खडे हैं. और फिर पैगम्बर (सल्ल0) की प्रकृति और जीवनशैली को समझने का प्रयास करें और इतिहास के ठोस तथ्यों के आधार पर फैसला करें।

- उहद के युद्ध में अनेक मुस्लिम सैनिक मारे गये और विधवाएँ और अनाथ छोड गये जिनका पालन-पोषण बचे हुए मुसलमानों पर अनिवार्य था। उनकी विधवाओं और अनाथों की रक्षा के लिए विवाह साधनों में एक साधन था। पैगम्बर (सल्ल0) और उनके साथी विवाह के बिना उन्हें अपने घरवालों में सम्मिलित नहीं कर सकते थे। इस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) ने भी असहाय. निराश्रित और विधवा महिलाओं से विवाह किया।
- मुसलमानों ने बहुत से युद्धबंदियों को गिरफ्तार किया था और वह बंदी भी सुरक्षा और शरण के अधिकारी थे। उन्हें न मारा गया और न उन्हें मानवीय अथवा भौतिक अधि िकारों से वंचित किया गया। इसके विपरीत वैध विवाहों के माध्यम से पुर्नवास करने में उनकी सहायता की गयी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) और आपके साथियों को भी सुरक्षा का हाथ असंख्य विधवाओं. महिला युद्धबंदियों तक फैलाना था और इस प्रकार आपने उनके बच्चों को भुखमरी और तबाही से बचाया।

यदि इन युद्धबंदी विधवाओं और महिलाओं को बिना किसी प्रतिबन्ध के मुक्त कर दिया जाता तो पुरा समाज भ्रष्ट आचरणों से नष्ट हो जाता। इस प्रकार समाज को भ्रष्टाचार से बचा लिया गया। पैगम्बर (सल्ल0) और आपके साथियों ने इन महिलाओं को विवाह बन्धन के बिना अपने हरम में नहीं रखा। क्या कोई व्यक्ति विधवाओं और अनाथों के लिए इससे बेहतर समाधान सुझा सकता है? कुरआन ने इस चीज की कल्पना पहले ही कर ली थी और इसीलिए इन विवाहों के उद्देश्य के सम्बन्ध में पहले ही कहा: ''ताकि तमपर कोई आरोप न लगाया जा सके''।

- पैगम्बर (सल्ल0) के विवाहों का एक अन्य कारण मानव समाज के मार्गदर्शन के लिए आप (सल्ल0) के कर्मों और कथनों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना भी था। अल्लाह तआला ने पैगम्बर (सल्ल0) को एक विश्व शिक्षक बनाकर भेजा था। अतः आपके कर्म अल्लाह के मार्गदर्शन में होते थे।

आधी मानवता महिलाओं पर आधारित है और उन्हें भी इस्लाम का सन्देश प्रभावपूर्ण ढंग से और ईमानदारी से पहुँचाना था। पैगम्बर (सल्ल0) अपने सन्देश और शिक्षाओं को अपने व्यवहारिक उदाहरणों और शिक्षाओं से प्रतिदिन पुरुषों को देते थे। यह अत्यन्त आवश्यक था कि सच्ची वफादार और निष्ठावान महिलाओं का एक समूह हो जिसे इस सन्देश को दूसरी महिलाओं तक पहुँचाने के लिए तैयार किया जाए। इस उद्देश्य के लिए एक मात्र तर्कपूर्ण व्यवहारिक और प्रभावपूर्ण तरीका पैगम्बर (सल्ल0) के परिवार को विस्तृत करना था। इस प्रकार वह महिलाएँ पैगम्बर (सल्ल0) से अत्यन्त निकट होंगी। उनके निकट रहेंगी. उनके शब्दों और परामर्शों को सुनेंगी और अपने घरों में उनके कर्मों को देखती रहेंगी। पैगम्बर (सल्ल0) के घर के प्रकाश स्तम्भ से यह नियमित शिक्षा और प्रशिक्षण महिलाओं की व्यक्तिगत गुप्त और नाज़ुक समस्याओं की विस्तृत जानकारी की रक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम था जो किसी अन्य स्रोत से मानवता को प्राप्त नहीं हो सकता था। उन्होंने इस्लाम के ज्ञान के खजानों और पैगम्बर (सल्ल0) के व्यवहार को निष्ठापूर्वक हस्तान्तरित किया क्योंकि उन्होंने आपको कर्म करते हुए देखा था. स्वयं भी पैगम्बर (सल्ल0) के साथ उसका अनुकरण किया था।

- कुछ विवाहों का एक अन्य कारण यह था कि
  (अ) अन्तर-कबीयली और अन्तर-जातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया जाये।
  (ब) विधवाओं के पुनःविवाह को महत्व दिया जाए।
  (स) और तलाकशुदा महिलाओं का पुनःविवाह हो सके।

(अ) जब हम पहले बिन्दु को लेते हैं तो हम देखते हैं कि अन्र्तजातीय विवाहों पर प्रतिबन्ध ा लगाकर समाज के साथ बहुत बडा धोखा किया गया है। मानवता को व्यवहारिक शिक्षा देने के लिए पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) ने कबीलों के बीच जन्म और नस्ल पर आधारित

सभी भेदों को मिटा दिया। सफिया (रजि0) एक यहूदी महिला थीं। आपने उनसे विवाह करके यह स्पष्ट कर दिया कि एक मुसलमान किसी महिला से विवाह कर सकता है जो पहले किसी भी धर्म और किसी भी देश में रही हो शर्त यह है कि वह अल्लाह की इबादत में किसी को साझीदार न बनाये। ऐसा ही विवाह आपने मारिया (रजि0) से भी किया था।

(ब) अभी पिछले दिनों तक विधवा विवाह एक बडी समस्या थी. विशेष रूप से भारत में और इस्लाम से पूर्व संसार में। पैगम्बर (सल्ल0) ने ऐसे विवाहों की अनुमति दी और आपने अनेक विधवा महिलाओं से विवाह करके (सिवाय कँवारी आयशा (रजि0) और तलाकशदा जैनब (रजि0)) स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

(स) इस्लाम से पहले अरब के लोग तलाक दी हुई महिलाओं से विवाह करने से बचते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने इसके विरुद्ध शिक्षा देने के लिए जैनब (रजि0) से विवाह किया जिन्हें स्वतन्त्र किये हुए दास जैद(रजि0) ने तलाक दे दी थी।

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विवाह सम्बन्धों पर सरसरी दृष्टि डालने से इनका राजनैतिक महत्व स्पष्ट हो जायेगा। इन्हीं विवाह सम्बन्धों के कारण विभिन्न कबीले पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के साथ घनिष्ठता से जुड गये। भौगोलिक रूप से यह कबीले पूरे अरब प्रायद्वीप में फैले हुए थे और कबीयली बन्धनों के माध्यम से पैगम्बर (सल्ल0) की स्थिति मजबूत कर रहे थे। इन विवाहों ने कबीयली मतभेदों को कम महत्वाकांक्षाओं को रोकने और घरेलू झगडों को रोकने में मदद की। इसने अरब प्रायद्वीप में सबके लिए शान्ति और न्याय स्थापित करने में भी सहायता की।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के कुछ विवाह नियम बनाने और कुछ कुरीतियों को मिटानों के लिए हुए थे। ऐसा ही विवाह आपका जैनब (रजि0) के साथ हुआ जो संकेत करता है कि तलाक दी हुई महिला विवाह कर सकती हैं। हजरत जैद (रजि0) को मुहम्मद (सल्ल0) ने मुँहबोला बेटा बनाया था। जैसा कि इस्लाम से पहले अरबों में परम्परा थी। परन्तु इस्लाम ने इस परम्परा का उन्मूलन कर दिया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पहले व्यक्ति थे जिन्होंने व्यवहारिक रूप से इसे गलत घोषित करके स्पष्ट कर दिया। अतः आपने अपने मुँहबोले बेटे की तलाक दी हुई पत्नी से विवाह कर लिया। जिससे दर्शाया

जा सके कि मुँहबोला बेटा बनाने से वास्तव में वह वास्तविक बेटा नहीं हो जाता और यह भी दर्शाना था कि तलाक दी हुई महिला के लिए विवाह करना वैध है। संयोगवश जैनब (रजि0) मुहम्मद (सल्ल0) की फुफेरी बहन थीं और जैद (रजि0) का उनसे विवाह से पहले उन्हें पैगम्बर (सल्ल0) को विवाह के लिए प्रस्तुत किया गया था। उस समय उन्होंने इन्कार कर दिया था। परन्तु जब वह तलाकशुदा हो गयीं तो आपने उन्हें स्वीकार कर लिया। इसके दो कानूनी उद्देश्य थेः तलाकशुदा महिला के विवाह को वैध करना और मुँहबोले बच्चों की स्थिति को स्पष्ट करना। कुछ लोगों के मन में जैनब (रजि0) की कहानी पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की नैतिक ईमानदारी के सम्बन्ध में हास्यास्पद और गढी हुई कहानियाँ जुडी हुई है। पैगम्बर (सल्ल0) के आलोचकों और शत्रुओं द्वारा ये आक्रामक. द्वेषपूर्ण और गढी हुई कहानियाँ ऐसी नहीं हैं जिनपर यहाँ विचार किया जाए। (देखिये कुरआन. 33:36-38)

- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के विवाह इन्हीं परिस्थितियों में हुए थे। तथ्यों पर आध ारित टीकाकार के लिए इसमें कोई सन्देह नहीं कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उ नैतिकता के वाहक थे और सभी परिस्थितियों में मनुष्य के लिए वह पूर्ण आदर्श थे। गम्भीर निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए हम इस मामले में गम्भीर वार्त्ता की अपील करते हैं।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के अनेक विवाहों को आप जिस युग में रहे उस युग की आवश्यकताओं और परिस्थितियों की रोशनी में देखना चाहिए।

महिलाओं की स्थिति
शालीनता और हिजाब (पर्दा)

इस्लाम के उदय से पहले अरब समाज में महिलाओं के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जाता था और उन्हें निम्न श्रेणी का मनुष्य समझा जाता था। उन्हें पैतृक सम्पत्ति से विरासत पाने का कम ही अवसर मिलता था अथवा उसे विवाह. सम्पत्ति की व्यवस्था अथवा राजनैतिक मामलों में भाग लेने का कम ही अवसर दिया जाता था। धनवान लोग कितनी ही संख्या में पत्नियाँ अथवा रखैल रख सकते थे। महिलाओं को व्यक्तिगत सम्पत्ति समझा जाता था और उन्हें एक मनुष्य के रूप में पुरुषों की तरह उनकी पहिचान का कोई सम्मान नहीं किया जाता था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कुरआन के आदेशों का पालन करते हुए समाज सुधार प्रारम्भ किया और पुरुषों और स्त्रियों को समान अधिकार प्रदान किया और इनमें से एक को कुछ पहलुओं से थोडा अधिक अधिकार दिया।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एकल परिवार की परिधि खींचकर सामाजि सिद्धान्तों को बदलना प्रारम्भ किया। पवित्र कुरआन ने परिवार व्यवस्था से सम्बन्धित वैध ा और अवैध की विस्तृत सूची प्रदान की। इसमें एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा दी गयी थी जो उस समय तक स्थापित कबायली व्यवस्था के विपरीत एकल परिवार पर आधारित थी। यह पहला अवसर था जब लोगों से स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर आधारित अपने पारस्परिक सम्बन्धों को परिभाषित और निर्धारित करने के लिए कहा गया था। इस प्रकार महिलाओं को परिवारिक ढाँचे की मुख्य धुरी बना दिया गया। इस प्रकार उनके सम्बन्ध ाों के आधार का निर्धारण 1. किस गर्भ से वह पैदा हुए. 2. किससे उनका विवाह हुआ. 3. बचपन में किसने पालन-पोषण किया. के अनुसार था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उन अनेक रीतियों की जडों पर कुठाराघात किया जो महिलाओं की प्रतिष्ठा को घटाते थे। यहाँ तक कि दासी महिलाएँ जिनसे उन्होंने विवाह

किया था उनकी मृत्यु के बाद उन्हें उनके बेटों को सौंपने पर प्रतिबन्ध लगाया और आदेश दिया कि उनके बेटे उन्हें अपनी माँ समझें। पैतृक सम्पत्ति में सभी वर्ग की महिलाओं के अधिकार निर्धारित किये गये। क़ुरआन ने उन रिश्तेदारों को भी नामित किया जिन्हे वैवाहिक सम्बन्धों के लिए प्रतिबन्धित किया गया था. ताकि परिवार को दृढ सीमाओं के अन्दर रखा जा सके। इसने गैर रिश्तेदार पुरुषों और स्त्रियों के बीच मेल-जोल के सिद्धान्त बताये. वह समय निर्धारित किया जिसमें लोग विशेष रूप से निजी घरों में रहना चाहते हैं और वह विधि बतायी कि परिवार वाले घरों में जाने के लिए किस प्रकार अनमति ली जाए।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने निरन्तर अनेक कदम उठाते हुए महिलाओं के प्रतिष्ठा और उनके पद को ऊँचा उठाया। माँ का स्थान इस प्रकार प्रतिष्ठित बनाया गया कि उनके आज्ञापालन को पिता के आज्ञापालन पर वरीयता प्रदान की गयी। पैगम्बर (सल्ल0) के शब्दों में जन्नत (स्वर्ग) माँ के कदमों के नीचे है। जो अरब बेटी के जन्म पर शोक मनाते थे और उन्हें जीवित दफन कर देने में परहेज भी नहीं करते थे. उन्हें बेटी का पालन-पोषण प्यार और स्नेह के साथ उनके विवाह के समय तक करने पर जन्नत की खुशखबरी सुनायी गयी। विधवा विवाह. युद्ध विधवा विवाह और अनाथ लडकियों के विवाह को प्रोत्साहित किया गया। इस सामान्य आरोप कि इस्लाम बहुविवाह को प्रोत्साहन देता है. के विपरीत क़ुरआन ने अनेक पत्नियाँ रखने की रीति को सीमित करते हुए चार पत्नी तक रखने की अनुमति दी. उस समय यह एक विकासशील कदम था जब धनवान परुष विवाह करते जाते थे और अपव्यय करते रहते थे।

विवाह की संस्था को समाज में चौतरफा सहयोग मिला और ऐसी चीजों को नापसन्द किया गया जो वैवाहिक और दम्पत्ति सम्बन्धों में दरार पैदा करती हों। इसके बावजूद इस्लाम ने दम्पत्ति के बीच मतभेदों और उनके सम्बन्धों में तनाव की सम्भावना को स्वीकार किया और वैवाहिक सम्बन्धों के टूटने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया और वैवाहिक सम्बन्धों के सम्मानपूर्ण विघटन का प्रस्ताव किया। इसके पीछे एकता पर आधारित परस्पर जुडे हुए और संगठित सामाजिक बन्धन थे। और परुष और स्त्री के बीच सम्बन्धों में सन्तलन स्थापित करना था।

हिजाब
पर्दा

महिला के सतीत्व और सम्मान की रक्षा के लिए और पवित्र समाज के निर्माण के लिए यह आदेश दिया गया कि महिलाएँ ढीले परिधान पहिनें जिन्हें आज सामान्यतः खिमार. पर्दा. चादर. बुरका. अबाया (अरब देशों में महिलाओं द्वारा धारण किया जाने वाला एक लम्बा और ढीला वस्त्र) का नाम दिया जाता है और इसके साथ संसार के विभिन्न भागों में महिलाएँ सिर पर स्कार्फ बाँधती हैं।

> ''और मोमिन (आस्थावान) महिलाओं से कहो कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तागों की रक्षा करें और अपने सौन्दर्य को प्रकट न करें. सिवाय इसके जो उसमें से प्रकट हो जाये। और अपने दुपटटे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपने सौन्दर्य को प्रकट न करें परन्तु अपने पतियों पर अथवा अपने पिता पर अथवा अपने पति के पिता पर अथवा अपने बेटों अथवा अपने पति के बेटों पर........''। (कुरआन. 24:30)

स्त्रियों और पुरुषों दोनों से कहा गया है कि वह अपने व्यवहार में शालीनता का प्रदर्शन करें. अपनी निगाहें नीची रखें और कामुक चीजों से परहेज करें। कुछ लोग हिजाब की इस्लामी धारणा को महिला विरोधी धारणा के रूप में देखते हैं और भेद-भावपूर्ण मीडिया कुरआन की उन आयतों पर ध्यान देने से परहेज करती है जो परुषों को शालीन व्यवहार अपनाने का आदेश देती हैं। उदाहरण के लिए:

> ''मोमिन आस्थावान पुरुषों से कहो कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तागों की रक्षा करें। यह उनके लिए पवित्र है। निस्सन्देह अल्लाह भिज्ञ है उससे जो वह करते हैं। (कुरआन. 24:30)

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने उन सभी उपायों को प्रोत्साहित किया जो दम्पत्ति के बीच प्यार और भरोसे के बन्धन को मजबुत बनाते हैं और असम्बन्धित स्त्री-परुषों के बीच कामकता को और अश्लील व्यवहार को हतोत्साहित किया।

हिजाब. ढीले परिधान और शालीन वस्त्र के लाभ को जानना कठिन नहीं है।

आज भी जो महिलाएँ अपने शरीर के उभरे हुए अंगों को चुस्त कपडे पहनकर नहीं दिखातीं उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया जाता है। इसके विपरीत जो महिलाएँ फिल्म. नृत्य में काम करती हैं और नग्न होने का साहस रखती हैं और जिन्हें विज्ञापनों में वस्तुओं के रूप में प्रदर्शित किया जाता है वह कामुक भावनाओं का शिकार हो जाती हैं। श्रृंगार के साधन. साबुन. शैम्पू. लिंगरी. वैनिटी बैग. परिधान और अत्यन्त व्यक्तिगत चीजें जैसे शौचालय में प्रयुक्त नैपकिन और गर्भ निरोधक गोलियाँ और साधनों का उत्पादन करने वाला करोडों डॉलर का उद्योग महिलाओं की नग्नता के प्रदर्शन पर भरोसा करता हैं। जब शारीरिक सौन्दर्य प्रदर्शन की बात आती है तो पश्चिम के लोग कम से कम कपडे पहनने वाली महिलाओं और शूट पहने हुए पुरुषों का प्रदर्शन उनके महिला विरोधी भेद-भाव के सम्बन्ध में बहुत कुछ बयान करता है। पश्चिमी देशों में मुस्लिम महिलाओं के दमन पर विलाप और पर्दा और बुरका पर प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में उठाये गये कदम इस सन्दर्भ में सामान्य बात है। यह सामान्य बात है कि सौन्दर्य प्रसाधन बनाने वाले आठ बिलियन डॉलर के उद्योग धन्धे उस समय घाटे में पड जायेंगे जब महिलाएँ अपने सौन्दर्य क सामाजिक नजरों और टेलीविजन के पर्दों से परे अपने पतियों के लिए सुरक्षित कर लें। अतः इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि पश्चिम के लोग महिलाओं के पश्चिमी संस्कृति से फरार होकर इस्लाम के दामन में पनाह लेने पर क्यों चिन्तित महसूस करते हैं। जहाँ उनका नारीत्व मीडिया की चमक और शिकारी आँखों से सुरक्षा प्रदान करता है। यदि टोनी ब्लेयर की पत्नी की बहन लारेन बूथ. मरियम जमीला (पूर्व मार्ग्रेट मारकीज). ब्रिटिः पत्रकार अथवा मलयालम कवयित्री कमला सुरैय्या इस्लाम में शान्ति प्राप्त करती हैं। तो इससे पश्चिम के लोगों को अवसर अवश्य मिलना चाहिए और पश्चिमी नारीवादियों को विचार करना चाहिए कि पुराना हो चुका. रुढिवादी और अतीत का इस्लाम बहुत सी 'मुक्त' महिलाओं के दिलों में अपनी जगह बना रहा है। उन्हें यह पूछने की आवश्यकता है कि परिधान और सौन्दर्य प्रसाधन के उद्योगों द्वारा विशाल खर्चों पर आयोजित फैशन परेड क्या नग्नता का प्रोत्साहन नहीं कर रहे है? उन्हें यह भी पूछने की आवश्यकता है कि क्य कामुकता की इस दौड को स्वतन्त्र छोडकर उन्होंने परिवार व्यवस्था को तोडने ॐ व्यक्तिगत शान्ति को छीनने का सौदा नहीं किया है?

हिजाब

बद्धिमानी और सविज्ञता का शिखर

यमन की महिला कार्यकर्त्ता और 2011 की नोबल पुरस्कार विजेता तवक्‍ु कारमेन से अधिक शायद किसी महिला ने उस सम्मान को मूर्त रूप नहीं दिया जो महिलाओं को इस्लाम में प्राप्त हैं। उन्होंने नार्वे की राजधानी ओस्लो सिटी हॉल में नोबल पुरस्कार समारोह में अबाया और स्कार्फ पहनकर मंच प आकर अन्र्तराष्ट्रीय समाचार पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया को चकित दिया। उन्होंने उनसे पूछाः ''क्या वह महसूस नहीं करतीं कि उनका परिधा उनकी शिक्षा और बौद्धिक स्तर को देखते हुए उसके विपरीत है। क हिजाब को महिलाओं के दमन और पिछड़ेपन के प्रतीक के रूप में देखा जाता है?'' तवक्कुल कारमेन ने उत्तर दियाः ''प्रारम्भ में मनुष्य लगभग नग्न रह था, समय के साथ अपने चिन्तन के विकास के साथ उसने कपड़े प प्रारम्भ किया। आज मैं जो कुछ हूँ और जो कुछ मैंने पहना है वह बुद्धि औ सुविज्ञता का शिखर है जिस पर मनुष्य युगों की यात्रा के बाद पहुँचा है, य पिछड़ापन नहीं है। नग्नता पिछड़ेपन का प्रतीक है और इस बात का प्रतीक है कि मनष्य का चिन्तन आदिकाल की ओर पीछे चला गया है'

26

मदीना

एक आदर्श शहर

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने चूँकि मदीना में पहली बार एक राज्य स्थापित किया था अतः आपको विरासत में कोई शासन व्यवस्था नहीं मिली थी। मौलिक रूप से आप एक ऐसे समाज का सुधार कर रहे थे जो अनगिनत कबीलों में बँटा हुआ था और वह लोग अपना जीवन कबायली नियमों और परम्पराओं के अनुसार व्यतीत करते थे। वहाँ न्याय पालिका. सेना. राजकोष और सामान्य प्रशासन जैसी शासकीय संस्थाएँ नहीं थीं. जिसका कारण यह था कि ऐसी कोई व्यवस्था पहले से मौजूद नहीं थी। आपको नींव से ही प्रारम्भ करना था। एक ऐसे समाज में जिसने संगठन और प्रशासन का अनुभव नहीं किया था उसमें पैगम्बर (सल्ल0) ने सामाजिक संगठन की प्रक्रिया का पथ प्रशस्त किया। आपने जीवन के किसी के क्षेत्र विकास को अछूता नहीं छोडा। वहाँ पर नियम और सिद्धान्त बनाना और पुरानी रीतियों को छोडना और मदीना की आबादी से नये नियमों का पालन कराना कोई मामूली कार्य नहीं था। आपने जिस मदीना राज्य की रूपरेखा तैयार की थी वह लगभग दो हजार वर्षों से पूरे अरब प्रायद्वीप में अन्धकार में डूबे हुए लोगों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश स्तम्भ थी। आपने लगभग 1500 वर्ष पहले जिन सुधारों का प्रारम्भ किया था उसपर सरसरी दृष्टि डालने से भी पता चलेगा कि वह अपने युग से काफी आगे थे। आपने एक ऐसी व्यवस्था

की नींव रखी जो उस समय के मध्य-पर्व के पर्ण विकसित इस्लामी संस्कति के लिए नींव का पत्थर बन गयी।

मदीना में जो पहली संस्था आपने स्थापित की वह मस्जिद-ए नबवी अथवा पैगम्बर (सल्ल0) की मस्जिद कही जाती है। यह शहर की प्रत्येक गतिविधि की धुरी थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपना घर मस्जिद से मिला हुआ बनाया था। यह मस्जिद सामूहिक नमाजों के लिए एक स्थान के अतिरिक्त एक सामुदायिक केन्द्र के रूप में भी उपयोग की जाती थी। यह प्रशासनिक राजधानी. एक शिक्षा केन्द्र. आवश्यकता पडने पर उपचार एवं नर्सिंग केन्द्र. एक पुनर्वास केन्द्र. एक कल्याण केन्द्र और कुछ वैध मनोरंजक गतिविधियों का स्थान भी थी। मदीना के चारों ओर बस रहे नये शहर का मुख्य केन्द्र होने के कारण सभी लोग वहाँ सुगमता से पहुँच सकते थे। ऐसा प्रथम सार्वजनिक सुविधा केन्द्र होने के कारण जहाँ लोग अनेक भाषाएँ बोलते थे और भिन्न पसन्द और रंगों के लोग मिल सकते थे। अतः यह मस्जिद सामाजिक एकता का विकास कर रही थी। दूर-दराज से आने वाले प्रतिनिधि मण्डल मस्जिद के निकट ठहरते थे। जिन लोगों को सहायत आवश्यकता होती और जो लोग सहायता करने का प्रस्ताव करते वह मस्जिद के अतिरिक्त कहीं और नहीं जाते।

डतिहास में किसी राज्य का पहला लिखित संविधान

अपने मदीना प्रवास के पश्चात. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एक नगर-राज्य की बुनियाद रखी और एक राज्य का संविधान जारी किया। यह डतिहास के किसी पहले लिखित संविध ाान का प्रतिनिधित्व करता है। यह इस्लामी राज्य के सभी नागरिकों के लिए अधिकारों और कर्त्तव्यों के विस्तत विवरण पर आधारित है। इसके नागरिकों में मसलमान. यहदी. ईसाई और मर्ति पजा करने वाले अरब भी सम्मिलित थे।

इतिहास का पहला विश्वविद्यालय

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) विशेष रूप से शिक्षा के महत्व के सम्बन्ध में सचेत थे। मदीना पहुँचने के बाद आपने जो पहला काम तुरन्त किया वह मस्जिद का निर्माण था। मस्जिद का एक भाग शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के लिए आरक्षित था। इस स्थान को अल-सफ्फा कहते थे।

अल-सुफ्फा दिन में विद्यालय हुआ करता था और रात में उन छात्रों के लिए छात्रावास. जिनके पास ठहरने के लिए कोई और स्थान नहीं था। इस प्रकार यह इस्लाम का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के एक प्रसिद्ध साथी मआज बिन जबल (रजि0) जब सुफ्फा में रहने के लिए आये तो उन्हें कुलपति का दायित्व सौंपा गया था। इस्लाम के प्रसार के लिए अपनी असीम उदारता के कारण वह दिवालिया हो गये थे और कर्ज अदा करने के लिए उनको अपना घर भी बेचना पडा था।

अल-सुफ्फा में दो तरह के छात्र थे। उनमें से कुछ लोग डे स्कॉलर (केवल दिन में वहाँ पढने वाले) थे और कुछ लोग जो वहाँ ठहरने के लिए मजबूर थे इसलिए कि उनके पास कोई अन्य शरण स्थल नहीं था। पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा राजकोष से अनुदान भी उपलब्ध कराया जाता था। परन्तु इसके छात्र परजीवी नहीं थे। वह अध्ययन के अतिरिक्त काम भी करते थे. वहाँ लोग *'कमाओ और सीखो'* के सिद्धान्त के अनुसार रहते थे।

अल-सुफ्फा की स्थापना के बाद अन्य विद्यालय भी स्थापित किये गये। बलाजरी ने लिखा है कि अल-सुफ्फा के अतिरिक्त मदीना शहर में विभिन्न स्थानों पर मस्जिदों से सम्बद्ध नौ (9) विद्यालय थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मदीना के बाहर उन क्षेत्रों के लिए जहाँ लोग तेजी से इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहे थे और इस नये धर्म में निर्देश प्राप्त करने की माँग करते थे। वहाँ अपने महत्वपूर्ण साथियों को शिक्षक के रूप में भेजते थे। जब अम्र बिन हज्म को यमन का गर्वनर नियुक्त किया गया। तो उनके सरकारी कर्त्तव्यों में प्रशासन अतिरिक्त शिक्षा कार्य भी सम्मिलित था।

सचिवालय

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवनी लेखकों और इतिहासकारों ने आपके पचास ऐसे साथियों के नाम दर्ज किये हैं जिन्होंने विभिन्न समय में आपके दस्तावेजों की प्रतियाँ तैयार करने वाले के रूप में कार्य किया। उनमें से कुछ लोगों को कुरआन की आयतों की प्रतियाँ तैयार करने का दायित्व सौंपा गया था। जबकि अन्य लोग (रजि0) ओं और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के गर्वनरों को सरकारी पत्र लिखते थे। उनमें से कछ लोग जकात और (रजि0) स्व के अन्य स्रोतों का हिसाब किताब रखते थे।

सरकारी महर और पत्र

लगभग 400 दस्तावेज. शोधलेख. चार्टर. सरकारी अधिकारियों के लिए निर्देश अं जनगणना के रिकार्ड सुरक्षित हैं और पैगम्बर (सल्ल0) ने राजाओं. विदेशी शासकों और गर्वनरों को इस्लाम की तरफ आमन्त्रित करने के लिए पत्र भी लिखे जो अब भी सरक्षित हैं।

पत्र लिखवाते समय पैगम्बर (सल्ल0) अपने सचिव से कहते कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करे प्रेषक और सम्बोधित का नाम लिखवाते फिर पत्र की सामग्री लिखी जाती फिर अन्त में सरकारी मुहर लगायी जाती थी।

अपनी पैगम्बरी की विश्वसनीयता को प्रमाणित करने के लिए एक चाँदी की मुहर बनायी गयी थी जिसपर यह शब्द खदे हए थे. *''महम्मद. रसलल्लाह (अल्लाह के पैगम्बर)''*।

सचिवगण और विदेशी भाषाओं की शिक्षा

अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि0) मुहम्मद (सल्ल0) के विशेष सचिव थे। अत्यन्त बुद्धिमान और यवा अनस (रजि0) आपके व्यक्तिगत सचिव थे और जैद बिन साबित (रजि0)

आपके मुख्य सचिव थे। जैद (रजि0) असाधारण रूप से बुद्धिमान थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें इब्रानी (हिब्रू) सीखने का परामर्श दिया और उन्होंने रिकार्ड समय में इब्रानी भाषा सीख लिया। पैगम्बर (सल्ल0) को उनकी दक्षता की आवश्यकता थी ताकि आप पत्र लिखवा सकें और उन पत्रों का इब्रानी भाषा में अनुवाद हो सके। आपने किसी व्यक्ति पर इब्रानी भाषा के लिए बहुत कम विश्वास किया। जैद (रजि0) ने इब्रानी भाषा सीखी और उसमें अपूर्व दक्षता प्राप्त कर ली। इस प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) के पास इब्रानी भाषा में सचिवालय की गतिविधियों के लिए एक विश्वसनीय सहायक मिल गया था। पैगम्बर (सल्ल0) ने फिर जैद (रजि0) से सीरियाई भाषा सीखने के लिए कहा और जैद (रजि0) ने उसको सीखने में भी कमी नहीं छोडी। आपने सीरियाई भाषा में भी विशेष योग्यता विकसित कर ली।

जैद (रजि0) की असाधारण स्मरण शक्ति और जुबानी कुरआनी की आयतों को उद्धत करने की योग्यता भी उनकी नियुक्ति का कारण थी। मौलिक रूप से कुरआन को तरन्त याद दिलाने वाले और फिर दिव्य संदेश के लिखने वाले के रूप में नियुक्त हुए।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने स्वयं अपने जीवनकाल में कुरआन एकत्र करने के लिए एक समिति बनायी थी जिसके सदस्य अबू बक्र (रजि0), उमर (रजि0), उस्मान (रजि0), अली (रजि0) थे और आपने जैद (रजि0) को इस समिति का अध्यक्ष नियक्त किया था।

जनगणना

यह रुचिकर तथ्य है कि मदीना में आने के तुरन्त बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने शहर की जनगणना करने का आदेश दिया। इस जनगणना में पॉच सौ मसलमानों सहित कल दस हजार लोगों की गिनती की गयी थी।

इस्लाम के उदय से पहले मदीना के यहूदी जनगणना अथवा आबादी के अध्ययन और उसकी गणना को पाप और अल्लाह की इच्छा में हस्तक्षेप समझते थे।

नगर योजना

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने मदीना में नगर पालिका की एक व्यवस्था प्रारम्भ करार्य जिसको अरबी में 'बलदिया' कहा जाता था। अरबी भाषा में शहर को बलद कहते हैं और बलदिया का अर्थ शहर की व्यवस्था है।

चार लेन की सडकें

आपने जो सबसे पहला कदम उठाया वह यह था कि आपने लोगों को आदेश दिया कि अपने घरों के पीछे की गली में प्रयोग किये हुए पानी और सीवेज की निकासी के लिए गटर डालें। पैगम्बर (सल्ल0) की मस्जिद के चारों ओर जो नया शहर विकसित हो रहा था उसमें पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने गलियों और घरों को मिलाने वाले रास्ते बनाने का आदेश दिया और लोगों से कहा कि उन गलियों को स्वच्छ रखें। महान इस्लामी शोधकर्त्ता मुहम्मद हमीदुल्लाह लिखते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने मदीना में गलियों औ सडकों की योजना इस प्रकार बनायी कि दोनों ओर से सामान से लदे हुए दो ऊँट गुजर सकें (वर्तमान चार लेन वाली सडक)। और आपने सडक के किनारे पेड लगाने का भी परामर्श दिया ताकि उनके माध्यम से पथिकों को सविधाएँ मिल सकें।

घर का नक्शा

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की मस्जिद (मस्जिद-ए नबवी) के भविष्य में बढने वाले महत्व को देखते हुए पैगम्बर (सल्ल0) ने कुछ घरों को कुछ परिवारों के लिए और विशेष उद्देश्य के लिए आवंटित करने में रुचि ली। आपने पारिवारिक घरों के चारों ओर एक दीवार बनाने का आदेश दिया ताकि निजीत्व को बचाया जा सके और उपयक्त रूप से हवादार हो।

इस्लाम की पसन्दीदा एकल परिवार व्यवस्था जिसमें पति. पत्नी और बच्चे एक साथ रहते हैं. की वरीयता को ध्यान में रखते हुए. पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने विवाहित जोडों को अलग कमरे उपलब्ध कराने का प्रोत्साहन दिया ताकि एकल परिवार व्यवस्था विकसित हो। पैगम्बर (सल्ल0) ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को हतोत्साहित किया ताकि एक परिवार. एक दम्पत्ति के साथ रहे और उनमें से प्रत्येक के पास अपना आवासीय घर हो और वह अपने घरों के निजीत्व में प्रेम और स्नेह के बन्धनों को विकसित कर सकें और दूसरों की शिकारी निगाहें उनके लिए रुकावट न बनें। पैगम्बर (सल्ल0) की एक हदीस अलग घर और सवारी के लिए एक अलग जानवर. प्रत्येक घर के लिए वरीयता दी है और आप (सल्ल0) ने इन दोनों को एक परिवार का आनन्द का साधन का नाम दिया है।

जल आपर्ति

उस समय सार्वजनिक जल आपूर्ति की कोई धारणा नहीं थी। जब पैगम्बर (सल्ल0) ने मदीना प्रवास किया तो वहाँ मीठे पानी का एक ही कुआँ था. जिसे बिअर-ए रोमा कहा जाता था अर्थात रोम का कुआँ। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा कि जो व्यक्ति कुआँ खरीदे और उसे मानवता के लिए वक्फ कर दे तो उसे जन्नत में इसका इससे अच्छा बदला मिलेगा. इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह चाहे)। उनके साथी उस्मान (रजि0) ने कआँ को खरीद लिया और इसे जनता के लिए वक्फ कर दिया।

जब आपके एक साथी सअद बिन इबादा (रजि0) की माँ की मृत्यु हो गयी। वह उनकी ओर से न्यास स्थापित करना चाहते थे। जब उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) से पूँछा कि न्यास करने का सबसे अच्छा रूप क्या है। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें आदेश दिया कि एक कुआँ खुदवाने की व्यवस्था करे और इसे सार्वजनिक उपयोग के लिए दान कर दें। सअद (रजि0) ने अपनी माँ के नाम से एक कआँ खदवाया और पैगम्बर (सल्ल0) ने इसकी प्रशंसा की।

जल स्रोतों का संरक्षण

उस युग में पारिस्थितिकी और वातावरण की धारणाएँ प्रचलन में नहीं थीं। जो बात लोग समझते थे वह यह थी कि हरियाली और छायादार वृक्ष मानव अस्तित्व के लिए और मवेशी के पोषण के लिए महत्वपूर्ण हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने दो तरह के अभयारण्य क्षेत्र स्थापित किये थे जहाँ पेडों को काटा नहीं जाता था और वन्य जीवों को हानि नहीं पहुँचायी जाती थी। उनके नाम *हरम* और *हिमा* थे। ये क्षेत्र नगरों और जल स्रोतों के चारों ओर बनाये गये थे। हरम क्षेत्र कस्बों और शहरों में स्थित कुँओं के आस-पास स्थापित किये गये थे। कुँओं के चारों ओर उस क्षेत्र को खाली छोड दिया गया था ताकि उनके चलने और उनके रख-रखाव के लिए स्थान उपलब्ध हो और उनके पानी को प्रदुषण से बचाया जा सके और मवेशियों के लिए आराम की जगह हो। इस बात का ध्यान रखा जाता था कि प्रयोग किया हुआ पानी पुनः बहकर कुँए में न जाये

मदीना के चारों ओर हरित क्षेत्र

वातावरण के संरक्षण के लिए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इसके अतिरिक्त एक और कदम उठाया। वह यह था कि मदीना शहर के किनारे-किनारे हरित क्षेत्र बनाया जिसे *हिमा* कहा जाता था। यह ऐसे क्षेत्र थे जहाँ वृक्षारोपण किया जाता था और वहाँ जानवरों का शिकार करने की अनुमति नहीं थी। ऐसे ही एक क्षेत्र का नाम हिमा अल-नकी था जिसको अकीक घाटी में स्थापित करने का आदेश दिया गया था जो मदीना से बीस मील दूर था। इसे घोडों के लिए चरागाह के रूप में निर्धारित किया गया था। मुहम्मद (सल्ल0) ने बडी संख्या में वृक्षारोपण करने की योजना बनायी। शीघ्र ही वह क्षेत्र इतना हरा हो गया कि इससे गुजरते हुए घुडसवार को देख पाना कठिन था। आपने उसकी सीमा निर्धारित करने के लिए एक व्यक्ति से कहा कि पेड के ऊपर चढकर आवाज दे। ऐसे स्थान तक

जहाँ उसकी आवाज न पहुँच सके उसे उसकी बाहरी सीमा घोषित किया गया। उस क्षेत्र में किसी वृक्ष को काटने की अनुमति नहीं दी जाती थी।

एक बार पैगम्बर (सल्ल0) अकीक घाटी से वापस आये और अपनी प्यारी पत्नी आयशा (रजि0) से उसके सौन्दर्य और रमणीयता का वर्णन किया। अकीक के वर्णन से प्रभावित होकर आयशा (रजि0) ने परामर्श दिया कि पैगम्बर (सल्ल0) अपने आवास को अकीक घाटी में स्थानान्तरित कर लें। मदीना के अनेक धनवान लोगों ने बाद में उस स्थानपर गर्मी के मौसम के लिए अपना घर बनाया। शीघ्र ही वह स्थान मदीना के नागरिकों के लिए सैरगाह बन गया और वहाँ मनोरंजन के उद्देश्य से अनेक परिवार जाने लगे।

प्राचीन विरासत का संरक्षण

पैगम्बर (सल्ल0) की मदीना की योजना में वास्तु कलाओं और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण पर ध्यान दिया गया था। आपने लोगों को परामर्श दिया था कि अपने घर का निर्माण करते समय पुराने किलों और दीवारों को न गिरायें। उनसे कहा गया था कि अपने नये घर बनाने में जितना अधिक संभव हो सके उन्हें सम्मिलित कर लें। इसी प्रकार आपने लोगों से कहा कि पेड न काटे जाएँ। इतिहासकार बैहकी ने इस सम्बन्ध में पैगम्‍ (सल्ल0) के आदर्शों का उल्लेख किया है जिसमें पैगम्बर (सल्ल0) ने इन प्राचीन धरोहरों को और वृक्षों को मदीना का सौन्दर्य बढाने वाले तत्व के रूप में वर्णित किया है। आप लोगों से अपने घरों के चारों ओर वृक्षारोपण करने के लिए कहते। एक हदीस से हमें पता चलता है कि आप मुसलमानों से यह आशा करते कि यदि उनके हाथ में एक खजूर का पौधा हो और वह देखें कि कयामत का दिन निकट आ गया है तो भी वह उसे रोप दें। इससे पता चलता है कि पैगम्बर (सल्ल0) वृक्षारोपण को कितना महत्व देते थें और उस स्थिति में भी वृक्षारोपण की आशा रखते थे जबकि पेड बन जाने के बाद उसके फल से लाभ उठाने की आशा उसको रोपने वाले को न हो।

अतिथिगह

जैसे ही मदीना का उदय एक सत्ता केन्द्र के रूप में हुआ इसने राजधानी. प्रशास कानूनसाजी का केन्द्र. व्यापार और शिक्षा के केन्द्र के रूप में अत्यन्त महत्व प्राप्त कर लिया। यह शहर उस समय के उत्तर में सीरिया और फिलीस्तीन को मिलाने वाले और दक्षिण में यमन और मक्का को मिलाने वाले मार्ग पर स्थित था। यात्री वहाँ भोजन. जानवरों के लिए चारा और व्यापारिक सामान के आदान-प्रदान के लिए रुकते थे। पैगम्बर (सल्ल0) ने उनके लिए सराय स्थापित करने का आदेश दिया जहाँ आगे की यात्रा के लिए वह अनेक सेवाएँ प्राप्त करके तैयार हो सकते थे। दूर-दराज से प्रतिनिधि मण्डल अपने सम्बन्ध ा नये राज्य से विकसित करने के लिए पैगम्बर (सल्ल0) के पास आने लगे। प्रारम्भ में उनको मस्जिद-ए नबवी से मिले हुए निजी घरों में ठहराया जाता था। जैसे जैसे इस्लाम नये क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करता गया. वैसे-वैसे इस्लाम धर्म स्वीकार करके मदीना आने वालों की धारा निरन्तर बहने लगी। इतिहासकार नुरुद्दीन सामहोदी लिखते हैं कि अब्दुर रहमान बिन औफ. मक्का के एक प्रवासी और एक धनवान व्यापारी ने अपने बडे घरों में से एक घर को मेहमानों को ठहराने और उनके आतिथ्य-सत्कार के लिए अलग कर दिया था। रिवायत के अनुसार मदीना में एक समय में ऐसे दो सौ प्रतिनिधिमण्डल ठहर सकते थे। उनको ठहराने के लिए मदीना में अनेक घर किराये पर लिये गये थे।

अस्पतालयों की स्थापना

इस्लाम के उदय से पुर्व अरब के लोग अपना उपचार स्वयं करते थे। वहाँ सार्वजनिक उपचार व्यवस्था नहीं थी। सार्वजनिक सेवा की प्रेरणा के परिणामस्वरूप अस्पतालों की स्थापना हई।

पैगम्बर (सल्ल0) की एक महिला सहयोगी जिनका नाम रफीदा (रजि0) था. उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) की मस्जिद से सटा हुआ एक तम्बु लगा रखा था ताकि वह घायल सैनिकों की देख-रेख कर सकें। जब सअद बिन मआज (रजि0) खाई के युद्ध में घायल हो गये तो मुहम्मद (सल्ल0) ने आदेश दिया कि रफीदा (रजि0) के तम्बु में उनकी देख-रेख की जाए ताकि मैं भी अक्सर उनको देख सकूँ। इस्लाम ने स्वास्थ्य शिविरों को चलाने और स्थायी अस्पतालों की स्थापना में ऐतिहासिक भुमिका निभायी है।

दो महिला साथी. उम्मे सलैम और नसैबा पानी ढोतीं और घायल सैनिकों को प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करातीं। अतः वह दोनों इस्लामी इतिहास की पहली नर्सें थीं।

विशेषज्ञों द्वारा उपचार

हमारे पास पैगम्बर के युग के चिकित्सकों एवं सर्जनों की स्थिति के सम्बन्ध में कु जानकारी मौजुद है। आपके एक साथी बीमार पडे. पैगम्बर (सल्ल0) उनके स्वास्थ्य का हाल-चाल जानने के लिये गये। उन्होंने पुछा कि इस आबादी में क्या कोई चिकित्सक उपलब्ध है। दो नामों का उल्लेख किया गया। पैगम्बर (सल्ल0) ने परामर्श दिया कि दोनों में से जो बेहतर विशेषज्ञ हो उसे बुलवाया जाये।

यह घटना इस वास्तविकता को रेखांकित करती है कि पैगम्बर (सल्ल0) ज्ञान के सम्बन्ध में सचेत थे और विशेषज्ञों द्वारा उपचार कराने के समर्थक थे।

इस विषय पर इस प्रकार की हदीसों से पता चलता है कि पैगम्बर (सल्ल0) के दौर में दवा का महत्व पुरी तरह स्वीकार किया जाता था। अनेक ऐसी दवाओं का परामर्श पैगम्बर (सल्ल0) से सम्बद्ध किया गया है जो उन लोगों को साधारण दवाएँ बताया करते थे जो उनसे किसी बीमारी की शिकायत करते थे। परा आयर्विज्ञान पैगम्बर (सल्ल0) के सिद्धान्तों और आपके व्यवहार से ही अस्तित्व में आया है।

मदीना का बाजार

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने मदीना में एक व्यवस्थित बाजार विकसित किया था। जिसे आम-तौर से 'अस्वाक' के नाम से जाना जाता था। यह बाजार मस्जिद-ए नवबी से उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित था जो इस मस्जिद से बहुत दूर नहीं था। यह बाजार लगभग 500 मीटर लम्बा और 100 मीटर से अधिक चौडा था। यह वास्तव में उस अवसर पर जितने बडे बाजार की आवश्यकता थी. उससे बडा था। यह पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) दूरदर्शिता का एक और प्रदर्शन था. क्योंकि मदीना प्रत्येक पहलू से तेजी से फैल रहा था। और आस-पास के कबीले और समुदाय अधिक से अधिक अपने हितों को उस समुदाय के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रयास कर रह थे जिसे उस समय एक उभरती हुई शक्ति समझा जाता था।

पाप. अवैध और धोखा देकर बेचना प्रतिबन्धित है

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को सम्पूर्ण भू-भाग पर फैली हुई मानवता के मार्ग दर्शन और सुधार का दायित्व सौंपा गया था। इसमें जीवन के दोनों पहलुओं आध्यात्मिक तथा भौतिक का सुधार सम्मिलित था। और उन्हें इस दायित्व को उस आसमानी मार्गदर्शन के अनुसार पूरा करना था जो कुरआन के रूप में उनको प्रदान किया गया था। कुरआन और मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षाएँ समय और समाज दोनों के अवरोधों को तोडकर मानव जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित थीं। जो क्षेत्र मानवता की जानकारी में हैं और वह भी जो अभी तक मानवता की जानकारी में नहीं है। उन्होंने एक सार्वभौमिक विचारधारा प्रस्तुत की और उसी के अनुसार सिद्धान्तों और नियमों को बनाया। यह व्यवस्था सम्पूर्ण मानवता की सामूहिक धरोहर है और प्रत्येक वह व्यक्ति जो इच्छुक हो. उस तक पहुँच सकता है। निम्नलिखित

कुछ सफल नियम व मूल्य हैं जिन्हें मानवता के लिए बनाया गया है जो 21वीं शताब्दी के आज के प्रौढ युग को प्रकाशित करते हैं

- वजन और पैमानों के मानक बनाये।
- मूल्यों को नियमित किया गया।
- एकाधिकारपूर्ण व्यापारिक रीतियों को रोका गया।
- सामान की जमाखोरी को अवैध घोषित किया गया। भविष्य व्यापार निषेध किया गया।
- सूदखोरी के व्यवसाय को प्रतिबन्धित किया गया और इसे अवैध व पाप कर्म घोषित किया गया।
- शराब का व्यापार और उपभोग प्रतिबन्धित कर दिया गया।
- जुएँ के व्यापार को अवैध घोषित किया गया और उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
- देह व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और इसे अवैध घोषित कर दिया गया।

पैगम्बर (सल्ल0) व्यक्तिगत रूप से आकस्मिक निरीक्षण करते. एक बार आपने पाया कि एक व्यापारी ने भीगे हुए अनाज पर सूखा अनाज रखा था। पैगम्बर (सल्ल0) ने मिलावट की जाँच के लिए अनाज के ढेर के अन्दर अपना हाथ डाला और पाया कि उसने ऐसा खरीदारों को धोखा देने के लिए किया है। आप (सल्ल0) ने व्यापारी से पूछाः 'तुमने ऐसा क्यों किया' व्यापारी ने कहा कि यह वर्षा के कारण हुआ है तो पैगम्‍ (सल्ल0) ने कहाः "वह व्यक्ति हममे से नहीं जो दूसरों को धोखा देता है"।

पैगम्बर (सल्ल0) सफाई-सुथराई में अत्यन्त रूचि रखते थे। आप अपने साथियों को अपने सेहन को तथा बाजार की जगहों को साफ रखने के लिए प्रेरित करते थे। आपने सडक के किनारे बैठकर गपशप करने से मना किया

पैगम्बर (सल्ल0) ने कर एकत्र करने और जाँच के लिए पुरुष और महिल निरीक्षकों को नियक्त किया। कानन तोडने वालों के लिए कठोर दण्डों को लाग किया गया।

परुष निरीक्षक

पैगम्बर (सल्ल0) ने जो तहसीलदार और निरीक्षक नियुक्त किए. उसमें स्त्री-पुरुष दोनों होते थे। प्रसिद्ध पुरुष निरीक्षकों में सईद बिन अल-आस (रजि0). अब्दल्लाह बिन सईद (रजि0). और उमर (रजि0) थे।

महिला निरीक्षक

प्रसिद्ध महिला निरीक्षकों में समरा बिन्त-ए महरबा (रजि0). और शिफा बिन्त-ए अब्दुल्लाह (रजि0) थीं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम की पहली विद्वान महिला शिफा बिन्त-ए अब्दुल्लाह (रजि0) को मदीना के बाजार का कस्टम अधिकारी और निरीक्षक नियुक्त किया। यह नियुक्ति संभावित रूप से मदीना के बाजार में महिला व्यापारियों द्वारा लाये गये सामानों की देख-रेख के लिए की गई थी।

परुष व्यापारी

इस्लामी राज्य के पहले खलीफा अबू बक्र (रजि0) का कपडे का व्यवसाय था. मुसलमानों के सेनापति और फारस और रोमन साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने वाले उमर (रजि0) अनाज का व्यापार किया करते थे. उस्मान (रजि0) और अब्दल रहमान बिन औफ (रजि0) बडे कपडा व्यापारी थे।

पैगम्बर (सल्ल0) के अन्य साथी विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करते थे। जिनमें बनाई. बढईगिरी. खेती. बागवानी और सिलाई के व्यवसाय सम्मलित थे।

महिला व्यापारी

महिला व्यापारियों में अस्मा बिन मरहबा (रजि0). खौला बिन्त सहैब और मलिका उम्मे सार्इब प्रसिद्ध हैं।

व्यापार

करआन व्यापार करने के लिए प्रेरित करता हैः

> इसमें कोई पाप नहीं कि तुम अपने स्वामी अल्लाह से दौलत के लिए दुआ करो. "फिर जब नमाज पूरी हो जाये तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह की कपा तलाश करो" (करआन. 62:10)
>
> *"अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध) ठहराया है और व्याज को हराम (अवैध) किया है"*. (करआन. 2:275)

व्यापारी

जिस ईमानदारी. पारदर्शिता. खरेपन (निसंकोच बोलना) के साथ पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने मामले तय किये वह व्यापारियों के लिए एक शाश्वत अनुकरणीय उदारण बन गया।

मुहम्मद (सल्ल0) की निम्नलिखित टिप्पणीयाँ सभी ईमानदार और मेहनत व्यापारियों के लिए स्वर्णिम नियम रहेंगी।

> *"वैध जीविका प्राप्त करने का प्रयास करना अन्य अनिवार्य कर्त्तव्यों में से एक अनिवार्य कर्त्तव्य है"।*
>
> *"सच्चा और ईमानदार व्यापारी पैगम्बरों नेक लोगों और शहीदों के साथ रहेगा"।*
>
> *"अल्लाह उस व्यक्ति के साथ दया करता है जो जब बेचते हैं. जब खरीदते हैं और जब वह कोई दावा करते हैं तो दया के साथ करते हैं"।*

"कोई देश युद्ध में बल प्रदर्शन की तलना में विकासशील व्यापार से अधिक लाभ प्राप्त करेगा"।

"बेईमान व्यापारी निश्चित रूप से अवश्य असफल होंगे और ईमानदार व्यापारी सफल होंगे"।

व्यापारिक समझौते

मदीना में इस्लामी राज्य की स्थापना से पहले व्यापारिक कारवाँ की सुरक्षा सबसे बडी समस्या थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने व्यापारिक कारवाँ के लिए सुरक्षा की एक व्यवस्था स्थापित की। व्यापार को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए आपने गवाहों की उपयक्त व्यवस्था के साथ लिखित समझौतों को लागू किया।

कुरआन विशेष रूप से लोगों को परामर्श देता है कि वह सभी व्यापारिक लेन-देन को लिख लिया करें. विशेष रूप से उस समय जब सामान की आपर्ति बाद में होनी हो। करआन इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में करता है।

"ऐ ईमान वालो! यदि तुम किसी निर्धारित अवधि के लिए उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो। और अपने मर्दों में से दो व्यक्तियों को सभी दस्तावेजों का गवाह बना लो"। (कुरआन. 2:282)

इस्लाम धर्म में विवाह समझौतों से लेकर सामाजिक तथा व्यापारिक समझौतों तक और वह समझौते जिन्हें विवादों के हल अथवा युद्ध स्थितियों के समाधान के लिए किया गया हो। कुरआन समझौतों के महत्व का वर्णन करता है और उनकी शर्तों पर कायम रहने की आवश्यकता पर बल देता है।

"प्रत्येक समझौतों के सम्बन्ध में पछा जायेगा"। (करआन. 17:34)

विदेश विनिमय

अन्तर्राष्टीय व्यापार कानून को लागु करने में मुहम्मद (सल्ल0) ने निर्णायक भूमिर निभायी। उनके शासनकाल में विदेश विनिमय का एक नियम विकसित हुआ। बाद में मुस्लिम शासकों ने 'सक्का' को प्रचलित किया जो अरबी का शब्द है और जिसका अर्थ अन्तर्राष्टीय व्यापार के लिए वचन देने वाला वादा है यही अरबी का ''सक्का' शब्द बाद में 'चेक' हो गया।

सैनिक प्रशासन

जीवन की विभिन्न शाखाओं में प्रारम्भिक रूप से जो अनेक कदम उठाये गये. उनमें से एक कदम का उद्देश्य सेना के लिए प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित करनी थी। मुहम्मर (सल्ल0) सैनिकों की आवश्यक संख्या को चनते और उन्हें विभिन्न सैनिक अभियानों के लिए भेज देते।

स्थायी सेना

जिन मुस्लिम सैनिकों के पास उपयुक्त साधन नहीं हुआ करते थे उन्हें राज्य से अनदान मिलता था ताकि सेना की प्रभावशीलता को बढाया जा सके।

शारीरिक चस्ती और सरक्षा प्रशिक्षण

सैनिक प्रशिक्षण को अनिवार्य घोषित कर दिया गया और प्रशिक्षण के लिए पैगम्ब (सल्ल0) ने उपयुक्त व्यवस्था की। उदाहरण के लिए वह लोगों को व्यायाम के माध्यम से शारीरिक रूप से चुस्त रखने के लिए प्रेरित करते रहते थे। आप तीरंदाजी की परम्परा को प्रोत्साहित करते थे। आप अल-सिबाक नामक मैदान पर ऐसी प्रतियोगित

व्यक्तिगत रूप से भाग लेते। आप घोडे. ऊँट और मनुष्यों की दौड के लिए प्रेरित करते और आप कुश्ती और तैराकी की प्रतियोगिताओं का संरक्षण भी करते। आप सभी ऐसे अवसरों पर पुरस्कार वितरित करते। मस्जिदुल सिबाक नामक मस्जिद आज भी मदीना के उत्तरी दरवाजे पर स्थित है। शब्द अल-सिबाक का अर्थ है ''प्रतियोगिता में जीतना'' कहा जाता है कि पैगम्बर (सल्ल0) पहाड के निकट ऊँचे स्थान पर खडे हो जाया करते थे और घोडों को दौड की स्पर्धा जीतते हुए और पहले तीन स्थान प्राप्त करते हुए देखते थे। अल-मकरीजी ने दर्ज किया है कि पहले पॉच घोडों को खजरों और दसरी वस्तओं के रूप में परस्कार दिया जाता।

इसके साथ-साथ सरकार के संरक्षण में हथियार एकत्र करने की व्यवस्था की गयी। उनके रख-रखाव सामान. घोडे ऊँट और उनकी व्यवस्था राज्य की चरागाह में की जाती थी।

गप्तचर व्यवस्था

गश्ती दस्तों का तन्त्र

मदीना व्यवहारिक रूप से एक छोटा सा इस्लामी राज्य था और मुहम्मद (सल्ल0) इसके पहले नेता और शासक थे। परन्तु यह ऐसे शत्रुओं से घिरा हुआ था जो इसे शक्ति प्राप्त करने और जमीन पर अपनी सत्ता स्थापित करने से पहले नष्ट कर देना चाहते थे। अतः मुहम्मद (सल्ल0) ने शत्रुओं की स्थिति से अपने आप को उनकी गतिविधियों. उनकी योजनाओं और हथियारों. धन-सम्पत्ति और आवश्यकता की वस्तुओं आदि के अनुसार उनकी शक्ति के सम्बन्ध में अवगत रहने के लिए के लिए गश्ती दस्तों की व्यवस्था की थी।

इस गश्ती व्यवस्था ने एक मजबुत संचार व्यवस्था स्थापित करने में मदद की. जो महम्मद (सल्ल0) को मदीना के आस-पास के कबीलों और सीमावर्ती क्षेत्रों की घटनाओं

से अवगत रखती। आपने मदीना शहर की सुरक्षा के लिए यदि आवश्यकता होती तो निरीक्षण चौकियों की व्यवस्था भी करते। मुस्लिम सैनिकों को सेना की शब्दावली में गुप्त चिन्हों. पासवर्ड. कोडवर्ड का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। पैगम्बर (सल्ल0) गप्त सचनाएँ एकत्र करने के एक से अधिक माध्यमों का प्रयोग करते थे

वित्त मन्त्रालय

'बैतलमाल'- राजकीय कोष

मदीना के इस्लामी राज्य में मुसलमान सामुहिक रूप से जकात बैतुलमाल में दिया करते थे। जकात की यह राशि राज्य की अर्थव्यवस्था चलाने और निर्धनों और वंचितों की सहायता करने के लिए खर्च की जाती थी।

राजस्व के सबसे बडे स्रोत. जकात को अनिवार्य कर दिया गया था। प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति के लिए यह कर अदा करना अनिवार्य था। इस कर की दर सम्पत्ति के विभिन्न सवंर्गों के अनुसार भिन्न होती थी। उदाहरण के लिए कृषि उत्पाद पर 10 प्रतिशत लिया जाता था। जबकि व्यापारी को अपनी पूरी पूँजी का 2.5 प्रतिशत अदा करना होता था। यदि कोई लोहे. सोने और चाँदी की खान का मालिक है तो उसे भी राज्य को एक निर्धारित हिस्सा अदा करना होता था। राजस्व अधिकारी मदीना के बाहर सभी क्षेत्रों में जकात एकत्र करने के लिए भेजे जाते थे। बाद में स्थानीय तहसीलदार नियुक्त किये गये।

तबुक के युद्ध के विशाल खर्च के लिए मुहम्मद (सल्ल0) ने विशेष कोष के लिए अपील की: पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने साथियों से अग्रिम जकात अदा करने के लिए कहा। अतः पहली बार अग्रित जकात एकत्र की गयी।

मुहम्मद (सल्ल0) ने राज्य के राज कोष (बैतुलमाल) की आय और व्यय का हिसाब रखने के लिए लिपिकों को भी नियक्त किया था।

राज्य की आय की जाँच करायी जाती थी। यह दायित्व बिलाल (रजि0) को सौंपा गया था जो वित्त मन्त्री भी थे और नमाज के लिए अजान भी देते थे। पैगम्बर (सल्ल0) की मस्जिद में एक कमरा बैतुलमाल के लिए दे दिया गया था। उस तालाबन्द कमरे में राज्य का धन. राज्य की सम्पत्ति के दस्तावेज और समझौतों के दस्तावेज सरक्षित रखे जाते थे।

पेंशन और क्षतिपर्ति व्यवस्था

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लामी राज्य के निर्धन और वंचित लोगों के लिए पेंशन व्यवस्था भी प्रस्तुत की थी। मदीना में बनु आरिज नामक यहूदी कबीला था। पैगम्बर (सल्ल0) उनसे प्रसन्न हो गये थे और उनके लिए एक वार्षिक अनुदान निर्धारित किया था। उन्होंने अस्वाभाविक मौतों से मरने वाले लोगों के लिए क्षतिपर्ति व्यवस्था भी प्रारम्भ की थी।

विदेश मन्त्रालय

मदीना के इस्लामी राज्य को ऐसी सत्ता और मान्यता प्राप्त हो गयी थी कि हिजरत के नौवें वर्ष में ही 38 (रजि0) . कबायली सरदार और सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप से प्रतिनिधि मंडल और विदेशों से प्रतिनिधि मंडल सन्धि और सहयोग समझौते करने के लिए आये। यहूदी और ईसाई कबीलों से अन्य दूत भी पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के पास आये. आपने उनके साथ सहयोग सन्धि की थी।

गैर-मस्लिम राजदत

अत्यन्त बुद्धिमान और विशेषज्ञ साथी राजदूत बने। यह भी महत्वपूर्ण है कि पैगम्बर (सल्ल0) ने गैर-मस्लिम राजदतों को भी भेजा। संभावित रूप से उनकी विश्वसनीयता और

इस कार्य के लिए उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा को देखते हुए उन्हें नियुक्त किया गया उदाहरण के लिए एक गैर मस्लिम अम्र बिन उमय्या को हब्शा के (रजि0) के पास राजदत के रूप में भेजा गया था।

न्यायिक प्रशासन

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एक न्यायिक प्रशासन व्यवस्था भी स्थापित की जिसकं अत्यधिक आवश्यकता थी। प्रारम्भ में मुसलमानों की संख्या कुछ सौ से अधिक नहीं थी। वह सभी मदीना शहर में रहते थे। मुसमानों के बीच मतभेद का प्रश्न बहुत मुश्किल से उठता था। परन्तु यदि कोई मतभेद उत्पन्न हुआ तो उससे सम्बन्धित लोग इस कबीले के सरदार के पास अथवा पैगम्बर (सल्ल0) के पास भेज देते थे। वाद का निर्णय जल्द ही हो जाता था. और निर्णय को लागू कर दिया जाता था। लोगों को राज्य की सर्वोच्च न्यायिक सत्ता. पैगम्बर (सल्ल0) के पास जाने और अपनी शिकायत दर कराने अधिकार प्राप्त था।

✵

सभी के लिए न्याय

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) इस्लामी राज्य मदीना के सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में न्याय के सर्वश्रेष्ठ प्रशासक थे। वह सभी वादों (Cases) का निर्णय समता और न्याय के आधार पर करते चाहे उनका रिश्ता किसी भी नस्ल. धर्म अथवा सम्बन्ध से हो। और मित्र और शत्र में कभी भेदभाव नहीं करते थे। कुरआन ने घोषणा कीः

''ऐ ईमान वालो. न्याय पर भली-भाँति अडिग रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो. चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध हो। यदि कोई धनवान है या निर्धन तो अल्लाह तमसे अधिक दोनों का शभचिन्तक है''। (कुरआन. 4:135)

पैगम्बर (सल्ल0) प्रत्येक वाद के सम्बन्ध में प्रमाणों के आधार पर निर्णय देते और सबके लिए न्यायसंगत और भेदभाव रहित निर्णय देते। जिन वादों का निर्णय आपने किया वह वादों की प्रकृति. विशेषताओं और काननी मामलों में आपकी दरदष्टि व व्यापकता पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

- अब्दुल्लाह बिन सेही को यहूदियों से कृषि उत्पाद का एक भाग एकत्र करने के लिए खैबर भेजा गया। उनकी हत्या कर दी गयी और उनका शव उनके रिश्ते के भाई मुहिसा को मिला. जो पैगम्बर (सल्ल0) के पास गये और यहूदियों से बदला लेने की अपील की। पैगम्बर (सल्ल0) ने पूछा. ''क्या तुम कसम खा सकते हो कि उनकी हत्या यहूदियों ने की है''। उन्होंने उत्तर दिया कि उन्होंने हत्या को अपनी आँखों से नहीं देखा है। पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा कि यहूदियों को कसम खाने के लिए कहा जाना चाहिए। मुहिसा ने कहा. ''हम उनकी कसम पर कैसे विश्वास कर सकते हैं? वह लोग झूठी कसमें सौ बार खायेंगे''। खैबर में यहदियों के अतिरिक्त और कोई नहीं रहता और इसमें कोई सन्देह नहीं

कि किसी यहूदी ने ही अब्दुल्लाह की हत्या की है। परन्तु चूँकि कोई आँखों देखा गवाह नहीं था। पैगम्बर (सल्ल0) ने यहूदियों से कुछ नहीं कहा और उनके घरवालों को राजकोष से खनबहा (हत्या की क्षतिपूर्ति) अदा कर दिया गया।

- मक्सूमा कबीले से सम्बन्ध रखने वाली एक महिला चोरी करते हुए पकडी गयी थी। कुरैश के लोग इस मामले को अपने लिए लज्जा का कारण समझ रहे थे और चाहते थे कि उसे इस्लामी दण्ड न दिया जाये। वह चाहते थे कि कोई उस महिला की तरफ से पैगम्बर (सल्ल0) से हस्तक्षेप करने की बात करे। उन लोगों ने सोचा कि युवा व्यक्ति ओसामा जिन्हें पैगम्बर (सल्ल0) बहुत प्यार करते हैं उनकी ओर से बात करने वा सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हो सकते हैं ताकि उस महिला को दण्ड से छूट मिल जाए। जब ओसामा (रजि0) ने इस मामले में पैगम्बर (सल्ल0) से बात की तो आप (सल्ल0) का चेहरा बिगड गया। आपने ओसामा से पूछा कि उन लोगों ने अल्लाह की इच्छा में हस्तक्षेप करने का साहस कैसे किया। इससे पहले की बहुत सी कौमें इसलिए नष्ट हो गयीं कि उन्होंने अपने उन अपराधियों को दण्ड दिया जो निर्धन थे और धनवान अपराधियों को खुला छोड दिया। पैगम्बर (सल्ल0) ने लोगों से कहा कि यदि मुहम्मद (सल्ल0) की बेटी फातिमा (रजि0) भी चोरी करती तो वह उनका भी हाथ काट देते।

- तारिक मुहारबी के अनुसार पैगम्बर (सल्ल0) एक उपदेश दे रहे थे कि ए अन्सारी (मदीना के मुसलमान) बनी सलाबा कबीले के लोगों को मदीना की मस्जिद में देखकर खडा हो गया और कहा. ''ऐ अल्लाह के पैगम्बर! इन लोगों का सम्बन्ध बनी सलाबा कबीले से है। इनके पूर्वज ने हमारे परिवार के एक सदस्य की हत्या की थी। हम आपसे अपील करते हैं. कि उस हत्या के बदले में इनके एक व्यक्ति को फाँसी दिलवा दीजिए। पैगम्बर (सल्ल0) ने उत्तर दिया. ''किसी पिता के अपराध का बदला उसके बेटे से नहीं लिया जा सकता''। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने आदर्श से सिद्ध कर दिया कि कोई व्यक्ति न्याय के लिए उनसे अधिक दृढ नहीं हो सकता। चाहे यह न्याय उनके व्यक्तिगत हितों के विरुद्ध हो अथवा उन लोगों का हित दाँव पर हो जो उनके निकटवर्ती और सम्बन्धी हों। आप (सल्ल0) ने प्रत्येक मामले का निर्णय न्याय के साथ किया चाहे

वह शत्रु हों अथवा मित्र हों। आपने न तो धनवान का पक्ष लिया और न निर्धन का बल्कि आपने उनके मामलों का निर्णय समता और न्याय के आधार पर किया। आपने अपने शत्रुओं के मामलों का भी निर्णय न्याय और पारदर्शिता के साथ किया। गैर मुस्लिम और मुसलमान दोनों अपने विवादों को बिना किसी भय अथवा संकोच के उनके समक्ष लाते थे क्योंकि वह जानते थे कि उन्हें सिर्फ उन्हीं से न्याय मिल सकता है।

• एक बार बनु कुरैजा कबीले के एक यहूदी की हत्या बनु नजीर कबीले के एक यहूदी ने कर दी। जब मामले को पैगम्बर (सल्ल0) के समक्ष लाया गया तो उन्होंने 'तौरात का कानून- एक जान के बदले जान'- का कानून लागु किया। युद्ध और विजय र्क परिस्थितियों में लागु होने वाले यहूदी कानून के अनुसार कहा गया है कि: ''और जब स्वामी. तुम्हारा उपास्य इसे तुम्हारे हाथ में दे दे तो तुम उनके सभी पुरुषों की हत्या कर दो: परन्तु महिलाओं. बच्चों और मवेशी की हत्या न करो और शहर की प्रत्येक चीज और शहर में समस्त छोडी हई वस्तओं को अपने लिए गनीमत के रूप में ले लो'' (डयटरोनोमी. 20: 13-14)। यहदियों. मसलमानों और अन्य कबीलों के बीच विवाद होने पर पैगम्बर (सल्ल0) के दरबार में अन्तिम अपील की जाती थी।

• पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. ''न्यायधीश तीन प्रकार के होते हैं. एक किस्म का न्यायधीश स्वर्ग में जायेगा और दो किस्मों के नरक में। जो न्यायधीश सच्चाई को स्वीकार करे और उसी के अनसार निर्णय दे. वह स्वर्ग में जायेगा। एक व्यक्ति जो सच्चाई को स्वीकार करे परन्त निर्णय देने में अन्याय करे वह नरक में जायेगा और वह व्यक्ति जो अज्ञानता के साथ लोगों के बीच निर्णय दे वह भी नरक में जाता है''।

• पैगम्बर (सल्ल0) ने कहा. *''एक न्यायाधीश को क्रोध की स्थिति में निर्णय की घोषणा नहीं करनी चाहिए।*

शासक और साधारणजन इस्लामी कानन के समक्ष समान हैं

इस्लामी कानून. इस्लामी राज्य के अध्यक्ष के पक्ष में किसी छूठ को स्वीकार नहीं करता। इस्लामी कानून के समक्ष खलीफा अथवा इस्लामी राज्य के शासक और सामान्य व्यक्ति दोनों बराबर हैं। यह रिवायत किया गया है कि एक बार खलीफा अली (रजि0) की ढाल खो गयी थी। कुछ दिनों के बाद उन्होंने उसे एक ईसाई के पास देखा। उन्होंने न्यायाध ीश शुरैह के दरबार में शिकायत दर्ज करायी तो उन्होंने ईसाई को बुलाया। ईसाई ने दावा किया कि वह ढाल उसी की है। न्यायधीश शुरैह ने हजरत अली से पूछा कि क्या उनके पास अपने दावे के पक्ष में कोई प्रमाण अथवा गवाह है. तो इस सम्बन्ध में उन्हं नकारात्मक उत्तर दिया। न्यायाधीश ने ईसाई के पक्ष में फैसला सुनाया और खलीफा अली (रजि0) की याचिका को रदद् कर दिया। वह ईसाई न्याय के इस असाधारण प्रदर्शन से इतना प्रभावित हुआ कि उसने इस्लाम धर्म स्वीकार करने की घोषणा कर दी और चकित होकर कहा. ''यह तो पैगम्बरों के न्याय के समान है कि शासक मुझे नगर के न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत करता है (जो उसके शासन के अन्तर्गत है) और यह न्यायाधीश शासक के विरुद्ध निर्णय दे रहा है!''।

इस्लामी समाज में न्यायपालिका शासक की स्थायी सरकार से स्वतन्त्र होती है। न्यायाधीश को इस्लामी कानून बिना किसी भय अथवा पक्षपात के लागू करना होता है। और अपने कर्त्तव्य निर्वाह के लिए वह शासकों के समक्ष उत्तरदायी नहीं होता परन्तु वह सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष उत्तरदायी होता है। एक स्वतन्त्र न्यायपालिका स्थायी सरकार तथा सामान्य जनता की ओर से इस्लामी कानन के आज्ञापालन को सनिश्चित करने में महत्वपर्ण भमिका निभाती है।

सीरिया के एक कबीले का (रजि0) जबल अल-गस्सानी हज कर रहा था कि उसका ओवरकोट अचानक एक कबायली अरब के कदमों के नीचे गिर पडा। जबल ने क्रोधित होकर उसके चेहर पर थप्पड मार दिया। उस बदद् ने खलीफा उमर (रजि0) से शिकायत की तो उन्होंने जबल को बुलाया और कबायली बदद् से कहा कि बदला लेने के लिए तुम भी थप्पड मारो। (रजि0) जबल ने चकित होकर कहा. ''यह कैसे हो सकता है'' ''यह एक साधारण व्यक्ति है और मैं एक (रजि0) हूँ''। उमर (रजि0) ने उत्तर दिया. ''इस्लाम ने तमको उसके बराबर बना दिया है और तम्हें उसके ऊपर कोई वरीयता नहीं है''।

बेटे की मत्य का शोक

हिजरत के दसवें वर्ष पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन के अन्तिम दिनों में एकेश्वरवाद (एक अल्लाह) का धर्म पूरे अरब प्रायद्वीप में स्थापित किया जा रहा था. और इस्लाम के प्रति शत्रुता निरन्तर घटती जा रही थी और इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या बढती जा रही थी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की पत्नी मारिया (रजि0) ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया और पैगम्बर (सल्ल0) ने उनका नाम इब्राहीम रखा और आपने बच्चे के जन्म की सूचना पाकर व्यक्तिगत प्रसन्नता व्यक्त की। आपने उत्सवपूर्ण भोज का आयोजन किया। आप बच्चे को गोद में लेते और प्यार से उसके साथ खेलते।

बालक इब्राहीम जो लगभग देढ वर्ष के थे गम्भीर रूप से बीमार पड गये। पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने इकलौते बेटे को लगभग जीवन छोडते हुए और स्वयं उनका साथ छोडते हुए देखा। प्रतिदिन वह घण्टों अपने बेटे के पास व्यतीत करते। जब बच्चे ने अन्ततः अन्तिम साँस ली. तो पैगम्बर (सल्ल0) अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर रोये. जिस प्रकार कोई पिता रोता है: उन्होंने अपने बेटे को गोद में लिया और अपने सीने से लगा लिया। आपको इतना गहरा शोक हुआ कि आपके चेहरे से आँसू बह रहे थे। इस नयी दुखद घटना से आपका दिल फट गया और आपका चेहरा आपके आन्तरिक दर्द का दर्पण बना हुआ था। आपके वफादार साथी अब्दुल रहमान उन सिसकियों से चकित थे। क्योंकि वह समझते थे कि पैगम्बर (सल्ल0) ने इससे पहले इस प्रकार दुख प्रकट करने से मना किया था। प्रारम्भ में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) बोल नहीं सकेः फिर उन्होंने उनसे बताया कि मैंने दुखः का इस तरह प्रदर्शन करने से मना किया था कि कोई व्यक्ति पागल हो जाए।

परन्तु प्राकृतिक दुख और शोक प्रकट करने से नहीं मना किया था। फिर आपने अपने शोक को शब्दों में व्यक्त किया जो वास्तव में आध्यात्मिक शिक्षा बन गयी। आपने घोषणा की कि उनके आँसू ''कोमलता और दया के प्रतीक'' थे। आपने स्वयं अपने अनुभव से एक टिप्पणी जोडा. परन्तु वह प्रत्येक मुसलमान के दैनिक जीवन के लिए भी सच है: ''जो व्यक्ति दयावान नहीं है उसके प्रति दया प्रकट नहीं की जायेगी''। जीवन के कठिन क्षणों में व्यक्ति जो दयालुता. सहानुभूति. कृपा और इस बोध को एक दूसरे से प्रकट करता है वह उसे एक अल्लाह से निकट लाती हैं जो दयावान और कृपाशील है। इन भावों के माध्यम से अल्लाह ईमानवालों के दिलों से निकट पहुँच जाता है. और वह ईमानवाले को वह कुछ प्रदान करता है जो ईमान वाले ने अपने मानव भाई और बहनों के लिए प्रकट किया था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) व्यक्तिगत रूप से प्रभावित थे और उन्होंने अपना दुख प्रकट करने में कोई संकोच नहीं किया। आपने फरमाया. '' ऐ इब्राहीम. आँखों से आँसू बहते हैं. हृदय अत्यन्त दुखी है और किसी व्यक्ति को वही कुछ कहना चाहिए जो अल्लाह को सन्तुष्ट करे''। अल्लाह ने एक बार फिर उनकी भावनाओं और उनके मिशन की परीक्षा ली। आपने अपने बहुत से प्रियजनों को खोया था- साथियों. आपकी पत्नी खदीजा (रजि0). अपनी तीन बेटियों और तीन बेटों को। अपने परे जीवन में आपने दखों का सामना किया। लेकिन आप हृदय से विनम्र रहे और मिशन के प्रति दढ संकल्प रहे

इब्राहीम की मत्य और सर्य ग्रहण

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के कब्रिस्तान से लौटने के कुछ ही घण्टों पश्चात सूर्य ग्रहण हुआ. मुसलमानों ने इस ग्रहण को पैगम्बर के बेटे की मृत्यु से जोड दिया और उन्होंने समझा कि यह पैगम्बरों को मिलने वाले चमत्कारों में से एक चमत्कार है और यह पैगम्बर के लिए अल्लाह के सन्देशों की एक किस्म है। परन्तु पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इन समस्त व्याख्याओं अथवा निष्कर्षों को दृढतापूर्वक यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि *''सूरज और चाँद दोनों अल्लाह की निशानियों में से हैं उनका प्रकाश किसी की मृत्यु से धूमिल नहीं होता''*। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने साथियों को याद दिला रहे थे। चीजें अपने क्रम के अनुसार चलती हैं और अल्लाह की निशानियों की व्याख्या करने में गलती करने की कोई आवश्यकता नहीं है. ताकि अंधविश्वास में पडने से बचा जा सके। यह आपके साथियों के लिए और आपके लिए भी आत्मनियन्त्रण और विनम्रता की एक आध्यात्मिक शिक्षा थीः मनुष्य को. और उनमें से मुसलमानों को यह सीखना था कि वह इस संसार को कैसे छोडें और लोगों को यह संसार छोडते हुए कैसे देखें। ईमान और मनुष्यता की जिस परीक्षा ने पैगम्बर (सल्ल0) को रुलाया था उसमें मुख्य रूप से यह सीखना था कि सृष्टि के शाश्वत रहस्यों और सदैव चलने वाले जीवन चक्र में अचानक मौतों का सामना करने की क्षमता किस प्रकार प्राप्त की जाये। किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय सर्वशक्तिमान अल्लाह की निशानियों के मौजद होने में कोई चमत्कार घटित नहीं होता परन्त यह उसकी सष्टि के अमरत्व का एक प्राकतिक क्रम है

27

अन्तिम हज

उसी दसवें वर्ष में रमजान के महीने के दौरान पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अल्लाह से एक और निशानी प्राप्त की। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इसके बारे में अपनी बेटी फातिमा (रजि0) को बतायाः "प्रत्येक वर्ष. फरिश्ता जिब्रील (अलै0) मुझे एक बार कुरआन सुनाते हैं और मैं भी उनको एक बार सुनाता हूँ परन्तु इस वर्ष उन्होंने दो बार सुनाया और मैं समझता हूँ कि यह मेरी अन्तिम घडी की घोषणा है"। हज इस्लाम का पॉचवा स्तम्भ है। जिल हिज्जा के महीने के विशेष दिनों में प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवन में कम से कम एक बार मक्का की यात्रा करनी चाहिए। पैगम्बर (सल्ल0) ने अभी तक इस कर्त्तव्य को पूरा नहीं किया था और इसके लिए तैयारी का समय निकट आ रहा था। यह व्यापक रूप से घोषणा कर दी गयी थी कि पैगम्बर (सल्ल0) हज की अगली यात्रा का नेतृत्व करेंगे और अगले सप्ताहों में वह तीस हजार हज यात्रियों को लेकर मदीना से निकले और उनके साथ परे अरब प्रायद्वीप से तीन गुना लोग और जुड गये।

जब वह लोग रास्तें में थे तो पैगम्बर (सल्ल0) को मक्का के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण वह्य (सन्देश) प्राप्त हुई और विशेष रूप से यह काबा के निकट जो कर्त्तव्य किये जाने थे उनके सम्बन्ध में थी जो कुरआन के अध्याय- 9 की पहली आयतें हैं। (यः कुरआन का एक मात्र अध्याय है जो पारम्परिक दुआ "बिस्मिल्लाह अल रहमान अल रहीम" से प्रारम्भ नहीं होता। इस दुआ का अर्थ है अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान और कृपाशील है)। सबसे पहले इस आयत में पूर्णतः स्पष्ट घोषणा कर दी गयी थी कि जो कर्मकाण्ड (अज्ञानता पर आधारित) मक्का के निकट किये जा रहे थे (जहाँ क

हजयात्री नंगे जाते थे) उन्हें अब सहन नहीं किया जायेगा और मर्तियों की पजा करने वालों को वहाँ अनुमति नहीं दी जायेगी।

यह सन्देश दृढ था और यह निर्धारित कर रहा था कि पवित्र मस्जिद काबा अब विशेष रूप से एक अल्लाह की इबादत के लिए समर्पित है और केवल मुसलमान ही इसमें प्रवेश कर सकते हैं। आयत इस प्रकार है: ''*अल्लाह की मस्जिदों के आबाद करने वाले तो वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन को मानें. और नमाज कायम करें. जकात दें और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से न डरें उन्हीं से यह आशा है कि वह सीध े मार्ग पर चलेंगे''* पैगम्बर (सल्ल0) के अधिकतर साथी और उनके बाद आने वाले विद्वानों ने यही समझा कि यह प्रतिबन्ध केवल मक्का की पवित्र परिधि पर लागु होता है और अन्य मस्जिदों पर लागु नहीं होता और वहाँ गैर मुस्लिम मस्जिदों में जा सकते हैं। इस आयत के द्वारा जो सन्देश दिया गया वह स्पष्ट रूप से मात्र एक अल्लाह की इबादत की स्थापना का स्पष्ट आदेश था।

एक बार मक्का में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने हज के विभिन्न कर्त्तव्यों को परा किया और उस समय जो आपके साथी उपस्थित थे. उनके समक्ष स्पष्ट किया कि ऐसा करके वास्तव में वह अपने पिता इब्राहीम (अलै0) की शुद्ध और एकत्ववादी इबादत को पुनः जीवित कर रहे है। पैगम्बर (सल्ल0) के सम्पूर्ण जीवन की तरह यह हज यात्रा भी अपने मल स्रोत की ओर वापसी थीः अल्लाह की ओर एक वापसी. जो एक मात्र अल्लाह है और पैगम्बर इब्राहीम (अलै0) के पदचिन्हों पर चलते हुए. जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह के घर काबा का निर्माण एक मात्र अल्लाह की इबादत के लिए किया था। आपके साथियों ने पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा दिये गये प्रत्येक सन्देश का अवलोकन किया जो वास्तव मे अत्यन्त शुद्धता के साथ हज यात्रा के कर्म काण्डों को स्थापित कर रहे थेः आपने उन लोगों से कहा था ''अपने कर्मकाण्ड मुझसे सीखो''। नौ जिल-हिज्जः. दस हिजरी को पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने जबल-ए रहमत (दया का पर्वत) से एक लाख चौवालीस हजार हज यात्रियों को सम्बोधित किया जो उसके चारों ओर फैली हुई घाटी जिसे अरफा कहा जाता है जो मक्का से बीस किलोमीटर दर है। यह हज यात्रा का केन्द्र बिन्द है। आपने छोटे-छोटे

वाक्यों की घोषणा की और आपके आस-पास के लोग उन्हें दोहराते थे ताकि घाटी का प्रत्येक व्यक्ति आपके सम्बोधन को सन सके

विदाई के हज का उपदेश

अन्तिम उपदेश सन 632 ई0 तदनुसार 10 हिजरी में मक्का की अरफात की पहाडी से हज के वार्षिक कर्त्तव्यों को पूरा करते समय दिया गया। उस सन्देश की सामग्री प्रबल और तीव्र थी और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने यह कहते हुए प्रारम्भ किया कि उन्हें पता नहीं है कि इस वर्ष के बाद वह फिर हज यात्रियों से इस स्थान पर मिल पायेंगे अथवा नहीं। फिर आपने उन्हें उस महीने और उस स्थान तथा उनके प्राणों उनके सम्मान और उनकी सम्पत्तियों के पवित्र चरित्र को याद दिलाया। आपने स्पष्ट किया कि अज्ञानता युग का अब अन्त हो चुका है और इसी प्रकार उसकी रीतियाँ. उसके टकराव और सत्ता और लाभ पर आधारित उनके झगडे भी समाप्त हो चुके हैं। आज से सभी मुसलमान एक आस्था. बन्धुत्व और प्रेम से बँध गये हैं और उन्हें अब अपने आप को इस्लाम के सन्देश के गवाह के रूप में परिवर्तित होना है। उन्हें अब किसी भी परिस्थिति में न तो अत्याचारी बनना है और न पीडित रहना है। उन्हें अल्लाह के समक्ष सभी मनुष्यों की समानता और आवश्यक नम्रता सीखनी है क्योंकि ''तुम सभी आदम की सन्तान हो और आदम को मिट्टी से बनाया गया था। अल्लाह की दृष्टि में सबसे श्रेष्ठ वह है जो सबसे अधिक पवित्र है''।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा. ''कोई अरबवासी किसी गैर-अरबवासी से श्रेष्ठ नहीं सिवाय उनके अल्लाह से डरने से''। पैगम्बर (सल्ल0) ने समस्त मुसलमानों को याद दिलाया कि वह अपनी पत्नियों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करें और आपने कहाः ''महिलाओं के सम्बन्ध में अल्लाह से डरते रहो और उनके प्रति भले बने रहने का प्रयास करो''। फिर आपने कहा. सभी मुसलमानों के मार्गदर्शन और इसकी शर्तों को और सभी उन लोगों को जो विभिन्न सदियों में इसकी शिक्षाओं का पालन करेंगे उनके लिएः मैं तुम्हारे बीच एक वसीयत छोड रहा हँ. यदि तम इसे दढतापर्वक पकडे रहोगे. तम अपने आप को

भटकने से बचा लोगेः स्पष्ट मार्गदर्शन जो अल्लाह की किताब करआन है और उसके पैगम्बर की हदीसें।

पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने संक्षिप्त उपदेश को एक गम्भीर प्रश्न के साथ समाप्त कियाः "ऐ लोगों क्या मैंने तुम्हें ईमानदारी के साथ सन्देश पहुँचा दिया? उस घाटी में एकत्र हाजियों के मुँह से स्वीकारोक्ति की तीव्र आवाज गूँजी. "ऐ अल्लाह के पैगम्बर हाँ. आपने पहुँचा दिया" पैगम्बर (सल्ल0) ने अपनी ऊँगली ऊपर उठायीः "ऐ अल्लाह मेरी ओर से गवाह रह!" उपदेश के अन्त में हाजियों ने उत्तर दियाः "हम गवाही देते हैं कि आपने ईमानदारी के साथ सन्देश पहुँचा दिया और यह गवाही देते हैं कि आपने अपना मिशन पुरा कर लिया और आपने अपने समुदाय को अच्छा परामर्श दिया"। पैगम्बर (सल्ल0) ने इस प्रकार अपने उपदेश का उपसंहार कियाः "ऐ अल्लाह गवाह रह!...... और जो लोग भी यहाँ उपस्थित हैं इस सन्देश को उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ उपस्थित नहीं"।

वास्तव में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मुसलमानों के आध्यात्मिक समुदाय वं समक्ष एक गवाह थे। हज यात्रा के चरम बिन्दु पर उनके साथ आध्यात्मिक एकता में- जो स्वयं भी सादगी और कायनात के रचयिता सर्वशक्तिमान के समक्ष मानव एकता चाहती है। पैगम्बर (सल्ल0) ने अल्लाह के सन्देश में महत्वपूर्ण बिन्दु को याद कियाः नस्ल सामाजिक वर्ग अथवा लिंग पर आधारित विषमताओं से परे अल्लाह के समक्ष सम्पूर्ण मानव एकता। एक मात्र चीज जो उन्हें सबसे अलग करती है वह व्यवहार है जो वह परस्पर अपने साथ करते हैं. अपनी बुद्दि के साथ करते हैं. अपनी योग्यताओं के साथ और सबसे अधिक अपने दिल के साथ करते हैं। चाहे वह कहीं के रहने वाले हों. चाहे वह अरबवासी हों अथवा नहीं. काले हों अथवा गोरे हों. धनी हों अथवा निर्धन हों. पुरुष हों अथवा स्त्री हों। मनुष्य अपनी आध्यात्मिक शिक्षा. अपने स्वाभिमान पर नियन्त्रण. ईमान. प्रतिष्ठा. भलाई और आत्मा की सज्जनता को विकसित करके एक अच्छा मनुष्य बनता है। सभी नस्लों और कबीलों से सम्बन्धित लोगों के सामने जिनमें दास भी थे और कबीलों के सरदार भी. पुरुष भी थे और स्त्रियाँ भी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने गवाही दी कि उन्होंने अल्लाह के सन्देश की रोशनी में अपना मिशन परा कर दिया है और सभी ईमान वालों ने एक

आवाज होकर इसकी पुष्टि की कि उन्होंने उस मिशन को प्राप्त कर लिया है और इसके अर्थ और सामग्री को समझ लिया है।

कुछ ही घण्टों बाद पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) पर एक आयत अवतरित ह जिसने यह पुष्ट कर दिया कि आपका मिशन अब समापन के चरण में है

''आज मैनें तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन (धर्म) को पूरा कर दिया और तुमपर अपनी कृपा पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन (धर्म) की हैसियत से पसन्द कर लिया''। (कुरआन. 5:3)

पैगम्बरी का अन्तिम चरण परा होने वाला था और पैगम्बर (सल्ल0) अपने जीवन से परे अपने घर की ओर एक अल्लाह के सामीप्य में वापस जाने वाले थे।

''ऐ दिलों के बदलने वाले....''

वह सभी गैर मुस्लिमः उनमें से कुछ शान्ति. सत्य और निष्ठा की तलाश कर रहे थे. कुछ लोग उनके सन्देश की सच्चाई में अब भी विश्वास नहीं कर रहे थे हालाँकि उन सभी ने अपने अन्दर एक नये ढंग के आन्तरिक टकराव का अनुभव किया जिसको प्रयास और धैर्य की आवश्यकता थी। पैगम्बर (सल्ल0) ने उन्हें परामर्श दिया कि इस्लाम की रोशनी प्राप्त करने के लिए वह अल्लाह की निशानियों का अवलोकन करें और अल्लाह सहायता और मार्गदर्शन चाहें।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने मुसलमानों को शिक्षा दी- जिन्होंने एक अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया था- कि वह अपने आन्तरिक संघर्ष को जारी रखें. विनम्र रहें और अपनी कमजोरी से अवगत रहें. स्तुति के माध्यम से आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करें। और यह परामर्श दिया कि वह अल्लाह से दुआ करें कि वह उनके हृदय को दृढ रखेः ''ऐ अल्लाह हमारे दिलों को न भटका जबकि तूने हमें मार्गदर्शन दे दिया''। पैगम्बर (सल्ल0) अल्लाह से दआ करते रहते थे और कहते थेः *''ऐ दिलों के बदलने वाले अपने धर्म में मेरे हृदय को दृढ रख''*।

29

स्वर्ग में. सर्वशक्तिमान के साथ

हज का समारोह समाप्त हो गया था। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने हज से सम्बन्धित सभी कर्त्तव्य पूरे कर लिये थे और मक्का वापस होना चाहते थे. और आप उन हाजियों के साथ निकले जिनके साथ वह आये थे। अन्त में वह लोग मदीना पहँचे और दैनिक जीवन की प्रक्रिया पनः प्रारम्भ हो गयी।

अनेक मुसलमानों ने इस्लाम के सिद्धान्तों और कुरआन तथा धार्मिक कर्त्तव्यों के विभिन्न तत्वों को उनके नियमों और शर्तों के साथ सीख लिया था। जकात (जकात का अर्थः अपनी सम्पत्ति को शुद्ध करना है ताकि इसे भलाई में विकसित करने के लिए अल्लाह की कृपा प्राप्त हो सके) को उन सिद्धान्तों के अनुसार एकत्र किया जा रहा था जिन्हें अल्लाह के सन्देश और पैगम्बर (सल्ल0) के व्यवहार के अनसार अभी जल्द ही स्थापित किया गया था।

इस प्रकार. इस्लाम के सभी पॉच स्तम्भों के कर्त्तव्यों को नियमित किया जा चुका था जिसमें हज भी सम्मिलित था और यह हज जल्द ही सम्पन्न हुआ था और मुस्लिम समदाय ने उन सिद्धान्तों को प्राप्त कर लिया था जो इस्लाम को दैनिक जीवन में बरतने के लिए आवश्यक थे।

बीमारी

रमजान के कुछ महीनों के पश्चात हिजरत के ग्यारहवें वर्ष में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उहद गये. जहाँ कुरैश और मुसलमानों के बीच दूसरा युद्ध हुआ था और आपने उन लोगों. जो यद्ध में मारे गये थे. के लिए एक अल-विदाई नमाज पढी।

तत्पश्चात आप मदीना की मस्जिद को वापस गये. मिम्बर (एक ऊँची कुर्सी जिससे ईमाम मस्जिद में मुसलमानों को सम्बोधित करता है) पर बैठे और आस्थावान मस्लिम साथियों को सम्बोधित किया। सर्वप्रथम आपने कहा.

''मैं तुमसे पहले (परलोक में) जा रहा हूँ और मैं तुम सब पर गवाह रहँगा''।

फिर आपने अपना भाषण समाप्त करते हुए उन्हें परामर्श दिया.

''मुझे ऐसा डर नहीं है कि मेरे बाद तुम मूर्तिपूजा की ओर लौट जाओगे बल्कि मझे डर है कि तुम संसार की सम्पत्ति के लिए लडोगे''

ये शब्द पूर्णतः स्पष्ट कर रहे थे कि आपको एहसास हो गया था कि आपको इस जीवन को छोडने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। फिर उसी साँस में आपने अपने आध्यात्मिक समुदाय के भविष्य के सम्बन्ध में एक आशंका प्रकट की। उन्होंने कहा आस्था उनसे नहीं जायेगी बल्कि यह संसार अपनी माया के साथ इन्हें घेरे में ले लेगा और दर्भाग्य है कि यह दोनों उनके अन्दर मौजूद रहेंगी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) वास्तव में एक ऐसा भय प्रकट रहे थे जो भविष्यवाणी की तरह गूँज रही थी कि वह लोग अल्लाह की इबादत करते रहेंगे परन्तु वह सम्मान. सम्पत्ति. सत्ता और अपनी विभिन्न प्रतिबद्धताओं के कारण बँट जायेंगे और उस बन्धत्व को भूल जायेंगे जिसने उन्हें एक बनाया था।

उस दिन के बाद आने वाली रात में पैगम्बर (सल्ल0) मदीना के अल-बकीअ कब्रिस्तान में. वहाँ दफन लोगों को सलाम करने के लिए गये और आपने इन शब्दों के साथ दुआएँ कीं ''आप प्रथम हैं'' (आप लोग पहले गये हैं और आप लोगों के बाद हम आ रहे हैं)''। वहाँ से लौटते समय पैगम्बर (सल्ल0) ने तीव्र सिरदर्द महसूस किया जिसने आपको लगभग दो सप्ताह जीवित नहीं रहने दिया और आप अपने जीवन के अन्तिम दिनों

में अपने बिस्तर तक सीमित रहे। प्रारम्भ में आप सिरदर्द और बुखार के बावजुद सामुहिक नमाज पढाते रहे। समय व्यतीत होने के साथ-साथ बीमारी बढती गयी और पैगम्ब (सल्ल0) को लम्बे समय तक लेटे रहना पडता था।

जब आपका बुखार बढ गया और आप बेहोश हो गये तो कुछ दिनों के लिए आयशा (रजि0) के साथ रहे जब आपकी बीमारी कम हुई तो आपने निवेदन किया कि सात मुश्क पानी बर्तन में एकत्र किया जाए और उनके चेहरे पर डाला जाए। कुछ घण्टों बाद आपने बेहतर महसुस किया और मस्जिद जाने का निर्णय लिया और आपके सिर पर पट्टी बँधी हुई थी। आप मिम्बर पर बैठ गये और अपने मौजुद मुस्लिम साथियों को सम्बोधित किया और उनसे कब्रों के बारे में बात की और इस बात पर बल दिया कि वह उनकी अपनी कब्र को पजा स्थल न बनायें। फिर आपने कहा *''मेरी कब्र पर पजा न करना''।*

आप एक पैगम्बर थे. परन्तु आप सामान्य मनुष्य बन कर रहे. आप जानते थे कि आपके साथी आपसे कितना प्यार करते है और आपने उन लोगों की गलतियों के विरुद्ध उन्हें सचेत किया जो उनसे पहले हुए थे और अपने पैगम्बरों को उन्होंने एक आदर्श बनाकर उपास्य बना लिया था।

यह आदेश बताता है कि कभी भी हमें मनुष्य की पुजा नहीं करनी चाहिए। इसी कारण पैगम्बरों को प्राचीन इस्लामी हदीसों. चित्रों में अथवा कलाकृतियों में प्रस्तुत नहीं किया गया है। व्यक्ति को पैगम्बरों की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए और उनके व्यक्तित्व की पुजा नहीं करनी चाहिए। वह मार्ग हैं जो लोगों को अल्लाह के निकट ले जाने के लिए मार्ग दर्शन करते हैं। मात्र अल्लाह ही इस योग्य है कि उसकी उपासना की जाए।

फिर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) उठे और पुछा कि क्या किसी साथी की आपके पास कोई धरोहर है. क्या कोई ऋण की अदायगी शेष है? क्या आपने किसी पर अत्याचार किया है अथवा किसी को चोट पहुँचायी है? यदि ऐसा है तो वह व्यक्ति बोले ताकि उसका निपटारा कर दिया जाए। एक व्यक्ति खडा हुआ और पैगम्बर (सल्ल0) को याद दिलाया

कि उनके पास उसके तीन दिरहम हैं। पैगम्बर (सल्ल0) ने आदेश दिया कि *'यह राशि तरन्त वापस कर दी जाए'*।

कुरआन के आदेशों का पालन करते हुए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) वि मुसलमान के जनाजे की नमाज उस समय तक नहीं पढते थे जब तक उसके सांसारिक कर्ज अदा नहीं हो जाते। उन्हें ऋण मुक्त होकर प्रस्थान करना था ताकि उनके ऊपर किसी व्यक्ति का कोई बकाया न हो। कोई ऐसा अत्याचार न हो जिसकी क्षमा न माँगी गयी हो. कोई ऐसा घाव न हो जो भरा न हो और कोई ऐसा सन्देश न हो जो सुना न गया हो।

पैगम्बर (सल्ल0) मिम्बर पर पुनः बैठ गये और आपने उच्चारण f ''सर्वशक्तिमान अल्लाह. जो प्रतिष्ठा वाला है उसने अपने बन्दों में से एक बन्दे को इस संसार के भौतिक साधन और जो कुछ उसके पास है के बीच चुनाव करने का अवसर दिया. और उस बन्दे ने उस चीज को चुना जो अल्लाह के पास है''। इन शब्दों को सुनकर अबु बक्र (रजि0) की आँखों से आँसु फुट निकले क्योंकि वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से अपने प्यार के कारण इन शब्दों की गहराई को समझा था कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने प्रस्थान की प्रतीक्षा के सम्बन्ध में बात कर रहे हैं। पैग (सल्ल0) ने उनको शान्त किया और मुसलमानों के समुह को सम्बोधित करते हुए आपने सीधे व्यक्तिगत रूप से अबु बक्र (रजि0) के हृदय को इस प्रकार सम्बोधित किया: ''जो साथी अपना साथ देकर और अपनी सम्पत्ति के द्वारा मेरे प्रति सर्वाधिक उदार रहा वह अबु बक्र (रजि0) हैं। यदि मुझे अल्लाह के अतिरिक्त किसी व्यक्ति को घनिष्ठ मित्र बनाना हो तो मैं अब बक्र को बनाऊँगा: परन्त इस्लामी भाई-चारा और स्नेह मझे अधिक पसन्द है''।

संसार से प्रस्थान

फिर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) वापस हजरत आयशा (रजि0) के घर में गये और फिर लेट गये। उन्होंने ईमान (आस्था). अमल (व्यवहार) और अल्लाह के घर काबा के रख-रखाव के सम्बन्ध में कछ और परामर्श दिया। फिर आप मस्जिद जाना चाहते थे परन्त दर्द इतना

तीव्र था कि जब आपने उठने का प्रयास किया तो आप मुर्छित हो गये। जब आपकी चेतना वापस आयी तो आपने पुछा कि क्या मुसलमानों ने नमाज पढ ली है. तो आयशा (रजि0) ने उन्हें बताया कि वह लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपने पुनः उठने का प्रयास किया परन्तु एक बार फिर आप मुर्छित हो गये। जब एक बार फिर आपको होश आया तो आपने वही प्रश्न पुछा. तो आपको बताया गया कि मुसलमान अब भी उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने आयशा (रजि0) से कहा कि यह देखो कि लोग नमाज पढ लें और अब बक्र (रजि0) उनकी इमामत (नेतुत्व) करें।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने हजरत आयशा (रजि0) से अगले दिनों में भी यही बात कही. परन्तु जब भी आपने उनको यह आदेश दिया. आयशा (रजि0) ने अनुरोध किया कि उनके पिता अबु बक्र (रजि0) को नमाज पढाने से मुक्त रखा जाये। उन्होंने आग्रह किया कि अबु बक्र (रजि0) अत्यधिक संवेदनशील हैं और वह जब कुरआन पढते हैं तो रोने लगते हैं। जब भी आयशा (रजि0) ने आपत्ति की उनको वही अन्तिम और दुढ उत्तर मिला. अबु बक्र (रजि0) को ही जमाअत की (सामुहिक) नमाज पढाना है। दो दिन के बाद जब उनकी बीमारी कुछ कम हुई और मुसलमान अबु बक्र (रजि0) के पीछे जुहर (दोपहर) की नमाज पढ रहे थे तो आप मस्जिद पहुँचने में सफल रहे। अबु बक्र (रजि0) ने पैगम्बर (सल्ल0) के लिए इमाम का स्थान छोडने के लिए पीछे हटना चाहा। परन्तु पैगम्बर (सल्ल0) ने उनको ऐसा करने से रोका और मात्र उनकी बाँयी तरफ बैठ गये। पैगम्बर (सल्ल0) ने शेष नमाजों की इमामत की. जबकि अब बक्र (रजि0) तेज आवाज में दहरा रहे थे।

यह पैगम्बर (सल्ल0) का मस्जिद में अन्तिम आगमन था। उसके अगले दिन आपने अपने घर की सम्पुर्ण वस्तुओं को अन्तिम दिरहम तक बाँट दिया। आप निरन्तर कुछ वसीयतें करते रहे। आपने बार-बार दोहराया कि दासों. निर्धनों और निम्न वर्ग के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए। दुसरे दिन सवेरे सोमवार के दिन फज्र (प्रातः) की नमाज के समय आयशा (रजि0) के कमरे का एक पर्दा उठा दिया गया जिसके कारण आप मस्जिद में मसलमानों को देख सकते थे और उनको देखकर आप मस्कराए।

पैगम्बर (सल्ल0) को इस तरह देखकर मुसलमान आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुए कि पैगम्बर (सल्ल0) उनके साथ मिलने आ रहे हैं परन्तु पर्दा फिर गिरा दिया गया और फिर पैगम्बर (सल्ल0) दिखायी नहीं दे रहे थे। अगली घडियों में आप (सल्ल0) की बेटी फातिमा (रजि0) आपको देखने आयीं और उन्होंने पैगम्बर (सल्ल0) के कष्ट की तीव्रता के सम्बन्ध ा में सहानुभुतिपूर्ण टिप्पणी की। इस पर पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे कहाः ''इस दिन के बाद तुम्हारे पिता को कोई कष्ट नहीं होगा''। आपने उनके कान में कहा कि वह भी जल्द ही (परलोक में) उनसे आ मिलेंगी और यह सुनकर वह अपने आँसुओं के साथ मुस्करा दीं। दर्द अधिक से अधिक बढता जा रहा था और शीघ्र ही पैगम्बर (सल्ल0) बोलने में असमर्थ हो गये।

फिर आयशा (रजि0) पैगम्बर (सल्ल0) के पहलु में बैठने के लिए आयीं। उनको अपने से मिला लिया और आपका सिर अपनी गोद में रखकर आपका दर्द कम करने के लिए थपथपाने लगीं।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। आयशा (रजि0) उनको पकडे हुए थीं और उन्होंने धीरे-धीरे यह कहते हुए सुना. ''जन्नत में. सर्वोच्च के सामिप्य में ....'' फिर आपने आयत के अन्तिम भाग को पढाः ''उन लोगों के साथ जिनपर अल्लाह की कृपा हुई- अर्थात अल्लाह के सभी पैगम्बर (अलै0). निष्ठावान लोग. शहीद लोग. और नेक लोग: उनका साथ कितना ही अच्छा है!''। फिर आपने तीन बार दुहराया ''सर्वोच्च के सामिप्य में!''। अचानक आपके हाथ ढीले हो गये और आपका सिर भारी हो गया. आयशा (रजि0) ने समझ लिया कि पैगम्बर (सल्ल0) ने इस समय अपनी अन्तिम साँस ली है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का इस संसार से प्रस्थान 8 जुन 632 ई0 (63 वर्ष की आयु में). तदनुसार सोमवार 12 रबीउल अव्वल को अपने स्वामी. अपने शिक्षक. अपने मित्र से मिलने के लिए हुआ. जिसने अन्ततः उन्हें अपने पास बुला लिया था. ताकि उन्हें सर्वोत्तम शान्ति प्राप्त हो सके. मनुष्यों के संसार से परे. जिनके पास अत्यन्त दयावान की ओर से अन्तिम सन्देश लेकर उन्हें भेजा गया था। उस दिन से आध्यात्मिक मुस्लिम

समुदाय ने सम्पूर्ण संसार और प्रत्येक युग में अन्तिम पैगम्बर (सल्ल0) को सलाम करना कभी नहीं छोडा और वह सहृदय और सप्रेम यह उच्चारण करते रहते हैं:

"अल्लाह और उसके फरिश्ते सन्देष्टा पर दयालुता (रहमत) भेजते हैं। ईमानवालों, तम भी उस पर दरुद (दयालता) और सलाम भेजो"।

(करआन. 33:56)

स्नेह और सनापन

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की मृत्यु की सूचना पूरे मदीना में फैल गयी और अनन्त दुख का कारण बन गयी। चेहरों पर निराशा छा गयी और लोगों के आँखों में आँसू बहने लगे। पैगम्बर (सल्ल0) ने मुसलमानों से कहा था कि दुख और शोक, आत्मनियन्त्रण औ सम्मानपूर्वक प्रकट करना चाहिए परन्तु पागलपन के साथ शोक प्रकट नहीं करना चाहिए। पैगम्बर (सल्ल0) के घर के पास घोर सन्नाटा छाया हुआ था।

अचानक उमर (रजि0) ने सन्नाटा तोडा और जोर देकर कहा कि पैगम्बर की मृत्यु नहीं हुई है, वह वापस आ जायेंगे। उन्होंने यह धमकी भी दी कि जो कोई यह घोषणा करेगा कि पैगम्बर (सल्ल0) का देहान्त हो गया है, उसकी हत्या कर देंगे। उनका पैगम्बर (सल्ल0) के लिए प्यार ऐसा था और सुनेपन की भावना इतनी तीव्र थी कि उमर (रजि0) उस व्यक्ति के बिना भविष्य की कल्पना नहीं कर सकते थे जिसने उनका मार्गदर्शन किया था और उनके साथ रहा थाऔर जिनके प्यार और स्नेह पर स्वयं कुरआन ने बल दिया है: *"तुम्हारे पास एक सन्देष्टा आया है जो स्वयं तुममे से है। तुम्हारा घाटे में पडना उसपर कष्टकर है। वह तुम्हारी भलाई का अभिलाषी है। ईमानवालों पर अत्यन्त स्नेह करने वाला और दयावान है"।* (कुरआन. 9:128)

उनका अस्तित्व भावनाओं में वशीभूत हो गया था। उस समय अबू बक्र (रजि0) पहुँच गये, पैगम्बर (सल्ल0) के बिस्तर के पास बैठ गये और उस कम्बल को उठाया जिससे पैगम्बर (सल्ल0) का शरीर और चेहरा ढका हुआ था। जब उनकी समझ में आया कि

पैगम्बर (सल्ल0) उन्हें छोड चुके हैं तो उनके चेहरे से आँसुओं की धारा बहने लगी। वह बाहर निकले और उमर (रजि0) को शान्त करने का प्रयास किया जो अब भी भावनात्मक झटके के कारण शान्त नहीं हो रहे थे। फिर अबु बक्र (रजि0) एक तरफ खडे हो गये और भीड को सम्बोधित किया। उसी अवसर पर उन्होंने वह शब्द कहे जो विवेक से भरे हुए थे और जो इस्लामी विश्वास के सार को प्रकट कर रहे थेः "जो लोग पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की उपासना कर रहे थे। उन्हें मालुम होना चाहिए कि अब पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की मृत्यु हो चुकी है! रहे वह लोग जो सर्वशक्तिमान अल्लाह की उपासना कर रहे थे. उन्हें मालुम होना चाहिए कि अल्लाह जीवित है और वह मरता नहीं"। फिर आपने कुरआन की यह आयत पढीः

"मुहम्मद मात्र एक रसुल (सन्देष्टा) हैं उनसे पहले भी रसुल (सन्देष्टा) गुजर चुके हैं। फिर क्या यदि वह मर जायें या कत्ल कर दिये जायें तो तुम उल्टे पाँव फिर जाओगे। और जो व्यक्ति फिर जाये. वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाडेगा और अल्लाह आभार व्यक्त करने वालों को बदला देगा"।

(कुरआन. 3:144)

जब उमर (रजि0) ने यह आयत सुनी तो वह मूर्छित हो गये और बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें ऐसा महसुस हो रहा था कि उन्होंने इस आयत को पहली बार सुना था। हालाँकि यह आयत बहुत पहले अवतरित हुई थी। सभी मुसलमानों के साथ-साथ वह भी समझ गये कि पैगम्बर (सल्ल0) जा चुके हैं. पैगम्बर (सल्ल0) उनको छोड चुके हैं. और उनके बीच जो शुन्य पैदा हो गया है अब वह एक अल्लाह में आस्था से भरा जायेगा. जो "जीवित है और वह मरता नहीं": उन्हें अब अपने स्वामी. सर्वशक्तिमान अल्लाह से यह दुआ करनी चाहिए कि वह उन्हें अपने अन्दर क्षमता. धैर्य और दृढ विश्वास पैदा करने में सहायता करे जिसकी उन्हें पैगम्बर (सल्ल0) के बिना जीवित रहने के लिए आवश्यकता है परन्तु उन्हें सदैव उनके आदर्शों के प्रकाश में ही रहना है।

29

अल्लाह के पैग़म्बर एक उत्तम आदर्श

क़ुरआन की आयतों ने पैगम्बर (सल्ल0) के मुस्लिम साथियों को सूचित किया था. जिस प्रकार यह आयतें आज के मुसलमानों से और सम्पर्ण इतिहास के सभी सामाजिक वर्गों और सभी सभ्यताओं को सूचित करती हैं कि:

> *"तुम्हारे लिए अल्लाह के सन्देष्टा में उत्तम आदर्श था. उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो और अधिकता से अल्लाह को याद करे".* (क़ुरआन. 33:21)

मुहम्मद (सल्ल0) ऐसे शिक्षक हैं जिनकी शिक्षाओं का कोई अध्ययन करता है. ऐसे मार्गदर्शन हैं जिनका कोई व्यक्ति मार्ग में अनुसरण करता है वह ऐसे आदर्श है जिनका कोई अनुकरण करना चाहता है. और सबसे बढकर ऐसे नायक हैं जिनके कथनों. जिसकी खामोशियों. और जिसके कर्मों पर चिन्तन करने का आह्वान किया जाता है।

अपने 23 वर्षों के मिशन के दौरान मुहम्मद (सल्ल0) ने आध्यात्मिक स्वतन्त्रता और मुक्ति का मार्ग तलाश किया। आपने कदम कदम पर. अपने जीवन की परिस्थितियों के बीच वह्य सन्देश प्राप्त किया. मानो सर्वशक्तिमान अल्लाह जो सर्वोच्च है. वह इतिहास. शाश्वत जीवन और सदैव के सम्बन्ध में उससे कानाफसी कर रहा हो। पैगम्बर मुहम्मद

(सल्ल0) ने अल्लाह को सुना. उससे बात की और रात-दिन उसकी निशानियों पर. अरब के मरुस्थल में अपने वफादार साथियों के साथ विश्वास किया।

आप उस समय नमाज पढते थे जब मानव संसार सो रहा होता. आप अल्लाह से दुआएँ करते जब उनके भाई और बहन निराश होते और आप जीवन की कठिनाईयों और अपमान के समक्ष धैर्यवान और वचनबद्ध रहे. जब बहुत से लोगों ने आपको छोड दिया। आपकी गहरी आध्यात्मिकता ने अपने मन के कारागार से आपको मुक्त कर दिया था और आप अल्लाह की निशानियों को देखते रहे जो बहुत निकट से अल्लाह का स्मरण कराती हैं चाहे वह उडती हुई चिडिया हों. खडे हुए पेड हों. अन्धकारमय रात हो अथवा चमकते हुए तारे हों।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) प्यार प्रकट करते थे और उसे अपने चारो तरफ बिखेर देते थे। आपकी पत्नियाँ आपकी उपस्थिति. कोमलता और स्नेह की आभारी थीं और आपके वफादार साथी आपसे अत्यधिक. असाधारण उदारता के साथ आपसे प्यार करते।

आप अपने सजीव अस्तित्व को प्रस्तुत करते. मुस्कराहटें बिखेरते. और यदि कोई दास आपसे बात करने के लिए शहर के दूसरे किनारे पर ले जाना चाहे तो वह चले जाते थे. वह उसकी बात सुनते और उससे प्यार करते थे। वह चूँकि अल्लाह की धरोहर थे इसलिए वह किसी व्यक्ति की धरोहर नहीं थे: वह साधारणतः अपना प्यार सबको देते. जब आप किसी से हाथ मिलाते तो वह अपना हाथ पहले कभी नहीं खीचते और आप जानते थे कि जब किसी को कोमल शब्द प्रदान किये जाते हैं स्नेहपूर्ण नाम लिया जाता है. और सावत्नाँ दी जाती है. तो उसके दिल में कैसा प्रकाश और कैसी शान्ति पहुँचती हैं। अपनी इच्छाओं से मुक्त होने के कारण वह किसी की अनदेखी नहीं करते थे। आपका अस्तित्व एक शरणस्थल थाः वह पैगम्बर थे।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) क्षमा करना पसन्द करते थे। प्रतिदिन आप अल्लाह से अपनी कमियों और अनदेखियों पर क्षमा माँगते और जब कोई स्त्री अथवा पुरुष पापों से बोझल होकर आपके पास आता चाहे उसके पाप कितने ही गम्भीर हों आप उसका स्वागत करते और उसे क्षमा-याचना करने. सात्वनाँ. अल्लाह से वार्त्ता और उसका शरण माँगने की विधि सिखाते।

आप लोगों की कमियों को दूसरों की दृष्टि से छिपाते. हालाँकि आप प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से श्रम करने और अनुशासित रहने की शिक्षा देते। ज आलस्य के कारण कोई कम से कम कर्म पूछता तो आप सदैव उसे सकारात्मक उत्तर देते और लोगों को अपनी बुद्धि और अपनी योग्यताओं का उपयोग करने और अपनी कमियों को स्वीकार करते हुए अपने विरोधाभासों से अपने आप को मुक्त करने का आह्वान करते। आपने अपराध के बिना उत्तरदायित्व और नैतिकता का पालन करने को मक्ति की शर्त बताया।

न्याय शान्ति की शर्त है और पैगम्बर (सल्ल0) इस बात पर बल देते हैं कि कोई व्यक्ति उस समय तक समता का स्वाद नहीं चख सकता जब तक वह दूसरों की मर्यादा का सम्मान कर सकता हो। आप दासों को मुक्त करते और यह शिक्षा देते कि मुसलमान भी निरन्तर दासों को मुक्त करेंः मुसलमानों के आस्थावान समुदाय को ऐसा समुदाय बनना चाहिए जो मुक्त लोगों का समुदाय हो। कुरआन की शिक्षाओं ने पैगम्बर (सल्ल0) का मार्गदर्शन किया था और जैसा कि हम देखते हैं आप दासों. निर्धनों और समाज के निम्न वर्गों पर विशेष ध्यान देते थे। आप उन्हें अपनी मर्यादा का सम्मान करवाने. अपने अधिकारों को माँगने और हीन भावना से मुक्त होने का आह्वान करते। इस प्रकार आपका सन्देश धार्मिक. सामाजिक और राजनैतिक मक्ति का आह्वान था।

पैगम्बर (सल्ल0) ने अपने मिशन के अन्त में जबल-ए रहमत (दया का पर्वत) के नीचे के मैदान में सभी नस्लों. सभ्यताओं और रंगों के स्त्री पुरुष जिसमें धनी और निर्धन सभी उपस्थित थे और उन्होंने इस्लाम का सन्देश सुना. जिसमें इस बात पर बल दिया गया था कि लोगों में से सबसे बेहतर वह लोग हैं जो अपने हृदय के अनसार बेहतर हैं। इसका निर्णय वर्ग. रंग अथवा सभ्यता से नहीं हो सकता।

पैगम्बर (सल्ल0) ने एक बार कहा था. *''तममें से सबसे बेहतर वह है जो लोगों के लिए सबसे बेहतर हो''*.

मानव बन्धुत्व के सम्बन्ध में- आपने मात्र मुसलमानों को ही सम्बोधित नहीं किया बल्कि सभी लोगों को सम्बोधित किया. जैसा कि आपने अल-विदाई उपदेश में

किया था- आपने प्रत्येक सचेत व्यक्ति को यह शिक्षा दी कि वह न्याय की दिशा में आगे बढने में जो भी रुकावटें आ सकती हों उनको पार करें। अल्लाह के सामने कोई भी चीज भेद-भाव. सामाजिक अन्याय. नस्लवाद को न्यायोचित नहीं ठहरा सकती। मुस्लिम समुदाय में एक काला व्यक्ति लोगों को नमाज के लिए पुकारता था और एक दास के बेटे ने मुस्लिम सेना का नेतृत्व किया। एक अल्लाह पर विश्वास ने मुसलमानों को भटकाने वाले सांसारिक सिद्धान्तों के आधार पर निर्णय लेने से मुक्त कर दिया।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अपने समाज की उन महिलाओं की बात को सुनते थे जो अपने अधिकारों के हनन. बहिष्कार एवं दुर्व्यवहार का शिकार होती थीं। कुरआन पैगम्बर (सल्ल0) द्वारा लोगों की बातों को सनने और उनके लिए उपलब्ध रहने के सम्बन्ध में इस प्रकार याद दिलाता हैः

"अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने पति के सम्बन्ध में तुमसे झगडती थी। और अल्लाह से शिकायत कर रही थी. और अल्लाह तुम दोनों की वार्त्ता सन रहा था. निस्सन्देह अल्लाह सनने वाला और जानने वाला है"।

(कुरआन. 58:1)

इसी प्रकार पैगम्बर (सल्ल0) ने उस महिला को सुना जो अपने पति से तलाक चाहती थी क्योंकि वह उसे पसन्द नहीं करती थी। आपने उसे सना. मामले की छानबीन की और उनको एक-दूसरे से अलग कर दिया।

अनेक महिलाएँ पैगम्बर (सल्ल0) के पास अपने पतियों से तलाक (खुला) पाने के लिए आती थीं. उदाहरण के लिए जमीला बिन्त-ए उबई. हबीबा बिन्त-ए साहिल. बरीरः. और कैस की पत्नी के बेटे साबित। इस अन्तिम प्रकरण में इब्ने अब्बास लिखते हैं कि साबित की पत्नी पैगम्बर (सल्ल0) के पास आयीं और उनसे कहा कि जहाँ तक धर्म का सम्बन्ध है मुझे अपने पति से कोई आपत्ति नहीं परन्तु मैं इस्लाम से बेवफाई का अपराध नहीं करना चाहती। (पति के रूप में उनके अधिकारों का सम्मान न करके और अपने विचारों और व्यवहार द्वारा उन्हें धोखा देकर) पैगम्बर (सल्ल0) ने उनसे पूछा कि क्या वह उस बाग को वापस करने के लिए तैयार हैं जो उन्होंने महर के रूप में दिया था. उस

महिला ने इसे स्वीकार कर लिया फिर आपने साबित से कहा कि वह उनसे अलगाव स्वीकार कर लें।

पैगम्बर (सल्ल0) ने एक अन्य महिला की शिकायत को भी सुना। उसके पिता ने उसका विवाह बिना उसकी इच्छा जाने कर दिया था। पैगम्बर (सल्ल0) उसको और उसके पति को अलग करने के लिए तैयार थे परन्तु उस महिला ने आपको बताया कि वह वास्तव में अपने पिता के चुनाव से सन्तुष्ट हैं परन्तु वह पिता को यह अवगत कराना चाहती हैं कि ''उन्हें महिलाओं का फैसला स्वयं नहीं करना चाहिए'' और यह कि वह बेटियों की मर्जी जाने बिना इस प्रकार व्यवहार न करें।

समाज. सार्वजनिक स्थलों और सामाजिक. राजैनैतिक और आर्थिक मामलों में और सैनिक कार्यों में भी महिलाओं की मौजुदगी एक स्वीकुत तथ्य था। पैगम्बर (सल्ल0) ने कभी उन कार्यों से उनको वंचित नहीं किया बल्कि स्पष्ट रूप से उनको प्रोत्साहित किया।

आध्यात्मिक शिक्षाओं की रोशनी में आप (सल्ल0) महिलाओं को अपने अधि ाकारों को माँगने. जीवन्त रहने. भावनाओं को व्यक्त करने और हार्दिक स्वतन्त्रता और नैतिक सिद्धान्तों की स्वतन्त्रता का दावा करने के लिए मार्गदर्शन करते थे। महिलाओं को सर्वशक्तिमान और दयालु अल्लाह पर भरोसा करते हुए इसे स्वयं चनना होता था और स्वयं इन्हें तलाश करना होता था।

पैगम्बर मुहम्द (सल्ल0) बच्चों से उनकी मासुमियत और सज्जनता के कारण प्यार करते। अल्लाह के निकट रहते हुए और अपने हृदय के निकट रहते हुए. वह उन लोगों पर ध्यान देते रहे जो मौलिक रूप से हृदय की भाषा समझते थे। आप बच्चों को चुमते. उन्हें अपने कन्धे पर ढोते और उनके साथ खेलते और यह सब आप उनव मासुमियत के स्तर पर पहुँच कर करते। जो अपने सार तत्व के अनुसार. अल्लाह र्क शाश्वत उपासना की अभिव्यक्ति है। फरिश्तों की तरह बच्चे पुर्णतः अल्लाह की सम्पत्ति हैं। वह निशानियाँ हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का व्यवहार इसका निरन्तर स्मरण कराता है: इस प्रकार यदि किसी बच्चे के चीखने के कारण आपकी नमाज में व्यवधान पडता- बच्चे वास्तव में जब अपनी माँ को बलाते हैं तो वह अल्लाह की ही उपासना कर रहे होते

हैं- तो उस समय पैगम्बर (सल्ल0) अपनी नमाजों को संक्षिप्त कर देते. मानो आप इस प्रकार बच्चे की उपासना का उत्तर दे रहे हों।

पैगम्बर (सल्ल0) ने कहाः

> *''कभी कभी मैं नमाज की तैयारी करता हूँ और मेरी नीयत होती है कि इसे पुरा करुँ परन्तु जब मैं किसी बच्चे की चीख सुनता हूँ तो इस डर से मैं नमाज संक्षिप्त कर देता हूँ कि बच्चे की माँ का हृदय प्रभावित होगा''।*

पैगम्बर (सल्ल0) उनकी मासुमियत के कारण बच्चों को बहुत पसन्द करते थे। उनके द्वारा आप लोगों और अपने आसपास के संसार को आश्चर्यजनक ढंग से देखना सीखते। जब वह बच्चों को सौन्दर्य का अनुभव करते देखते तो वह अपने सौन्दर्य की भावना को अत्यधिक विकसित कर लेते। सौन्दर्य के समक्ष आप रोते. आप प्रभावित होते और कभी-कभी आँसु बहाते। अत्यन्त दयावान और अत्यन्त सुन्दर अल्लाह द्वारा अवतरित करआन की एक आयत की आध्यात्मिक पकार से. अथवा वाक्यांश के काव्य संगीत से अधिकतर धन्य हो जाते।

प्रकाश जो दिव्य प्रकाश की ओर ले जाता है

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) मानवता के पास आस्था. नैतिकता और आशा के सन्देश के साथ आये थे जिसमें सर्वशक्तिमान अल्लाह सम्पूर्ण मानवता को अपनी उपस्थिति. उसकी माँगों और वापसी के अन्तिम दिन और अल्लाह से मुलाकात को याद दिलाता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) इस सन्देश के साथ आये थे। जीवन पर्यन्त आप महिलाओं. बच्चों पुरुषों. दासों. धनवान और निर्धनों तथा जाति वहिष्कृत लोगों की बातों को सुनते रहे थे। आप उनकी सुनते. उनका स्वागत करते और उन्हें साँत्वना देते। धरती की इस आबादी में से एक चुने हुए बन्दे के रूप में आपने न तो अपनी कपा और सहानभति छिपायी और न हृदय की दयालुता।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन का प्रत्येक पहलू. सूक्ष्म विस्तार से लेकर महानतम घटनाओं तक. पूर्णतः नवीनीकरण और परिवर्तन का साधन था। जो लोग पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन का अध्ययन करेंगे. चाहे वह इस्लाम धर्म में विश्वास करने वाले हों अथवा किसी और धर्म में विश्वास करने वाले हों। वह सभी लोग वास्तव में अपने व्यक्तिगत धार्मिक विश्वासों से परे इस जीवनी से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार वह इस सन्देश के सार तत्व और इस आस्था के प्रकाश तक पहुँच सकते हैं।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इबादत की. स्तुति की. अपने आप को परिवर्तित किया और पूरे संसार को परिवर्तित किया। सर्वशक्तिमान अल्लाह के मार्गदर्शन में. जो उनका शिक्षक था। उन्होंने अपने अस्तित्व के माध्यम से सर्वोत्तम शिक्षाओं को प्रस्तुत किया। यही जिहाद का अर्थ था. यही उस सिद्धान्त का अर्थ था जिसने मुसलमानों को आदेश दिया था कि ''भलाई का विकास करें. और बुराई से रोकें''। मुहम्मद (सल्ल0) का जीवन इसी शिक्षा का प्रतिबिम्ब था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की जीवन यात्रा प्रत्येक चरण में एक ऐसा असाधारण अस्तित्व थी जो एक मात्र स्वामी सर्वशक्तिमान अल्लाह को समर्पित थी। प्रत्येक व्यक्ति पैगम्बर (सल्ल0) से इसलिए प्रेम करता. आज्ञापालन करता और सम्मान करता था क्योंकि उनकी आध्यात्मिकता ने उन्हें अपने स्वार्थ से ऊपर उठा दिया था. ताकि वह अपने आप को समर्पित कर दें और इसके बदले में बिना किसी बन्धन के प्यार प्राप्त करें। दिव्य प्रेम मानव-निर्भरता से मुक्त है। उन्होंने अपने आप को समर्पित किया था और वह मुक्त हो गये थेः आप अल्लाह के लिए दिव्य शान्ति में समर्पित थे और वह मानवीय माया से मक्त हो गये थे।

एक बार आपने अपने साथियों में से एक साथी को वास्तविक प्रेम का रहस्य बतायाः *''जिस चीज से लोग प्यार करते हैं उससे दूर रहो. लोग तुमसे प्यार करेंगे''* अल्लाह ने आपको आदेश दिया था कि आप प्रेम के मार्ग का अनुसरण करेंः ''मेरा बन्दा स्वतन्त्र रूप से चुने हुए समर्पणों के माध्यम से मुझसे निकट होता रहता है। यहाँ तक कि मैं उससे प्यार करने लगता हूँ और जब मैं उससे प्यार करता हूँ तो. ''मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है. उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है. मैं उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकडता है. और मैं उसका पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है''। अल्लाह से प्रेम उसके सामिप्य का उपहार देता है और स्वार्थ से ऊँचा उठाता है। अल्लाह का प्रेम एक ऐसा प्रेम हैं जिसमें निर्भरता नहीं. एक ऐसा प्रेम है जो मक्ति देता है और ऊँचाई पर ले जाता है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया जिसके विभिन्न चरण थेः एक अल्लाह की आस्था की ओर आह्वान. निर्वासन. वापसी और अन्ततः अन्तिम शरण स्थल के लिए प्रस्थान। आपके मार्ग में आपके साथ प्रारम्भ से ही अल्लाह आपके साथ रहा और अपने प्रेम द्वारा आपकी सहायता करता रहा और आपके स्वामी ने आपके साथ मनष्यों को प्यार के साथ मिलाया और चलाया।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक सार्वभौमिक सन्देश के वाहक थे. प्यार का जो अनभव आपके जीवन पर्यन्त रहा और आप लोगों को जो सार्वभौमिक नैतिकता से प्रतिबद्ध

रहने की आवश्यकता को याद दिलाते रहे जो विभाजन. निम्न प्रतिबद्धता और झ‍ पहिचान से ऊपर है। यह सच्ची स्वतन्त्रता थी- उस अस्तित्व की स्वतन्त्रता जो न्याय से प्यार करता है और नस्ल. राष्ट और कबीले की प्रतिबद्धताओं के भावों में अपने आप को जकडने नहीं देता। उसका प्यार उसकी नैतिक भावना को प्रकाशित करता है जिससे वह भला इन्सान बनता है: उसकी नैतिक भावना उसके प्यार का नेतृत्व करती है जिससे वह स्वतन्त्र हो जाता है। मनुष्यों के बीच वह असाधारण रूप से भला बन जाता है और असाध ारण रूप से उनसे वह स्वतन्त्र हो जाता है। यही दो गण थे जिन्हें आपके साथियों ने अन्तिम पैगम्बर के जीवन में देखा था।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के प्यारे थे और मनुष्यों के बीच एक आदर्श थे। आप इबादत करते. चिन्तन करते. प्यार करते और दान देते। आप सेवा करते. आप परिवर्तिन करते। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) एक ऐसा प्रकाश थे जो दिव्य प्रकाश की ओर मार्गदर्शन करते थे. और मुसलमान उनके जीवन से शिक्षा प्राप्त करके जीवन के स्रोत की ओर लौटते और उसका प्रकाश. उसकी गर्माहट और उसका प्यार प्राप्त करते।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने इस मानव संसार को अवश्य छोड दिया परन्तु आपने हमें सिखाया है कि हम उस सर्वशक्तिमान अल्लाह को कभी न भूलें जो सर्वश्रेष्ठ शरण है. हम पर गवाह है और हमसे बहुत निकट है। इस बात की गवाही देना कि 'अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं' वास्तव में. प्रामाणिक स्वतन्त्रता की ओर एक गम्भीर कदम है: पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) को अल्लाह का सन्देशवाहक स्वीकार करना मौलिक रूप से उनकी अनुपस्थिति में उनसे प्यार करना सीखना है और अल्लाह की उपस्थिति में अल्लाह से प्यार करना सीखना है। प्यार करना और प्यार करना सीखनाः अल्लाह. पैगम्बर (सल्ल0). सष्टि और मानवता से।

पैगम्बर महम्मद (सल्ल0) के सम्बन्ध में महान लोगों के विचार

द हन्डेड (सौ महान व्यक्तित्व) नामक एक अमेरिकी पुस्तक में लेखक सौ व्यक्तियों का उल्लेख करता है जिनके सम्बन्ध में उसे विश्वास है कि उन्होंने मानव इतिहास पर सर्वाधिाक प्रभाव छोडे हैं। इस पुस्तक के लेखक डा0 मीखाईल हार्ट एक ईसाई परिवार में पैदा हुए थे और उन्होंने वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त की थी। परन्तु उन्होंने अपने सम्मानित व्यक्तियों की सुची में प्रथम स्थान पर न तो ईसा मसीह का नाम रखा और न न्युटन का। उनके विश्वास के अनुसार एक व्यक्तित्व ऐसा था जिसकी उपलब्धियाँ अन्य व्यक्तियों की तुलना में श्रेष्ठ हैंः वह व्यक्तित्व पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) का व्यक्तित्व था। उनके अतिरिक्त किसी व्यक्ति ने मानव इतिहास पर ऐसा प्रभाव नहीं छोडा। वह अपनी पुस्तक ''द हन्डेड'' में लिखते हैं। संसार के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तियों की सुची में पैगम्बर मुहम्म (सल्ल0) का चुनाव प्रथम स्थान के लिए करने से कुछ पाठकों को आश्चर्य हो सकता है और कुछ लोग इस पर आपत्ति कर सकते हैं. परन्तु वह इतिहास के एक मात्र व्यक्तित्व हैं जो सांसारिक और धार्मिक दोनों स्तरों पर पुर्ण रूप से सफल रहे। यह सम्भव है कि इस्लाम पर मुहम्मद (सल्ल0) का जो तुलनात्मक प्रभाव है वह ईसाई धर्म पर ईसा मसीह और सेन्ट पाल दोनों के संयुक्त प्रभाव से अधिक हो। सांसारिक और धार्मिक दोनों स्तरों पर मुहम्मद (सल्ल0) के अद्वितीय प्रभाव के कारण ही उन्हें मानव इतिहास के एक मात्र सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में चने जाने का अधिकारी बनाता है।

जार्ज बर्नार्ड शाह अपनी पस्तक 'द जीनियस इस्लाम' भाग-1. क्रमांक 8 ं लिखते हैं

"मैं सदैव मुहम्मद के धर्म को इसकी अदभुत तेजस्विता के कारण प्रतिष्ठित मानता रहा हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक मात्र ऐसा धर्म है जिसके अन्दर अस्तित्व के बदलते हुए चरण को आत्मसात करने की क्षमता है जो प्रत्येक युग के लिए अपने आप को प्रासंगिक बना सकता है। मैंने उनका अध्ययन किया है- वह एक अदभुत व्यक्ति थे और मेरे विचार में वह ईसा मसीह के विरोधी कदापि नहीं थे। उन्हें मानवता का उद्धारक कहा जाना चाहिए"।

"अगले सौ वर्षों में ब्रिटेन नहीं अपितु पूरे यूरोप पर शासन करने का अवसर यदि कोई धर्म प्राप्त कर सकता है तो यह इस्लाम हो सकता है"।

फ्राँस के एक प्रसिद्ध कवि और इतिहासकार ला मार्टिन अपनी पस्तक "हिस्टारे डा ला टर्की". पेरिस 1854 भाग-2. पृष्ठ 276-77 में लिखते है

"दार्शनिक. वक्ता. सन्देष्टा. विधान देने वाले. योद्धा. विचारों पर विजय प्राप्त करने वाले. राष्टीय परम्पराओं का जीर्णोद्धार करने वाले. मूर्तिविहीन धर्म की स्थापना करने वाले: बीस भौगोलिक साम्राज्यों का एक आध्यात्मिक साम्राज्य स्थापित करने व व्यक्तित्व मुहम्मद (सल्ल0) हैं। मानव महानता को नापने के लिए जो भी मानक निर्धारित किये जा सकते हों उन सब मानकों से हम पछ लें तो क्या कोई व्यक्ति उनसे अधिक महान हो सकता है?"

एम. के. गाँधी "यंग इण्डिया" 16 सितम्बर 1924 (17) में लिखते हैं

"मैं उस व्यक्तित्व के सर्वश्रेष्ठ जीवन को जानना चाहता था जो लाखों मानवता के हृदय पर आज निर्विवाद रूप से राज कर रहा है। मैं इस बात से अत्यधिक आश्वस्त हो गया कि इस्लाम के लिए उन दिनों तलवार ने स्थान नहीं बनाया बल्कि पैगम्बर की पूर्ण रूप से विनम्रता. वचन और समझौतों पर सतर्कतापूर्ण पालन. आपकी निर्भीकता. अल्लाह में पूर्ण विश्वास और अपने मिशन में पूर्ण विश्वास। तलवार नहीं बल्कि इन्हीं चीजों ने प्रत्येक चीज को उन तक पहँचा दिया और उन्होंने प्रत्येक अवरोध पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया"।

एनी बेसेन्ट (प्रसिद्ध थियोसोफिस्ट. महिला अधिकारों की सक्रिय कार्यकर्त्ता. लेखिका और वक्ता) अपनी पस्तक ''द लाईफ एण्ड टीचिंग्स और महम्मद'' मद्रास. 1932 प0 4. में लिखती हैं।

''अरब के महान पैगम्बर के जीवन और चरित्र का जो व्यक्ति अध्ययन करता है और जो जानता है कि उन्होंने किस तरह शिक्षा दी और किस प्रकार जीवन व्यतीत किया. उस महान पैगम्बर. जो कायनात के स्वामी के महान पैगम्बरों में से एक थे. के प्रति श्रद्धा के अतिरिक्त और कुछ महसूस करना उसके लिए असंभव है और यद्यपि मैं आपके समक्ष जो कुछ प्रस्तुत करुँगी उसमें मैं अनेक बातें ऐसी कहूँगी जिनसे बहुत से लोग भिज्ञ होंगे. हाँ मैं स्वयं जब भी उन्हें पुनः पढती हूँ तो मैं उनके प्रति श्रद्धा का एक नया मार्ग पाती हूँ. एक श्रद्धा की नयी भावना उस शक्तिशाली अरब शिक्षक के लिए''।

श्री दीवान चन्द्र शर्मा अपनी पस्तक ''द प्रोफेटस ऑफ द ईस्ट'' में उल्लेख करते हैं:

''मुहम्मद दयालुता की आत्मा थे. और आपका प्रभाव महसूस किया जाता था और जो लोग आपके आस-पास थे वह उस प्रभाव को कभी भल नहीं सकते थे''।

फ्राँस के सम्राट नेपालियन बोनापार्ट लिखते हैं:

''मसा ने ईश्वर के अस्तित्व की शिक्षा अपने देश के लोगों को दी. ईसा मसीह ने रोमन संसार को यह शिक्षा दी और मुहम्मद ने प्राचीन महाद्वीप को। ईसा मसीह के छः सदियों बाद जब अरब मूर्तिपूजक था. उस समय मुहम्मद ने इब्राहीम. इस्लामईल. मूसा और ईसा मसीह के एक ईश्वर की उपासना वाले धर्म का परिचय कराया- मुहम्मद ने घोषणा की कि एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं. जिसका कोई पिता नहीं. कोई बेटा नहीं और टिनिटी ने मूर्तिपूजा की विचारधारा का आयात किया......। मुझे आशा है कि वह समय दूर नहीं जब मैं सभी देशों के सम्पूर्ण विवेकशील और शिक्षित लोगों को एक जुट करने में सफलता प्राप्त करुँगा और कुरआन के सिद्धान्तों पर आधारित एक समरूप साम्राज्य की स्थापना करुँगा। यही सिद्धान्त सत्य है और यही लोगों को प्रसन्नता का मार्ग दिखा सकते हैं।

✲

सन्दर्भ ग्रन्थ सची

1.	सीरत - इब्ने इस्हाव	मुहम्मद बिन इस्हाव
2.	सीरत - इब्ने खती	इब्ने खतीर
3.	सीरतुन्नन्बी (सल्ल०)	मौलाना शिब्ली नोमार्न
4.	सीरतुन्नन्बी (सल्ल०)	सैयद सुलेमान नदर्व
5.	मुहम्मद (सल्ल०)	अफजालर्रहमान
	सीरत का महाकोष	
6.	द इमरजेन्स ऑफ इस्ला	डा0 मुहम्मद हमीदल्ला
7.	मोहसिन-ए इन्सानियत (सल्ल०)	नईम सिद्दीकी
8.	द लाईफ ऑफ महम्मद (सल्ल०)	मुहम्मद हुसैन हैकल
9.	द सील्ड नेक्टर	सफीउर्रहमान
	(अर-रहीकुल-मख्तम	अल-मुबारकपर्र
10.	मुहम्मद (सल्ल०)	मार्टिन लिंग्स
11.	इस्लाम इन फोकर	हमुदाह अब्दल आर्त
12.	प्रोफेट महम्मद (सल्ल०)	फथल्लाह गलेन

13.	द परफेक्ट गाईड फॉर मैन काइन्ड	महम्मद राबेअ हसनी नदवी
14.	सोशल सर्विस इन इस्लाम	सैयद जलालुद्दीन उमरी
15.	द मेसेन्जर	तारिक रमजान
16.	मुहम्मद (सल्ल0) और कुरआन	रफीक जकरिया
17.	मुहम्मद (सल्ल0) लीगेर्स	इब्राहीम एच0 मालाबारी. कनाडा
18.	द लीडरशिप ऑफ मुहम्मद	जॉन ओडेयर
19.	प्राफेट मुहम्मदः लाईफ एण्ड टीचिंग्स	ए. आर. मोमिन
20.	द प्रोफेटिक मिशन	प्रो0 एम रफत
21.	प्राफेट मुहम्मद 'ए रोल मॉडल	महम्मद यासीन मजहर सिद्दीकी
22.	इम्स डे	बशीरुद्दीन महमद
23.	पान्डरिंग ओवर द करआन	अमीन अहसन इस्लाही
24.	तफहीमुल कुरआन	सैयद अबुल आला मौदूदी
25.	द होली करआन	अब्दुल्लाह यसुफ अली
26.	द करआन	डा0 नजीर अहमद